HINDI – ANGREZI KAVYANUVAD KI SAMASYAYEM 'RAMACHARITMANAS' KA ANUVAD, 'THE RAMAYANA OF THULSIDAS' KE VISHESH SANDARBH MEIN

(THE PROBLEMS OF TRANSLATION OF POETRY FROM HINDI TO ENGLISH WITH SPECIAL REFERENCE TO THE TRANSLATION OF 'RAMACHARITMANAS', 'THE RAMAYANA OF THULSIDAS')

THESIS

SUBMITTED TO

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

FOR THE DEGREE OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY

BY

JAYALAKSHMI. K

PROF. (DR) SHEMIM ALIYAR
HEAD OF THE DEPARTMENT

Rtd. PROF. (DR) L.SUNEETHA BAI
SUPERVISING TEACHER

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
KOCHI – 682022

2006

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **"HINDI – ANGREZI KAVYANUVAD KI SAMASYAYEM 'RAMACHARITMANAS' KA ANUVAD, 'THE RAMAYANA OF THULSIDAS' KE VISHESH SANDARBH MEIN"** is a bonafide record of work carried out by **Ms. Jayalakshmi. K** under my supervision for the award of the degree of Doctor of Philosophy and that no part of this hitherto has been submitted for a degree in any other university,

DEPARTMENT OF HINDI
Cochin University of Science
And Technology
Kochi- 682022

Rtd. Prof (Dr) L. SUNEETHA BAI
Supervising Teacher

Place: Kochi
Date: 26.04.2006.

DECLARATION

I here by declare that, the thesis entitled " **HINDI – ANGREZI KAVYANUVAD KI SAMASYAYEM ' RAMACHARITMANAS 'KA ANUVAD, 'THE RAMAYANA OF THULSIDAS KE VISHESH SANDARBH MEIN** " has not previously formed the basis of the award of any degree, diploma, associateship, fellowship or other similar title or recognition.

JAYALAKSHMI. K

DEPARTMENT OF HINDI
Cochin University of Science and Technology
Kochi – 682 022

Place: Kochi
Date: 26.04.2006.

प्राक्कथन

अनुवाद वह सेतु है जो दो भाषाओं को दो संस्कृतियों को जोड़ने का काम करता है साथ ही वह मंजिल भी है जो समस्त विश्व को एक छत के नीचे लाने का प्रयास करता है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि अनुवाद विश्व बंधुत्व की भावना के प्रसार का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। साहित्य की कई विधाओं पर अनुवाद कार्य हुए हैं और हो रहे हैं। इसमें काव्यानुवाद सबसे कठिन और दु:साध्य कर्म है। हिन्दी साहित्य की अनुपम भेंट है रामचरितमानस। इसके अनुवाद संसार के कई भाषाओं में मिलता है।

तुलसी ने जहाँ स्वान्त: सुखाय रामचरितमानस की रचना की वह अपनी विशिष्ट कथा तथा कलापक्ष के साथ-साथ वैशिष्ट भाषिक चेतना के कारण जन-जन सुखाय हो गया। वह देश, काल, भाषा सभी की सीमाएँ लांघकर देशी-विदेशी विद्वानों द्वारा रूपान्तरित होते हुए विश्व साहित्य की कोटि में आ गया। मानस का पहला गद्यानुवाद अदालत खाँ ने 1871 में किया। इसके बाद सन् 1879 में श्री.एफ.एस. ग्रउज ने रामचरितमानस का अंग्रेजी अनुवाद आंग्ल पाठकों केलिए प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् श्री. डगलस हिल ने भी इस मूल कृति का गद्यानुवाद प्रस्तुत किया। इसी समय ए.जी.एटकिन्स ने तुलसी कृत रामचरितमानस का 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' शीर्षक का पहला पद्यानुवाद किया जिसे हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस ने 1954 में कुल 863 पृष्ठों से दो खण्डों में प्रकाशित किया। पहले खण्ड में 'बालकाण्ड' और 'अयोध्याकाण्ड' है। दूसरे खण्ड में 'अरण्यकाण्ड' से लेकर 'उत्तरकाण्ड' तक रखे गए हैं। इसी पद्यानुवाद पर मैं ने अपने शोध प्रबन्ध का विषय रखा है 'हिन्दी-अंग्रेजी काव्यानुवाद की समस्याएँ रामचरितमानस का अनुवाद, 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' के विशेष संदर्भ में'।

रामचरितमानस की महत्ता को देखते हुए निसंदेह यह कहा जा सकता है कि जन-जन का कण्ठहार बना हुआ है। इससे संबंधित अनगिनत आलोचनाएँ निकल चुकी है। शोध की क्षेत्र में भी रामचरितमानस ने अपनी प्रतिष्ठा बनाई

रखी है- 'रामचरितमानस में अलंकार-योजना', रामचरितमानस की सूक्तियों का विवेचनात्मक अध्ययन', बंगला.रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन', वाल्मीकि और तुलसी : साहित्यिक मूल्यांकन आदि। इन कृतियों में रामचरितमानस के महत्ता, उसके भक्ति की तीव्रत, दर्शन की गहराई, काव्य कला की विशिष्टता को लेकर काम किया गया है। अन्य भाषा की रामायण के साथ रामचरितमानस की तुलना शोध के तुलनात्मक पक्ष को व्यक्त करनेवाली हैं। लेकिन अनुवाद के क्षेत्र में ऐसे काम बहुत कम ही हुए है। और रामचरितमानस के अनुवाद को लेकर जो हुए हैं वे नहीं के बराबर हैं। एटकिन्स ने जो यह काव्यानुवाद का प्रेरस किया है वह अपने ढंग का अलग है और रामचरितमानस के काव्यानुवाद के क्षेत्र में पहला कहा जा सकता है। मैंने अपने शोध प्रबन्ध में एटकिन्स के इसी काव्यानुवाद का, काव्यानुवाद के सिद्धान्तों के आधार पर विश्लेषण करने का प्रयास किया है। आशा है मेरा यह लघु प्रयास हिन्दी के साहित्यिक शोध में एक नया अध्याय जोड़ने में सफल हो जाएगा। अध्ययन की सुविधा केलिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

पहला अध्याय 'हिन्दी-अंग्रेजी काव्यानुवाद की समस्याएँ' है। इस अध्याय में काव्य और अनुवाद का परिचय देते हुए और मानस से कुछ उदाहरणों को लेते हुए हिन्दी-अंग्रेजी काव्यानुवाद की समस्याओं पर सामान्य रूप से प्रकाश ड़ाला है। दूसरा अध्याय है 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास में भावपक्ष के सन्दर्भ में अनुवाद की समस्याएँ'। मानस में चित्रित प्रमुख प्रसंग और उनके अनुवाद की समस्याओं पर विचार करते हुए काव्यानुवाद में भाव एवं अनुभूति का स्थान और रसों के अनुवाद की समस्याओं पर विचार किया है।

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास में कलापक्ष के संदर्भ में अनुवाद की समस्याएँ' तीसरा अध्याय है। शब्द के स्वर पर, अलंकार, ध्वनि, प्रतीक, बिंब, शब्दशक्ति और छंद के आधार पर अनुवाद की समस्याओं को लेकर अध्ययन किया गया है।

चौथा अध्याय है 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास में कहावतें, मुहावरें एवं शीर्षकों के अनुवाद की समस्याएं' । कहावतें और मुहावरे भाषा में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है इसीकारण से अनुवाद की दृष्टि से कठिन है। रचना में शीर्षक ही शीर्षस्थ होता है। इन्हीं विषयों पर इस अध्याय में विचार किया गया है। पाँचवाँ अध्याय है 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास में अनुवाद की सांस्कृतिक समस्याएँ' । रामचरितमानस केवल उस युग की संस्कृति को चित्रित करनेवाला काव्य नहीं है बल्कि भारतीय संस्कृति को चित्रित करने वाला महकाव्य है। किसी देश की नींव उसकी अपनी संस्कृति है और प्रत्येक समाज का प्रतिफलन इसी संस्कृति के आधार पर होता है। इस अध्याय में इसी संस्कृति से संबंधित अनुवाद की कठिनाईयों पर अध्ययन किया गया है।

अंत में उपसंहार है। इसमें रामचरितमानस का अनुवाद दि रामायण ऑफ तुलसीदास के अध्ययन के बाद का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर डॉ. एल. सुनीता बाई जी के निर्देशन एवं निरीक्षण में किया गया है। अपने व्यस्तता में भी समय निकालकर मुझे जो सुझाव और बहुमूल्य सलाह उन्होंने दिए हैं उससे ही मेरा कार्य निर्विघ्न संपन्न हो सका है। मेरी यही प्रार्थना है कि आगे भी हर कदम पर उनका आशीष बना रहे। मैं हमेशा उनकी आभारी रहूँगी।

मेरे शोध के विषय विशेषज्ञ प्रोफेसर डॉ. शशिधरन जी के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ, जिनके मार्गदर्शन ने मेरे शोधकार्य को साध्य तक पहुँचाने में बहुत सहायता दी है।

इस विभाग की अध्यक्षा डॉ. शमीम अलियार और मेरे अन्य गुरुजनों के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ जिनके आर्शीवाद एवं प्रेरणा से आज इस मंजिल तक पहूँच सकी हूँ।

सेंट सेवियरस् कॉलेज से सेवानिवृत्त अंग्रेजी विभागाध्यक्षा श्रीमती टी. सी. जयलक्ष्मी जी के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने समय समय पर उदार एवं प्रतिभापूर्ण मार्गदर्शन से मेरे इस शोधकार्य की संपूर्ति में वांछित सहयोग दिया है।

इस विभाग के कार्यालय और पुस्तकालय के कर्मचारियों के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

सविनया,

जयलक्ष्मी, के.

हिन्दी विभाग,
कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, कोच्चिन-22.
तारीख: 24 अप्रैल 2006

विषय सूची

पृष्ठ-संख्या

पहला अध्याय .... 1 - 38

हिन्दी-अंग्रेजी काव्यानुवाद की समस्याएँ

काव्य एवं अनुवाद - काव्यानुवाद : असंभाव्यता- काव्यानुवाद की विशेषताएँ- काव्यानुवाद की शैली- हिन्दी-अंग्रेजी काव्यानुवाद की समस्याएँ- निष्कर्ष।

दूसरा अध्याय .... 39 - 94

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में भावपक्ष के संदर्भ में अनुवाद की समस्याएँ

दि रामायण ऑफ तुलसीदास : एक परिचय- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में रामचरितमानस के प्रमुख प्रसंग- काव्यानुवाद में भाव एवं अनुभूति- रसों का अनुवाद- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में रस के अनुवाद की समस्याएँ- निष्कर्ष।

तीसरा अध्याय .... 95 - 171

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में कलापक्ष के संदर्भ में अनुवाद की समस्याएँ

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में शब्द के स्तर पर अनुवाद की समस्याएँ- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में ध्वनि के अनुवाद की समस्याएँ- शब्द शक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में अलंकारों के अनुवाद की समस्याएँ- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में बिंबों के अनुवाद की समस्याएँ- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में प्रतीकानुवाद की समस्याएँ- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में छन्दानुवाद की समस्याएँ- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में अनुवाद की भाषागत समस्याएँ- अनुवाद और भाषाविज्ञान- भाषा में उपसर्ग, प्रत्यय एवं अनुवाद की समस्याएँ- समस्त पदों का अनुवाद और उसकी समस्याएँ- लिप्यंतरण- निष्कर्ष।

पृष्ठ-संख्या

चौथा अध्याय .... 172 - 219

दि रामायणऑफ तुलसीदास में कहावतें, मुहावरें एवं शीर्षकों के अनुवाद की समस्याएँ

कहावतें- कहावतों का अनुवाद- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में कहावतों के अनुवाद की समस्याएँ- मुहावरा : स्वरूप विवेचन- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में मुहावरों के अनुवाद की समस्याएँ- दि रामायण ऑफ तुलसीदास में शीर्षकों के अनुवाद की समस्याएँ- निष्कर्ष।

पाँचवाँ अध्याय .... 220 - 291

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में अनुवाद की सांस्कृतिक समस्याएँ

संस्कृति शब्द व्युत्पत्ति- स्वरूप- संस्कृति शब्द का अर्थ- संस्कृति का विकास और उद्देश्य- संस्कृति परिभाषा- संस्कृति और अनुवाद- भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताएँ- मानस में चित्रित सांस्कृतिक प्रसंग और उनके अनुवाद- षोडश संस्कार एवं उनके अनुवाद की समस्याएँ- व्रत- उपवास- तप एवं त्योहार से संबन्धित शब्द एवं उनके अनुवाद की समस्याएँ- रिश्ते- नाते से संबन्धित शब्द और उनके अनुवाद की समस्याएँ- खान- पान से संबन्धित शब्द और उनके अनुवाद- पूजा-पाठ से संबन्धित शब्द एवं उनके अनुवाद- सामाजिक- सांस्कृतिक परंपराओं से संबद्ध शब्दावली और उनके अनुवाद की समस्याएँ- शकुन- अपशकुन से संबन्धित शब्द और उनके अनुवाद की समस्याएँ- सामाजिक कलाओं से संबन्धित शब्द और उनके अनुवाद की समस्याएँ- दार्शनिक तत्वों के अनुवाद की समस्याएँ- मानस में चित्रित कुछ सांस्कृतिक शब्द एवं उनके अनुवाद की समस्याएँ- निष्कर्ष।

उपसंहार .... 292 - 302

संदर्भ ग्रंथ सूची .... 303 - 316

पहला अध्याय

हिन्दी-अंग्रेजी काव्यानुवाद की समस्याएँ

काव्य एवं अनुवाद

सुन्दरता में सहज आकर्षण होता है। किसी भी सुन्दर वस्तु की ओर सब अनायास ही आकर्षित होते हैं। जैसे बगीचे में खिला फूल मन्दिर वा संग्रहालय में स्थापित सुन्दर मूर्ति, सुन्दर चित्र आदि। इन्हें देखकर जो आनन्द का अनुभव होता है वह लाख प्रयास करने के बाद भी अभिव्यक्त नहीं हो पाता। ठीक इसी प्रकार का रुचिकर अनुभव किसी मनोरंजक बात को सुनने एवं पढने पर होता है। हम जब किसी मनोहर रचना को पढ़ते या सुनते हैं तब हमारा मन उसकी ओर अपने आप खिंच जाता है। किसी मन भावनी उक्ति को बार बार सुनने या पढ़ने से मन थकता नहीं, प्रत्युत उसमें बार बार नया रस मिलता है। इस प्रकार की रचना, चाहे गद्य में हो चाहे पद्य में, सुनते या पढ़ते ही हृदय में ऐसा आनंद उत्पन्न करती है जो वर्णनातीत होता है। ऐसी कर्ण-सुखद, अर्थ-सौष्ठव से पूर्ण प्रभावशाली व हृदयस्पर्शी शक्ति ही काव्य कहला सकती है।

कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-संबंधों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य की भाव-भूमि पर ले जाती है। अतः कवि के मन और बुद्धि से निकले शब्द काव्य होते हैं। अपने सामान्य अर्थ में 'काव्य' शब्द 'कविता' का पर्याय है। 'काव्य' का शाब्दिक अर्थ है- "वह रचना, विशेषतः पद्यमयी रचना, जिसके द्वारा चित्त किसी रस अथवा मनोवेग से परिपूर्ण हो जाय।"

काव्य शब्द 'कवि' शब्द से बना हैं। कवि शब्द के अर्थ को समझना बहुत आवश्यक है। 'कु' धातु में 'अच्' प्रत्यय (इ) जोडकर 'कवि' शब्द की व्युपत्ति बतलायी गयी है और 'कु' का अर्थ है 'व्याप्ति', 'आकाश' अर्थात् 'सर्वज्ञता'। फलतः कवि सर्वज्ञ है; द्रष्टा है। श्रुति कहती है 'कविर्मनीषी 'परिभूः स्वयम्भूः'। 'परिभूः' अर्थात् जो अपनी

अनुभूति के क्षेत्र में अथवा दृष्टिक्षेप में सब कुछ समेट ले और 'स्वम्भूः' जो अपनी अनुभूति केलिए किसी का भी ऋणी न हो, अर्थात् काव्य उसी मनीषी की सृष्टि है जो स्वयं संपूर्ण और सर्वज्ञ हो।

काव्य के स्वरूप को समझने केलिए काव्य की परिभाषाओं को जानना आवश्यक है। काव्यानुवाद के सम्यक अध्ययन केलिए भी यह अत्यन्त आवश्यक है।

'श्रीमद्भगवद्गीता' में वाङ्मय तप के अन्तर्गत दी गई काव्य की परिभाषा इस प्रकार है-

"अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥"[1]

अर्थात् उसी को काव्य कहेंगे जो किसी के मन में उद्वेग पैदा न करे तथा जिसमें सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् की पूर्ण प्रतिष्ठा की गई हो; जो स्वाध्याय एवं अभ्यास के योग्य हो। अनुवाद के सन्दर्भ में गीता की दी हुई यह परिभाषा अत्यन्त महत्त्व की है क्योंकि काव्य का अनुवाद स्वाध्याय और निरन्तर अभ्यास से ही सफलतापूर्वक संभव हो सकता है।

संस्कृत आचार्यों में भरतमुनि की परिभाषा पर ध्यान देना अत्यन्त संगत होगा-

"मृदलिलित पदाढ्यं गूढशब्दार्थहीनं।
जनपदसुखबोध्यं युक्तिमन्नृत्ययोज्यम्।
बहुकृतरसमार्गं संधिसंधानयुक्तं।
भवति जगति योग्यं नाटकं प्रेक्षकाणाम्॥"[2]

1. श्रीमद्भगवद्गीता- 17/15
2. नाट्यशास्त्र- भरतमुनि- 19/152 ख- 153

अर्थात् जो मृदु एवं ललित पदों से युक्त गूढ़ शब्दार्थ से रहित सर्वथा सबको सुख देनेवाला, नृत्य में प्रयुक्त किए ज़ाने योग्य रस की अनेक धाराओं को प्रवहित करने वाले, सन्धियों के सन्धान से युक्त हो वही नाटक देखनेवाले केलिए सर्वश्रेष्ठ काव्य कहा जाता है। अनुवाद के सन्दर्भ में इसका विशेष महत्त्व है क्योंकि स्रोत भाषा में जो मृदु और ललित पद है वे लक्ष्य भाषा में कठोर हो सकता है और जो स्रोतभाषा में जन जन केलिए आसानी से बोधगम्य हो सकता है। लक्ष्य भाषा में कष्ट साध्य भी हो सकता है।

आचार्य भामह ने काव्य की परिभाषा इस प्रकार दी है- *"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।"*[3]

अर्थात् जिस रचना में शब्द और अर्थ दोनों का समावेश हो उसे काव्य कहा जाता है। अनुवाद की दृष्टि से यह परिभाषा अत्यन्त महत्त्व की हैं क्योंकि अनुवाद में शब्द और अर्थ पर ही बल दिया जाता है। समानार्थी शब्दों की स्रोत एवं लक्ष्य भाषा में की जानेवाली तुलना ही अनुवाद है। इसलिए भामह का यह काव्य लक्षण अनुवाद के संदर्भ में सर्वाधिक सहज कहा जा सकता है।

आचार्य कुन्तक की काव्य परिभाषा को मौलिक परिभाषा न कहकर भामह की काव्य परिभाषा की व्याख्या मानना ही अत्यधिक उचित होगा। उन्होंने भामह के लक्षण का ही स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है-

"शब्दार्थौ सहितौ वक्रकवि व्यापार शालिनी।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि॥"[4]

अर्थात् आह्लादकारक, कवि व्यापार से युक्त सुन्दर रचना को व्यवस्थित शब्द और अर्थ को काव्य कहते हैं। दूसरे शब्दों में एक अर्थ के वाचक अनेक शब्द होते हैं, किन्तु कवि को उनमें से ऐसे शब्दों का प्रयोग करना होता है जो उसके व्यवस्थित अर्थ को

3. काव्यांलकार- आचार्य भाभह, 1/16
4. वक्रोक्तिजीविबम्- कुन्तक, 1/7

पूर्णतया प्रकट कर सके और साथ ही वे इतने रमणीय हो कि सहृदयों को आह्लादित भी कर सके। इस प्रकार की शब्द योजना से समन्वित रचना को काव्य कहा जाता है।

कुन्तक ने जो काव्य में व्यवस्थित शब्दों की आवश्यकता पर बल दिया है, वह काव्यानुवाद की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। स्रोत भाषा का व्यवस्थित शब्द कभी कभी लक्ष्य भाषा में व्यवस्थित नहीं रहता। यहाँ पर समस्या उत्पन्न होती है। दण्डी के अनुसार काव्य लक्षण इस प्रकार है-

"शरीरंतावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।"[5]

अर्थात् काव्य का शरीर तो इष्ट अर्थ से युक्त पदावली से होता है। दण्डी के काव्य लक्षण में इष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली का प्रयोग अनुवाद की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्व का है। क्योंकि काव्य में इष्टार्थ का बोधन अनेक तरीकों से होता है। भिन्न प्रकार की शब्दावली के जरिये यह संभव कराया जाता है। स्रोत भाषा में इष्टार्थ को समझानेवाली शब्दावली लक्ष्य भाषा की शब्दावली से बिलकुल भिन्न रहती है। ऐसा भी होता है कि स्रोत भाषा की इष्टार्थ बोधन की शब्दावली का मान रूप लक्ष्य भाषा में न भी मिले।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य "वाक्यं रसात्मकम् काव्यम्"[6] है। अर्थात् रसमय वाक्य ही काव्य है। इस परिभाषा में रस शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थों में किया गया है। 'रस' शब्द से रस, रसाभास, रसाभाव, भाव, भावोदय, भावशबलता, भाव-संधि, भाव-शान्ति आदि को भी ग्रहण किया है। विश्वनाथ के अनुसार रस तथा रस के अवयवों की परिधि में सीमित वाक्य को काव्य कहते हैं।

अपनी परिभाषा में विश्वनाथ ने काव्य में रस को प्रमुखता दी है। अनुवाद की दृष्टि से देखें तो रस से युक्त काव्य का अनुवाद अत्यन्त कठिन रहता है। क्योंकि जिन उपादानों से काव्य में रस की अनुभूति होती है, इनका स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में

5. काव्यादर्श- दण्डी, 1/10
6. साहित्यदर्पण- विश्वनाथ, 1/3

परिवर्तन हमेशा सफल नहीं हो सकता। संस्कृत काव्यशास्त्र की परंपरा के महत्त्वपूर्ण आचार्य पण्डिराज जगन्नाथ ने काव्य को, "रमणीयार्थप्रतिपादक: शब्द: काव्यम्"[7] कहा है। रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्दों से युक्त वाक्य को काव्य कहते हैं। इस परिभाषा से अभिप्राय यह है कि वह शब्द जो लोकोत्तर अर्थात् अलौकिक आनन्द की वृद्धि करे काव्य है। यहाँ 'रमणीयार्थ' शब्द की व्याख्या करते हुए जगन्नाथ कहते हैं- अलौकिक आनन्द जनक ज्ञान का विषय होना रमणीयता है।

"रमणीयता च लोकोत्तराह्लादजनकज्ञानगोचरता ॥"[8]

पण्डितराज जगन्नाथ की यह परिभाषा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें काव्य को शब्दनिष्ठ माना है और यह सिद्ध होता है कि काव्यत्व केवल शब्द में रहता है अर्थ और उसकी रमणीयता तो काव्य का प्रतिपाद्य है और यह प्रतिपाद्य शब्द के द्वारा ही प्राप्त होता है। जगन्नाथ की यह काव्य परिभाषा अनुवाद की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि अनुवाद शब्द एवं अर्थ पर ही आधारित रहता है। स्रोत भाषा के शब्द एवं उन शब्दों की अर्थगत रमणीयता का अनुवाद लक्ष्यभाषा में करना अत्यन्त कठिन होता है। इस परिभाषा से यह बात आसानी से प्रकट होती है कि ऐसे रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्दों का, याने काव्य का, अनुवाद अत्यन्त कठिन होता है। इस प्रकार देखा जा सकता है कि भारतीय आचार्यों के द्वारा दी गई काव्य की ये परिभाषाएँ काव्यानुवाद की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। शब्द और अर्थ की संयोजना जिसप्रकार काव्य का सौन्दर्य बढ़ाती है वैसे ही अनुवाद में भी इन दोनों की अत्यन्त प्रमुखता रहती है। इन परिभाषाओं पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि काव्य की परिभाषा करते समय आचार्यों के समक्ष दो दृष्टिकोण रहे हैं- एक तो काव्य का शरीर, दूसरा काव्य की आत्मा। जहाँ तक अनुवाद से संबंध है, काव्य का शरीर अनुवाद की दृष्टि से संपन्न रहता है लेकिन काव्य की आत्मा का अनुवाद, समस्याओं की सृष्टि करता है।

7. रसगङ्गाधर- जगन्नाथ, पृ.4
8. रसगझमगाधर- जगन्नाथ, पृ4

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काव्य संबंधी विचार यहाँ अप्रासंगिक नहीं होंगे। अपने निबन्ध 'कविता क्या हैं' में आचार्य शुक्ल ने लिखा है- "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना केलिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।"[9] हृदय की मुक्तावस्था, रसदशा की, कविता में प्रमुखता पर शुक्लजी ने बल दिया है जो अनुवाद की दृष्टि से काव्य की कष्ट साध्यता की ओर संकेत करता है।

छायावादी काव्यधारा के अन्तर्गत आनेवाले प्रमुख कवि श्री. जयशंकर प्रसाद काव्य को आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति कहते हैं- "काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है, जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञान धारा है।"[10] प्रसादजी की आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति एवं श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा भी अनुवाद की दृष्टि से अत्यन्त कष्टसाध्य हैं। प्रसाद की इस परिभाषा ने सत्य और सौन्दर्य के संबंध में आत्मा की सहज वृद्धि को विशेष महत्त्व दिया है। अनुवाद में इस सत्य और सौन्दर्य के कभी-कभी नष्ट होने की संभावना बनी रहती है।

डॉ. गुलाब राय के मत में "काव्य संसार के प्रति कवि की भाव-प्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की श्रेय को प्रेय देने वाली अभिव्यक्ति है।"[11] इनका अभिप्राय यहीं है कि कविता केलिए अनुभूति और अभिव्यक्ति का प्रायः समान महत्त्व है। अनुभूति के बिना कविता सारहीन और अभिव्यक्ति के बिना यह आकर्षणहीन हो जाती है। काव्यानुभूति एवं उसकी अभिव्यक्ति यथातथा रूप में अनुवाद में उतारना कष्टसाध्य होता है। काव्यानुभूति क्षणिक होती है और उसमें भावों की तीव्रता रहती है जिसका अनुवाद कष्टसाध्य होता है। मूल काव्य की क्षणिक अनुभूति किसी भी हालत में अनूदित काव्य में सफलता के साथ

9. रामचन्द्र शुक्ल - चिन्तामणि (भाग 1), पृ.97
10. काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध : प्रसाद ग्रंथावली-4, पृ..440
11. गुलाब राय- काव्य के रूप, पृ.16

चित्रित नहीं की जा सकती। श्री. नन्ददुलारे वाजपेयी भी काव्यानुभूवि का बड़ा महत्त्व मानते हैं। 'कविता का स्वरूप' निबन्ध में वे कहते हैं "काव्य तो प्रकृत मानवानुभूतियों का, नैसर्गिक कल्पना के सहारे, ऐसा सौदर्यमय चित्रण है जो मनुष्य-मात्र में स्वभावतः अनुरूप भावोच्छ्वास और सौदर्य-संवेदन उत्पन्न करता है। इसी सौन्दर्य-संवेदन को भारतीय परिभाषिक शब्दावली में 'रस' कहते हैं।" [12]

आचार्य वाजपेयी कविता को रस के साथ जोड़ते हुए, काव्य को मानव के अनुभव कल्पना और सौन्दर्य को प्रस्तुत करनेवाले एक चित्र मानते हैं जो उसके अर्न्तमन में संवेद ना जगाता है। अनुभव कल्पना और सौन्दर्य किसी भी हालत में अनूदित नहीं हो सकते। इनकी अभिव्यक्ति का जो अनुवाद होता है वह शतप्रतिशत सफल भी नहीं हो सकवा। ऊपर दिए गए आचार्यों के काव्य संबंधी विचार काव्यानुवाद की समस्याओं की संभावनाओं पर अप्रत्यक्ष रूप में ही सही संकेत करते रहते हैं। काव्य भावप्रधान एवं शैली प्रधान होता है। काव्यानुवाद की दृष्टि से भाव एवं शैलियाँ समस्याएँ उत्पन्न करती रहती हैं।

अरस्तू शब्द के माध्यम से व्यक्त होने वाली अनुकृति में शब्द के साथ छंद और संगीतात्मकता के योग से उत्पन्न कला को काव्य मानते हैं। छंद और संगीतात्मकता की अपनी गति होती है जो हर भाषा की अलग रहती है। चूंकि अनुवाद दो भाषाओं के बीच की व्यवस्था है इसलिए ये काव्य तत्व दोनों में समान रूप से चित्रित नहीं हो सकते। स्रोत भाषा की लय और गति में लक्ष्य भाषा में उसे प्रस्तुत करना दुष्कर होवा है। काव्यानुवाद की दृष्टि से अगर इसका विश्लेषण हो तो इन तथ्यों का अनुवाद लक्ष्य भाषा में उतर पाना असंभव है। कवि हृदय में भावना का आवेग ही कविता का कारण होता है। इस आवेग की अनभूति से जब कवि का हृदय आतुर हो जाता है तब उसकी वाणी मचल उठती है। इसी बात को वर्ड्स्वर्थ कविता को उत्कृष्ट भावनाओं का सहजोद्रेक मानते हैं।

12. नन्ददुलारे वाजपेयी- आधुनिक साहित्य, पृ.407

इसकी उत्पत्ति शान्ति में संचित्र अनुभूतियों से होती है ।"[13] उत्कृष्ट भावनाओं का सहजोद्रेक क्षणिक होने के कारण अनुवाद में यह नष्ट हो जाता है। यह काव्यानुवाद की समस्या की ही ओर इशारा करता है।

एडगर एलन पो का कहना है कि कविता सौन्दर्य की लयात्मक सृष्टि भी है।[14] लय की सृष्टि मन में होती है और भाषा में जो सौंदर्य इस लय से उत्पन्न होता है उसे अनुवाद के माध्यम से लक्ष्य भाषा में उतार पाना कठिन ही नहीं कभी-कभी असंभव भी है। पहले कहा जा चुका है कि काव्य में भावनाओं की क्रमिक अभिव्यक्ति को सुन्दर शब्दों, पूरे लय के साथ सजायी जाती है।[15] यही कॉलरिज का कहना है। अनुवाद करते समय लय और भावनाओं की अभिव्यक्ति कठिन है। काव्य में भाव और अभिव्यक्ति दोनों इकाइयों का गहरा संबंध है। एक की क्षति हुई तो दूसरा भी क्षति ग्रस्त हुए बिना नहीं रहता।

अनुवाद में पुन: कथन होता है। बृहदारण्यक उपनिषद् में इसका प्रयोग 'दुहारना' के अर्थ में आया है।[16] भर्तृहरि ने अनुवाद का अर्थ 'दुहराना' या 'पुन: कथन'[17] माना है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से भी अनुवाद शब्द का यही अर्थ निकलता है- अनु+वद् (जो कहा जाता है उसे फिर से कहना) के अर्थ में 'अनुवर्तिता' से 'अनुवाद' शब्द निष्पन्न होता है।

'अनुवाद' के प्रतिशब्द के रूप में अंग्रेजी में 'ट्रांसलेशन' (Translation) शब्द मिलता है। 'ट्रांस्लेशन' शब्द लैटिन के 'ट्रांस' और 'लेशन' के संयोग से बना है जिसका तात्पर्य है 'पार ले जाना'।

13. 'Poetry is the spontanious overflow of powerful feelings. It takes its origin from emotion recollected in tranquility'. William Wordsworth – Poets on poetry-Lyrical Ballads, Preface, Pg.154
14. "Poetry is the rhythmical creation of beauty" – Edgar Alan Poe : Poets on poetry : The Poetic principles, Pg.280
15. The recurrence of sounds and quantities all compositions, whatever the contexts, may be entitled poems. Samuel Taylor Coleridge, Poets on Poetry: Biographis literaria, Pg.162
16. तद् एतद् एवैषा देवी वाग् अनुवदति- बृहदारण्यक उपनिषद् 5-2-3
17. आवृत्तिरनुवादो वा- भर्तृहरि, 2-1-15

ट्रांस (Trans) = पार +, लेशन (lation) = ले जाना या नयन । इस प्रकार 'ट्रांसलेशन' का अर्थ है : 'एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरण की प्रक्रिया ।' तात्पर्य यह है कि अनुवाद या ट्रांसलेशन करते समय मूल की बात का भाव ठीक तरह से अनुवाद पढ़ने वालेतक पहुँचे और बीच में वह अपना प्रभाव न खो बैठे । यहाँ पर अज्ञेय का मत विशेष रूप से उल्लेखनीय है । उनका मानना है कि 'समस्त अभिव्यक्ति अनुवादा है क्योंकि वह अव्यक्त या अदृश्य आदि को भाषा या रेखा या रंग में प्रस्तुत करती है ।"[18] अज्ञेय 'अभिव्यक्ति पर जोर देते हुए कहते हैं कि इसके माध्यम से ही अव्यक्त और अदृश्य बात चित्रित हो सकती है । जब ऐसी चित्रित अभिव्यक्ति कि "निकटतम पर्याय शब्दावली और वाक्य-विन्यास के द्वारा स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में उतारी जाती है तब उसे अनुवाद कहते हैं ।"[19] इसी तथ्य को डॉ. भोलानाथ तिवारी इस प्रकार कहते हैं- "एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है ।"[20] इसमें दो भाषाओं की बाह्य भिन्नताओं की तह में जाकर मानवीय अस्तित्व के समान तत्वों को प्रकाश में लाया जाता है ।[21] यहाँ बाह्य भिन्नताओं से तात्पर्य संस्कृति, धर्म, दर्शन आदि से है । इनके अनुसार अनुवाद बहुभाषा-भाषी विश्वजनता के बीच एक सुदृढ़ सेतु का कार्य करता है ।

एक भाषा के विशिष्ट पाठ को दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना अनुवाद है जिसमें वह मूल के भाषिक अर्थ प्रयोग के वैष्ट्यि से निष्पन्न अर्थ प्रयुक्ति और शैली की विशेषता, विषय वस्तु तथा संबद्ध सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को यथा संभव संरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा के पाठक केलिए स्वाभाविक रूप से ग्राह्य बनाए । अनुवाद में स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय मूल पाठ (स्रोत) की भाषिक संरचना, प्रयुक्ति और शैली विषय वस्तु आदि को यथासंभव संरक्षित किया जाता है । इस प्रकार अनुवाद एक

18. अज्ञेय- अनुवाद कला और समस्याएँ, पृ.4
19. डॉ. नगेन्द्र- आस्था के चरण-2 (ग्रंथावली खंड 8) पृ.95
20. भोलानाथ तिवारी - अनुवाद विज्ञान, पृ.15-16
21. डॉ.जी.गोपीनाथन - अनुवाद सिद्धान्त एवं प्रयोग, पृ.9

भाषा की सामग्री को दूसरी भिन्न सांस्कृतिक परिवेश वाली भाषा में रूपांतरित करने की ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अधिकाधिक समतुल्यता की चेष्टा की जाती है। अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के बीच किया जाता है जिसकी अलग संस्कृति होती है और अनुवाद इन्ही दो संस्कृतियों में समतुल्यता की चेष्टा करते हुए रूपांतरित करने की विधि प्रस्तुत करता है। वह 'एक प्रविधि है जिसके माध्यम से एक भाषा में कहीं गई बात को, विचार को, सामग्री को दूसरी भाषा में उसी क्षमता के साथ कह दिया जाता है।"[22] वास्तव में अनुवाद स्रोत भाषा में अभिव्यक्त विचार अथवा वक्तव्य अथवा रचना अथवा सूचना साहित्य को यथासंभव मूल भावना के समानांतर बोध एवं संप्रेषण के धरातल पर लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है।

अनुवाद के क्षेत्र में रोम की सबसे महत्वपूर्ण देन सेंट जेरोम द्वारा किया गया बाइबिल का अनुवाद है। जेरोम विश्व के पहले व्यवस्थित अनुवादक हैं जिसने अनुवाद करने के साथ-साथ अनुवाद विषयक समस्याओं का भी निरूपण किया है। उन्होंने भावानुवाद पर ज़ोर दिया और माना कि अनुवाद में शब्द की जगह शब्द नहीं, भाव की जगह भाव होना है। "यह भिन्न भाषा के आधा-खाले पाठक वर्ग केलिए किसी अन्य भाषा की अभिव्यक्ति को उनकी भाषा में पुन: सृजित करना"[23] है। इस प्रकार अनुवाद को हम एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण करने की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं और अर्थ एवं शैली की समतुल्यता के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं।

अनुवाद भाषा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्य सामग्री का प्रतिस्थापन है। जे.सी. कैटफोर्ड इसी आधार पर आंकते हुए इसकी परिभाषा को स्पष्ट करते हैं- "अनुवाद स्रोत भाषा की पाठ्य सामग्री केलिए लक्ष्य भाषा की समतुल्य पाठ्य सामग्री द्वारा प्रति

22. कैलाशचन्द्र भाटिया - अनुवाद कला सिद्धांत एवं प्रयोग, पृ.18

23. Translation is one art that involves the recreation of a work in another language for readers with a different background. Webster's Encyclcpedic unabridged Dictionary of the English language, Pg.1505

स्थापना है ।"[24] स्पष्ट है कि स्रोत भाषा में जो विषय है उसे उसी प्रकार लक्ष्य-भाषा में व्यक्त करने की प्रक्रिया अनुवाद है । सच्चे अर्थों में अनुवाद में अर्थ की ही तुलना की जाती है । इस प्रक्रिया में थोड़ी भी असावधानी अनुवाद को असफल बना देती है । इसी आधार पर डोस्टर्ट अनुवाद को लेते हैं । उनके अनुसार अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसका संबंध प्रतीकों के एक सुनिश्चित समुच्चय से दूसरे समुच्चय में अर्थ के अंतरण से है ।"[25] प्रतीकों का यह अन्तरण अपने में कठिन होता है, विशेष कर काव्य शैली एवं काव्य भाषा के संदर्भ में ।

अनुवाद में अर्थ एवं शैली को यथोचित महत्त्व दिया गया है । यूजीन,ए नीडा के अनुसार "अनुवाद का संबंध स्रोत भाषा के संदेश का पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा के निकटतम स्वाभाविक तथा तुल्यार्थक उपादान प्रस्तुत करना होता है ।"[26] मूल भाषा के संदेश के समतुल्य संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया ही अनुवाद है । संदेशों की यह समतुल्यता पहले अर्थ और फिर शैली की दृष्टि से निकटतम और स्वाभाविक होती है ।

काव्यानुवाद - असंभव्यता

काव्यानुवाद के संदर्भ में अधिकत: अनुवाद संबन्धी विरोधी मत ही सामने आते हैं । एक इतालवी कहावत है- "अनुवादक वंचक होते हैं ।"[27] दांतें का मानना है कि "जो वस्तु वाणी के सूत्र में पिरो दी गई हो तो उसे एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित

24. Translation may be defined as the replacement of textual material in one language (source language) by equivalent textual material in another language-J.C Catford,. - 'A linguistic theory of translation', Pg.20
25. Translation is that branch of applied science of language which is especially concerned with the problems or the facts of transference of meaning from one set of patterned symbols into another set of patterned symbols. Ibid Pg.35
26. Translating consists in producing in the receptor language the closest equivalent to the message of the source language first meaning and secondly the style.
    Eugene Nida - 'The theory and practice of translation, Pg.13
27. Traduttori traditori

करने पर उसकी सारी मधुरता नष्ट हो जाती है।"[28] यहाँ 'वाणी' का अर्थ शब्दों की माला से है जिन्हें एक सूत्र में पिरोकर वाक्य का रूप दिया जाता है। अनुवाद करते समय कभी इन शब्दों का त्याग करना पडता है या फिर भाव में कभी परिवर्तन आ जाता है जिससे उसकी सारी मधुरता नष्ट हो जाती है। काव्यानुवाद एक प्रयास मात्र है जो केवल समस्या को सुलझाने का साधन है। हेमबोल्ड के अनुसार यह एक असमाधेय समस्या का समाधान खोजने केलिए किया गया प्रयास मात्र है।[29] 'विचारों का अनुवाद तो हो सकता है, पर शब्दों और संबंधों का नहीं।'[30] काव्यानुवाद के संदर्भ में यह बिलकुल सही है। काव्य का अनुवाद पूरी सफलता के साथ प्रस्तुत करना असंभव ही कहा जाता है क्योंकि काव्य में अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का महत्व है। दोनों का अनुवाद शत-प्रतिशत संभव नहीं है। कवि जब किसी शब्द का प्रयोग करता है तो उसमें उसके अपने अनुभव का साहचर्य लोक होता है। कविता के माध्यम से कवि जो अभिव्यक्ति करता है वही अनुभूति को चित्रित करता है। भाषा में प्रयुक्त विशेष तत्त्वों के माध्यम से कवि अपने शब्दों को वाणी देता है और अपनी भावनाओं को पाठक तक पहुँचाता है। तुलसीदास के रामचरितमानस में अभिव्यक्ति का पूरा चित्रण मिलता जाता है जो उस कृति को सर्वश्रेष्ठ भी बनाये रखता है। बालकाण्ड में पुष्प-वाटिका मिलन प्रसंग के सन्दर्भ में सीता सौन्दर्य का जो वर्णन हुआ है वह मानसकार के मन की अनुभूति है जो इस प्रकार अभिव्यक्त की गई है-

"देखि सीयसोभा सुखु पावा। हृदय सराहत बचनु न आवा।
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई।
सुंदरता कहूँसुंदर करई। छबिगृह दीपसिखा जनु बरई।
सब उपमा कबि रहे जुठारी। केहि पटतरौं बिदेहकुमारी॥"[31]

28. दांते - Nothing which is harmonized by the bond of the muses can be changed from its own to another language without destroying all its sweetness.
29, हेमबोल्ड- All translations seems to me simply an attempt to solve an unsolvable problem.
30. सिडनी- Ideas can be translated, but not the words and their association.
31. मानस- 1/229/3-4

इन पंक्तियों में मानसकार ने सीता की शोभा का अनुपम चित्रण किया है । कवि के पास शब्दों की कमी है जिससे वे सीता सौन्दर्य को उसकी पूर्णता में पाठकों के सामने रखे । इसका अनुवाद देखिए-

"He gazed at her loveliness, inwardly hailed
And rejoiced in her glory, but utterance failed;
It seemed the creator had shown all his pow'r,
After making the worlds, in one marvellous dow'r
To beautify beauty, it seemed or as flame
In the lamp crowning glory's own palace she came
All poesy's figures are vain I confess,
And unworthy to tell of videha's princess."[32]

कवि बहुत ही सरल और सुन्दर शब्दों से सीता की शोभा का वर्णन करते हैं । सीता की शोभा देखकर राम को सुख मिला । कवि की यह अनुभूति पाठक केलिए केवल अनुभव की वस्तु है । प्रसंग एवं साहचर्यों की सहायता से ही इसका संपूर्ण अर्थ मिल सकता है । दूसरी पंक्ति 'हृदय सराहत बचनु न आवा' इससे एक कदम आगे है । सच्ची अनुभूति उसी को कहा जाता है जिसकी सच्चे अर्थों में पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं हो सकती । फिर अनुवाद की बात तो की ही नहीं जा सकती । एटकिन्स ने अंग्रेजी में जो अनुवाद पंक्ति का दिया है- 'He gazed at her loveliness inwardly hailed, And rejoiced in her glory, but utterance failed' कहने की आवश्यकता नहीं कि वह मूल की व्यंजकता को पूर्ण रूप से उतार नहीं सका है । भारतीयों के बीच ऐसा विश्वास है कि ब्रह्मा जगत के सृष्टिकर्ता हैं । मानसकार सीता छवि का वर्णन करते हुए यही कहते हैं कि सृष्टिकर्त्ता ने अपनी सारी निपुणता को आकार देकर सीता को सामने प्रकट करके दिखा दिया है । अनुवादक मूल शैली की अभिव्यक्ति अनुवाद में नहीं ला पाए हैं ।

32. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I, Chaupai 234, Pg.179

'creator' मात्र देकर लक्ष्य भाषा पाठक उसके अर्थ को पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पाएँगे। भारतीय विश्वास से जुड़े इसे तथ्य को पाठक मात्र 'creator' शब्द के प्रयोग से अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं। मूल में पंक्तियों को पढ़ने पर पाठक के मन में जो चित्र उभरता है वह लक्ष्य भाषा की पंक्तियों में नहीं मिलता। 'छबिगृह दीपसिखा जनु बरई' में मानसकार का कहने का अभिप्राय यही है कि सुन्दरता रूपी घर में दीपक की लौ रहते हो। कहने का अभिप्राय है अब तक सुन्दरता रूपी भवन में अंधेरा था, सीताजी के अनुपम सौंदर्य की दीपशिखा को पाकर अब वह पहले से भी जगमगा उठा है। प्रकृति के हर वस्तु से इसकी सौंदर्य की उपमा कवियों ने जुठा कर रखा हैं। अब कवि के पास कोई भी वस्तु नहीं है जिससे वह इस सौन्दर्य की उपमा करे। अनुवाद में 'छबिगृह . . . पंक्तियों को उसके ठीक अर्थ में अनुवादक ने नहीं लिया है और इसी कारण मूल में जिस अर्थ से ये पंक्तियाँ अभिव्यक्त हुई है वह अनुवाद में नहीं आया है। छबिगृह किसी भी हालत में 'glory's own palace' नहीं हो सकता। मूल का सौन्दर्य पूरा नष्ट कहा जा सकता है। इसी प्रकार 'दीपशिखा' का सौन्दर्य 'flame' में नष्ट हो जाता है।

जिन शब्दों के माध्यम से कवि अपने विचारों को अभिव्यक्ति देता है वह कवि की अनुभूति ही है। जब उपयुक्त भाषा की तलाश करके कथ्यानुकूल शिल्प में अनुवादक उसे गढ़ने का प्रयास करते हैं वह कहीं न कही इसमें चूक जाता है।

काव्यानुवाद की विशेषताएँ

काव्यानुवाद में भाषा का अत्यधिक महत्त्व है। भावों की वाहिका भाषा ही होती है। यह आवश्यकतानुसार अर्थ बोधन में सहायक होती है। इसलिए अनुवाद में इसका विशेष महत्त्व है। भाषा के इस अर्थ बोधन में ध्वनि, शब्द, रूप (पद), वाक्य, अर्थ प्रोक्ति, शैली आदि का विशेष महत्त्व है। ये सब भाषा के ही अंग हैं। काव्यानुवाद में इसका अत्यधिक महत्त्व है। यहाँ पर भाषा अभिप्राय मतलब प्रयोजन या तात्पर्य के अनुसार बद लने वाली होती है। इसी में काव्यानुवाद की नींव है। भाषा के अर्थ द्योतन के प्रधान

रूप हैं- स्थूल अर्थ, वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यंग्यार्थ, सामान्यार्थ आदि। इसके बिना काव्यानुवाद का अस्तित्व ही नहीं।

अनुवाद में भाषा की प्रमुखता होती है। यह दो भाषाओं की व्यवस्था को दिखाने वाला होता है। असल में भाषा तो किसी जाति या समाज के आचार-विचार, कला कौशल और सभ्यता एवं संस्कृति का परिचय देनेवाली होती है और इसी को भाषा का सांस्कृतिक संदर्भ कहा जाता है। सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में मुख्यत: आचार-विचार, लोक-व्यवहार, जीवन मूल्य, रहन-सहन, खान-पान, उत्सव, तीज-त्योहार, वेशभूषा आदि आते हैं। साहित्यिक अनुवाद में इस अंग का अत्यन्त महत्त्व होता है क्योंकि यह वह सेतु है जो विभिन्न भाषा-भाषियों को एक-दूसरे से परिचित कराता है और उन्हें पास-पास लाता है।

काव्यानुवाद की शैली

शैली अनुवाद का प्रमुख अंग है विशेषकर काव्यानुवाद का। प्रत्येक साहित्यकार अपने साहित्य में अपनी रचनाओं में अपनी व्यक्तिगत छाप छोड़ देता है। प्रेषणीयता के विचार से वह अपनी रचना को रस, स्पष्ट और सुबोध बना देने का प्रयत्न करता है कि उसके मन के भावचित्र अपनी सूक्ष्मता रेखाओं और रंगीनियों के साथ पाठक या श्रोता के मन में भी ज्यों का त्यों अंकित हो। इस प्रक्रिया में कृतिकार के व्यक्तित्व का सघन सम्मिश्रण हो जाता है कि प्रत्येक शब्द, वाक्य सप्राण होकर अपने जन्मदाता का यशोगान करने लगता है। कृतिकार का यह व्यक्तित्व उसकी प्रतिभा, कल्पना, विवेचन, क्षमता, व्यवहारकुशलता, प्रेषण-पटुता आदि की समस्त विशेषताएँ प्रतिबिंबित करता है। शैली को व्यक्ति समझने की मान्यता में यही राज़ छिपा हुआ है।

मानसिक सृष्टि की बाह्य जगत् में अभिव्यक्ति ही शैली है। इसका संबंध काव्य के बाह्यपक्ष-भाषा और वर्णन पद्धति से है। काव्य में इसका बड़ा महत्त्व है। जिस प्रकार किसी की वेशभूषा से उसके सभ्य एवं सुसंस्कृत होने का आभास मिलता है, उसी प्रकार भाषा शैली काव्य की आंतरिक सुन्दरता का आभास देती है। प्रत्येक साहित्यकार अपने

साहित्य में अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों को विविध माध्यमों से अभिव्यक्त करता है। प्रेषणीयता के माध्यम से वह उसे स्पष्ट सरस बना देने की कोशिश करता है जिससे की पाठक या श्रोता के मन में यह अंकित हो सके। इससे यह स्पष्ट है कि प्रत्येक कृति में दो अनिवार्य तत्त्व होते हैं-अनुभूति और अभिव्यक्ति। अनुभूति उसके मानस की उपज होती है और अभिव्यक्ति बाह्य साधन, उसकी शैली। साहित्य के दो पक्ष हैं- भावपक्ष और कलापक्ष। इसका अन्योन्याश्रित संबंध है। कलापक्ष के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति होती है और यह इसी से मुखरित होती है। भावों की यह अभिव्यक्ति ही शैली कहलाती है अर्थात् भाषा को अभिव्यक्ति देनेवाला माध्यम शैली कहलाता है। शैली के तीन पक्ष है-

(1) व्यक्तिगत वैशिष्ट्य

(2) विषय प्रतिपादन प्रविधि

(3) कलात्मक अभिव्यक्ति

शैली विषय प्रतिपादन की प्रविधि है। सामान्य भाषा में यह कह सकते हैं कि शैली किसी मंतव्य को व्यक्त करने की विशेष तकनीक या रीति है। अनुवाद में इसका बड़ा महत्त्व है। कथ्य और कथन का अनिवार्य संबंध रहता है। अनुवाद की दृष्टि से अगर इस पर विचार करें तो मूल में लेखक ने जिस शैली का प्रयोग किया है उसी प्रकार अनुवाद में भी उसे प्रस्तुत किया जाता है। अनुवादक को यथासंभव मूल की शैली का अनुकरण करना होता है।

शैली कलात्मक अभिव्यक्ति है और इस प्रकार वह साहित्य की चरम उपलब्धि है। इस अर्थ में शैली रचना सौष्ठव का पर्याय है। चूंकि रचना सौष्ठव ही काव्य कला है इसलिए शैली ही काव्य का प्राण-तत्त्व है।"[33] नगेन्द्र शैली को साहित्य एवं साहित्यशास्त्र के साथ जोड़ते हैं और शैली के अर्थ को व्यक्त करते हैं। अनुवाद भी कलात्मक

33. आस्था के चरण (भाग 3) डॉ.नगेन्द्र ग्रंथावली, पृ.300

अभिव्यक्ति है क्योंकि स्रोत भाषा सामग्री को लक्ष्य भाषा में लाने केलिए अनुवाद को उसे कलात्मक रूप से अभिव्यक्ति देना होता है। जब अनुवाद काव्य का हो तो अनुवादक का दायित्व और भी बढ़ जाता है।

काव्य की शब्द-योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और ध्वनि आदि शैली के अन्तर्गत आते हैं।"[34] अनुवाद की दृष्टि से भी शैली का बडा महत्त्व है। अनुवाद में शब्दों, वाक्यों, वाक्यांशों के जरिए भावों का अनुवाद होता है। शैली, अभिव्यक्ति का गुण है जिसे कवि या लेखक अपने मन में प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने केलिए अपनाता है।[35] अनुवाद में भी इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इसके माध्यम से स्रोत भाषा पाठ को लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव को पूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

काव्य की शैली में आकर्षण तथा प्रभाव रहता है और प्रभावहीन, सरल, साधारण अभिव्यक्ति को काव्य की कोटि में नहीं रखा जा सकता। इसमें वैयक्तिक अनुभूति की सुस्पष्ट अभिव्यंजना रहती है। एक ही सामग्री का अनुवाद विभिन्न अनुवादकों द्वारा जब किया जाता है भिन्न तरह का होता है इस कारण अनुवाद की दृष्टि से भी शैली का अत्यधिक महत्व है। लेकिन अनुवादक को, मूल की शैली को चाहे वह किसी भी प्रकार की क्यों न हो यथासाध्य अनुवाद में भी लाने का प्रयत्न करना पडता है। ऐसा करना सरल नहीं होता क्योंकि हर भाषा की प्रकृति में कुछ उसकी निजी विशेषताएँ होती हैं जो दूसरी भाषा में होती नहीं। क्योंकि अगर अनुवादक यहाँ अपनी शैली का प्रयोग करेगा तो वह अनुवाद न रह जाएगा।

काव्य शैली में विचलन, चयन, समानांतरता, अप्रस्तुत-विधान, बिंबात्मकता, प्रतीकात्मकता आदि का विशेष महत्त्व है।"[36] काव्य शैली के ये तत्त्व अनुवाद की दृष्टि से प्रमुख हैं। विचलन का प्रयोग कवि सोद्देश्य करते हैं। विचलन के माध्यम से ही भावों के

34. श्यामसुंदर दास - साहित्यालोचन, पृ.230
35. गुलाब राय- सिद्धांत और अध्ययन, पृ.190
36. राम गोपाल सिंह - अनुवाद भारती (प्रवेशांक 1996) पृ.5

संप्रेषीकरण से अर्थ को अभिव्यक्त किया जाता है। अत: अनुवादक विचलन की जानकारी के अभाव में स्रोत भाषा के अर्थ.तक नहीं पहुँच पाएगा। . कभी कभी अर्थ के स्तर पर उत्पन्न होने वाली इस प्रकार की समस्यायें इस ओर इशारा करती हैं। 'मानस' की निम्नलिखित पंक्ति इसका उदाहरण है-

"जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ।" [37]

"Friend, my army of monkeys must cross here the ocean'.[38]

यहाँ 'मानसकार' ने 'तात' पिता के अर्थ में प्रयुक्त किया हैं। 'तात' शब्द 'पुत्र' शब्द केलिए भी प्रयुक्त होता है। यहाँ सागर श्रीराम के वंशज माने जाते हैं और आदरसूचक रूप में यहाँ 'तात' शब्द का प्रयोग हुआ है। अनुवाद में जहाँ दो भिन्न संस्कृति रीति-रिवाज आदि ही नहीं दो भाषाओं का भी प्रयोग होता है वहाँ सही अर्थ ग्रहण करने में अनुवादक कभी-कभी न्याय नहीं कर पाता। इसका संकेत मूल पंक्तियों के अनुवाद में स्पष्ट रूप से पता चलता है। 'तात' केलिए 'friend' शब्द का प्रयोग मूल अर्थ को अभिव्यक्त करने में असफल है। 'friend' अर्थात् मित्र। अत: यहाँ मूल अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं हुई है।

चयन काव्य भाषा का महत्त्वपूर्ण आधार है। अनुवाद करने में अनुवादक पग पग पर चयन करता है। ठीक शब्द चयन करने पर ही अनुवाद सफल होता है। जब साहित्यकार अपनी शिल्पपटुता से एक अभिव्यक्ति के साथ कई अर्थों का आरोपण कर देता है तब ऐसे स्थलों पर अनुवाद में अनुवादक को कठिनाई उपस्थित होती है। साहित्य में प्रस्तुत (जिसका वर्णन हो) का वर्णन करने केलिए एक शैलीगत उपकरण के रूप में अप्रस्तुत (जो प्रस्तुत के वर्णन केलिए उपयुक्त हो) का प्रयोग किया जाता है। यहाँ पर भी अनुवादक के समक्ष कठिनाई उपस्थित होती है क्योंकि विशेषण या क्रिया विशेषण आदि के समान अर्थ तक पहुँचने केलिए अनुवादक को गहरे ज्ञान की आवश्यकता है।

37. मानस- 5/59 (दो)
38. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Doha 58, Pg.635

उसी प्रकार बिंब योजना साहित्यिक भाषा का अनिवार्य गुण है। काव्यानुवादक को बिंब प्रक्रिया की अच्छी जानकारी होना नितांत आवश्यक है ताकि अनुवाद में भाषा का सौन्दर्य शैलीगत स्तर पर भी संप्रेषित हो सके। प्रतीक में अनुवाद की दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण बात अर्थ की प्रतीति से संबंधित है।

एक भाषा में प्रस्तुत कार्य विवरण सफलाता के साथ दूसरी भाषा में उतारना ही अनुवाद है। यहाँ शैली का अत्यधिक महत्त्व है। 'शैलीभाषिक अभिव्यक्ति का वह ढ़ंग है जो प्रयोक्ता के व्यक्तित्व तथा विषय से संबद्ध होता है तथा जो विचलन, चयन, सुसंयोजन, समानान्तरता एवं अप्रस्तुत विधान आदि सामान्य अभिव्यक्ति केलिए असुलभ उपकरणों पर आधृत होता है।[39] अनुवाद में इन सब का अपना एक विशिष्ट स्थान है क्योंकि अनुवाद करते समय अनुवादक को इन सभी तथ्यों पर ध्यान देना पड़ता है। इसका विवरण तीसरे अध्याय में दिया जायगा।

काव्य में भाव रस को जन्म देता है परन्तु अनुवाद में आते-आते उसका अर्थ हो जाता है- शब्द या वाक्य का अर्थ या आशय। काव्यानुवाद केलिए अनुवादक को मूल कृति के सृजनात्मक पाठ को उसके संश्लिष्ट रूप में ग्रहण करना चाहिए। यह तभी संभव हो पाता है जब अनुवादक मूल कवि के सृजनात्मक क्षणों से तादात्म्य स्थापित करते हुए उसकी रचना को संपूर्णता में आत्मसात् करता है। काव्यानुवाद में भाषा संरचना अर्थात् शब्दों में परिवर्तन करते ही उसका सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। काव्यानुवाद में मात्र शब्दानुवाद पर्याप्त नहीं होता, अपितु भावानुवाद अथवा पुनः सृजन प्रायः आवश्यक हो जाता है।

हिन्दी-अंग्रेजी काव्यानुवाद की समस्याएँ

कविता का अनुवाद अन्य भाषा में करना कठिन काम है। इसमें शैली का अनुवाद कठिन है। शैली का महत्त्व जिस चीज में जितना अधिक होता है अनुवाद करना

39. भोलानाथ तिवारी - शैलीविज्ञान, पृ.21

उतना ही कठिन है और यह कठिनाई तब उत्पन्न हो जाती है, जब किसी भाषा के विशेष, हास्य, मुहावरों, विभिन्न अभिव्यक्तियों और पात्रों द्वारा प्रयुक्त विशेष संबोधनों को लक्ष्य भाषा में अनूदित करके प्रस्तुत करना होता है।

शैली की दृष्टि से यदि हिंदी को स्रोत-भाषा मानकर अनुवाद की चर्चा करें तो पर्यायों की समस्या सबसे अधिक कठिन होगी क्योंकि हिन्दी में एक ही शब्द के कई पर्याय है। जैसे-

"अयमय खाँड न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ।"[40]

अर्थात् यह लोहे की बनी हुई खाँड (खाँड-खड्ग) है ऊख के रस की खाँड नहीं। जो मुँह में लेते ही गल जाय। खेद है) मुनि अब भी बूझते नहीं है- ऐसे नासमझ है ये। प्रस्तुत उदाहरण में 'खाँड' के दो अर्थ हैं एक 'खड्ग' और दूसरा 'ऊख का रस'। इस पंक्ति का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Rama broke the bow like sugar-cane, but the truth" [41]

अंग्रेजी अनुवाद में 'खाँड' को मात्र 'ऊख' अर्थ में प्रयक्त किया गया है। इसका मात्र 'sugar-cane' रख देने से मूल में अभिव्यक्त अर्थ लक्ष्यभाषा में पूर्ण रूप से उभर नहीं आया है।

काव्य भाषा में ध्वनिपरक सौन्दर्य (sound effect) लाने केलिए ध्वन्यार्थ व्यंजक शब्द, ध्वनि पर आधारित अलंकार आदि का प्रयोग लेखक गण सोद्देश्य रूप में करते हैं जिसकेलिए लक्ष्य भाषा में समान प्रयोग मिलना सुगम नहीं। जैसे-

"भव भव विभव पराभव कारिनि।"[42]

40. मानस- 1/275
41. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Doha 269, Pg.211
42. मानस- 1/234/4

याने इस संसार को उत्पन्न, पालन और संहार करने वाली को प्रस्तुत करने केलिए तुलसीदास ने 'व' वर्ण की आवृत्ति से सौन्दर्य की सृष्टि की है। वही लक्ष्य भाषा में आते-आते मूल सौन्दर्य को अनुवादक ला नहीं पाए। देखिए-

"Thou all things begetting, sustaining destroying."[43]

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि की परंपराओं से होकर गुजरने के कारण हिन्दी में अनेक ध्वनिमूलक शब्द मिलते हैं। प्रत्येक भाषा की ध्वनि-मूलक शैली भिन्न रहती है। मूल का ध्वनि-सौन्दर्य अनुवाद में लाना एक जटिल समस्या है क्योंकि मूल में प्रयुक्त ध्वनियों का चयन खोजना अत्यन्त क्लिष्ट है। जैसे-

"लागे बरसन राम पर अस्त्र-सस्त्र बहु भाँति।"[44]

"They began to rain down upon Rama a shower of
all kinds of weapons they threw."[45]

अस्त्र-शस्त्र' हिन्दी भाषा में प्रयुक्त अपनी शैली है जिसकेलिए अनुवादक ने मात्र 'all kinds of weapons' भाव निकाल कर प्रस्तुत किया है। 'अस्त्र-शस्त्र' जैसे समान ध्वनि-मूलक शब्द केलिए अंग्रेजी में समान शब्द मिलना मुश्किल ही नहीं बल्कि ऐसे शब्द नहीं के बराबर हैं। अंग्रेजी में ऐसे शब्द को ढूँढ़ निकाले तब भी मूल के ध्वनिपरक सौन्दर्य के साथ भावपरक या अर्थपरक सौन्दर्य को अक्षत रखना संभव नहीं।

ध्वन्यार्थ-व्यंजक ध्वनियों का प्रयोग जब स्रोत भाषा में होता है तब लक्ष्य भाषा में उसे पूर्णतः सुरक्षितता के साथ प्रस्तुत करना असंभव है। जैसे-

"हा जानकी लखन हा रघुबर। हा पितु हित चित चातक जलधर।
राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुर धाम॥"[46]

43. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 239, Pg.182
44. मानस- 3/19 (क)
45. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III, Doha 20, Pg.534
46. मानस- 2/155

इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Lakshman, Sitȧ, Rama ! Alas, belov'ḋ three !
As the rain cloud to thirsty birds were you to me
Rama ! Rama ! O Rama ! My Rama !" again
And again the king cried as he grieved,
Then in anguish he quitted the body and died,
And a home in the heavens received".[47]

जिससे ध्वनि की ऐसी योजना से साक्षात् दृश्य साकार हो उसे ध्वन्यार्थ-व्यंजकता कहते हैं। इस प्रकार के शैली का अनुवाद करना सर्वाधिक कठिन है। क्योंकि मूलपाठ में जो वेदना, पीडा की झलक 'राम राम .... कहि राम' में चित्रित की गयी है वह बहुत स्वाभाविक रूप से मूल में चित्रित है लेकिन लक्ष्य भाषा में ये पंक्तियाँ अपनी वेदना और रस खो बैठी है। अत: अनुवाद में इस प्रकार की शैली को प्रस्तुत करना सर्वाधिक कठिन कार्य है।

काव्य में ध्वनियों के श्रवण प्रभाव का बडा महत्त्व रहता है। तुलसी ने 'मानस' में

"घन घमंड नभ गर्जत घोरा।"[48]

पंक्तियों में ऐसे शब्दों का चयन किया है जो अपने महाप्राणत्व (घ,घ,भ,घ), संयुक्त व्यंजनत्व (ण्ड) तथा नासिकत्व (न,न) के आधार पर आसमान में बादलों के गरजने का नाद-चित्र प्रस्तुत कर देते हैं। अनुवाद में अनुवादक केलिए लक्ष्य भाषा में इसी प्रकार का शब्द चयन करना कठिन है। इसका स्पष्ट रूप दि रामायण ऑफ तुलसीदास में किए गए उपर्युक्त मूल पंक्तियों में मिलता है-

"In the heavens, of hope thunder gathering clouds."[49]

47. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Doha 150, Pg.390
48. मानस- 4/13/1
49. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV, Chaupai 14, Pg.574

मूल पाठ में जहाँ कवि ने महाप्राणत्व व्यंजनत्व तथा अनुनासिकत्व के माध्यम से नाद-सौन्दर्य को चित्रित किया है• ठीक उसी प्रकार लक्ष्य भाषा में शब्द चयन कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी है।

कभी-कभी स्रोत भाषा में ऐसे ध्वनियों का भी प्रयोग होता है जो अलंकारों पर आधारित है, और लक्ष्य भाषा में समान ध्वनिमूलक अलंकारों का मिलना और मूल जैसा प्रभाव रखना एक जटिल समस्या है। जैसे-

"खग कंक काक सृकाल। कटकटहिं कठिन कराल॥"[50]

मूल पंक्ति में 'क' वर्ण के कई बार प्रयोग करने के साथ-साथ 'कटकटहिं' जैसे ध्वनिमूलक शब्द के प्रयोग से सृजित सौन्दर्य पंक्तियों में आ गया है। उसे लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित कर पाना कठिन है। इसका संकेत हमें उपर्युक्त मूल पंक्तियों के अनुवाद में मिलेगा-

"Countless crows jackals, vultures and kites
Snapped and snarled, taking huge, hungry bites".[51]

अनुवादक लक्ष्य भाषा में मूल भाषा का सा सौन्दर्य किसी भी प्रकार से सृजित नहीं कर पाए।

भाषा का प्रमुख अंग है शब्द जिसके बिना भाषा का अस्तित्व नहीं रहता और न ही वाक्य का। 'मानस' में मानसकार ने अरबी-फारसी, लोक भाषा आदि का प्रयोग किया है। 'अयोध्या- काण्ड' में केवट लोक भाषा का प्रयोग करते हुए दिखाई देता है-

"तरनिऊँ मुनिघरिनी होइ जाई। बाट परै मोरि नाव उड़ाई।"[52]

50. मानस- 3/19/7
51. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III, Chhand 5, Pg.535
52. मानस- 2/99/3

'मोरि नव उड़ाई' के प्रयोग से तुलसी के जन कवि होने का पूरा परिचय मिलता है। लेकिन लक्ष्य भाषा में मूल पंक्ति का शब्दानुवाद ही हुआ है।

"If to make of my boat a saint's wife you're disposed,

Then the boat will be lost and the ferry be closed."[53]

मूल पंक्तियों में मानसकार ने जनभाषा का पक्ष ग्रहण कर सामान्य जनता केलिए लोकभाषा का प्रयोग किया है। परंतु लक्ष्यभाषा में इसे प्रस्तुत करते समय सामान्य बोलचाल की भाषा में बदल गया है।

शब्द और अर्थ एक दूसरे से मिले-जुले रहते हैं। शब्द वह ईट है जिसे वाक्य रूपी दीवार चुनते हैं और इसी दीवार पर भाषा का महल खडा होता है। अत: भाषा में शब्दों का गठन महत्त्वपूर्ण है। अनुवाद में शब्द भी समस्या बनती है क्योंकि किसी भी भाषा में प्रयुक्त शब्द का अपना अर्थ बिम्ब होता है, जो उस भाषा के सांस्कृतिक, सामाजिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि से संबद्ध होता है। लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय मूल भाषा की पृष्ठभूमि को उसीप्रकार उभार पाना कठिन है। मानस में तुलसीदास ने ऐसे कई शब्दों का प्रयोग किया है जिससे भाषा सशक्त बन गई है। जैसे-

"कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ।"[54]

"In her room and she's angry ! The king heard dismayed."[55]

वाल्मीकि रामायण और रामचरिमानस में 'कोपभवन' का उल्लेख मिलता है। कैकेयी राम राज्याभिषेक के समय अपनी दासी मंथरा के कहने पर राजा दशरथ से अपने वरों की प्राप्ति केलिए 'कोपभवन' में जाती है। अयोध्याकाण्ड के वर याचना प्रसंग के अलावा कहीं भी इसका विवरण नहीं मिलता। अंग्रेजी अनुवाद में 'कोपभवन' केलिए उचित शब्द मिलना कठिन और असंभव भी है। अनुवादक ने मात्र 'In her room and

53. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 100, Pg.351
54. मानस- 2/24/1
55. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 25, Pg.299

she's angry' देकर अपनी बात को समाप्त कर दिया है। अंग्रेजी अनुवाद में संदर्भ के अनुसार अर्थ की गहराई को व्यक्त करने में लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति अपूर्ण रही है। अत: मूल भाषा में जो शब्द है उसके लिए लक्ष्यभाषा में अनुवादक भावानुवाद के माध्यम से ही बात को व्यक्त कर पाया है।

भारतीय साहित्य में पुराण और वेदों का गहरा प्रभाव पड़ा है। तुलसीदास का महाकाव्य रामचरितमानस में इसका स्पष्ट संकेत मिलता है। देखिए-

"त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारददि बखनि है ॥"[56]

"Of his world cleaning glory."[57]

इस पंक्ति में 'त्रैलोक' तीनों लोक केलिए प्रयुक्त है। स्वर्ग लोक, पृथ्वी और पाताल ही 'त्रैलोक' नाम से अभिहित किए जाते हैं। चूँकि ये शब्द पूर्ण रूप से भारतीय विश्वास से जुड़े है, लक्ष्य भाषा में अनुवादक इसके लिए उचित शब्द का चयन नहीं कर पाए हैं। 'World' शब्द रखकर अनुवादक मूल शब्द और उसके अर्थ को ठेस पहुँचते हैं। 'World' का अर्थ 'विश्व', 'संसार' आदि है और यह मूल अर्थ तक किसी भी दृष्टि से नहीं पहुँचता।

शब्द के साथ-साथ अर्थ का भी विशेष महत्त्व है। अनुवाद स्रोत भाषा सामग्री को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करने का माध्यम है। यह संप्रेषण अर्थ की समानता पर अपेक्षित होता है। स्रोत भाषा में प्रयुक्त शब्द और अर्थ को अगर लक्ष्यभाषा संप्रेषित करने में असफल है तो अनुवाद हेय माना जाएगा। 'मानस' में प्रयुक्त कुछ शब्दों के अर्थ को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने में अनुवादक असफल हुए हैं। जैसे

"नाथ कोसलाधीसकुमारा। आए मलन जगत आधारा।"[58]

"Here the son of Kosala's king master, you greet"[59]

56. मानस- 4/29
57. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV, Chaupai 2, Pg.588
58. मानस- 3/11/4
59. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III Chaupai 14, Pg.525

'कोसलेश्वर राजा दशरथ के कुमार' अर्थ में ही कोसलाधीशकुमारा का प्रयोग हुआ है। युवावस्था में पहुँचे राजा दशरथ के पुत्र अर्थात् में ही.'कुमारा' शब्द का प्रयोग किया गया है। एटकिन्स ने इस शब्द का शब्दानुवाद करते हुए 'the son of Kosala's king' किया है जो प्रसंग के प्रभाव को नष्ट कर देता है। 'कोसलाधीसकुमारा' में जो भाव निहित है वह 'the son of Kosala's king' में नहीं है। 'कुमार' शब्द की अर्थाभिव्यक्ति 'son' में नहीं मिलती।

इसी संदर्भ में शब्द शक्ति की समस्या भी प्रमुख रूप से अनुवादक के समाने खड़ी होती है। कभी-कभी किसी विशेष प्रसंग को अभिव्यक्त करने केलिए विशेष शब्द और अर्थ का प्रयोग किया जाता है। 'बालकाण्ड' में राजा जनक की वाटिका में सीता के प्रथम दर्शन के बाद राम की मनोदशा को तुलसी यों व्यक्त करते हैं-

"भये बिलोचन चारु अचंचल। मनहु सकुचि निमि तजे द्रिगंचल॥"[60]

इस अंश का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"His restless eyes gave up their wand'ring and blinking".
As tho' from the lids Nimi fled, god of 'winking".[61]

मूल पाठ में 'बिलोचन' शब्द में विशेष देखने वाले लोचन के जिस अतिरिक्त गुण की ओर संकेत है वह 'eyes' द्वारा व्यक्त नहीं हो पाया है। दूसरी पंक्ति में तुलसी 'निमि तजे द्रिगंचल' द्वारा समय के जिस ठहराव की ओर संकेत करते हैं वह 'Nimi fled, god of 'winking' द्वारा प्रकट नहीं हो सका। इधर अनुवादक ने 'निमि' और 'द्रिगंचल' शब्दों को ठीक तरह से नहीं समझा। मूल में 'निमि' समय का प्रतीक है और न कि ईश्वर का रूप। 'निमि तजे 'दिगंचल' का अर्थ है निमि राजा का वास सबकी पलकों पर है। श्रीसीताजी निमि कुल की कन्या हैं और श्रीराम उनके पति हैं। लडका-लडकी दोनों वाटिका में एकत्र

60. मानस- 1/229/2
61. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 234, Pg.179

हुए इसीसे मानो राजा निमि सकुचाकर पलकों को छोड्कर चले गये कि अब यहाँ रहना उचित नहीं। पलक छोडकर चले गए, इससे पलक खुले रह गए। इसका अभिप्राय यही है कि निमि यह सोचकर चले गए कि यहाँ हमारे रहने से इनको संकोच होगा जिसे इसके उपस्थित कार्य में विघ्न होगा। अपनी संतान का श्रृंगार कुतूहल देखना माना है। यह शाब्दिक अर्थ है और इसी शाब्दिक अर्थ का शब्दानुवाद अनुवादक ने किया है। इसका व्यंजित अर्थ है 'समय निस्सीम होकर ठहर गया।'[62] सीता सौदर्य के प्रथम दर्शन कर राम आँखों से उसे इतनी तन्मयता से देखने लगे कि उन्हें समय का ज्ञान नहीं रहा मानों समय ठहर गया हो। इस व्यंजित अर्थ तक एटकिन्स नहीं पहुँच सके। अतः मूल पंक्तियों में अभिव्यक्त अर्थ अनुवाद में आते-आते नष्ट हो गया है।

पद्य में सौन्दर्य सृष्टि केलिए रचनाकार कभी-कभी पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करता है। 'रामचरितमानस' में प्रायः सभी पंक्तियों पर शब्दों के कुशल प्रयोग के दर्शन होते हैं। तुलसी ने एक ही पंक्ति में 'सीता' के कई पर्याय रखते हुए मूल पंक्ति में चार चाँद की सृष्टि की है-

"जनकसुता जगजननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की।"[63]

इसका अनुवाद देखिए-

"Fair Janki, daughter of Janak, world mother,

Belov'd by the storeshouse of grace as no other."[64]

मूल पंक्ति में 'जनकसुता', 'जगजननि', 'जानकी' सीता केलिए प्रयुक्त हुए हैं। मूल पंक्तियों में एक ही शब्द के कई पर्याय रख देने पर सौन्दर्य की जो सृष्टि हुई है वह लक्ष्य भाषा में उचित पर्याय न मिलने के कारण गायब हो गयी है। लक्ष्य भाषा में मूल में प्रयुक्त

62. मानस पीयुष- बालकाण्ड, पृ.283
63. मानस- 1/17/4
64. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 18, Pg.19

पर्यायों का शब्दानुवाद ही हुआ है। 'जगजननि' केलिए 'world mother' शब्द हास्यास्पद लगता है क्योंकि जगजननि का अर्थ 'सृष्टि की जननी' कालीया शक्ति है। मूल में जो अर्थ अभिव्यक्त होता है वह 'world mother' में उभर नहीं आता।

पर्यायवाची शब्दों से भाषा-प्रवाह में निरन्तरता बनी रहती है। भाव विशेष की अभिव्यंजना में पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग 'मानस' में हम देख सकते हैं। राम के सेतु निर्माण का समाचार मिलते ही रावण घबरा गया और इस घबराहट से उसके दसों मुख से सागर के दस पर्यायवाची शब्द निकल आए। इसका वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं-

"बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस॥"[65]

इसका अनुवाद देखिए-

"Is it true he has bridged the great ocean, the lord
Of all rivers and streams flowing to it?
The treas'ry of waters, of floods, clouds and down falls !
The ocean bridged ! How could he do it?"[66]

वननिधि, नीरनिधि, जलधि, सिंधु, वारीश, तोयनिधि, कंपति, उदाधि, पयोधि और नदीश सागर के पर्याय है। अनुवादक के पास एक ही शब्द के इतने पर्याय न होने के कारण इनका भावानुवाद किया है। अंग्रेजी में इसकेलिए मात्र 'ocean' शब्द का प्रयोग किया जाता है। मूल में 'सागर' के इतने पर्यायों का वर्णन एक ही पंक्ति में करने से जो सौन्दर्य और प्रवाहात्मकता की सृष्टि हुई है वहीं लक्ष्य भाषा में भावानुवाद करने से नष्ट हो गई है। पर्यायवाची शब्द का विस्तृत अध्ययन तीसरे अध्याय में किया गया है।

काव्य में पर्यायवाची शब्दों के अलावा पारिभाषिक शब्दों का भी अपना महत्त्व है। यह काव्य भाषा की ऊर्जा हैं। मानसकार ने दार्शनिक पदावली के संदर्भ में इन शब्दों का प्रयोग किया हैं। इसका उदाहरण देखिए-

65. मानस- 6/5
66. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI Doha 6, Pg.641

"ईश्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी।

सो मायाबस भयेउ गोसाईं। बँध्यो कीर मर्कट की नाईं॥" [67]

इधर 'जीव' और 'माया' भारतीय दर्शन से जुड़ी शब्दावली है। अतः इसे काव्य भाषा में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के अन्तर्गत रख सकते हैं। इसका अनुवाद देखिए-

"Souls are portions of God and beyond death completely,
Are undefiled, conscious and blissful innately;
Yet Illusion fast in its bindingpow'r clasps them;
Like monkeys and parrots, a flase bondage grasps them."[68]

यह जीव ईश्वर का अंश है। यह सत्य, चेतन एवं आनंदमय है। माया के कारण ही जीव मोह में पड़ता है। ईश्वर का अंश होने के कारण यह अनश्वर है। भारतीय चिन्तन से जुड़े इस तत्त्व को लक्ष्य भाषा में अनुवादक अर्थ के दृष्टि से ठीक तरह से अभिव्यक्त कर पाए हैं लेकिन भारतीय विश्वास को पूर्णतः प्रस्तुत करने में वे सफल नहीं हुए। मनुष्य खुद माया के बस में पड़ता है। अगर ईश्वर पर उसका पूरा विश्वास है तो वह मोक्ष पा सकता है और इस माया के वश में नहीं पडेगा।

काव्यानुवाद में अनुवादक को शब्दों की अपेक्षा भावों पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और मूल रचना की भाव संपदा को गहराई से महसूस करते हुए लक्ष्य भाषा में उतारना चाहिए। परंतु कभी-कभी इन भावों के संप्रेषण में भी अनुवादक गलती कर बैठता है जिसका स्पष्ट विवरण 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में यत्र-तत्र मिल जाता है। जैसे-

"हा जगदेक बीर रघुराया। केहि अपराध बिसारेहि दाया॥
आरतिहरन सरन सुखदायक। हा रघुकुल सरोज दिन नायक॥" [69]

67. मानस- 7/116/1-2
68. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VII, Chaupai 112, Pg.852
69. मानस- 3/28/1

इस पाठ का अंग्रेजी अनुवाद किया गया है इस प्रकार-

> "She cried out, O my Rama, world ruler and brave
> What have I done that you have forgotten to save?
> Help me thou to Raghu's line as sun to the bloom,
> In Whom seekers find peace and all ills meet their doom."[70]

मूल पंक्ति में 'केहि अपराध बिसारिहु दाया' का अर्थ है किस अपराध के कारण मुझ पर दया भुला दी ? इस शब्द का अनुवाद इस प्रकार किया गया है 'What have I done that you have forgotten to save?' मूल पाठ का भावानुवाद ही अनुवादक ने प्रस्तुत किया है जो मूल अर्थ को किसी प्रकार से संप्रेषित नहीं करता । उसी प्रकार 'रघुकुल सरोज दिननायक' याने रघुकुल रूपी कमल के सूर्य जिसकेलिए 'thou to Raghu's line as sun to the bloom' अनुवाद में मूल का अभिप्रेत अर्थ नहीं आ पाया है । अतः यहाँ यह स्पष्ट हो गया है कि अगर मूल में अभिव्यक्त बातों का लक्ष्य भाषा में ठीक संप्रेषण न हो तो अनुवाद अपना चमत्कार खो बैठता है ।

काव्य में मात्र शब्द और अर्थ ही नहीं वरन् अलंकार, छंद, रस, बिम्ब, प्रतीक आदि कई तत्त्व भी समाहित हैं जिससे काव्य में सौन्दर्य की सृष्टि होती है । काव्यानुवाद के संदर्भ में अनुवादक के समक्ष मात्र भाषा की समस्यायें नहीं होती बल्कि उपर्युक्त सारे तत्त्व भी चुनौती होते हैं । इसका एक उदाहरण देखिए-

"कबितरसिक न रामपद नेहू । तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥" [71]

इन पंक्तियों का अनुवाद एटकिन्स ने इस प्रकार किया-

> "The poets who love not the Lord's feet sincerely
> Will find in my verses the comical merely."[72]

70. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III, Chaupai 31, Pg.543-544
71. मानस- 1/8/2
72. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 9, Pg.10

मूल पाठ के पहले अंश में 'कबितरसिक न रामपद नेहू' में 'दीपक अलंकार' के प्रयोग से चमत्कार हुई है। दो पदों के बीच में प्रयुक्त कोई शब्द यदि दोनों पदों के अर्थ को प्रकाशित करे तो बीच के शब्द में दीपक अलंकार होता है। इधर 'न' शब्द का संबंध मात्र दूसरे शब्द से नहीं है वरन् पहले शब्द से भी है। अत: इन पंक्तियों का अर्थ निकलता है 'जो न तो कविता के प्रेमी है और न जिनका रामचन्द्र के चरणों में प्रेम है। दीपक अलंकार से अपरिचय के कारण एटकिन्स ने 'न' को बाद के पद में राम पद नेहू के साथ जोड दिया है। तुलसी के उक्त कथन में दीपक अलंकार को अंग्रेजी में रूपान्तरित नहीं किया जा सकता। इसलिए मूल चौपाई में जो चमत्कार है, वह अनुवाद में गायब हो गया।

शब्द प्रयोग से भी अलंकारों का निर्माण किया जाता है। इसमें भाव सौन्दर्य और चमत्कार शब्दों के प्रयोग पर निर्भर होता है। स्रोत भाषा में प्रयुक्त इन शब्दालंकार को लक्ष्य भाषा में ले आना अनुवादक केलिए अग्नि परीक्षा से कम नहीं है। 'बालकाण्ड' में सीता गौरी पूजा के समय अपनी मन की इच्छा प्रकट करती हुई वर याचना प्रसंग में मानसकार ने श्लेष अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है-

"पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा।"[73]

इस पंक्ति का अनुवाद इस प्रकार किया है-

"Her heart warm with longing, the fair royal maid,

For a good worthy husband devotedly prayed."[74]

इस उद्धरण में 'वर' के दो अर्थ है एक वरदान तथा दूसरा वर याने पति। यहाँ श्लेष अलंकार का प्रयोग कर मानसकार ने गुप्त रूप से सीता द्वारा सुभग वर का वरदान माँगने की बात कहीं है। अनुवाद में एक ही शब्द का प्रयोग कर अनुवादक मूल के तरह दो अर्थों को व्यक्त नहीं कर पाए। यहाँ 'वर' के दोनों अर्थ को पृथक-पृथक देना पडा है।

73. मानस- 1/227/3
74. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 232, Pg.178

लेकिन 'devotedly prayed' में 'वरदान' अर्थ अभिव्यक्त नहीं होता। अत: इससे स्पष्ट है कि अनुवादक अलंकारों का अनुबाद करते समय मूल के साथ न्याय नहीं कर पाता।

मनुष्य अपने कथन की लयात्मकता केलिए अनुप्रास अलंकार का प्रयोग करता है। 'मानस' में इसका भरपूर प्रयोग देखा जा सकता है। देखिए-

"परनकुटी प्रियप्रियतम संगा। प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा॥"[75]

"With Rama, the grass hut was love's very station,
Each beast and each bird a beloved relation."[76]

श्रीराम के साथ वन में रहनेवाली सीता केलिए वहाँ की सभी चीजें सुखदायक लगती हैं। इस दृश्य को 'प' व्यंजन की कई बार आवृत्ति से अनुप्रास द्वारा सुन्दर ढ़ंग से मानसकार ने चित्रित किया है वह अनुवाद में आते ही खो गया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि शब्दालंकार हो या अर्थालंकार दोनों की अभिव्यक्ति अनुवादक केलिए लक्ष्य भाषा में कर पाना कठिन ही नहीं वरन् असंभव भी है।

काव्यभाषा में सौन्दर्य एवं वर्ण्यविषय में प्रभाव सृष्टि केलिए छंद अनिवार्य तत्त्व है। 'मानस' में 'दोहा चौपाई शैली का अनुपम प्रयोग किया है। इस काव्य में दोहा-चौपाई एवं सोरठा छंद का सुन्दर प्रयोग देखा जा सकता है। मूल में चित्रित इन छंदों को लक्ष्य भाषा में उतार पाना अनुवादक केलिए कठिन कार्य है। मानस में चित्रित एक दोहा और 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में इस दोहा की अभिव्यक्ति से इसका स्पष्ट संकेत मिलेगा। देखिए-

*"जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान॥
कौतुक देखहिं सैल बन भूतल भूरि निधान॥"*[77]

75. मानस- 2/139/3
76. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book II, Chaupai 140, Pg.379
77. मानस-1/1

इस पंक्ति के मूल में विषम चरणों में 13-13 और सम चरणों में 11-11 मात्राएँ हैं। कुल 24 मात्राएँ होने के कारण यह दोहा नाम का मात्रिक छंद है। इस दोहे का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Whoever this salve shall apply to his eyes,

Shall be thereby enlightened and cheered,

And enabled to look on the past times of Rama

In woods and hills where he appeared."[78]

लक्ष्य भाषा में 'दोहे' केलिए प्रयुक्त शब्द है 'कॅपलेट'।[79] लक्ष्य भाषा में पंक्तियों के चार चरण हैं जिससे यह कॅपलेट के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता। इससे यह स्पष्ट है कि मूल में अभिव्यक्त छंद का रूपांतरण करने में अनुवादक असमर्थ है।

काव्य में रस, अलंकार आदि की तरह सौंदर्य बढ़ानेवाला तत्त्व है प्रतीक। कम से कम शब्दों के द्वारा अधिक से अधिक भावों की अभिव्यंजना प्रस्तुत करने की शक्ति इसमें होती है। भिन्न देशों की संस्कृति, जलवायु आदि की भिन्नता के कारण देश-देश के प्रतीक भिन्न हैं। यही कारण है प्रतीकों का अनुवाद अनुवादक केलिए पेचीदा समस्या है। मानस में तुलसीदास ने कई प्रतीकों का प्रयोग किया है जो भारतीय संस्कृति और विश्वासों से जुड़ी हुई है। देखिए-

"ते जड कामधेनु गृह त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी।"[80]

भारतीय संस्कृति में कामधेनु इच्छा पूर्ति की प्रतीक है। लेकिन मानसकार ने इस परंपरित प्रतीक को नए ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। यहाँ 'कामधेनु को भक्ति का प्रतीक माना है। इस मूल पाठ का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

78. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I, Doha 1, Pg.3
79. A Couplet is a pair of rhymed lines that are equal in length. A glossary of literary terms, Pg.294
80. मानस- 7/114 (ख) /1

"Are like fools who in search of the milk weed will roam,

To get milk-leaving all their rich milch-cows at home."[81]

अनुवादक ने 'कामधेनु' केलिए 'rich milch-cows' रख दिया है । यह अनूदित शब्द मूल में प्रयुक्त शब्द केलिए उचित नहीं है और न ही मूल अर्थ की अभिव्यक्ति कराती हैं । मूल शब्द से जो भाव पाठक के मन में जागृत होता है वह अनूदित शब्द में नष्ट हो गया है ।

प्रतीकों का अनुवाद करते समय अनुवादक को इन प्रतीकों के साथ जुड़े सांस्कृतिक महत्त्व को समझना अत्यंत आवश्यक है ।

भावों की अभिव्यक्ति ही रस को जन्म देता है । कवि के मन में जन्में भाव ही रस का रूप लेकर वाणी लेती है । रस के बिना अर्थ की प्रवृत्ति नहीं होती और इसी कारण रस काव्य का प्रधान अंग माना जाता है । 'मानस' में मानसकार ने सभी रसों का प्रयोग किया है जिसका अनुवाद अनुवादक एक हद तक करने में सफल हुए हैं लेकिन मूल की सहजता पूर्ण रूप से उतार नहीं पाए हैं । कुछ उदाहरण देखिए-

"जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं । कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं ।
काचे घट जिमि डारौं फोरी । सकऊँ मेरू मूलक जिमि तोरी ॥"[82]

जनक ने भरी सभा में रघुवंशी राम-लक्ष्मण के उपस्थित रहते हुए भी धरती को वीर विहीन कह दिया है उस पर लक्ष्मण ने जो अभिव्यक्ति की है उसमें अक्रोश का पुट लिए है । इस प्रसंग में यह कथन वीर रस का उत्तम उदाहरण है । इसका अनुवाद हुए हैं-

"If you will but give me your royal command,

I'll lift the whole world like a ball in one hand;

81. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book VII, Chaupai 110, Pg.849
82. मानस- 1/252/2-3

I 'll toss it and break it a mere earthen pot !

Mount Meru I'll wring like a herb from the spot."[83]

जहाँ मूल में वीर रस का उल्लेख मिलता है वहीं अनुवाद में रौद्र रस की झलक ज़्यादा दिखाई देती हैं । यहाँ दोनों भाषाओं के बीच जो अन्तर है यहीं प्रतिपादित होता है । अनूदित पंक्तियों में वीर रस को प्रस्तुत करने में अनुवादक सफल नहीं हुआ है ।

चित्र को द्रवित करने की अपार शक्ति से समन्वित होने के कारण तथा अपने स्थाई भाव करुणा या संवेदना को सर्वापेक्षा व्यापकता के कारण इस रस का विशेष महत्त्व है । इस रस का स्थायी भाव शोक है ।

"सोक बिबस कछु कहइ न पारा । हृदय लगावत बारहि बारा ।।" [84]

यहाँ शोक विवश होने के कारण राजा कुछ कह नहीं सकते । वे बार बार श्रीरामचन्द्रजी को हृदय से लगाते । इसका अनुवाद देखिए-

"Not a word could he utter, but dumb in his grief

Clasped his son to his heart, sought but found no relief."[85]

मानसकार ने जिस सहजता से 'शोक' को स्थायीभाव के रूप में प्रस्तुत करते हुए राजा दशरथ के दु:ख को प्रस्तुत किया है वह अनूदित कृति में मात्र शब्दों का जाल है ।

'रस' के बिना काव्य नीरस प्रतीत होता है और इसी कारण अनुवादक को चाहिए की काव्य के (मूल) सौन्दर्य को बनाए रखते हुए अनुवाद को प्रस्तुत करे क्योंकि काव्य में व्यक्त सौंदर्य उसके शब्द के कारण ही नहीं अपितु उसमें व्यक्त भाव, रस, लय भी प्रमुख भूमिका निभाते हैं ।

---

83. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 257, Pg.195
84. मानस- 2/43/3
85. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 44, Pg.312

बिंब काव्य में प्रयुक्त शब्द चित्र है। दूसरे शब्दों में बिंब काव्य भाषा की ऐसी शक्ति है जो मूर्त एवं विशिष्ट होती है। • हिन्दी में यह शब्द अंग्रेजी के 'इमेज' (Image) शब्द के पर्याय के रूप में प्रचलित है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में अपने आसपास के जीवन के विविध उपकरणों से बिंबों को ग्रहण किया है। प्रकृति और प्राकृतिक दृश्यों का भी विशेष महत्त्व मानस में देखने को मिलता है। जैसे-

"चलेमत्त गज जूथ घनेरे। प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे॥"[86]

इसका अनुवाद है-

"Roused elephant droves, in control hardly held,

Moved like great monsoon clouds by strong storm winds propelled."[87]

मूल पाठ में आकाशीय बिंबों में मेघ तथा विद्युत बिम्बों को स्थान दिया गया है। वर्षकालीन बादलों के विशाल आकार के बिंब 'प्राबिट जलद मरुत जनु' में चित्रित किया गया है जो राक्षससेना के गज समूह केलिए प्रयुक्त किया है। अनुवादक ने स्रोत भाषा का शब्दानुवाद प्रस्तुत किया है। बिंब का जो चित्रण मूल में बहुत सहजता से व्यक्त होता है वह अनूदित पंक्तियों में मात्र शब्दों का जाल प्रस्तुत करता है।

मानसकार ने प्राकृतिक उपकरणों के अलावा भारतीय संस्कृति के आधार पर भी बिंबों का प्रयोग किया है। भक्ति के कई रूप देखे जा सकते हैं। भारतीय संस्कृति में गुरु भक्ति का प्रमुख स्थान है। इस पर आधारित मानस में चित्रित एक उदाहरण देखिए-

"बंदउँ गुरु पद कंज कृपासिंधु नररूपहरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर॥"[88]

---

86. मानस-6/78/2
87. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 79, Pg.702
88. मानस- सोरठा 1/1/5

यहाँ पर गुरुवंदना के प्रसंग में जो बिंब विधान हुआ है, वह गुरु के प्रति आदर तथा सम्मान की व्यंजना करता है। इसका अनुवाद देखिए-

"My own master's feet I revere,

Sea of kindness, Lord vishnu in man's form below,

By whose words, Than the sun's rays more clear,

Error's night is dispersed, as night always must go."[89]

मूल और अनुवाद की तुलना करते समय यह स्पष्टत: व्यक्त होता है कि अनुवादक ने लक्ष्यभाषा में बिंबों का प्रयोग तो किया है लेकिन गुरु के आदर सूचित करने वाला बिंब है 'नररूपहरि' जो विष्णु अवतार का चित्रण कराता है। पाश्चात्य संस्कृति में ऐसा भाव नहीं है और इसी कारण अनुवाद करते समय बिंबों का प्रयोग बहुत ही र्निभिक प्रतीत होता है।

बिंबों का अनुवाद करते समय मूल का अर्थ समझने केलिए जिस प्रकार भाव को नंगा करने की आवश्यकता होती है उसी प्रकार लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति केलिए उससे उचित जामा पहनाने की भी ज़रूरत होती है।

भाषा में मुहावरे और कहावत भी जान डालती है। इनके प्रयोग से भाषा की सौन्दर्य बढ़ती है। लेकिन इनके प्रयोग से अनुवादक को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। मानस में संदर्भ अनुसार इनका प्रयोग किया गया हैं। देखिए-

"पायस पलिअहिं अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहूँ कि कागा।"[90]

कौओं को खीर खिलाकर बड़े प्रेम से पालिए, परन्तु वे क्या कभी मांस के त्यागी हो सकते हैं? भारतीय लोक जीवन से जुड़ी यह कहावत आचरण और स्वभाव पर आधारित है। इसका अनुवाद देखिए-

89. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Soratha 1, Pg.2
90. मानस- 1/4/1

"You may feed a crow on the finest of fare,

But he'll still be a meat-eating crow I declare."[91]

'पायस' भारत में मिलने वाला एक व्यंजन है, अनुवाद में कहीं भी इस शब्द का प्रयोग नहीं किया है। यहाँ पर अनुवादक ने भावानुवाद और शब्दानुवाद के माध्यम से बात को अभिव्यक्त किया है। मूल में दुष्ट लोगों के स्वभाव पर प्रकाश डालते हुए मानसकार कहते हैं कि शत्रु और मित्र के सुनते ही ये लोग जल उठते हैं। उनसे अपने इस आचारण को छोड़ने की विनय करते हैं लेकिन वे कभी चूकेंगे नहीं। लक्ष्य भाषा में साधारण भाषा में बातों को प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष

काव्य ललितपदों से युक्त ऐसी विधा हैं जिसे पढ़कर या सुनकर पाठक या श्रोता के मन में आनन्द उत्पन्न होता है। वह अपने भावों को शब्द रूपी मोती में पिरोता है और अभिव्यंजित करता है। रस, अलंकार, ध्वनि आदि से इसे पुष्ट कर उसे काव्य में रूपायित करता है। इसी प्रतिभा को आत्मसात् कर भाव ग्रहण कर अनुवादक दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। काव्य का अनुवाद इसलिए बहुत दुष्कर है क्योंकि मूल की शैली को बनाए रखते हुए अनुवाद करना अनुवादक केलिए अग्नि परीक्षा है। 'रामचरितमानस' के कलात्मक सौन्दर्य को एटकिन्स अपने अनुवाद में रूपान्तरित नहीं कर सके हैं। भारतीय संस्कृति और परंपरा से जुड़े शब्द, प्रतीक और बिम्बों का शत-प्रतिशत अनुवाद नहीं हुआ है। यद्यपि मानस में प्रयुक्त अलंकार, रस, छंद, शब्द- शक्ति के अर्थाभिव्यक्ति में अनुवादक सफल हुए हैं मूल के सौन्दर्य की उद्‌भावना करने में वे असफल रहे हैं।

91. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I Chaupai 5, Pg.6

दूसरा अध्याय

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में भावपक्ष के संदर्भ में अनुवाद की समस्याएँ

दि रामायण ऑफ तुलसीदास : एक परिचय

सारी जनता द्वारा स्वीकृत, देश भर में विख्यात भारतीय संस्कृति का वाहक तुलसीदास के रामचरितमानस का एटकिन्स द्वारा किया गया अंग्रेजी काव्यानुवाद है 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास'। यह अंग्रेजी में रामचरित मानस का पहला काव्यानुवाद है। कहना ही पडेगा कि एटकिन्स इस महान ग्रंथ के काव्यानुवाद में कुछ हद तक सफल हुए हैं।

'रामचरितमानस' के अंग्रेजी में किए गए जितने भी अनुवाद हैं उनमें एटकिन्स का पद्यानुवाद ही विशेष उल्लेखनीय है। इस पद्यानुवाद के दो भाग है। पहले भाग में 'बालकाण्ड' और 'अयोध्याकाण्ड' है और दूसरे में 'अरण्य काण्ड' से लेकर 'उत्तरकाण्ड' तक। इस अनूदित ग्रंथ की विशिष्टता का कारण केवल पद्य में अनूदित होना ही नहीं बल्कि एटकिन्स की तुलसी एवं 'मानस' के प्रति अपार श्रद्धा भी कारण है। इस श्रद्धा ने उनके परिश्रम को एक विशेष आयाम भी प्रदान किया। इन विशेषताओं के बावजूद भी इस अनूदित कृति में कुछ विषमताएँ हमें मिलती हैं। स्वयं अनुवादक के शब्द देखिए- "This is not intended as a word - for word literal translaton; indeed, such would not be a true translation, for it would often misrepresent in English what the author tried to say in Indian language of his day. It is intended to interpret, while following the text as closely as possible; thus at times phrases may seem to differ from the original."[1] यही 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में अनुवाद की समस्या है। भारतीय भाषा का अंग्रेजी में अनुवाद हमेशा समस्याओं को उत्पन्न कर सकता है। भाषा के विभिन्न प्रयोग एवं शैलियाँ अनुवाद को मूल से बहुत दूर ले जा

1. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Introduction, Pg. xvi

सकती हैं। उपर्युक्त पंक्तियों में जो कहा है, वह बिलकुल सच है। मानस जैसे काव्य ग्रंथ का अनुवाद सफलता के साथ प्रस्तुत करना किसी भी अनुवादक की शक्ति के बाहर की बात है। एटकिन्स इसके अपवाद नहीं हो सकते । कई जगहों पर अनेक प्रसंगों में वे असफल बन गए हैं जिनका विस्तृत विवेचन आगे किया जायगा। फिर भी जो महान कार्य उन्होंने किया वह निस्संदेह सराहनीय है।

कविता का संबंध हृदय से होता है। कवि अपने हृदय में जागृत भावों को वेदना को, कसक एवं पीडा को कविता के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। यह अभिव्यक्ति कम से कम शब्दों में बहुत कुछ कहने की होती है। दूसरे शब्दों में अगर हम कहें तो कविता कवि के अन्तर की पुकार है। अगर कविता से पाठक के हृदय में वही वेदना, कसक और पीडा का संचार नहीं होता तो वह कविता निरर्थक मानी जाती है। काव्य भावाश्रयी है। जिस प्रकार काव्य में कला पक्ष के माध्यम से काव्य रूप की अभिव्यक्ति होती है जैसे भाषा, अलंकार, छंद, वर्णन आदि उसी प्रकार अनुभूति की अभिव्यक्ति भाव के माध्यम से होती है। भावाश्रयी होने के कारण ही इसे अनुभूति पक्ष भी कहा जाता है। भाव पक्ष के माध्यम से कवि अपने मन में जागृत भावों को अभिव्यक्त करता है। अनुवाद करते समय अनुवादक को मूल कवि या लेखक के मन में जागृत भावों को ही लक्ष्य भाषा में वाणी देने का काम करना पडता है और यह बहुत कठिन हैं। अनुवादक को इस बात पर ध्यान देना है कि अनुवाद में अनुवादक की अनुभूति न पनपे क्योंकि ऐसा होने पर मूल भाषा में व्यक्त भावों की सहजता और स्वाभाविकता लक्ष्य भाषा में आते ही नष्ट हो सकती है।

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में रामचरितमानस के प्रमुख प्रसंग-अनुवाद के संदर्भ में

'रामचरितमानस' में मानवीय मनोभावों को चित्रित करने वाले अनेक प्रसंग फैले पडे हैं। यही इस ग्रंथ की महत्ता का मूल कारण है। यही नहीं इस महान ग्रंथ की रचना

भारतीय संस्कृति की संपन्नता को दिखानेवाले रामायण ग्रंथों एवं पुराणों के आधार पर हुई है। स्वयं तुलसीदास ने रामचरितमानस में कहा है-

"नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।"[2]

अर्थात् जो रामायण में कहा गया है और जो अनेक पुराणों तथा शास्त्रों में कहा गया है और जो कुछ संस्कृत के अन्य ग्रंथों से प्राप्त हुआ है उन सब को मिलाकर तुलसीदास जी ने इस काव्य की रचना की है ।

भारतीय संदर्भ में सभी लोग वाल्मीकि रामायण, महाभारत आदि से बिलकुल परिचित हैं। अत: इस श्लोक के उल्लेख से ही वास्तविकता स्पष्ट हो जाती है। अनुवाद के संदर्भ में अनुवादक ने भी इस श्लोक का अनुवाद प्रस्तुत करते समय इस प्रकार कहा है-

"Says Tulsi, as in many ancient chronicles

And other scriptures is recorded Rama's fame."[3]

अनुवादक ने भी 'ancient chronicles' शब्द से इन प्रसंगों की ओर संकेत अवश्य किया है लेकिन मूल में बताये गये रामायण एवं अन्य शास्त्रों और पुराणों का उल्लेख वे अनुवाद में नहीं कर सके जिससे अनुवाद पढ़ने वाले लोग यह नहीं समझ सकते कि इस कृति में कौन-कौन से प्रसंग आ गए हैं। यदि पाद टिप्पणी में इनका सही विवरण दिया होता तो अनुवाद पढ़नेवाले पाठकों को इसकी सही सूचना मिलती।

'रामचरितमानस' को सात काण्डों में विभक्त किया गया हैं जहाँ प्रत्येक काण्ड का नामकरण संदर्भ अनुसार किया गया है। मानस में रामजन्म, बाल लीला, राम-विश्वामित्र-मिलन, पुष्प-वाटिका प्रसंग, सीता स्वयंवर, परशुराम-पराजय और राम विवाह राम के राज्याभिषेक, राम-सीता वनगमन, अत्रि मिलन, शूर्पणखा-विरूपण और राक्षस सेना का

2. मानस- 1/7 (श्लोक)
3. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Sanskrit invocation & Praise-7, Pg.1

नाश, सीता हरण, राम-हनुमान मिलन, लंकादहन, अंगद दौत्य, रावण वध, राम के अवध पुरागमन, काक-गरुड संवाद आदि प्रमुख प्रसंग है। अनुवाद के संदर्भ में इन प्रसंगों को प्रस्तुत करना कठिन है। इसलिए इन्हीं मुख्य प्रसंगों का विवेचन नीचे किया जा रहा है।

राम जन्म

'रामचरितमानस' में राम के अवतारों को प्रतिकल्प में भिन्न बतला कर तुलसी उनके लिए अनेक कारणों की योजना करते हैं।

"नाना भाँति राम अवतारा। रामायन सत कोटि अपारा।"[4]

अर्थात् अनेक प्रकार से श्रीरामचन्द्र जी के अवतार हुए हैं और सौ करोड तथा अपार रामायण हैं।

अवतारवाद पर भारतीयों का विश्वास है। इसलिए भारतीय साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक केलिए इन विश्वासों का गहरा ज्ञान होना चाहिए। नहीं तो भारतीय संस्कृति को छोडकर अन्य संस्कृति के लोग असमंजस में पड सकते हैं। राम-जन्म के कारण व्यक्त करते हुए मानसकार ने 'नाना भाँति राम अवतारा' कहा है। इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है-

"In numberless forms has he been incamated

In numberless forms is his story related."[5]

यहाँ पर भारतीय लोग समझ सकते हैं कि 'नाना भाँति अवतार' से तुलसी का क्या उद्देश्य है। लेकिन पाश्चात्य लोग इससे अनभिज्ञ रहे हैं। इसलिए ऐसे पाठकों के वास्ते अनुवादक को पाद-टिप्पणी के जरिए काम लेना चाहिए था। पुराणों में ईश्वर के अवतारों की संख्या 24 मानी गई है। परन्तु इनमें से मात्र दस अवतार मुख्य माने गए हैं-

4. मानस- 1/32/3
5. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I, Chaupai 33, Pg.31

मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि। तुलसीदास ने 'नाना भाँति' कहकर इन्हीं अवतारों की ओर संकते किया है। परन्तु 'numberless forms' शब्द का प्रयोग अनुवाद को मूल से बहुत दूर ले गया है। 'numberless' का अर्थ है 'असंख्य या अगणित'। यह संदर्भ के अनुकूल नहीं है। यहाँ राम जन्म के विभिन्न प्रसंगों पर विचार करते हुए मूल में जो कारण बताए गए हैं वे लक्ष्य भाषा में अव्यक्त ही रह गए हैं। जैसे-

"जब जब होइ धरम कै हानी। बाढहिं असुर अधम अभिमानी॥

\+ \+

तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जनपीरा॥"[6]

गीता से प्रेरित होकर धर्महानि और अधर्मवृद्धि की चरम स्थिति को दे जन्म का सामान्य कारण मानते हैं। उनके अनुसार यह स्थिति रावण के अत्याचारों से उत्पन्न होती है। रावण समस्त आसुरी प्रवृत्तियों का प्रतीक है, इसीलिए अवसर मिलने पर वह इतने अत्याचार करता है कि पृथ्वी तक काँप जाती है और देवताओं की प्रार्थना पर रावण के विनाश केलिए और धर्म-रक्षा हेतु विष्णु रामावतार ग्रहण करते हैं। इसका अनुवाद इस प्रकार दिया गया है।

"Whenever religion and goodness are waning

When devilish proud evil power is gaining

++ ++ ++

T'is then he some bodily form must assume

The godly to save and all evil consume."[7]

'प्रभु धरि बिबिध सरीरा' में अवतारवाद से भगवान का नया रूप या शरीर धारण करने की ओर संकेत मिलता है। अनुवाद में 'some bodily form must assume' देकर

6. मानस- 1/32/3
7. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I, Chaupai 121, Pg.101

अनुवादक ने मूल भाव को संप्रेषित नहीं किया। इससे संबंधित एक ओर उदाहरण देखिए-

"जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा। तुम्हहिं लागि धरिहौं नरबेसा।"[8]

"Away with your fears sages, saints and immortals;
For you I will pass once again thro' birth's portals."[9]

'नरबेसा' से मतलब मनुष्य रूप धारण करना। असूरों के अत्याचारों से धरती में जो आतंक फैल रहा था उसके विनाश केलिए भगवान विष्णु 'श्रीराम' का रूप धारण करते हैं। भारतीय संस्कृति में इन बातों से परिचित पाठक इस तथ्य को समझ पाता है लेकिन पाश्चात्य संस्कृति से आने वाला पाठक इस बात को समझ नहीं पाता। 'नरबेसा' केलिए 'birth's portals' अर्थ की दृष्टि से ठीक तो है लेकिन अवतारवाद से संबन्धित जो कहानियाँ प्रचलित हैं उनसे लक्ष्य भाषा का पाठक जब तक अवगत नहीं होता इस प्रसंग को समझ नहीं पाता। 'नरबेसा' में अवतारवाद का जो सांस्कृतिक तत्त्व अभिव्यक्त हुआ है वह 'again thro' birth's portals' में नहीं मिलता।

'रामजन्म' के विशेष कारणों में नारद और वृन्दा के द्वारा राम को दिए गए शाप और राम द्वारा मनु और शतरूपा तथा कश्यप और अदिति को दिए गए वरदानों का भी विवरण मानस में मिलता है। इसका एक उदाहरण देखिए-

"चाहौं तुम्हहिं समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।
देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुनानिधि बोले॥
आपु सरिस खोजौं कहँजाई। नृप तव तनय होब मैं आई॥"[10]

मनु-शतरूपा दम्पती से भगवान् विष्णु वर माँगने को कहते हैं तो मनु उनसे यह याचना करते हैं कि वे प्रभु समान पुत्र चाहते हैं। उनकी प्रीति देखकर और अनमोल वचन

8. मानस- 1/186/1
9. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I, Chaupai 193, Pg.147
10. मानस- 1/149

सुनकर प्रभु उनसे उनके पुत्र बनकर जन्म लेने का वादा करते हैं। इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"A son like to thee is the boon that I crave;

From thee, my good Lord, naught is hidden.

Observing their love, their words hearing so precious,

"So shall it be done", said the Lord all propitious;

None else is my equal in virtue and worth;

Hence, born as your son I'll again come to earth."[11]

मूल पंक्तियों का शब्दानुवाद देते हुए अर्थ संप्रेषण में अनुवादक सफल तो हुआ है लेकिन 'तव तनय होब मैं आइ' का 'born as your son I'll again come to earth' दिया है जहाँ 'again come to earth' को तब तक लक्ष्य भाषा पाठक नहीं समझ सकता जब तक वह 'अवतारवाद' को समझे।

राम जन्म के विभिन्न कारणों का संकेत जिस प्रकार मानस में किया गया उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास अनुवादक ने किया है। परन्तु दो भिन्न संस्कृतियों से जुडे होने के कारण बातों को सहज ढंग से प्रस्तुत करने में वे असफल रहे हैं। राम जन्म का यह प्रसंग जितनी श्रद्धा और भावुकता से मूल पाठ में व्यक्त किया गया है वह लक्ष्य भाषा में उतना प्रभावशाली नहीं बन पाया है।

अहल्या का उद्धार

राम का विश्वमित्र के साथ यज्ञ रक्षार्थ चले जाना बालकाण्ड का दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रसंग है। 'मानस' में विश्वमित्र राम के ईश्वरत्त्व से सुपरिचित हैं, इसलिए वे वन में राक्षसों से अपने यज्ञ की रक्षा केलिए दशरथ से राम और लक्ष्मण को भेजने की याचना करते हैं।

11. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 150, Pg.120

वसिष्ठ के समझाने पर राजा अपने पुत्रों को विश्वमित्र के हाथों में सौंप देते हैं। वन मार्ग में जब ताटका उन पर आक्रमण करती है तब राम उसका वध कर उसे दीन जानकर 'निजपद' देते हैं। विशवमित्र राम को बहुत विद्याएँ सिखाते हैं। 'निशाचरनाश' में राम और लक्ष्मण सफल होते हैं और आश्रम में शान्ति स्थापित होती है। मिथिला से जब 'धनुर्यज्ञ' का निमन्त्रण मिलता है तो विश्वमित्र राम और लक्ष्मण के साथ वहाँ प्रस्थान करते हैं। मार्ग में उन्हें विश्वमित्र-अहल्या पाप और शाप की कथा बतलाते हैं और चरण स्पर्श द्वारा शिला में परिवर्तित अहल्या का उद्धार करने का आग्रह राम से करते हैं। राम आज्ञा का अनुसरण करते हुए अहल्या को शाप मूक्त कर देते हैं-

"परसत पद पावन सोकनसावन प्रगट भई तपपुंज सही।"[12]

शोक का नाश करनेवाले श्रीराम जी के चरणों का स्पर्श पाते ही तपोमूर्ति अहल्या प्रकट हो जाती है। इस महत्त्वपूर्ण प्रसंग (राम-विश्वमित्र मिलन) का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय अनुवादक ने मुख्यत: भावानुवाद का ही सहारा लिया है। मूल पंक्तियों के अनुवाद से ही यह स्पष्ट होता है-

"At the touch of those feet, That all sorrows defeat,
From her bondage the woman awoke." [13]

इधर श्रीराम के चरण कमल के स्पर्श से उद्धार पाई हुई 'अहल्या' को मूल में 'तपपुंज' विशेषण देते हुए मूल में जो श्रद्धा भाव दिखाया है उसी का लक्ष्य भाषा में 'woman' संज्ञा देकर अनुवाद किया गया है। मूल में जो आदर सूचक भाव है वह लक्ष्य भाषा में नष्ट हो गया है। 'woman' शब्द का प्रयोग कर अनुवादक मूल में अभिव्यक्त प्रभाव को नष्ट करते हैं। 'Bondage' शब्द की कवि अपनी ओर से जोडते हैं। इसका अर्थ 'गुलामी या दबाव' में आना है। मूल में कहीं गई बात से विपरीत हटकर ही अनुवादक यहाँ अपने मत को प्रकट करते हैं जिससे मूल में अभिव्यक्त अर्थ नष्ट हो गया है।

---

12. मानस- 1/210/1 (छं.)
13. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I, Chhand 22, Pg.165

अहल्या-प्रसंग में अनुवादक ने अनूदित कृति में पाद-टिप्पणी के माध्यम से.अहल्या के शाप के पीछे की कथा को व्यक्त नहीं किया है। रामायण की कथा को न जानने वाले पाठकों के मन में अहल्या की कथा जानने की जिज्ञासा रहेगी ही और निःसंदेह वे शब्दानुवाद से तृप्त नहीं होंगे। उदाहरण स्वरूप-

"गौतमनारि श्रापबस उपलदेह धरि धीर।
चरनकमल रज चाहति कृपा करहु रघुवीर।"[14]

गौतम मुनि की स्त्री शाप के कारण पत्थर की देह धारण किए हुए है। आपके चरण कमलों की धूलि चाहती है। हे रघुबीर इसपर कृपा कीजिए। इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"This is Gautama's wife, who by pow'r of a curse
Became stone, and in patience must wait
For the touch of the dust of your lotus-like feet;
Lord, be kind, set her free from this fate."[15]

यहाँ पर अनूदित पंक्ति में 'श्रापबस' (by pow'r of a curse) की अभिव्यक्ति केलिए कोई पाद-टिप्पणी नहीं है जिसे पढकर पाठक अपना संदेह-निवारण कर सकें। यहाँ अहल्या को किसने शाप दिया, क्यों दिया आदि सवाल पाठकों के मन में उठते हैं। विदेशी संस्कृति से आने वाला पाठकों के मन में उठनेवाले इन सवालों के जवाब प्रस्तुत करने में अनुवादक असफल हुए हैं।

पुष्प-वाटिका प्रसंग :

'अहल्योद्धार' के बाद बालकाण्ड में चित्रित प्रमुख प्रसंग है, 'पुष्प-वटिका प्रसंग'। मिथिला में पहुँच कर दूसरे दिन प्रातःकाल जब राम लक्ष्मण के साथ विश्वमित्र के 'देवार्चन' केलिए पुष्प-चयन के उद्देश्य से जनक-वाटिका पहुँचते हैं, उसी समय गौरी पूजा केलिए

14. मानस-1/210
15. The Ramayana of Tulsidas (V ol. I) Book I, Doha 208, Pg.165

सखियों के साथ सीता मन्दिर जाती हुई संयोगवश वहाँ आ जाती है । एक सखी के कहने पर कि राम और लक्ष्मण बाग में हैं सीता की आँखें दर्शन के लिए आकुल उठीं । सीता जी को आते देखकर श्रीराम के मन का जो भाव व्यक्त होता है उसे मानसकार ने बहुत ही सुन्दर रूप से लय और ताल की सहायता से ध्वन्यात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है-

"कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि ।"[16]

इसमें मानसकार ने ध्वनि-बिंब को संपृक्त किया है । इस ध्वनि वैभव को नेत्र निमीलित करके ही देखा जा सकता है । ध्वनि वैभव का यह उत्तम उदाहरण अनुवाद में अपना 'ध्वनि वैभव' और 'नाद सौंदर्य खो बैठा है-

"At the sound of the tinkling of anklet and bangle."[17]

दूसरी दृष्टि से अगर इस पर विचार करें तो 'कंकन, किंकिनि, नूपुर ये तीनों विभिन्न अङ्गों के आभूषण हैं- जैसे कंकन हाथ का आभूषण है, किंकिणी कमर का और नूपुर पैरों का । हाथों के हिलने पर कंकण में मधुर स्वर उठता हैं और चलने पर किंकिणी से मधुर स्वर निकलता हैं । पैर रखने पर नूपुरों से विशेष ध्वनि आती है । यहाँ पर शब्दों की ध्वन्यात्मकता से मानसकार श्रृंगार रस को उद्दीप्ति करने में अत्यधिक सफल हुए हैं । यह रस मात्र राम के मन में उद्दीप्त होता हैं । पहले दो आभूषणों की ध्वनि धीमी है लेकिन नूपुर की ध्वनि गंभीर हैं । मूल में जो प्रयोग हुआ पाठक उसका एहसास कर सकता है । अनुवाद करते समय अनुवादक को' 'at the sound of' शब्द जोड कर इन आभूषणों का उल्लेख करना पडा हैं । 'किंकिणी' ऐसा आभूषण है जो भारत में मिलता है । लक्ष्यभाषा में इसकेलिए उचित शब्द न मिलने के कारण अनुवादक ने इस शब्द को छोड दिया है जिससे मूल में चित्रित ध्वन्यात्मकता फीकी पड गयी है ।

---

16. मानस- 1/229/1
17. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 234, Pg.179

निष्कर्ष रूप से अगर पुष्प-वाटिका प्रसंग के संदर्भ पर अनुवाद की सफलता के आधार पर विचार करें तो स्पष्ट होगा कि मूलगत सौन्दर्य अनुवाद में नष्ट हो गया है। मूल भाषा के पाठ में मानसकार ने बहुत ही भावात्मक ढंग से और साथ ही अलंकारों के प्रयोग से सीता सौंदर्य का राम द्वारा अपने अनुज से वर्णन करने का ढंग जो प्रस्तुत किया है वह बहुत ही सहज लगता हैं। अनुवाद में यह सौन्दर्य नहीं आ पाया है। और एक उदाहरण देखिए-

"तात जनकतनया येह सोई। धनुष जग्य जेहि कारन होई।
पूजन गौरि सखीं लै आई। करत प्रकासु फिरहि फुलवाई॥"[18]

"My brother, this maiden is king Janak's daughter,
For her the Bow-Trial, and for those who've sought
To worship their goddess she's come with her maids,
Now her light as she wanders here all thing pervades."[19]

यहाँ लक्ष्य भाषा में जो अनुवाद किया गया है वह मात्र शब्द-चयन के दृष्टि से नहीं बल्कि सौंदर्य और स्वाभाविकता में भी मूल की अपेक्षा बहुत फीका लगता है। अनुवाद में सही शब्दों के अभाव के कारण अस्वाभाविकता नजर आती है। जैसे 'जनकतनया' केलिए 'king Janak's daughter', "धनुष जग्य' केलिए Bow-Trial, 'गौरि' केलिए मात्र 'goddess', 'सखी' के स्थान पर 'maids'। इधर कुछ शब्दों का शब्दानुवाद और कुछ का भाव लिया गया है। मूल में जहाँ शब्द पंक्तियों में सौंदर्य सृष्टि लाते हैं वहाँ अनुवाद में सही पर्याय न होने के कारण सहजता और सौन्दर्य नष्ट हो गया है।

तुलसीदास 'रामचरितमानस' की रचना और रामजन्म संबंधित कई अन्तरकथाएँ मूल में प्रस्तुत हैं, और अनुवाद में इनका शब्दानुवाद या भावानुवाद ही प्रस्तुत है। सांस्कृतिक भिन्नता से युक्त भारतीय साहित्य, पुराण आदि से अनभिज्ञ पाश्चात्य पाठकों के

18. मानस- 1/230/1
19. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chuapai 235, Pg.179

आगे इन अन्तरकथाओं और तुलसी की भाव गरिमा को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने में अनुवादक सफल नहीं हो पाए।

धनुषयज्ञ एवं विवाह प्रसंग

पुष्प-वाटिका मिलन के बाद धनुषयज्ञ और राम-सीता विवाह प्रसंग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। राजा जनक की विनती से विश्वमित्र दोनों भाइयों के संग धनुषयज्ञ शाला में शिवजी का कठोर धनुष देखने जाते हैं। दोनों भाईयों की शोभा चारों ओर फैली हुई है। रंगशाला की रचना देखकर मुनि बडे खुश होते हैं और राजा जनक से इसकी प्रशंसा भी करते हैं। इसका विवरण 'मानस' में मिलता है। देखिए-

"भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ।"[20]

इसका अनुवाद देखिए-

"The hermits said, 'Royal Sir, all's well arranged."[21]

मूल पाठ और लक्ष्य भाषा में किए गए अनुवाद की तुलना अगर करे तो अर्थ की दृष्टि से यह सही है। मूल में यह पंक्ति सहज ही वर्णित है लेकिन अनुवाद में 'Royal Sir' कहकर संबोधन का प्रयोग किया है वह मूल से मेल नहीं खाता भले ही अंग्रेजी की दृष्टि से यह प्रभावपूर्ण क्यों न हो।

जब शिव के कठोर बाण को तोडने में सारे राजा, दैत्य और दानव असमर्थ होते हैं तो राजा जनक दु:खी होकर समस्त सभा को कटु वचन सुनाते हैं। लक्ष्मण इससे तमतमा उठते हैं और जनक से श्रीराम और रघुकुल की महिमा गान करते हैं। जब श्रीराम के इशारे से लक्ष्मण शांत होते हैं तो विश्वमित्र उचित समय जानकर श्रीराम से शिवजी का धनुष तोडने को कहते हैं। गुरुजी की आज्ञा पाकर श्रीराम शिवजी के धनुष को कमल

20. मानस- 1/243/4

21. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chuapai 249, Pg.189

नाल के समान तोड डालते हैं। तुरंत ही विवाह केलिए तैयारियाँ होती हैं। तुलसी के शब्दों में-

"संग सखी सुंदर चतुर गावहिं मंगलाचार।
गवही बाल मराल गति सुषमा अंग अपार॥"[22]

इसका अनुवाद देखिए-

"She moved with ease, like a young swan in a lake,
Untold beauty and grace in each limb;
Her charming accomplished companions went with her,
All singing a rapturous hymn."[23]

विवाह के शुभ अवसर पर मंगल गीतों की गान करना भारतीय संस्कृति से जुडी विशेषता है। विशेष मंगलाचार जो विवाह के समय गाया जाता है उस ओर ही तुलसी ने यहाँ प्रकाश डाला है। लक्ष्य भाषा में 'मंगलचार' केलिए ' rapturous hymn' कहकर सामान्यता प्रधान की है जबकि मूल में विवाह के अवसरों पर गाए जाने वाले गीत है। मूल के इस विशेष अर्थ को प्रकट करने केलिए अनुवादक को पाद टिप्पणि का सहारा लेना था जो उन्होंने नहीं किया। इस मांगलिक अवसर को सूचित करनेवाला एक ओर उदाहरण देखिए-

"नाचहिं गावहिं बिबुधबधूटीं। बार बार कुसुमांजलि छूटीं॥
जहँ तहाँ बिप्र बेदधुनि करहीं। बंदी बिरिदावलि उच्चरहीं॥"[24]

"The nymphs and goddesses, with dancing and singing,
To earth frequent handfuls of flowers were flinging

22. मानस- 1/263
23. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I, Doha 258, Pg.203
24. मानस- 1/264/2

The priests in their places were reading the scriptures
And bards giving utt'rance to heroic raptures."[25]

अनुवाद तो बहुत अच्छा हुआ है । लेकिन भारत में विवाह के समय होनेवाले नाच-गाना, मंत्रोच्चारण, कुलकीर्ति की बखान, फूल बरसाना आदि का सही प्रासंगिक ज्ञान अनुवाद में नहीं मिलता । इसी प्रकार 'वदोच्चारण' शब्द से वेदिक मंत्रों की उच्चारण की जो विशेषता सामान्य भारतीय पाठकों के मन में झलकती है वह 'reading the scriptures' में वही प्रभाव उत्पन्न नहीं होता । 'उदात्त अनुदात्त' के सहारे जो मंत्र उच्चारण होता है वह 'reading the scriptures' में उसी ढंग से नहीं होता । यदि अनुवादक इसकी व्याख्या टिप्पणि के सहारे देता तो अनुवाद और अच्छा होता ।

राम-राज्याभिषेक प्रसंग

राम के विवाह के पश्चात् राजा दशरथ ने गुरु वसिष्ठ से अपने दिल की बात कही कि वे राम को युवराज से राजा बनाना चाहते हैं । इसे सुनते ही मात्र वसिष्ठ ही नहीं बल्कि अयोध्या के सभी लोग खुशी से झूम उठे । इस शुभ कार्य केलिए तैयारियाँ होने लगीं जैसे मण्डपों को सजाना, चौकों पुरना, ध्वज और पताकाओं के साथ-साथ तोरन लगाना आदि । रनिवास में इस समाचार को सुनकर ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दी जाने लगी । इन सबका उल्लेख मानसकार ने इतने सुंदर ढंग से किया है कि पाठक के मन में इन पंक्तियों को पढते समय एक सजीव चित्र अंकित होता है । साथ ही भारतीय संस्कृति और परंपरा के चित्र का पूर्ण अंकन यहाँ हुआ हैं । देखिए-

"चामर चरम बसन बहु भाँती । रोक पाट पट अगनित जाती ।
मनिगन मंगल बस्तु अनेका । जो जग जोगु भूप अभिषेका ॥"[26]

25. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I Chaupai 269, Pg.204
26. मानस- 2/5/2

अर्थात् चँवर, मृगचर्म, बहुत प्रकार के वस्त्र, असंख्य प्रकार के ऊनी और रेशमी कपडे, मणियाँ और अनेक मंगल-पदार्थ जिनका प्रयोग राज्याभिषेक के अवसर पर होता है- इकट्ठा करने की मुनि ने आज्ञा दी। इसका अनुवाद देखिए-

"Finest feathers and fans, skins of every kind,
Woven cloth, silk and wool; clothes the best you can find,
Bring us all kinds of jewels and auspicious things
That the world thinks should serve anointing of kings."[27]

कहने की आवश्यकता नहीं कि अनुवाद में मूल की सहजता नष्ट हो गई है। राज्याभिषेक के संदर्भ में इन वस्तुओं का अपना महत्त्व है। संदर्भ के अनुसार यहाँ वस्तुओं का उपयोग होता है। हर वस्तु का अपना सांस्कृतिक महत्त्व भी है। लक्ष्य भाषा की संस्कृति में इन वस्तुओं का उतना महत्त्व नहीं है। यह समस्या अनुवाद में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। शब्द चयन से ही यह बात स्पष्ट भी होती हैं। मूल में इन वस्तुओं की उपयोगिता को लक्ष्य करके बताया गया है- 'जो जग जोगु भूप अभिषेका' लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने कहा है- 'That the world thinks should serve anointing of kings' यहाँ पर मूल का गौरव नष्ट हो गया है। जो वस्तुएँ राज्याभिषेक केलिए महत्त्वपूर्ण है, उनका महत्त्व अनुवाद में पूर्ण रूप से नहीं उतर आया है।

ऐसे बहुत से संदर्भों का उल्लेख 'मानस' में प्राप्त होता है जहाँ पुराण के संदर्भों की प्रमुखता रही है। लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय अनुवादक ने इस बात को बिना कोई पाद-टिप्पणि के प्रस्तुत किया है। विदेशी भाषा के वातावरण में पले पाठकों केलिए यह अनुवाद गूँगे के गुड के समान है। इसी प्रकार जब भरत राम से मिलने चित्रकूट आते हैं तब लक्ष्मण इसे भरत का कपट और कुचाल मानते हैं और उस पर राजपद पाने पर बावला हो जाने का आरोप लगाते हैं। यहाँ पर 'नहुषु', 'बेनी' आदि का उल्लेख किया गया है। भारतीय पाठक इस संदर्भ को ठीक ठीक जानते हैं लेकिन अनुवाद में लक्ष्य

27. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book II, Chaupai 6, Pg.286

भाषा के पाठक इसे नहीं समझ पाते और यहाँ पर अनुवाद एक समस्या बन जाता है। जैसे-

"ससि गुरतियगामी नहुषु चढेउ भूमिसुर जान।
लोक बेद तें बिमुख भा अधम न बेन समान ।।"[28]

"The great Moon God, his own teacher's wife once defiled
Nahush called for a Brahman-borne chair;
Gainst all scripture and law vena claimed to be God;
Such the things that in pride men will dare!"[29]

यहाँ पर चन्द्रमा द्वारा गुरुपत्नी को छेड़ना, नहुष द्वारा ब्रह्मण का अपमान आदि अन्तर्कथाओं पर पाद-टिप्पणियों के अभाव में लक्ष्य भाषा के पाठक प्रसंग का पूर्ण रूप से आस्वादन नहीं कर सकते।

शूर्पणखा विरूपण

पंचवटी में वनवास काल में राम के पास रावण की बहिन शूर्पणखा का आना और कामपीडा से विकल होकर उनसे प्रणय-निवेदन करने का उल्लेख किया गया है। वहाँ राम अपने विवाहित होने का संकेत करके उसे लक्ष्मण के पास भेज देते हैं, जो अपनी पराधीनता का उल्लेख करके उसे पुन: राम के पास लौट जाने का परामर्श देते हैं। अंत में शूर्पणखा क्रुद्ध होकर अपने असली रूप में प्रकट होती है जिससे सीता भयभीत हो जाती है और लक्ष्मण राम के आदेश से उसके नाक-कान काट डालता है। इस प्रसंग का जितने सहजता, संक्षिप्तता और सरलता से मूल में अभिव्यक्ति हुई है वहीं लक्ष्य भाषा में इसका विस्तृत विवरण मिलता है। देखिए-

28. मानस- 2/228
29. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book II Doha 220, Pg.441

"सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जसि अहिनी।
पंचवटी सो गै एक•बारा। देखि बिकल भइ जुगल कुमारा।
भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी।
होइ बिकल सक मनहि न रोकी। जिमि रबिमनि द्रव रबिहि बिलोकी।"[30]

इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Now a sister had Ravan the demon, by name
Surpanakha, Snake-like in ill deeds and ill fame;
She came once to Panchavati; the youths seeing
So handsome, was moved to the depths of her being
(A woman, if seeing a fine looking man,
From him can't turn her eyes, Reader, try as she can!)
So excited, she could not control her desire,
As a sun-stone when touched by the sun sheds its fire."[31]

इस प्रसंग में 'सूर्पनखा रावन . . . . . . भइ जुगल कुमारा' में पहले पंक्ति का शब्दानुवाद पूर्ण अर्थ को संप्रेषित करने में सफल हुआ है। शूर्पणखा के वर्णन में उसकी दुष्टता को प्रकट करने केलिए तुलसीदास ने 'अहिनी' कहकर जो रूपक बाँधा है वह प्रस्तुत प्रसंग में शूर्पणखा का दुष्टता का सुन्दर परिचय देता है। अनुवाद में अनुवादक ने 'अहिनी' केलिए 'Snake-like' कहकर मूल के अर्थ द्योतन के प्रभाव को नष्ट कर दिया है। 'अहिनी' स्त्रीलिंग शब्द है जो शूर्पणखा केलिए सम्यक प्रयुक्त है अंग्रेजी में 'Snake' का स्त्रीलिंग-पुल्लिंग मूल के जैसे प्रभावपूर्ण शब्दों से नहीं दिखाई जा सकता। हर भाषा की अपनी सीमा होती है। यहाँ पर हिन्दी में तुलसीदास ने प्रभावपूर्ण ढंग से अर्थ को जो समझाए है अनुवाद में एटकिन्स उतार नहीं पाए है। 'भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी' का अनुवाद लक्ष्य भाषा में नहीं दिया गया है। अनुवादक ने कोष्ठकों में

30. मानस- 3/16/2-3
31. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II), Book III Chaupai 19, Pg.529-530

उत्तरार्द्ध का भाव प्रस्तुत किया है लेकिन इसका स्पष्ट अर्थ अभिव्यक्त नहीं होता।. इससे इसकी सहजता के साथ-साथ संक्षिप्तता भी नष्ट हो गयी है।

लक्ष्मण से विरूपित होकर शूर्पणखा खर-दूषण को राम से युद्ध करने केलिए प्रेरित करती है। राम उस राक्षस-सेना को देखकर सीता की सुरक्षा निमित्त उन्हें गिरि-कन्दरा में ले जाने केलिए लक्ष्मण को आदेश देते हैं और स्वयं युद्ध केलिए तत्पर होते हैं। राक्षसों के माया-युद्ध करने पर वे भी ऐसी माया करते हैं कि सब राक्षस एक दूसरे को राम समझ कर आपस में ही लड कर मर जाते हैं। युद्ध के विवरण में शब्दों के ध्वन्यात्मक गुण से जो सहज उद्भावना हुई है उसे देखिए-

"भट कटत तन सत खंड। पुनि उठत करि पाषंड।
नभ उडत बहु भुज मुंड। बिनु मौलि धावत रुंड।
खग कंक काक सृकाल। कटकटहिंकठिन कराल॥"[32]

"Countless bits were cut up by these blows,
By by magic each one again rose;
Heads and limbs flew about in the air;
Headless trunks ran around ev'ry where,
countless crows, jackals, vultures and kites
Snapped and snarled taking huge, hungry bites."[33]

युद्ध की इस भीषणता को चित्रित करते हुए मानसकार ने जो चमत्कार-पूर्ण अर्थ गंभीर ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयाग उक्त प्रसंग में किया है वही चमत्कार सृष्टि लक्ष्य भाषा में आते-आते अनुवादक के हाथों से फिसल गयी है।

32. मानस- 3/19/6-7
33. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III Chhand 5, Pg.535

रावण द्वारा सीता हरण

'खर-दूषण-वध' से निराश शूर्पणखा रावण को राम से बदला लेने केलिए प्रेरित करती है। मारीच की सहायता से रावण राम से बदला लेने का षड्यन्त्र रचता है। तो इधर लक्ष्मण की अनुपस्थिति में राम 'नर-लीला' करने के विचार से राक्षसों के विनाश तक सीता को अग्नि के हावले सौंप कर केवल सीता के प्रतिबिम्ब रूप में रहने का आदेश देते हैं। मारीच के स्वर्णमृग बनकर आश्रम के पास आने पर सीता के आग्रह से राम उसका पीछा करते हैं और सीता को लक्ष्मण के देख-रेख में छोड जाते हैं। राम के बाण से मरते समय मारीच लक्ष्मण का नाम लेकर पुकारता है और 'राम-नाम' का स्मरण कर, राम उसे मोक्ष देते हैं। सीता लक्ष्मण का नाम सुन, राम पर विपत्ति की आशंका से लक्ष्मण को उनकी सहायता केलिए जाने का आदेश देती हैं। लक्ष्मण जब इसे अनसुना करता है तो 'मर्म-वचन' कहकर सीता जी लक्ष्मण को जाने केलिए विवश करती हैं। इसी समय रावण 'यति-वेश' में सीता के सम्मुख उपस्थित होता है। सीता द्वारा फटकारे जाने पर रावण अपने असली रूप में प्रकट होता है और अपना परिचय देता है। सीता के चरणों की मन-ही-मन में वन्दना करते हुए, उन्हें अपने आकाशगमी रथ में बिठाकर चल देता है। लक्ष्य भाषा में मूल प्रसंग को पूर्ण रूप से व्यक्त करने में अनुवादक सफल हुए हैं। इस प्रकार है-

"सुनत बचन दससीस रिसाना। मन महु चरन बंदि सुख माना॥"[34]

वहीं इसका अंग्रेजी अनुवाद देखिए-

"At these words shame and wrath moved him more than before,

At heart feeling, 'Here's one to enjoy and adore '"[35]

---

34. मानस- 3/27/8

35. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IIIChaupai 30 Pg.542

शबरी मिलन

कबन्ध वध के पश्चात् राम और लक्ष्मण शबरी के आश्रम में पहुँचते हैं। श्रीराम को अपने घर आए देख शबरी को मुनिवर मातङ्ग के वचन याद आ गए और वह प्रसन्न हो जाती है। उनका स्वागत करती है। सीता के संबंध में पूछे जाने पर शबरी राम से 'पम्पासर' जाकर सुग्रीव-मैत्री का अनुरोध करती है तत्पश्चात् वह योगाग्नि में प्रविष्ट होकर 'हरिपद' में लीन हो जाती है।

"सबरी देखि रामु गृह आए। मुनि के बचन समुझि जिय भाए॥"[36]

इधर शबरी के गुरु ऋषि मातङ्ग ने मरण से पहले उनसे कहा था कि प्रभु श्रीराम उनसे मिलने आएँगे। इसी भविष्यवाणी का संकेत यहाँ हुआ है। इसका अंग्रेजी अनुवाद है-

"As Rama came to her the woman rejoiced,
Words of promise recalling which once saints had voiced."[37]

इस प्रसंग में यह स्पष्ट होता है कि मूल में 'मुनि' का संकेत करने पर भी पाठक उसे समझ सकता है और 'मुनि के बचन' के पीछे क्या बात है इससे भी परिचित है। लेकिन लक्ष्य भाषा में 'Words of promise recalling which once saints had voiced' मूल का शब्दानुवाद है लेकिन लक्ष्य भाषा में कोई पाद-टिप्पणि Words of promise और once saints केलिए नहीं दिया गया है जिससे इस प्रसंग का महत्व लक्ष्य भाषा में कम हो गया है और अर्थ भी ठीक तरह से स्पष्ट नहीं होता।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्रमुख प्रसंगों को लक्ष्य भाषा में रखते समय कहीं कहीं पर अनुवादक चूक गए हैं जिससे प्रसंग वर्णन अस्पष्ट हो गया है और लक्ष्य भाषा के पाठक को प्रसंगों के अर्थ को समझे बिना ही तृप्त होना पडता है।

---

36. मानस- 3/33/3
37. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III Chaupai 36, Pg.550

राम-हनुमान मिलन

सुग्रीव द्वारा राम और लक्ष्मण को रिष्यमूक पर्वत से देखना और उन्हें बालि-दूत समझ कर भयभीत होकर हनुमान् को उनके पास भेजने का वर्णन प्रमुख है। हनुमान् ब्रह्मचारी का रूप धरकर राम और लक्ष्मण के पास पहुँचते हैं। नतमस्तक होकर उनसे प्रश्न पूछने लगते हैं। जब राम अपना परिचय देते हैं और वन में आने का कारण बताते हैं और हनुमान से उनका परिचय माँगते हैं तो अपने स्वामी को पहचान कर उनके चरणों में गिर पडते हैं। इसका एक उदाहरण देखिए-

"आपन चरित कहा हम गाई। कहहु बिप्र निज कथा बुझाई।"[38]

इसका अनुवाद देखिए-

"We have told you, Sir Brahman, of our thoughts and cares;

Now We ask you the same, tell us of your affairs."[39]

इधर मूल में 'चरित' का अर्थ 'चरित्र' है जिसको न अर्थ की दृष्टि से या भाव की दृष्टि से अनुवादक प्रस्तुत कर पाए हैं। संबोधन के संदर्भ में 'Sir Brahman' अनुवाद में अस्वाभाविकता पैदा करता है। मूल प्रसंग में चित्रित अर्थ और भाव को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने में अनुवादक चूक गए हैं।

'राम-सुग्रीव मैत्री'

राम और लक्ष्मण का परिचय पाकर हनुमान इन्हें रिष्यमूक पर्वत पर ले जाते हैं। वहाँ हनुमान दोनों की अग्निसाक्षी मित्रता भी संपन्न करा देते हैं। इसके बाद सुग्रीव राम से 'सीताहरण' का आंखों देखा वर्णन करता हुआ उनको सीता का एक 'पट' भी दिखला देता है। फिर राम के पूछने पर सुग्रीव बालि विग्रह की विस्तृत कथा बतलाता है। बालि शाप के कारण, रिष्यमूक पर नहीं जा पाता। इसका कारण बताते हुए सुग्रीव का कथन देखिए-

38. मानस-4/1/2
39. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV Chaupai 2, Pg.563

"इहाँ श्रापबस आवत नाहीं। तदपि सभीत रहौं मन माहीं ॥"[40]

बाली ऋषि मातंङ्ग से शाप मिलने के कारण रिष्यमूक पर्वत पर जाते नहीं। इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"He cannot come here, for he fears a saint's threat

Made against him but fear of him stays with me yet."[41]

भारतीय पाठक 'श्रापबस' का मतलब और शाप के पीछे के किस्से से परिचित हैं लेकिन एक पाश्चात्य पाठक जो बिल्कुल अलग परिवेश से आता है बिना स्पष्टीकरण से इस बात को और इससे संबंधित कथा को नहीं समझता। लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने उक्त पंक्तियों का शब्दानुवाद किया है और बिना पाद-टिप्पणि के अपने बात को सीमित रखा है। इससे मूल प्रसंग में जो बात जिस गंभीरता से स्पष्ट की गई वही लक्ष्य भाषा में नष्ट हो गई हैं।

बालि-वध

राम को 'प्रभु' पहचान कर 'मानस' का सुग्रीव जब लौकिक आकर्षणों से विरक्त होकर उनकी भक्ति करना चाहता है तब राम उसको अपने दैवी प्रभाव से समझ-बुझाकर उसे बालि के पास युद्ध करने केलिए भेज देते हैं। सुग्रीव बालि को युद्ध केलिए ललकारता है। युद्ध में सुग्रीव के हार कर भागने पर राम उसे फिर से पुष्पहार पहना कर दुबारा प्रेरित करते हैं। पेड की आड में छिपकार बालि की मृतप्राय कर देते हैं। बालि की मुक्ति-भावना और बालि की हरिधाम प्राप्ति का वर्णन इस प्रकार हुआ है-

"राम चरन दृढ प्रीति करि बालिकीन्ह तनु त्याग।"[42]

इसका अनुवाद देखिए-

---

40. मानस- 4/5/7
41. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV Chaupai 6, Pg.567
42. मानस- 4/10

"Bali once more showed Rama his true love, and lo !

From his body his spirit was gone."[43]

मूल में वानरराज बालि की भक्ति भावना जिस सहजता और श्रद्धा से की गई है अनुवाद में ये दोनों भाव नष्ट हो गए हैं। मूल में 'तनु त्याग' एक मुहवरा है जिसका अर्थ है 'मृत्यु होना' लेकिन लक्ष्य भाषा में इसकेलिए 'From his body his spirit was gone' में spirit शब्द आत्मा, भूत आदि को ही सूचित करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अनुवादक मूल प्रसंग की गंभीरता और स्वाभाविकता को चित्रित करने में असफल रहे है।

सीता शोध और संपाति-मिलन

यह किष्किन्धा काण्ड का प्रमुख प्रसंग है जहाँ सुग्रीव के 'राज्याभिषेक' के पश्चात् एवं वर्षकाल के बाद सुग्रीव अपनी सेना समेत श्रीराम से मिलते हैं और वानर दूतों को बुलाकर उन्हें सीता शोध केलिए चारों और जाने और अधिक से अधिक एक मास में ही लौट आने का आदेश देता है। अन्त में हनुमान्, अंगद, नल, नील और जामवन्त आदि को बुलाकर दक्षिण दिशा में भेजता है। हनुमान उनका सच्चा भक्त है और उनका उसे आर्शीवाद देते हुए उनके हाथ की अँगूठी देने का विवरण 'मानस' में चित्रित है-

"पाछे पवनतनय सिरु नावा। जानिकाजु प्रभु निकट बोलावा॥
परसा सीसा सरोरूह पानी। करमुद्रिका दीन्हि जन जानी॥"[44]

The last to salute and his word to receive
Hanuman- the Lord called, knowing what he'd achieve;
His hand on this servant's head, bidding him linger
He said, as he gave him a ring from his finger."[45]

43. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV Doha 10, Pg.572
44. मानस- 4/22/5
45. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV Chaupai 23, Pg.582

उक्त पंक्ति में राम का वानरों को आर्शीवाद देने, और हनुमान उनका काम कर सकता है इस विश्वास से उन्हें अपने हाथ की अंगूठी दी। अनुवाद में 'पवनतनय' के स्थान पर 'Hanuman' शब्द का प्रयोग करते हैं क्योंकि इसकेलिए उचित पर्याय लक्ष्य भाषा में नहीं है। पवनतनय शब्द से वायु के गुण एवं शक्तियों का अस्तित्व हनुमान में दिखाया गया है जो अनुवाद में प्रयुक्त 'Hanuman' शब्द में संभव नहीं हो सका है। इससे मूल में इस शब्द से जो सौन्दर्य है उसे लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करना अनुवादक केलिए एक चुनौती बन गयी है। 'परसा सीसा सरोरूह पानी' याने अपने कर-कमलों से हनुमान के सिर का स्पर्श किया, का 'His hand on this servant's head, bidding him linger' किया गया है। मूल अर्थ को अभिव्यक्त करने में अनुवादक अक्षम है क्योंकि ' linger' शब्द का अर्थ 'देर से' या 'जाने में देर करना है' जिसका संकेत मूल में कहीं भी नहीं मिलता। यहाँ अनुवादक भावानुवाद के सहारे बात को अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं लेकिन मूल अर्थ को लक्ष्य भाषा में पूर्ण रूपेण व्यक्त नहीं कर पाए हैं।

सीता खोज के अन्तर्गत ही जब वानर सेना समुद्र तट पर पहूँचती हैं तो वहाँ इनका मिलन संपाति से होता है। अंगद से जब उसे जटायु के बारे में पता चलता है तो संपाति उसका अंतिम संस्कार कर के बाद में अपने और जटायु के 'सूर्य-अभियान का वर्णन करता' हुआ 'चंद्रमा' की कृपा और उनके वरदान का वर्णन करता है। तुलसी ने परंपरा से प्राप्त कथा को संक्षेप में समन्वित किया है। इस प्रसंग का शब्दानुवाद ही अनुवादक ने किया है लेकिन कहीं कहीं पर भावानुवाद का सहारा लेने के कारण अनुवाद कहीं-कहीं फीका पड गया है। देखिए-

"त्रेता ब्रह्म मनुजतनु धरिही। तासु नारि निसिचरपति हरिही।

++ ++ ++

जमिहहि पंख करसि जनि चिंता। तिन्हहि देखाइ देहेसु तैं सीता।

++ ++ ++

तहँ असोक उपबन जहँ रहई। सीता बैठि सोचरत अहई।"[46]

'He said, In the Third Age will God share man's life

And a demon king carry away then his wife;

xx xx xx

Then when thro' you they find his dear Sita once more,

Do not fear you will grow wings again as before

xx xx xx

In a grove of Asoka tree Sita is living

She sits in deep thought there, a prey to misgiving".[47]

इधर 'त्रेता' 'त्रेता-युग' का अर्थ देता है। राम जन्म त्रेता युग में हुआ था यही हमारा विश्वास है। भारतीय पाठक यह जानता है कि त्रेता युग दूसरा युग है जो 12,96,000 वर्ष तक रहा।[48] अनुवाद में इसकेलिए "Third Age' दिया गया है जो लक्ष्य भाषा पाठक को सोचने में मजबूर करता है। बिना पाद टिप्पणि के लक्ष्य भाषा पाठक इन बातों को समझ नहीं पाता। यह उसकेलिए एक समस्या बन जाता है।

हनुमान सीता की खोज में समुद्र लंघते हैं जिसके बीच उनकी बल-बुद्धि परीक्षा नागमाता सुरसा द्वारा की जाती है। अंत में उनसे आर्शीवाद लेते हुए रामकार्य संपन्न करने केलिए लंका जाते हैं। इस बीच उनकी भेंट एक छाया-ग्राहिणी निशाचरी से होती है उसे मारकर वे समुद्र के पार पहुँच जाते हैं। 'मशक रूप' धारण कर वे लंका में प्रवेश करते हैं परन्तु लंकिनी राक्षसी उन्हें पकड लेती हैं। हनुमान उससे मुक्ति पाने केलिए उस पर मुष्टि प्रहार करते हैं और निशाचरी नाश की भविष्यवाणी करती है और हनुमान को लंकाप्रवेश की अनुमति दे देती है।

46. मानस- 4/27/4-6
47. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV Chaupai 28, Pg.586

48. Tulsidasa's Sri Ramacharitmanasa- R,C, Prasad, Pg.20

लंका में प्रवेश करने के बाद हनुमान राम भक्त विभीषण से मिलते हैं। उनके कहने के अनुसार वे सीता से मिलने जाते हैं। यहाँ हनुमान्-सीता मिलन प्रसंग को चित्रित किया गया है। अनुवादक ने लक्ष्य भाषा अंग्रेजी में शब्दानुवाद और कुछ स्थानों में भावानुवाद प्रस्तुत कर इन प्रसंगों का वर्णन किया है। तुलसी की मौलिक कल्पना इन प्रसंगों पर अभिव्यक्त होती है जिसे अनुवादक ने शब्दानुवाद के माध्यम से व्यक्त किया है। कुछ संदर्भ ऐसे हैं जहाँ सांस्कृतिक शब्द जैसे संबोधन आदि के अनुवाद की समस्या दिखाई देती है जैसे:

"सुनु माता साखामृग नहिंबल बुद्धि बिसाल।"[49]

"Listen Lady ! We apes 'he said, 'have of ourselves,

No remarkable wisdom or pow'r;"[50]

'साखामृग' वानरों केलिए प्रयोग किया गया है। लक्ष्य भाषा में उसकेलिए 'apes' शब्द का प्रयोग किया है। 'साखामृग' केलिए 'apes' ठीक पर्याय नहीं है, वह किसी आदिम जाति का सूचक शब्द है जो भारत में प्रचलित नहीं था। साखामृग में कूदने और भागने की असीम शक्ति संकेतित है जो 'Apes' में नहीं है। 'Apes' शब्द का अर्थ 'tailless monkey'[51] है। यहाँ मूल अर्थ और भाव दोनों ही गायब हो गए हैं।

49. मानस- 5/16
50. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V Doha 15, Pg.602
51. Oxford Advanced learner's Dictionary of Current English, Pg.34

लंका-दहन

सीता मिलन के पश्चात् हनुमान रावण की वाटिका में प्रवेश कर उसे उजाड डालता है और राक्षसों को मारता भी है। सूचना मिलने पर रावण-पुत्र मेघनाद ब्रह्मास्त्र के प्रयोग से हनुमान को बांध देता है और रावण के सम्मुख पहुँचाता है। दोनों के बीच संवाद होता है। रावण की प्रभुता से हनुमान परिचित था और उसकी व्याज निन्दा करते हुए सहस्रबाहु द्वारा रावण को बाँध लेने के प्रसंग को छेडता हैं-

"जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई। सहसबाहु सन परी लराई॥"[52]

पुराणों में वर्णित कार्तवीर्य राजा का पुत्र, दत्तात्रेय की सेवा करके इसने सहस्रबाहु और सिद्धियाँ प्राप्त कीं। इन सिद्धियों के बल पर इसने एक बार अपने हजार हाथों से नदी को रोक लिया और वह उल्टी बहने लगी। इससे रावण का शिविर बह गया। इस पर जब रावण लडने केलिए आया तो सहस्रबाहु ने सहज ही उसे पकड्कर अपनी राजधानी महिष्मती में कैद कर लिया। मूल संदर्भ में सहस्रबाहु के प्रसंग से भारतीय पाठक परिचित हैं लेकिन लक्ष्य भाषा के पाठक इस प्रसंग को समझने में असमर्थ रहते हैं क्योंकि अनुवादक ने इसका उल्लेख कहीं भी नहीं किया हैं। अनुवाद में जहाँ अर्थ स्पष्टीकरण केलिए पाद-टिप्पणि अत्यंत आवश्यक है वहीं अनुवादक ने इस कथ्य को न देते हुए मात्र मूल पंक्तियों का शब्दानुवाद किया हैं-

"Well your prowess I know; at naught are you alarmed;
You once fought a good fight with Arjun thousand armed."[53]

सीता को वापस करने और राम की शरण में जाने की बात सुनकर क्रोधित रावण हनुमान् वध की आज्ञा देता है, किन्तु विभीषण 'दूतवध' को नियम विरुद्ध बतला देता है तो

52. मानस- 5/21/1
53. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Chaupai 22, Pg.606

रावण उनका अंगभंग करने केलिए उनकी पूंछ में आग लगाने का आदेश देता है ।• हनुमान जलती हुई पूंछ को लेकर लंका•के चारों ओर आग लगा देते हैं । उसके बाद हनुमान बचकर रावण के महल की अटारियों पर चढ जाते हैं । इसे देखकर निशाचर-स्त्रियाँ डर जाती हैं । 'मानस' में मात्र इतना ही उल्लेख है लेकिन अनूदित कृति में अपनी ओर से भी बात को जोड दी गई है-

"निबुकि चढेउ कपि कनक अटारीं । भई सभीत निसाचर नारीं ।।"[54]

"He escaped, climbed the gold palace roof, and the wives
Of the demon-king frightened near out of their lives."[55]

यहाँ 'near out of their lives' शब्द अनुवादक ने जोड दिया है जिससे मूल का प्रवाह लक्ष्य भाषा में आते आते नष्ट हो गया है ।

सेतुबन्ध

समुद्र् के संकेत के अनुसार राम के आदेश से नल और नील सेतु-रचना में प्रवृत होते हैं । 'सेतु' की प्रसिद्ध केलिए राम वहाँ पर शम्भु स्थापना करते हैं अर्थात् शिवलिंग की स्थापना करके उसका यथा विधि पूजन किया ।

"लिंग थापि बिधिवत् करि पूजा ।"[56]

'Rama set up the sign, with due worship begun."[57]

'लिंग' शिव और शक्ति का संयोगात्मक प्रतीक है । वेदों में कहा गया है कि पहले संसार में कुछ भी नहीं था, केवल शिव ही थे । आलोक रूप में विश्व व्यापी शिव-शक्ति ही विद्युत् पुरुष ज्योतिर्लिंग रूप में अवतरित हुए । ब्रह्मा, विष्णु और महेश सृष्टि के सर्जक,

54. मानस- 5/24/5
55. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Chaupai 25, Pg.609
56. मानस- 6/1/3
57. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 2, Pg.639

पालक एवं संहारक माने गए हैं। अत: लिंग में भी इन सब की शक्ति समाविष्ट है।[58]. भारतीय संस्कृति के इस द्योतक चिह्न केलिए अनुवादक ने मात्र 'sign' शब्द का प्रयोग किया है। लिंग शब्द में जो अर्थ व्यापकता, सांस्कृतिक महत्त्व है वह 'sign' शब्द में नहीं मिलता। यहाँ भारतीय संस्कृति और भारतीय दर्शन के सम्यक ज्ञान के बिना ही अनुवादक ने इस शब्द का अनुवाद किया है।

अंगद दौत्य

अंगद और रावण के संवाद के संदर्भ में अंगद रावण के दर्प को तोडना चाहता है और परशुराम के गर्व को अभिहित करते हुए श्रीराम की वीरता का वर्णन करते हुए उनसे कहता है कि उन्हें देखते ही परशुराम का गर्व भाग गया। अनूदित कृति में अनुवादक ने कहीं भी परशुराम का उल्लेख नहीं किया है और मूल का शब्दानुवाद किया है जो लक्ष्य भाषा के पाठक के मन में समस्या पैदा करता है। पाद-टिप्पणि के माध्यम से इसका हल हो सकता है लेकिन अनुवादक ने ऐसा नहीं किया है-

"सहसबाहु भुज गहन अपारा। दहन अनल सम जासु कुठारा ॥
जासु परसु सागर खर धारा। बूडे नृप अगनित बहु बारा ॥"[59]

याने जिस परशुराम के फरसे ने सहस्रबाहु की सहस्र भुजाओं रूपी अपार वन को जलाने केलिए दावाग्नि का काम किया और जिनके फरसे रूपी सागर की तीक्ष्ण धारा में असंख्य राजा बहुत बार डूब गए, उसी राम को देखकर स्वयं परशुराम जी का गर्व भाग गया। इसका अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"He who turned Thousand arm's mighty limbs to mere ash
With his axe, like a forest fire burning up trash,

---

58. सांस्कृतिक पतीक कोश, पृ.310
59. मानस- 6/25/1-2

He whose sword is an ocean-tide in which were drowned

Many times in vast numbers great rulers renowned."[60]

यहाँ सहस्रबाहु का कामधेनु को ले जाकर परशुराम के पिता के हत्या करने पर परशुराम उन्हें हरा देते है और वही परशुराम श्रीराम को देखकर उनका गर्व भाग जाता है। इस किस्से से लक्ष्य भाषा पाठक परिचित नहीं है और वह इस तथ्य को समझ नहीं पाता जो मूल में अभिव्यक्त है।

युद्ध प्रसंग- *लक्ष्मण-मूर्छा*

'अंगद-दौत्य' में असफल हो जाने के पश्चात् युद्ध अनिवार्य हो जाता है, जिसमें अंगद और हनुमान् के द्वारा राक्षसों के सेनापतियों को मार-मार कर राम के पास फेंकने तथा राम के द्वारा उनको अपना स्मरण वैर भाव से सही करने के कारण 'निजधाम' भेज देने का वर्णन किया गया है। इसी युद्ध में मायावी मेघनाद लक्ष्मण पर 'शक्ति' से आक्रमण करके उन्हें अचेत कर देता है। पुराणों में 'ब्रह्मास्त्र' का उल्लेख हमें मिलता है। 'ब्रह्मा' से प्राप्त यह शक्ति (अस्त्र) बहुत शक्तिशाली है।

"सो ब्रह्मदत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही।"[61]

"As this Brahma – giv'n force struck him,

Lakshman incarnate vishnu – fell down faint."[62]

इधर 'ब्रह्मदत्त प्रचंड शक्ति' अर्थात् ब्रह्म द्वारा दी गई शक्ति केलिए 'Brahma – giv'n force' का प्रयोग किया जो मूल से बहुत हटकर है। यहाँ 'शक्ति' केलिए 'force' का प्रयोग किया है जो सामान्य अर्थ है। मूल में 'शक्ति' शब्द का अर्थ 'अस्त्र' केलिए किया गया है। अत: लक्ष्य भाषा में अनुवादक ठीक अर्थ को उतार नहीं पाए हैं। साथ ही 'Brahma – giv'n force' में वह सौन्दर्य और अर्थ गहनता नहीं जो 'मानस' में अभिव्यक्त

---

60. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) BookVI, Chaupai 26, Pg.258
61. मानस- 6/82 (छं.)
62. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chhand 8, Pg.707

है। इसकेलिए अनुवादक ने कोई पाद-टिप्पणि भी नहीं दी है जो इस संदर्भ में उपयोगी बन सकती है।

रावण वध

मेघनाथ की मृत्यु के पश्चात् रावण स्वयं युद्धभूमि केलिए प्रस्थान करता है। 'माया युद्ध' में रावण अनेक राम-लक्ष्मणों को उत्पन्न कर देता है, तब राम एक बाण से उस माया को नष्ट कर देते हैं। जब राम कई बार रावण का सिर और हाथ कटाते हैं वह बढता जाता है। शत्रु रावण मरता नहीं और परिश्रम विशेष हुआ।

"मरै न रिपु स्रम भएउ बिसेषा। राम बिभीषन तन तब देखा।"[63]

"Rama, when- tho' he tried hard – his foe did not die,
Turned and looked at Vibhishan as tho' to say, why."[64]

श्रीराम अठारह दिनों तक बराबर युद्ध करते रहे, फिर भी रावण न मरा, इसलिए विशेष श्रम हुआ। विभीषण की ओर देखकर श्रीराम उनसे सूचित करते हैं कि अगर तुम कुछ उपाय जानते हो तो कहो। इससे श्रीराम विभीषण से यह कहलवाना चाहते हैं कि 'इसे मारिये' तब वे रावण को मारेंगे।[65] इस तथ्य का स्पष्टीकरण लक्ष्य भाषा में नहीं मिलता। अनुवाद मूल का शब्दानुवाद है और इस पंक्ति को पढने पर पाठक मूल अर्थ तक नहीं पहुँचता जहाँ मानस में पहुँचता है।

'मानस' में कई ऐसे प्रसंग हैं जहाँ अनुवादक ने मूल की पंक्तियों का परित्याग किया है और कहीं कहीं पर मात्र शब्दानुवाद कर अपनी बात को कह दिया है और कुछ ऐसे प्रसंग हैं जहाँ भावानुवाद भी प्रस्तुत किया है। जैसे-

---

63. मानस- 6/101/1
64. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 101, Pg.728
65. मानस पियूष, पृ.

'कृतजुत त्रेताँ द्वापर पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग॥'[66]

सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग में जो गति पूजा, यज्ञ और योग से प्राप्त होती है, कलियुग में वही गति लोग केवल भगवान् के नाम से पा जाते हैं। इसका अनुवाद देखिए-

"The blest state that by long ritu'l off'ring and pray'r
In the other three Ages begins,
That of O'ercoming all evils, in the Dark Age
By the name above all names one wins."[67]

इस दोहे में जहाँ मूल में तीनों युगों का नाम दिया गया है वहीं लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने मात्र 'three ages' का प्रयोग किया हैं। वेदों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि हर युग में विष्णु ने अवतार लेकर धर्म की रक्षा की है और 'सत्य युग' या 'कृत युग' चार युगों में से पहला है 'त्रेता युग' दूसरा युग है जिसमें परशुराम और श्रीराम अवतरित हुए थे और तीसरा युग है द्वापर युग जिसमें कृष्णावतार हुआ था। चौथा युग कलियुग है जो अभी चल रहा है। अत: लक्ष्य भाषा के पाठकों केलिए अनुवादक ने पाद-टिप्पणि भी नहीं दी है। यहाँ इन युगों केलिए लक्ष्य भाषा में शब्द मिलना कठिन ही नहीं असंभव भी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अनुवादक मूल में प्रयुक्त बातों का पूर्ण अनुवाद लक्ष्य भाषा में कर नहीं पाए हैं। उन्होंने इन सारी बातों को अन्धकार में ही छोड दिया है।

अगर 'मानस' के प्रमुख प्रसंग और उनके अनुवाद की तुलना करे तो यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि तुलसी की भाव-गरिमा को अनुवादक ज्यों का त्यों रखने में सफल नहीं हो पाए हैं। लक्ष्य भाषा में मूल ग्रंथ के भावों और अर्थ को सजीव बनाए रख सकने की कठिनाई अनुवादक को हुई है। भारतीय संकल्पनाएँ अर्न्तकथाओं और पौराणिक

---

66. मानस- 7/102 (ख)
67. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VII, Doha 99, Pg.835

संदर्भ को बिना व्याख्या दिए उनका अनुवाद दिया गया है जिससे अर्थ की हानि हो गई है और मूल भाव पाठकों तक पहुँचने में सफल नहीं हुई है।

काव्यानुवाद में भाव एवं अनुभूति

काव्य के दो अंग होते हैं- (1) भाव (2) विभाव। भाव मन की वह स्थिति है जो किसी विशेष वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति किसी विशेष दशा में होती है। जिस व्यक्ति या वस्तु के प्रति वह भाव प्रकट होता है उसे विभाव कहते हैं।

भाव आनन्द है। समस्त मानव-जीवन के प्रवर्त्तक भाव या मनोविकार ही होते हैं। मनुष्य की प्रवृत्तियों की तह में अनेक प्रकार के भाव ही प्रेरक रूप मे पाए जाते हैं। और विभिन्न परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप मानव-मन में उठने वाले सभी भावों का लेखा भी नहीं हो सकता। प्राचीन काव्य-शास्त्रीय आचार्यों ने कुछ भावों का निर्देश कर दिया है जिनके भीतर सभी प्रकार की मनोवृत्तियों का समावेश किया जा सकता है। और इसी आधार पर काव्य में नौ भाव प्रधान माने गए हैं-

- 1. प्रेम (रति)
- 2. हास
- 3. शोक
- 4. क्रोध
- 5.. उत्साह
- 6. भय
- 7. घृणा (जुगुप्सा)
- 8. विस्मय (आश्चर्य) और
- 9. निर्वेद (वैराग्य)

इसका उल्लेख भरत के नाट्यशास्त्र में प्राप्त होता है। यथा :

"रतिहासश्च शोकश्च क्रोधत्साहौ भयं तथा।

जुगुत्सा विस्मयश्चेति स्थायीभावा: प्रकीर्तिता: ॥"[68]

भरतमुनि ने मात्र आठ भावों को माना है- रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा और विस्मय। ये भाव मन में सदैव अज्ञात दशा में, प्रसुप्तावस्था में वासना के रूप में स्थिर रहते हैं, परन्तु जैसे अनुकूल असर या कारण पाते ही जीवन के व्यवहार में वैसे ही कोई काव्य पढने पर या रूपक (नाटक) देखने पर श्रोता, पाठक वा दर्शक के मन में उद्बुद्ध हो उठते हैं- जाग पडते हैं। ये अस्वाद के मूल भाव हैं। ये अन्य भावों से तिरोहित नहीं होते, प्रत्युत पुष्ट होते हैं। और इन्हीं भावों से काव्य या साहित्य में श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शान्त रस की उत्पत्ति होती हैं।

भाव मनोवेगों के संस्कार रूप में प्रतिष्ठित, स्मृत और पुन: अनुभूत स्वरूप हैं। प्राय: सभी मनुष्यों के मन में भाव की सृष्टि होती हैं। जब कवि अपने भावों को काव्य में रोपता है वह काव्य भाव से युक्त होता है, प्रत्येक सहृदय पाठक जब काव्य पढता है तो उसका आस्वादन करता है और जब वह कवि के भावों के साथ तादात्म्य स्थापित करता है, उसका आस्वादन करता है तब कवि सफल होता है।

भाव मन की वह स्थिति है जो किसी विशेष वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति किसी विशेष संदर्भ में व्यक्त होती है। मनुष्यमन अथाह सागर है, जिसमें भावों की संख्या अनंत है। परिस्थिति के अनुरूप भाव अभिव्यक्त भी होते हैं लेकिन इन सारे भावों की अभिव्यक्ति एक साथ संभव नहीं है। इसी कारण से कुछ ऐसे भावों का निर्देश किया है जिनके भीतर सभी प्रकार की मनोवृत्तियों का समावेश किया जा सकता है। इस प्रकार से काव्य में नौ भाव प्रधान माने जाते हैं- प्रेम, हास, शोक, क्रोध, भय, घृणा, उत्साह, विस्मय (आश्चर्य) और निर्वेद। ये आस्वाद के मूल भाव हैं। ये अन्य भावों से तिरोहित नहीं

---

68. भरतमुनि- नाट्यशास्त्रम्, 6/17

होते, प्रत्युत पुष्ट होते हैं। इसी से इन्हें स्थायी भाव कहा जाता हैं। इन्हीं स्थायी भावों से रसों की उत्पत्ति होती है।

रसों का अनुवाद

जीवन के सामान्य प्रसंगों में 'रस' शब्द का प्राय: व्यवहार होता है। भारतीय साहित्य में रस का व्यवहार बहुत प्राचीन काल से हुआ है। किसी रचना को पढने या सुनने या देखने से पाठक, श्रोता या दर्शक को, जो लोक की अन्य सुखद वस्तुओं में अलभ्य, असाधारण आनन्द मिलता है और जिसको शब्दों से पूर्णतया व्यक्त नही किया जा सकता, केवल अनुभव किया जाता है, वही काव्य में रस कहलाता है।

काव्य में नौ रसों की प्रधानता है जिनके प्रयोग से काव्य में एक प्रकार का चमत्कार जन्म लेता हैं। भारतीय समाज में साहित्य में भक्ति और वात्सल्य रस दोनों का बडा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। अगर रसों का अनुवाद करना है तो अनुवादक को लक्ष्य भाषा में भी वही भाव पैदा करना है जो मूल में हो। शब्दों के माध्यम से अनुवादक उस वातावरण की सृष्टि कर सकता है परन्तु भक्ति और वात्सल्य को प्रस्तुत करने में वह कभी कभी असमर्थ हो सकता है क्योंकि यहाँ संस्कृति की झलक मिलता है।

मानव हृदय में प्रेम, क्रोध, घृणा, भय आदि भाव स्थायी रूप से विद्यमान हैं। जब हम कोई कृति पढते या सुनते हैं या ऐसे कारणों से गुजरते हैं तब ये भाव प्रसंग के अनुसार जाग उठते हैं। इसीको रस का अनुभाव कहते हैं। लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय पाठक के सम्मुख यह एक प्रमुख समस्या बन जाती है। क्योंकि मूल में किसी व्यक्ति के व्यवहार से शब्द-चयन से और प्रसंगानुरूप रस की अभिव्यक्ति होती है। अनुवादक केलिए लक्ष्य भाषा में उस भाव को अभिव्यक्त करनेवाले शब्द या माहौल की सृष्टि कर पाना

कठिन है। इसी कारण मूल में व्यक्त रस को अनुवाद में उतारना कठिन और कभी-कभी असंभव भी हो जाता है।

रस की उत्पत्ति में मात्र स्थायी भाव नहीं बल्कि और भी बहुत से ऐसे अंग हैं जो उसे पुष्ट करते हैं- जैसे आलंबन, उद्दीपन, जोकि विभाव के अंग हैं, अनुभाव और संचारी भाव। जिसके प्रति भाव प्रवृत्त होता है वह आलंबन (accompanying causes) हैं। जो भावों को उद्दीप्त करता है वह उद्दीपन (initating causes) है।

'मानस' में तुलसीदास की रस-योजना वैविध्य पूर्ण एवं सर्वांगपूर्ण हैं। यद्यपि 'रामचरितमानस' के अंग्रेजी अनुवाद में अनुवादक ने इसे यथास्थान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है वे सफल नहीं हो पाए हैं।

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में 'रस' के अनुवाद की समस्याएँ

'रामचरितमानस' में मानसकार ने 'भक्ति रस' को ही प्रधानता दी है और अन्य रस इस रस के सहायक एवं पूरक के रूप में प्रयुक्त हुई है। 'भक्ति रस' के साथ-साथ 'शांत रस' भी व्याप्त है। 'मानस' का अंत भी इसी रस में होता हैं।

श्रृंगार रस

रसों में यह 'रसराज' है। 'रति' श्रृंगार रस का स्थायी भाव है। इसके दो रूप हैं- (1) संयोग श्रृंगार (2) वियोग श्रृंगार।

तुलसी के श्रृंगार चित्रण में दोनों रूपों का सरस एवं विस्तृत झलक मिलती है। उन्होंने अपने परमेष्ट भगवान श्रीरामचन्द्र और जगत्जननी का श्रृंगारात्मक वर्णन किया है जो अत्यन्त मर्यादित रहा है।

'मानस' में संयोग श्रृंगार का चित्रण सर्वथा निष्कलुष है। 'बालकाण्ड' में जनक की पुष्प-वाटिका में राम-सीता का प्रथम साक्षात्कार मर्यादपूर्वक चित्रित किया गया है जिस कारण से वह अत्यन्त पवित्र है। पुष्प वाटिका में जब सीता को श्रीराम के बारे में पता चलता है तो वे वहाँ पहुँचती हैं। यहाँ श्रृंगार के संयोग पक्ष को प्रस्तुत करते हुए मानसकार लिखते हैं-

"चितवति चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ गए नृपकिसोर मनु चिंता ॥
लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥
थके नयन रघुपति छबि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें ॥"[69]

इसका अनुवाद देखिए-

"Meanwhile Sita also looked eagerly round,
To see where the heart-stealing youth might be found,
Her maids pointed out, by a vine partly screened
The handsome young princes, one fair-one dark skinned,
As soon as she saw him, with ardent desire,
Like one finding treasure, her heart was on fire;
She gazed at his face, till her eyelids forgot
To rest with a blink, eyes held fast to one spot."[70]

मूल में 'चितवति चकित चहूँ दिसि सीता' कहकर चलते ढंग से श्रृंगार रस के अनुभवों को जितनी प्रभावात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है वह अनुवाद में नहीं मिलता। मूल में इन शब्दों के जरिए सीता के भावों का पूर्ण चित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। अनुवाद में यह चित्र उभर नहीं आता। यहाँ केवल भावानुवाद ही हुआ है और मूल की पूरी बात को 'looked eagerly' नामक दो शब्दों में कहा गया है।

69. मानस- 1/231/1-3
70. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 236, Pg.180

'Meanwhile' से वाक्य को शुरू करने से मूल की चित्रात्मकता पूर्ण रूप से नष्ट हो जाती है। इस प्रकार श्रृंगार रस के पोषक अनुभव जो मूल रूप में सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किए गए है वे अनुवाद में आकर नष्ट हो गए है। और एक उदाहरण देखिए-

"कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन राम हृदय गुनि ॥
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ॥
भए बिलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥
देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा ॥"[71]

"At the sound of the tinkling of anklets and bangle,
Said Rama to Lakshman, as thoughts gan to mingle,
Like moon and the pheasant, his eyes in a twinkling
To Sita were drawn when he looked t'ward the tinkling.
His restless eyes gave up their wand'ring and blinking,
As tho' from the lids Nimi fled, god of winking."[72]

उपर्युक्त मूल पंक्तियाँ संयोग श्रृंगार का उदाहरण हैं जहाँ राम आश्रय है और सीता आलंबन। सीता के पूर्ण सौन्दर्य को चित्रित करते हुए मानसकार राम के पवित्र और निष्कलंक प्रेम को चित्रित करते हैं और कवि के हृदय के भावों को उरेहने की सफल चेष्टा की है। सीता के 'कंकण किंकिणी और नूपुरों' के ध्वनि यहाँ उद्दीपन विभाव है। श्रव्य बिंबों के माध्यम से मानसकार जो चित्र यहाँ प्रस्तुत करते हैं वह पाठक के मन में भी गूँज उठता है और वह चित्र उभर भी आता है। इसका 'At the sound of the tinkling of anklets and bangle' शब्द के प्रयोग से ही फीका पडा गया है। 'धुनि' शब्द में जो सौन्दर्य और मिठास निकलता है वह 'sound' में नहीं है। जिसप्रकार चकोर चन्द्रमाँ को देखकर उसकी ओर आँखें टेके रहती है उसीप्रकार सीता की शोभा और सौन्दर्य को देखकर श्रीराम के नेत्र भी अचल एवं अपलक अवस्था में रह जाते हैं। यहाँ अनुभाव का

71. मानस- 1/229/1-3
72. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 234, Pg.179

कार्य संपन्न होती है। इसका 'his eyes in a twinkling . . . . restless eyes gave up their wand'ring and blinking किया गया है जिसमें मूल में चित्रित पंक्तियों की पवित्रता नष्ट हो गई है। 'चन्द्रमाँ' और 'चकोर' के बीच क्या संबंध है इस तथ्य को समझे बिना लक्ष्य भाषा पाठक इन पंक्तियों को उसकी पूर्णता में ग्रहण नहीं कर पाएगा। 'his eyes in a twinkling' अनुवादक ने अपनी ओर से जोड दिया है जिस कारण से मूल की सहजता अनुवाद में नष्ट हो गई है। अनुवाद यहाँ केवल शब्दों का ही हो सका है इसीकारण से भावों का प्रवाह एवं तीव्रता नष्ट हो गई है।

मानसकार ने श्रृंगार रस का वर्णन मात्र राम और सीता के संदर्भ में नहीं किया है वरन् गृहस्थ जीवन की विविध परिस्थितियों के बीच ही माधुर्य भाव की सरस अभिव्यंजना की गई है। 'मानस' में कोपभवन में रूठे कैकेई को मनाते हुए राजा दशरथ का चित्रण संयोग श्रृंगार का ही उदाहरण है-

"बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनी निज कोप कर॥"[73]

"Why angry, my queen fair of face?
Lovely-eyed one, with voice like a sweet singing bird,
You with movements the essence of grace,
Tell me why thus again and again he implored."[74]

इधर राजा दशरथ आश्रय है और कैकेई आलंबन। राजा द्वारा कैकेई केलिए प्रयुक्त शब्द, अनुभाव है। मीठी वाणी के साथ रानी को मनाना यहाँ श्रृंगार रस की सृष्टि करता है। सुमुखि, सुलोचनि, पिकबचनि आदि विशेषणों से राजा का रानी को मनाना संचारी भाव है। सुमुखि याने सुन्दर मुख वाली, सुलोचनि याने सुन्दर नयनों वाली और पिकबचनि कोयल जैसे मीठी बोली बोलनेवाली के प्रयोग जो मूल में किए गए हैं रस की

73. मानस- 2/25
74. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Soratha 1, Pg.300

सृष्टि करने में सहायक हुए हैं। अनुवाद में इन मूल शब्दों का शब्दानुवाद प्रस्तुत किया गया है- 'fair of face, Lovely-eyed one, with voice like a sweet singing bird' इससे मूल का प्रभाव पूर्ण रूप से नष्ट हो गया है। 'गजगामिनी' याने हाथी की चाल चलनेवाली। कवियों का यह मानना है कि सौन्दर्य के लक्षणों में यह एक विशेषता है लेकिन अनुवाद में इसकेलिए मात्र 'movements the essence of grace' दिया है जो बहुत ही फीका पडा गया है। मूल में जहाँ विशेषणों के प्रयोग से कवि ने रस की सृष्टि की है वहीं अनुवाद में बहुत नीरस बन गया है।

करुण रस

'शोक' स्थायी भाव की रसात्मक परिणति करुण रस में होती है। 'मानस' में मानसकार ने इस रस की सृष्टि व्यापक रूप से 'अयोध्या' एवं 'लंका' काण्ड में की हैं। राम वनगमन के प्रसंग में राजा दशरथ के शोक को मानसकार ने बहुत ही मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित किया है-

"बिदा मातु सन आवउँ मागी। चलिहउँ बनहि बहुरि पग लागी॥
अस कहि राम गवनु तब कीन्हा। भूप सोक बस उतरु न दीन्हा॥
नगर बयापि गइ बात सुतीछी। छुअत चढी जनु सब तन बीछी॥"[75]

Having bid my own mother farewell, I 'll come back,
Take your blessing and make for the known forest track,
This much having said, for his rooms he departed
The king could say nothing, so sad and down-hearted
The city soon heard of these terrible things,
As the whole body pains when a scorpion stings."[76]

75. मानस- 2/45/2-3
76. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 46, Pg.313-14

दशरथ शोक को मानसकार ने उचित शब्दों के प्रयोग से अभिव्यंजित किया हैं। मूल में 'भूप शोक बस उतरु न दीन्हा' कहकर बहुत ही मर्मिक ढंग से करुण रस की सृष्टि की हैं। 'छुअत चढी जनु सब तन बीछी' में करुण रस के अनुभावों को बहुत ही प्रभावात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। अनुवाद में मूल शब्दों का शब्दानुवाद ही हुआ है। अनुवाद में "say nothing, so sad and down-hearted' शब्दों से मूल की प्रभावात्मकता और मर्मिकता नष्ट हो गयी है। यद्यपि अनुवादक अर्थ अभिव्यक्त कर पाए है फिर भी अनुवाद में करुण रस की सृष्टि करने में वे असफल हुए हैं। मूल के साथ तुलना करने पर अनुवाद बहुत ही नीरस और बेजान लगता है।

हास्य रस

किसी वस्तु या स्थिति की विकृति को देखना-सुनना हास का मूल हेतु है। 'रामचरितमानस' में तुलसीदास का हास्य अनेक प्रकार से प्रगट हुआ है। ध्यान देने की बात यह है कि इसमें मर्यादा का भाव सन्निहित है। यहाँ हास्यरस की सृष्टि आकृति तथा वेष-भूषाजन्य विषमता के आधार पर की गयी है जो 'नारद प्रसंग' में मिलता है-

"जेहिं समाज बैठे मुनि जाई। हृदयँ रूप अहमिति अधिकाई॥
तहँ बैठे महेस गन दोऊ। बिप्रबेष प्रति लखइ न कोऊ॥
करहिं कूटि नारदहि सुनाई। नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई॥
रीझिहि राजकुअँरि छबि देखी। इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी॥
मुनिहि मोह मन हाथ पराएँ। हँसहिं संभु गन अति सचु पाएँ॥
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर गन मुसुकाहीं॥"[77]

"In that very group, just where Narad was seated
In thoughts of his handsomeness proud and conceited
close by him those servants of siva like wise
Took their seats, all unknown in their Brahman disguise,

77. मानस- 1/133/1-3, 134/1

Just where he could hear them, they started their mocking,
From Vishnu fine looks he's received "they said joking
"As soon as she see him, he'll charm the princess;
"She will choose him, believing him Vishnu, noless"
They quietly laughed at the saint, who-a puppet
Bewitched lay in other hands, no one could stop it
He fussed and he twisted and changed his position
His tormentors laughed when they saw his condition."[78]

मूल पंक्तियों में विश्वमोहिनी के स्वयंवर में बन्दर की मुखाकृति वाले मुनि का वर्णन हास्य रस का यथेष्ट संचार करता है। यहाँ नारद आलंबन विभाव है और 'इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी' में उनकी बन्दर की सी आकृति, 'पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं' में राजकुमारी को आकृष्ट करने - बार-बार उन्हें उकसना उद्दीपन विभाव है। इन्हीं से मूल में हास्य रस की योजना हुई है। अनुवाद में अनुवादक ने मूल पंक्तियों का शब्दानुवाद किया है जिससे वे मूल में अभिव्यक्त शब्दों की तीव्रता लक्ष्य भाषा में लाने में असमर्थ हुए हैं। मूल में जहाँ 'इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी' में 'हरि' शब्द वानर अर्थ में प्रयुक्त हुआ है वहीं लक्ष्य भाषा में अर्थ को समझे बिना 'believing him Vishnu, noless' रख दिया है। यद्यपि 'हरि' का एक अर्थ 'विष्णु' है यहाँ 'वानर' अर्थ में लिया गया जहाँ अनुवादक ठीक अर्थ को ग्रहण नहीं कर पाए। इससे उद्दीपन की सृष्टि लक्ष्य भाषा में नहीं हुई है। 'He fussed and twisted and changed his position' में वह चित्रात्मकता नहीं उभरता जो मूल में चित्रित है। इस प्रकार हास्य रस के पोषकतत्त्व जो मूल में पूर्ण रूप से प्रस्तुत किया गया है वह अनुवाद में आकर नष्ट हो गया है। हास्य रस का एक और उदाहरण देखिए-

"की भइ भेट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर।
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर॥"[79]

78. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 134-135, Pg.109-110
79. मानस- 5/53

"Did you meet with them? or having heard of my fame
Have they gone back while prudence permits?
Tell me of my foe's forces, his glory and might
Come speak up! you seem out of your wits!"[80]

इस उदाहरण में मानसकार ने कथनी एवं करनी की विषमता को लेकर संस्फुरित होनेवाले मानस के 'परास्थ' हास्य को प्रस्तुत किया है। यहाँ रावण के विचित्र आत्म विज्ञान के साथ बहुत बारीकी के साथ हास्य रस का अंकुर उगा दिया। मूल में 'श्रवन सुजसु सुनि मोर' शब्द में रावण के अंहम् को अभिव्यक्त किया है। 'गर्व' भाव को प्रधानता देते हुए जिन बारीकियों से हास्य रस की सृष्टि मूल में की गई है वह लक्ष्य भाषा में नहीं मिलता। लक्ष्य भाषा में मूल का शब्दानुवाद किया है, 'or having heard of my fame have they gone back while prudence permits' में गंभीरता का संकेत मिलता है लेकिन हास्यरस की सृष्टि अनुवादक नहीं कर पाए हैं।

वीर रस

शत्रु का उत्कर्ष, उसकी ललकार, दोनों की दशा आदि भाव जब किसी के मन में उनको मिटाने केलिए कार्य करता है, जो 'उत्साह' उत्पन्न करती है, उसी को वीर रस कहते हैं।

'रामचरितमानस' वीर रस प्रधान महाकाव्य है। लंकाकाण्ड के अंतर्गत हमें इस रस की प्रचुर परिव्याप्ति देख पडती है। 'ताटका वध' के प्रसंग में राम के लौकिक और अलौकिक पराक्रम का परिचय प्राप्त होता है-

"चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताडका क्रोध करि धाई॥
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥"[81]

---

80. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Doha 52, Pg.631
81. मानस- 1/208/3

"On th' way he a fierce demoness pointed out,
Named Tarka, who rushed at them, giving a shout,
With simply one arrow the Lord Rama slew her
And place in his heav'n for her meekness gave to her."[82]

मूल में 'एकहि बान प्रान हरि लीन्हा' में श्रीराम का उत्साह और निज पद दीन्हा' में ताटका को 'निजधाम' में भेज देना आदि वीर रस के पोषक तत्त्व है। 'ताटका' का क्रोधित होकर आना ही राम के मन के उत्साह को जागती है। लक्ष्य भाषा में 'सुनि ताडका क्रोध करि धाई' का 'Named Tarka, who rushed at them, giving a shout' में वह तीव्रता नहीं दिखाई देता जिससे 'उत्साह' का पोषण हो। 'निजधाम' देना में राम का दयावीर रूप चित्रित हुआ है। 'place in his heav'n for her meekness gave to her' में मूल की चित्रात्मकता और गंभीरता पूर्ण रूप से नष्ट हो जाती है। अत: अनुवाद में आते आते 'वीर रस' का विकास नहीं मिलता। अन्य उदाहरण देखिए-

"आवत देखि सक्ति अति घोरा। प्रनतारति भंजन पन मोरा।
तुरत बिभीषन पाछें मेला। सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला॥"[83]

When he saw that sharp demon-flung weapon swift coming,
His shield of protector of faithful assuming,
And thrusting Vibhishan at once to the rear,
Rama took to himself the full force of that spear."[84]

यहाँ आलंबन दीन पात्र विभीषण है और आश्रय दयावीर राम है। इधर विभीषण को बचाने केलिए श्रीराम का आगे आना वीर रस की सृष्टि करती है। 'प्रनतारति भंजन पन मोरा' याने मेरा प्रण शरणगत के दु:ख को नष्ट करना है, में वीर रस का पूरा पोषण मिलता है। 'His shield of protector of faithful assuming' में मूल का अर्थ पूर्ण से प्रस्तुत नहीं हुआ है। पुराणों में ही 'शक्ति' का संकेत मिलता है जो अस्त्र है। वीर रस को पुष्ट करने केलिए 'आवत देखि सक्ति अति घोरा' उत्तम पंक्ति है जिसकेलिए अनुवादक ने 'sharp

---

82. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 214, Pg.164
83. मानस- 6/93/1
84. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 94, Pg.718

weapon swift' शब्द का प्रयोग कर के महत्त्व को नगण्य कर दिया है। जिन शब्दों के कारण मूल में वीर रस की सृष्टि हुई है वहाँ लक्ष्य भाषा में आकर यह नष्ट हो गया है।

"जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥'[85]

The riches which Siva on Ravan bestowed,
As his own right a tenth portion cutting,
Those riches now Rama to Vibhishan gave,
In him as ruler confidence putting."[86]

विभीषण आलंबन है आश्रय राम। इधर विभीषण जोकि याचक है और राम का उन्हें सहर्ष दान देना वीर रस को प्रदर्शित करता है। 'सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ' में वीर रस की उद्‌भावना हुई है वह 'Those riches now' में फीका पडा है। यहाँ मूल का शब्दानुवाद ही हुआ है। मूल में जो प्रभावात्मकता और भावों का संचार हुआ है वह लक्ष्य भाषा में खो गया है।

रौद्र रस

शत्रु पक्ष या किसी अविनीत की चेष्टाओं, कृतियों अथवा किसी के द्वारा किए गए असाधारण अपराध, अपमान, गुरुजनों की निन्दा आदि के कारण उत्पन्न मनोविकार को क्रोध कहते हैं। इसीसे रौद्र रस का संचार होता है। इसमें स्थायी भाव क्रोध है जिसके तह में प्रतिशोध की भावना निहित है।

"रामचरितमानस' में अनेक स्थलों पर रौद्र रस की अवतरणा हुई है। भरत के चित्रकूट आगमन की प्रतिक्रिया के स्वरूप में लक्ष्मण की निम्नलिखित उक्ति इसी रस को उदाहृत करती है-

85. मानस- 5/49 (ख)
86. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Doha 48, Pg.628

"आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥
जिमि करिनिकर दलइ मृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसेहि भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥
जौं सहाय कर संकरु आई । तौ मारौं रन रामदोहाई ॥" [87]

"It is good that they've come, bringing with them this host !
By my anger today I will make good my boast !
As a bold lion scatters an elephant herd;
As a hawk swiftly pounces upon a small bird,
So my brothers today I 'll O'er throw on the field;
If, with all this great host they to me do not yield,
Tho' great Siva should come to their aid, I declare
I'll defeat them in fight ! This by Rama I swear." [88]

प्रस्तुत अवतरण में लक्ष्मण आश्रय है, भरत आलंबन हैं तथा उनका ससैन्यागमन उद्दीपन है । 'प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू' द्वारा आश्रय की प्रतिक्रियात्मक मनोवृत्ति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है, जो रौद्र रस की विशेषता है । 'By my anger today I will make good my boast' का भावानुवाद हुआ है जिसमें मूल में चित्रित 'रोष' झलकता नहीं । 'भरतहि सेन समेता' और 'निदरि निपातउँ खेता' में चलते ढंग से रौद्र रस के अनुभावों को बहुत ही गंभीरता और प्रभावात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है । मूल का शब्दानुवाद करते समय अनुवादक ने मूल के कुछ शब्दों को त्याग दिया है जैसे 'भरतहि सेन समेता' का 'so my brothers today' किया गया है । लक्ष्मण का भरत के प्रति जो अमर्ष है वह पूर्ण रूप से झलकता है लेकिन अनुवाद को पढने पर वह अमर्ष की भावना नष्ट हो गया है । मूल के शब्दों की अर्थ द्योतन शक्ति अनुवाद में नष्ट हो गई है । अनुवाद को पढने पर, जब उसकी

87. मानस- 2/229/3-4
88. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 230, Pg.443

तुलना मूल के साथ की जाती है तो वह बेजान और नीरस लगता है। इसका एक ओर उदाहरण देखिए-

"क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन स्रवत सोनित राजहीं।
मर्दहि निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं॥
मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्ह काटि लातन्ह मीजही।
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहिं खल छीजही॥"[89]

"Like gthe grim god of Death, from the bodies of
angry apes flow streams of gore;
Mighty demons they crush to the earth, and above them
like thunder cloud roar;
With their fist they smite hard, with their teeth they bite.
Kick fallen foes with their feet;
With loud cries bears and monkeys use tricks and
brute force to bring foes to defeat."[90]

इस उदाहरण में क्रोध-स्थायी रूप से परिपुष्ट होकर रौद्र रस की अभिव्यंजन हुई है। इस उदाहरण में निशिचर समुदाय आलंबन तथा वानर एवं भालु आश्रय के रूप में चित्रित है। राक्षसों का गर्जन-तर्जन और छल-बल अनुभाव है। 'मारहिं चपेटन्हि', चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं' में रौद्र रस की उद्भावना हुई है। लक्ष्य भाषा में मूल पंक्तियों का शब्दानुवाद किया गया है। 'Like the grim' से वाक्य शुरू करने से मूल की प्रभावात्मकता नष्ट हो गई है। साथ ही 'With loud cries bears and monkeys use tricks and brute force' में वह चित्रात्मकता नहीं है। इस प्रकार रौद्र रस के पोषक अनुभाव जो मूल में पूर्ण सौन्दर्य के साथ प्रस्तुत किया गया है वह अनुवाद में आकर नष्ट हो गया है।

89. मानस- 6/80/1 (छं.)
90. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI Chhand 6, Pg.705

भयानक रस

संभावित विपत्ति की आशंका से उत्पन्न आवेग पूर्ण मनोविकार 'भय' है। जब विनाश वास्तविक हो या होने की आशंका हो तब व्यक्ति अपना धीरज खो देता है और यही भयानक रस का पोषक बनता है।

'मानस' के अनेक स्थलों पर 'भय' की व्यंजना हुई है। बालकाण्ड में शिव की बेढब बारात को देखकर जनता के मन में भय उत्पन्न होना भयानक रस की उत्पत्ति का कारण बनता है। इसका एक उदाहरण देखिए-

"गए भवन पूछहि पितु माता। कहहि बचन भयकंपित गाता॥

++ ++ ++

तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा।

सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा।"[91]

"Their parents the reason enquired for their plight;

They answered in stutters and trembling with fright;

xx xx xx

Snakes, skulls and ash-smeared, He is awful and weird,

With hair matted high, body bare;

With ghosts, devils, witches, And other such wretches

All round; to go near none would dare."[92]

इधर शिव की बारात को आते देख जो भय की सृष्टि हुई है वह 'तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकटमुख रजनीचरा' में अभिव्यंजित होता है। लक्ष्य भाषा में मूल का ही शब्दानुवाद हुआ है। 'Snakes, skulls and ash-smeared' में, वह मूल रूप पाठक के मन में जो भाव उभर आता है, वह लक्ष्य

91. मानस- 1/94/छं.1
92. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I Chaupai 95, Chhand 9, Pg.79

भाषा में नहीं उभरता। यद्यपि शब्दों के प्रयोग से अनुवादक भय की सृष्टि उत्पन्न करना चाहते हैं लेकिन उसमें वह तीव्रता नहीं है जो मूल में चित्रित है।

लंकाकाण्ड का प्रकरण जहाँ अंगद को रावण के रूप का साक्षात्कार कराया है वह भयानक रस का पोषक है-

"अंगद दीख दसानन बैसे। सहित प्रान कज्जलगिरि जैसे।
भुजा बिटप सिर सृंग समाना। रोमावलीलता जनु नाना॥
मुख नासिका नायन अरु काना। गिरि कंदरा खोह अनुमाना।"[93]

"Angad looked at the ten headed king with some awe;
It seemed there but - alive - a soot Mountain he saw
Like great tree were his arms; crowning peaks were his heads;
And his body-hair like a great vine as it spreads;
Looking at each great eye and ear, each mouth and nose,
They seemed deep sunken caves, or great rocks that uprose."[94]

यहाँ मानसकार ने अंगद को रावण के भयानक रूप का प्रत्यक्षदर्शी बनाया है। मानसकार पाठक के मन में रावण के आकार के भयंकर रूप को प्रस्तुत कर मन में भय की सृष्टि उत्पन्न करते हैं। 'सहित प्रान कज्जलगिरि' अर्थात् प्राणयुक्त काजल का पर्वत, शब्दों से भयानक रस की सृष्टि तुलसीदास ने प्रस्तुत की है। 'alive - a soot Mountain' शब्दों के सहारा लक्ष्य भाषा में अनुवादक भयानक रस की सृष्टि नहीं कर पाए हैं। अन्य पंक्तियों का शब्दानुवाद किया गया है। 'बिटप सिर सृंग', 'गिरि कंदरा खोह' आदि भयानक रस के पोषक जो है लक्ष्य भाषा में आते-आते बेजान हो गए हैं।

बीभत्स रस

घृणास्पद वस्तुओं के श्रवण-दर्शन से मन में एक प्रकार का आकुंचन उत्पन्न होता है। वही 'जुगुप्सा' है। यही बीभत्स रस का स्थायी भाव है। इसीसे इस रस का जन्म

93. मानस- 6/18/2-3
94. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 19, Pg.652

होता है। 'रामचरितमानस' में इस रस की उद्भावना अरण्य और लंका काण्डों में विशेष रूप से की गई है।

"कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खर्पर संचहीं।
बेताल बीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीं॥"[95]

"Ghosts and Goblins and ghouls, seized and fashioned the skulls
Into cups, as loud cries jackals made,
Fiends and foul witches pranced, As with devils they danced,
And wild measures of skull music played."[96]

युद्ध वर्णन करते समय मानसकार ने बीभत्स रस की सृष्टि की है। गीदडों का कटकटाना, भूत-प्रेत और पिशाच द्वारा खोपडियों को बटोरना, खोपडियों को बजाकर ताल देना, अँतडियों को लेकर गीधों का उडना फिर उसीको दूसरी तरफ से लेकर पिशाचों का दौडना आदि बीभत्स रस को चित्रित करते हैं। लक्ष्य भाषा में मूल का शब्दानुवाद किया गया है। अनुवादक मूल भाषा में अभिव्यक्त पूरे भाव को व्यक्त करने में असफल हुए हैं क्योंकि 'जंबुक' आदि शब्दों में जो अर्थ बिंब बीभत्स रस के प्रसंग में मूल में उत्तर आया है वह किसी भी हालत में अनुवाद में नहीं मिलता है। एक और उदाहरण देखिए-

"काक कंक लै भुजा उडाहीं। एक ते छीनि एक लै खाहीं॥
एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई। सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई॥
कहँरत भट घायल तट गिरे। जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे॥
खैचहिं गीध आँत तट भए। जनु बंसी खेलत चित दए।
बहु भट बहहिं चढे खग जाहीं। जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं॥
जोगिनि भरि-भरि खप्पर संचहिं। भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं॥"[97]

"Crows flew off with the limbs which from bodies they tore
Each from each snatching ate up the portion he bore.

95. मानस- 3/19/छं.
96. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III Chhand 6, Pg.535
97. मानस- 6/87/1-4

Some thus robbed cried, you rascal ! for all there's enough,
'You seem starved always no matters how much you stuff
Wounded lay on the banks groaning out their last breath
Like those placed by a river's edge waiting for death;
Vultures played with entrails that from corpses they took,
Just like anglers intent as they play with their hook;
On dead bodies sat birds in flocks with them to float,
As pass boatmen from bank to bank guiding their boat;
Many times witches filled skulls and drank of the blood;
Ghouls and goblins danced all kinds of steps by the flood;"[98]

मूल पंक्ति में 'जुगुप्सा' स्थायी रूप से अभिव्यक्त हुए हैं। 'लै भुजा उडहीं', 'खैचहिं गीध आँत तट भए', 'जोगिनि भरि-भरि खप्पर संचहिं' पंक्तियों में बीभत्स रस पूर्ण रूप से उभर आता है। अनुवाद में इन मूल शब्दों का कहीं-कहीं भावानुवाद और कहीं कहीं शब्दानुवाद हुआ है। 'Crows flew off with the limbs which from bodies they tore', 'Vultures played with entrails' आदि शब्द मूल से फीके पड गये हैं। 'भूत पिसाच' आदि में जो क्रूरता है वह 'Ghouls and goblins' में नहीं है। मूल में चित्रित बीभत्स रस की विशेषता यह हैं कि उसमें हमें जुगुप्सा की पार्श्वभूमि अवतरित मिलते हैं वही लक्ष्य भाषा में आते आते धीमी हो जाती है।

शांत रस

संसार की असारता, इसकी सभी वस्तुओं की नश्वरता, क्षण-भंगुरता का बोध होने से मन को विश्राम मिलता है जो कभी अन्य सांसारिक सुख के विषय के भोग से नहीं मिलता। इसी मानसिक शांति का वर्णन पाठक या श्रोता के हृदय में होता है तब 'शान्त रस' की उद्भावना होता है।

98. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI Chapai 88, Pg.712

"सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो।

सो एक राम अकाम हित निर्बानप्रद सम आन को॥

जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदास हूँ।

पायो परम बिश्रामु राम समान प्रभु नाही कहूँ।"[99]

"He All-Gloriu's, All kindly, All-wise, on the destitute
show'ring his love
Ever freely, who gives final bliss - One is Rama, all other above !
There is no lord like Rama, to whom Dull-wit Tulsi Das
ev'ry thing owes,
Who to such as I give supreme rest when the least
trace of kindness he shows."[100]

मानस में शांत रस का जो वर्णन हुआ है वह भक्ति रस से स्वतंत्र नहीं होता। भक्ति-भावना की जो संकल्पना भारतीय संदर्भ में है वह दूसरी संस्कृति में प्रस्तुत करना कठिन है। इसीकारण से अनुवाद में यह मात्र शब्दानुवाद ही लगता है। 'पायो परम बिश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ' की औपसंहारिक शब्दावली द्वारा स्पष्ट भी कर दिया। 'परम बिश्रामु' अथवा परम शान्ति के इस आयोजन में शांत रस की सृष्टि हुई है। अनुवाद में भक्तिमूलक प्रसंग को ध्यान में रखते हुए ही अनुवादक ने इसको प्रस्तुत किया है। जिस सौन्दर्य से मूल में शान्त रस की सृष्टि हुई है वह अनुवाद में आकर नष्ट हो गया है।

अद्भुत रस

किसी असाधारण, अपूर्व, अलौकिक व्यक्ति, जीववस्तु आदि को देखकर हृदय में कुतूहलता होती है, तब 'आश्चर्य' का भाव मनुष्य मन में प्रस्फुटित होता है तो 'अद्भुत रस' की सृष्टि होती है। 'रामचरितमानस' में कई अवसरों पर इस रस की उद्भावना हुई है। 'सुन्दरकाण्ड' में हनुमान के कृत्य अद्भुत रस के प्रसंग में उल्लेखनीय है-

99. मानस- 7/129/ 3 छं.
100. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VII, Chhand 14, Pg.867

"जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा।
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ। तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ॥
जस जस सुरसा बदनु बढावा। तासु दून कपि रूप देखावा॥
सत जोजन तेहि आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा॥
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मागा बिदा ताहि सिरु नावा॥"[101]

"As she opened up fully a league wide her jaws,
He became double that size without the least pause;
She replied then by op'ning her mouth sixteen leagues,
He to thirty-two swelled by his playful intrigues;
Wider time and again the Great snake her mouth stretched
Swelling twice as big, each attempt Hanuman matched;
A full hundred leagues wide was her great mouth at last
Hanuman then became very tiny, and fast
He went into her mouth and came out on the run.,
Then asked leave to go bowing with courteous fun."[102]

हनुमान-सुरसा प्रसंग के संदर्भ में हनुमान के बल परीक्षा केलिए देवताओं द्वारा सर्पों की माता भेजी जाती है। जैसे 'जस जस सुरसा बदनु बढावा। तासु दून कपि रूप देखावा' और 'जोजन तेहि आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा' में अद्भुत् रस की चमत्कृति देखने को मिलती है। लक्ष्य भाषा अनुवाद में अनुवादक ने मूल प्रसंग को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जिस चित्रात्मकता से मानसकार ने इस रस की सृष्टि की है वह अनूदित पंक्तियों में नष्ट हो गया है। भारतीय पाठक जोकि हनुमान के रूप से परिचित है, उससे जुडी कथाओं से परिचित है वह इसका अनुभव कर सकता है और कवि के प्रस्तुती और शब्द-चयन के माध्यम से ओर भी पुष्ट होता है। लक्ष्य भाषा पाठ मूल

101. मानस- 5/1/4-6
102. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V Chaupai 2, Pg.590-591

का शब्दानुवाद है और 'wider time and again' में मूल की चित्रात्मकता पूर्ण रूप से उभर नहीं आती।

वात्सल्य रस

वत्स के प्रति माता-पिता का स्नेह वात्सल्य कहा गया है। यही इस रस का स्थायी भाव है। पुत्र एवं पुत्री दोनों ही इसके आलंबन विभाव होते हैं। 'रामचरितमानस में वात्सल्य का प्रसार कम है किन्तु अवसर तथा प्रसंगानुकूल इसका वर्णन हुआ है। अयोध्यकाण्ड के अंतर्गत कौशल्या के भावोच्छ्वास में वात्सल्य रस का सरस स्वरूप का नियोजन हुआ हैं-

"बार-बार मुख चुंबति माता। नयन नेह जलु पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए। स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए ॥"[103]

"Eyes tear filled and thirlled that as son she possessed him
Again andAgain warmly kissed and caressed him,
She held him close to her, the dearest of guests,
While the milk of her love slowly dripped from her breasts." [104]

मूल पंक्तियों में कौसल्या का अपने पुत्र के प्रति वात्सल्य का भाव उमड पडता है। 'स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए' में वात्सल्य का पूरा चित्र उमड पडता है। वात्सल्य रस को अपने पूरे सहजता एवं तीव्रता से व्यक्त किया गया है। अनुवाद में इसका शब्दानुवाद करते हुए अनुवादक वात्सल्य को चित्रित करने का प्रयास करते हैं लेकिन उसके पूरे भाव को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने में वे सफल नहीं हुए हैं। संबंधों के बीच जो गहनता मूल में चित्रित है वह लक्ष्य भाषा में उमड नहीं पडता। 'She held him close to her, the dearest of guests' जो दिया गया वह बहुत ही प्रभावहीन है और 'While the milk of her love slowly dripped from her breasts' में वह आत्मीयता झलकता नहीं जो मूल में है। 'वात्सल्य रस' का एक उदाहरण बालकाण्ड में मिलता है-

103. मानस- 2/51/2
104. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 52, Pg.318

"कौसल्या जब बोलन जाई। ठुमुक ठुमुक प्रभु चलहिं पराई।
निगम नेति सिव अंत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा॥
धूसर धूरि भरें तनु आए। भूपति बिहसि गोद बैठाए॥"[105]

इसका अनुवाद है-

"His mother herself, then must go out to fetch him,
but he scampers off and defies her to catch him,
She arries him back in a mischievious rumpus,
Who scripture nor siva can fathom or compass;
There's dust and dirt over his body and face,
But the king laughs and takes him is loving embrace."[106]

जिस माधुर्य और भाव से मानसकार ने बालक राम की क्रीडा का वर्णन किया है वह अनुवाद में मात्र अर्थ संप्रेषण ही रह गया है। वहाँ वात्सल्य रस का भाव नष्ट सा हो गया है।

'रस' के बिना काव्य नीरस प्रतीत होता है- और इसीकारण अनुवादक को चाहिए की काव्य के (मूल) सौन्दर्य का बनाए रखते हुए अनुवाद को प्रस्तुत करे।

भक्ति रस

हिन्दी में भगवद् भक्ति विषयक रचनाओं का प्रचुर भंडार है। भक्ति रस का स्थायी भाव भगवान् के माहात्म्य से उत्पन्न हर्ष के कारण द्रुत चित की भगवद् विषयक शद्ध सात्विकी रति है। तुलसी ने परब्रह्म के राम रूप की कल्पना करके अपनी श्रद्धामयी भावानुभूतियों का प्रकाशन किया है।

"सबकें प्रिय सेवक यह नीती। मोरें अधिक दासि पर प्रीती।"[107]

---

105. मानस- 1/202/4-5
106. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Canto I, Chaupai 208, Pg.159
107. मानस- 7/15/4

"Tis, with men, rule and right to give servants their love;
But who serves me is dearest - all others above !"[108]

मूल पंक्तियों में भक्ति भाव स्वामी रूप में देखने को मिलता है। तुलसी काव्य में दास्यभक्ति का उल्लेख अधिक मिलता है यहाँ राम अपने भक्तों की सेवा को स्वीकार करते है और स्वामी की तरह अनुग्रह करते हैं। लक्ष्य भाषा में मूल पंक्तियों का शब्दानुवाद किया गया है। मानस में राम के जीवन के सभी प्रसंग मधुर बाल-क्रीडाएँ, प्रियजन-परिजन के प्रति निश्छल स्नेह-सौजन्य, शरणागत-वत्सलता आदि कवि की भक्ति - भावना के सहज उद्दीपन बन जाते हैं। ये प्रसंग भक्ति को उद्दीप्त ही नहीं करते वरन् उसके स्वरूप के निर्माण में भी सहायता करते हैं।[109] 'मोरें अधिकदास पर प्रीती' में भक्ति रस का पूरा भाव उभर आता है जिसका प्रभाव 'who serves me is dearest' में नष्ट हो गया है। यद्यपि अर्थ की अभिव्यक्ति हुई है, फिर भी भारतीय संस्कृति से जुडे भक्ति तत्व को अनुवादक प्रस्तुत नहीं कर पाए।

निष्कर्ष

भावों की अभिव्यक्ति केवल भावों से ही समझी जाती है, भाषा से नहीं। अनुभूतियाँ अनुभव की वस्तु हैं। रस की अनुभूति होती है। इसका वर्णन असंभव है। मूल में जितना भी संभव हो सका है वह उचित शब्द प्रयोग, अलंकार एवं अभिव्यक्ति के कारण ही हो सका है। अनुवाद में जहाँ वातावरण ही अलग बन गया है भावों की अभिव्यक्ति में लक्ष्य भाषा के शब्द अप्राप्त हो गए हैं। इससे अभिव्यक्ति की तीव्रता नष्ट हो चुकी है। यही नहीं, मूल का जो अर्थ बिंब है वह अनुवाद में नष्ट प्राय है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि मूल में जो रसाभिव्यक्ति हुई है, अनुवाद में उसी प्रभाव के साथ वह सामने नहीं आ सकी है।

---

108. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VII, Chaupai 14, Pg.767
109. आस्था के चरण (भाग 1) - नगेन्द्र - ग्रंथावली (खंड 7) पृ.565

तीसरा अध्याय

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में कलापक्ष के संदर्भ में अनुवाद की समस्याएँ

संस्कृत साहित्य में ज्ञान का विभाजन दो भागों में किया गया है- (1) विद्या (2) उपविद्या।

विद्या के अन्तर्गत काव्य को रखा गया हैं तथा कलाएँ उपविद्या के अन्तर्गत आती हैं। शब्द और अर्थ में सहभाव को बतानेवाला साहित्य विद्या कहलाता हैं। इस विद्या की 64 उपविद्याएँ हैं जिन्हें विद्वान् कला कहते हैं। ये उपविद्याएँ या कलाएँ काव्य का जीवन हैं। काव्य में रमणीय अर्थ की जो परिकल्पना की गयी है वह काव्य की समस्त प्रक्रियाओं का अंग है परन्तु कला द्वारा उसमें विशेष निखार, संयम और संतुलन आता है। अभिप्रेत अर्थ प्रतीति केलिए कलाकार को अपेक्षित उपकरणों का चयन करना पड्ता है, उन उपकरणों को उनके ठीक स्थान पर संयोजित करना आवश्यक होता है। जैसे चित्रकला में ठीक रंग और रेखाओं की प्रमुखता रहती है उसी प्रकार काव्य में शब्द, अलंकार, वक्रोक्ति आदि को यथा स्थान नियोजित करना कवि का कर्त्तव्य होता है।

अनुवाद में शब्द और अर्थ का अपना विशेष महत्त्व है। इसमें ठीक शब्द चयन की और सही अर्थ को पकडने की आवश्यकता पडती है। काव्य में कवि जिन भावों की अभिव्यक्ति करता हैं उसका माध्यम भाषा होती है। अत: काव्य में शब्द और अर्थ मिलकर ही अर्थपूर्ण वाक्य या पद की सृष्टि करते हैं और अनुवाद में लक्ष्य भाषा में इसी की अभिव्यक्ति करनी पडती है। काव्य में कला रूपाश्रयी है। इसमें प्राय: रूप की प्रधानता पायी जाती है। काव्य यदि हृदय की अनुभूति है तो कला उस अनुभूति का बाह्याकार। कला द्वारा जो अभिव्यंजना होती है वह रूप के आकार में बँधती है तभी वह

साकार होकर पाठक को अलौकिक आनन्द प्रदान करती है। अत: काव्य और कला एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

साधारण प्रचलित अर्थ में कला-पक्ष के अंतर्गत काव्यागत रमणीयता के संपूर्ण तत्त्वों का विवेचन आ जाता है, किंतु किसी कवि की भाषा का कला-पक्ष केवल उन्ही विषयों से अपना संबंध स्थापित करता है, जो किसी-न-किसी अंश में उसकी भाषा में उपलब्ध विविध प्रयोगों की रमणीयता को अभिव्यक्त करते हैं। भाषा के कलापक्ष के अंतर्गत जो विशेषताएँ है उसे सुविधा केलिए दो वर्गों में रखा जा सकता है- पहला काव्यशास्त्रीय कला-पक्ष और दूसरा सामान्य कला पक्ष। काव्यशास्त्रीय कला-पक्ष के अन्तर्गत काव्यशास्त्र के भाषा विषयक निर्दिष्ट अंगों अर्थात् शब्दशक्ति, गुण, रीति, अलंकार आदि तथा सामान्य कलापक्ष के अन्तर्गत वाक्चातुर्य, वर्ण-मैत्री, शब्द-मैत्री, नाद-सौंदर्य इत्यादि बातें प्रमुख रूप से आती हैं। अनुवाद, प्राय: काव्यानुवाद के संदर्भ में इन कलापक्षों के अनुवाद में लक्ष्य भाषा में प्राप्त शब्द आंतरिक, बाह्य तथा प्रभाव की दृष्टि से स्रोत भाषा के शब्दों के समान नहीं होते। भाषा काव्य का अनिवार्य एवं अविभाज्य अंग है। कविता का प्राण भाव है पर उसकी देह भाषा है। यह उसका प्रमुख उपकरण है और अंग भी है। शब्द, अर्थ, रस, गुण, ध्वनि, शब्द-संगीत, अलंकार आदि की छाया में कवि की भाषा के साहित्यिक सौन्दर्य का उद्घाटन होता है।

काव्य में शब्द और अर्थ का सहितत्त्व समान रूप से इष्ट है। शब्द के अभाव में अर्थ का आश्रय नहीं, वैविध्य नहीं, विशिष्टता नहीं है। शब्द की गति के बिना अर्थ की गति पंगु है, वह आकार और स्वरूप से हीन है इसलिए दोनों का अपना अलग महत्त्व है। शब्द और अर्थ का अनूठा गठबन्धन काव्य की कला है। इस अनूठे गठबन्धन से काव्य कला का पूर्ण चमत्कार निखर उठता है। शब्द और अर्थ एक दूसरे की सौन्दर्यवृद्धि के सचेष्ट साधन हैं। इनका पारस्परिक मैत्रीकरण साहित्य में सजीवता और जीवन्तता प्रदान करता है। जीवन की बिखरी अनुभूतियों को समेट कर उन्हें शब्द और अर्थ के माध्यम से एक कलापूर्ण रूप दिया जाता है। तभी काव्य का जन्म होता है।

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में शब्द के स्तर पर अनुवाद की समस्याएँ

शब्द भाषा रूपी भवन केलिए ईटों का काम करते हैं। इनसे ही वाक्य बनते हैं और ये मनचाहा अर्थ व्यक्त करते हैं। किसी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के समूह को उस भाषा का शब्द भण्डार कहते हैं। भाषा में शब्दों का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जाता है। 'मानस' में कई प्रकार के शब्द योजना पर विचार किया गया है। अनुवाद में इन सभी प्रकारों केलिए अंग्रेजी प्रतिशब्द का प्रयोग करने में अनुवादक सफल हुआ है तो कहीं कहीं पर असफल भी। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

"बने बराती बरनि न जाहीं।"[1]

इसका अनुवाददेखिए-

"Beyond words the glorious wedding procession."[2]

'बराती' का अर्थ 'वर की ओर से निकलने वाली जुलूस है जिसमें वर पक्ष के सभी बंधु-मित्र शामिल होते हैं। अनुवाद में इसकेलिए रखा गया शब्द 'Wedding procession' है जो ठीक है। लेकिन 'बराती' शब्द से जो विशेष अर्थ निकलता है वह 'Wedding procession' में उत्पन्न नहीं होता। यदि अनुवादक इसके लिए टिप्पणि देते तो अनुवाद अच्छा होता। इसका एक ओर उदाहरण देखिए-

"सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ।"[3]

"Then with Sita, his friend and his brother his way
To his goal in the forest he made."[4]

---

1. मानस- 1/347/2
2. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 352, Pg.269
3. मानस- 2/104
4. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Doha 101, Pg.354

'अनुज' शब्द मात्र छोटे भाई केलिए प्रयुक्त होता है। लक्ष्य भाषा में 'अनुज' केलिए 'brother' शब्द दिया गया है जो एक हद तक ठीक है लेकिन 'brother' शब्द मात्र छोटे भाई केलिए प्रयुक्त नहीं होता यह 'बडे भाई' अर्थ को भी व्यक्त करता है। अतः इसमें मूल में अभिव्यक्त ठीक अर्थ सामने नहीं आता।

भिन्नार्थी शब्द

कभी-कभी काव्य में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जो प्रसंग अनुकूल भिन्न अर्थ देते हैं। 'मानस' में मानसकार ने ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो अनेकार्थ देते हैं। अनुवाद के संदर्भ में इन शब्दों केलिए लक्ष्य भाषा में अनेकार्थ मिलना कठिन ही नहीं असंभव भी है। जैसे कुछ उदाहरण देखिए-

"बहुरि सक्र सम बिनवऊँ तेही संतत सुरानीक हित जेहीं॥"[5]

"These whom I implore are, like Indra, delighting

Forever in demons, carousing and fighting."[6]

मूल पंक्ति में 'सुरानीक' दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है पहले 'सुरा' के अर्थ में और दूसरा 'सेना' के अर्थ में। इधर एक अर्थ इन्द्र के प्रिय पान केलिए और दूसरा देवताओं की सेना जो इन्द्र केलिए हितकारी है, अभिव्यंजित करता है। मूल में जिस प्रकार एक ही शब्द से दो अर्थों को मानसकार ने अभिव्यक्त किया है उससे मूल पंक्ति में सौंदर्य आ गया है। लक्ष्य भाषा में 'सुरानीक' शब्द को सूचित करने वाले शब्द को अनुवादक ने छोड दिया हैं। अनुवाद में मात्र भाव के सहारे मूल अर्थ को प्रस्तुत किया है जो पूर्ण अर्थ को अभिव्यक्त करने में असफल हुआ है।

---

5. मानस- 1/3/5
6. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 4, Pg.5

'तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हियँहेरि हरषि हर।"[7]

"It pleased him to give as the name of this drama,

The Beautiful Lake of the deeds of Lord Rama."[8]

यहाँ 'मानस' शब्द के दो अर्थ निकलते हैं- पहला जिसमें राम के जीवन गाथा संकलित है और दूसरा पार्वती को राम कथा सुनाने से पहले यह शिवजी के मन में संजोए रही। अतः 'मानस' शब्द 'रामचरित' और 'मन' अर्थों में ही प्रयुक्त हुआ है। अनुवादक को 'मानस' के इन दोनों अर्थों को पृथक-पृथक कर अनुवाद में प्रस्तुत करना पडा है क्योंकि लक्ष्य भाषा में ऐसा कोई भी शब्द नहीं है जो दोनों अर्थों को एक साथ संप्रेषित कर सके।

"रीझिहि राजकुऑरि छबि देखी। इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी।।"[9]

"As soon as she sees him, he'll charm the princess;

She will choose him, believing him Vishnu, no less."[10]

'हरि' शब्द विष्णु और वानर दोनों केलिए प्रयुक्त हुआ है। नारद जब विश्वमोहिनी के स्वयंवर में जाने केलिए विष्णु से अपना रूप माँगते हैं तो विष्णु उन्हें अच्छी सुन्दरता देते है, जोकि वानर का सा मुँह होता है। लेकिन नारद इससे अनजान है। अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में केवल एक अर्थ का प्रयोग किया है। 'हरि' का 'Vishnu' अर्थ ही प्रस्तुत किया गया है और 'वानर' शब्द का परित्याग किया गया है। इसका एक ओर उदाहरण देखिए-

"जेहिं बारीस बँधायउ हेला। उतरेउ सेन समेत सुबेला।।"[11]

UNIVERSITY LIBRARY ★ COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY ★ Cochin - 682 022

---

7. मानस- 1/34/6
8. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 35, Pg.33
9. मानस- 1/133/2
10. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 134, Pg.109
11. मानस- 6/8/3

"He who built for his band o'er the ocean a bridge
And now camps with them on Mount suvela's high ridge."[12]

मूल में 'सुबेला' अच्छी वेला (समय) और सुबेल पर्वत के अर्थ में प्रयोग किया गया है। लक्ष्य भाषा में सुबेल पर्वत के अर्थ में ही इसे रखा गया है। पहला अर्थ का परित्याग किया गया है।

इन उदाहरणों से इस बात का स्पष्टत: पता चलता है कि किसी भाषा की खसीयत उसका शब्द भण्डार है। अनुवाद के संदर्भ में लक्ष्य भाषा में पर्याप्त शब्द अगर नहीं हैं तो भावों को ठीक रूप से अनुवादक प्रस्तुत नहीं कर पाएगा। यह अनुवाद की सीमाओं को ही दिखाता है। स्रोत भाषा के सभी शब्दों का उसी अर्थ में लक्ष्य भाषा में अनुवाद नहीं हो सकता। अनुवाद तो यथासंभव ही किया जाता है।

पर्यायवाची शब्द

एक अर्थ को प्रकट करने वाले अनेक शब्दों को पर्यायवाची या समानार्थी कहते हैं। काव्य भाषा में इन शब्दों का प्रयोग कवि उनके सूक्ष्म अर्थ-भेद के कारण ही करता है। इससे भाषा में नवीनता का समावेश होता है, भाषा प्रवाह में निरन्तरता बनी रहती है। ऐसे शब्द अनुवाद में कठिनाइयाँ उपस्थित करते हैं। मानसकार ने रामचरितमानस में पर्यायवाची शब्दों का बहुलता से प्रयोग किया है। इनका प्रयोग संदर्भ के अनुसार ही हुआ है। लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने अपने सीमित शब्द भण्डार के कारण और साथ ही इन शब्दों की मात्र भारतीय संस्कृति से संबंध होने के कारण शब्दानुवाद या लिप्यंतरण ही प्रस्तुत किया है। कुछ उदाहरण देखिए-

12. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 9, Pg.644

'शिव' केलिए मानस में प्रयुक्त पर्यायवाची शब्द 'संभु',[13] 'गिरीस'[14], 'महेस'[15], 'उमेस'[16], 'पुरारि'[17], 'संकर'[18], 'त्रिपुरारि'[19] केलिए अनुवादक ने 'Lord siva'[20], या 'Siva'[21] शब्द को ही छुना है। शिव केलिए अभिहित हर पर्याय का अपना महत्त्व है। उमा के ईश (पति) होने के कारण वे 'उमेस' नाम से भी जाने जाते हैं। त्रिदेवो में से एक होने के कारण 'त्रिपुरारि', हिमालय पर्वत पर वास करने वाले ईश्वर होने से 'गिरीस' आदि नामों से जाने जाते हैं। लेकिन भिन्न संस्कृति से आने वाले अनुवादक भारतीय संस्कृति और परंपरा से जुडी अन्तर्कथाओं से अपरिचित होने से मात्र 'Lord siva' रख सकते हैं। इनके अलावा 'चंद्रमौलि और बृषकेतू' [22] का शब्दानुवाद किया गया है 'Moon-crested, bull-blazoned'[23] यद्यपि ये शब्द अर्थ को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करते हैं वे इसके पीछे के भाव को सूचित नहीं करते। अपने भाल पर चंद्र को धारण करने से शिव का नाम 'चन्द्रमौलि' पडा और शिव के वाहन नंदी 'वृषभं' नाम से जाना जाता है अत: नंदी वाहक होने के कारण 'बृषकेतू' पर्याय भी शिव केलिए प्रयुक्त होता है। लक्ष्य भाषा में अगर अनुवादक इन शब्दों केलिए कोई पाद-टिप्पणि देते तो इनका शब्दानुवाद और भी स्पष्ट होता। विश्व के

---

13. मानस- 1/1/2
14. वही, 1/54/4
15. वही, 1/14/3
16. वही, 1/14/4
17. वही, 1/3/4
18. वही, 1/32/1
19. वही, 1/46
20. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 1, Pg.2
21. Ibid, Chaupai 15, Pg.16
22. मानस- 1/63/4
23. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 64, Pg.55

नाथ होने के कारण शिव 'विस्वनाथ' [24] नाम से भी जाने जाते हैं जिसकेलिए लक्ष्य भाषा में किसी भी शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है।

पार्वती के संदर्भ में भी तुलसीदास ने कई पर्यायों का प्रयोग किया है जैसे 'गिरिजा'[25], 'गिरिनंदिनि'[26], 'हिमसैलसुता'[27], 'गिरिराजकुमारि' [28], 'अपरना'[29] 'सैलजा'[30], 'उमा, अंबिका, भवानी'[31] । अनुवाद में इनकेलिए रखे गए शब्द हैं- 'Parvati'[32], 'hill maiden'[33], 'O mountain-king's daughter'[34], 'The leafless'[35], 'Uma, Bhawani or Ambika'[36] । अनुवादक ने 'गिरिजा' शब्द का परित्याग किया है। गिरिनंदिनि अर्थात् पर्वत की पुत्री जिसकेलिए 'Parvati' शब्द रखा दिया है। 'हिमसैलसुता और गिरिराजकुमारि' केलिए 'hill maiden' और 'mountain king's daughter' शब्दानुवाद रखे हैं। अनुवाद की दृष्टि से इसे सफल मान सकते हैं। पार्वती का नाम 'अपर्णा' इसलिए पडा क्योंकि तपस्या के समय वह मात्र सूखे बेलपत्र खाती थी। बाद में इन सूखे पत्तों को भी छोड दिया। अनुवादक ने केवल अपर्णा शब्द के भाव को ही अनुवाद में दिया है।

---

24. मानस- 1/57/3
25. वही, 1/14/3
26. वही, 1/30/5
27. वही, 1/41/1
28. वही, 1/74
29. वही, 1/73/4
30. वही, 1/76
31. वही, 1/66/1
32. The Ramayana of Tulsidas (Voll) Book I, Chaupai 31, Pg.29
33. Ibid, Chaupai 42, Pg.39
34. Ibid, Doha 72, Pg.62
35. Ibid, Chaupai 74, Pg.62
36. Ibid, Doha 74, Pg.64

इसी प्रकार 'श्रीराम केलिए तुलसीदास ने रघुपति,[37] रघुनाथ,[38] रघुनायक[39] रख दिया है जिनकेलिए अनुवादक ने 'Lord Rama'[40] शब्द का प्रयोग किया है जो अर्थ की दृष्टि से ठीक है। तो सीतानाथ[41] केलिए 'Sita's noble Lord'[42] दिया है। सीता के पति अर्थ में ही सीतानाथ पर्याय दिया गया है। अनुवादक ने अर्थ को ठीक से ग्रहण किया है लेकिन 'noble' शब्द को जोडकर मूल में जो सहजता है उसे नष्ट कर दिया है। 'जानकीनाथ'[43] पर्याय भी श्रीराम केलिए प्रयुक्त होता है जिसकेलिए अनुवादक ने 'Sita and Rama'[44] दिया है। मूल शब्द से तात्पर्य 'जानकी के पति' से है। लेकिन अनुवाद में अनुवादक ने दो व्यक्तियों के अर्थ में ही शब्द को रखा है जो मूल अर्थ से विचलित होता है।

पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से तुलसीदास के शब्दज्ञान का परिचय मिलता है। वे एक बार किसी शब्द का प्रयोग करते हैं तो फिर उसका आवर्त्तन नहीं करते। सीता केलिए उन्होंने 'सीय',[45] 'वैदेही',[46] 'जानकी',[47] 'जनकसुता'[48] आदि शब्दों का प्रयोग किया है। अनुवाद में इसकेलिए 'Sita'[49] शब्द रखकर अपनी बात को सीमित कर दिया है तो कहीं कहीं पर शब्दानुवाद के सहारे भी अनुवाद में बात को अभिव्यक्त किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि तुलसीदास ने पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते हुए प्रसंग वर्णन में

---

37. मानस- 1/7/3
38. वही, 1/1/ (छं.)
39. वही, 1/17/5
40. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 8, Pg.9
41. मानस- 1/28/(ख)
42. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Doha 27, Pg.27
43. मानस 2/75/1
44. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 76, Pg.334
45. मानस- 1/7/1
46. वही, 1/48/3
47. वही. 1/260/2
48. वही, 2/81
49. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 8, Pg.9

प्रभावात्मकता एवं आकर्षण बनाए रखा है। तुलसीदास की इस विशेष शैली का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किसी भी हालत में नहीं हो सकता। इसी कारण एटकिन्स भी यह काम भली भांति नहीं कर सके। अपने अनुवाद में प्रभावात्मकता नहीं ला सके।

मध्ययुगीन इतिहास की सबसे प्रमुख घटना भक्ति आन्दोलन है। भक्तिसाहित्य का मुख्य लक्ष्य जनता के बीच भक्ति का प्रचार था। इसकेलिए जनसाधारण की भाषा के प्रयोग की आवश्यकता हुई। तुलसीदास ने इसीकारण से साधारण जनता की भाषा अपनाई। इससे मानसकार ने अपने विचारों और भावों को वाणी दी।

शब्द प्रयोग एवं शब्द भेद

प्रयोग की दृष्टि से शब्दों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जा सकता है सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द।

यहाँ सामान्य शब्द से अभिप्राय साधारण और सरल शब्दों से हैं जिनके माध्यम से कवि अपने विचारों को जनता तक, निष्प्रयास अभिव्यक्त कर सकता है। मानसकार के अपने शब्दों में व्यक्त विचार को देखिए-

"सरल कवित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान।"[50]

"A style clear and simple, theme lofty and fine,

High honour from good men begets."[51]

इस पंक्ति में सुन्दर कविता की श्रेष्ठता को कवि ने स्वयं व्यक्त किया है। अनुवादक ने उक्त पंक्तियों का शब्दानुवाद करके सरल भाषा में ही इसे प्रस्तुत किया है। यह सच है कि कवि का व्यक्तित्व उसकी रचना में झलकता है। रामचरितमानस में भाषा के आधार पर तुलसी का व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित होता है। देखिए-

---

50. मानस- 1/14
51. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Doha 14, Pg.15

'कैकेयसुता सुमित्रा दोऊ । सुन्दरसुत जनमद मै ओऊ ।"[52]

"Kaikeyi and Śumitra also gave birth

To sons of unusual beauty and worth."[53]

मूल के पंक्तियों को तुलसी सरल और सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त करने में सफल हुए हैं। अनुवादक भी मूल पंक्तियों का शब्दानुवाद करते हुए लक्ष्य भाषा में सरलता लाने में सफल हुए हैं।

पारिभाषिक शब्द

काव्य में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग असंगतिपूर्ण नहीं हैं। पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग भाषा की शक्ति-वृद्धि केलिए होता है। रामचरितमानस में अनेक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनसे मानस की काव्यभाषा में अर्थ-गांभीर्य की सृष्टि हुई हैं। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

तुलसी तत्वत: अद्वैतवादी हैं। वे जीवन की चरम सिद्धि कैवलय (मोक्ष) मानते है। मोक्ष केलिए पारिभाषिक शब्द 'कैवल्य' का प्रयोग मानसकार करते हुए दिखाई देते है।

"ज्ञानपंथ कृपान कै धारा । परत खगेस होइ नहि बारा ॥"

जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई । सो कैवल्य परमपद लहई ॥'[54]

अर्थात् ज्ञान-मार्ग तलवार की धार के समान है। इस मार्ग से गरते अर्थात् पथभ्रष्ट होते देर नहीं लगती। जो इस पथ को निर्विघ्न निबाह ले जाता है वही मोक्ष रूपी परमपद को पा सकता है। इसका अनुवाद देखिए-

52. मानस- 1/164/1
53. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 200, Pg.153
54. मानस- 7/118/1

"Wisdom's pathway is like the sharp edge of a sword;

If one falls there, no way of escape is assured;

But the soul who this path's difficulties o'ercomes,

Heir of Bliss-one with supreme Aloneness-becomes;"[55]

यहाँ 'कैवल्य' शब्द केलिए उचित शब्द का प्रयोग अनुवादक ने किया है और 'Heir of Bliss' देकर बात को व्यक्त किया है। भारतीय सिद्धांत और दर्शन से जुडे इस तथ्य को समझे बिना शब्दानुवाद के माध्यम से मूल बात को प्रस्तुत किया है। भारतीय विश्वास यह है कि मनुष्य जब चारों वर्णाश्रमों का धर्म पूर्वक पालन करेगा तभी उसे मोक्ष प्राप्त होगा। 'Heir of Bliss' में 'मोक्ष' अर्थ का पूरा भाव अभिव्यक्त नहीं होता।

"कोहबरहि आनीं कुअँर कुअँरि सुआसिनिन्ह सुख पाइकै।"[56]

विवाहोपरान्त दुल्हह-दुलहन को एक कमरे में रखा जाता है, वहाँ देवी-देवता की पूजा होती है और दुल्हह को घी-भात खिलाया जाता है। इसी को 'कोहबर' कहते हैं। इसका अनुवाद देखिए-

"As they entered the hall,the four couples and all

Their companions rejoiced even more;

With voices untiring, Love all hearts inspiring,

They carried thro' customs of yore."[57]

मूल में जहाँ 'कोहबर' एक विशिष्ट अर्थ को सूचित करता है जो पूर्णतः भारतीय रीति-रिवाज से जुडा है वहीं लक्ष्य भाषा में इसका कोई विवरण ही नहीं मिलता।

---

55. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) BookVII, Chaupai114, Pg.855
56. मानस- 1/326/छं. 2
57. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chhand 37, Pg.253

They carried thro' customs of yore में यह पता नहीं चलता है कि यह कौन-सा रिवाज है। अनुवादक ने इसकेलिए कोई पाद-टिप्पणि भी नहीं दी है।

"बिपति मोरि को प्रभुहि सुनावा। पुरोडस चह रासभ खावा॥"[58]

'पुरोडस' का अर्थ है यज्ञ का हवि अर्थात् वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाती है। देवताओं को प्रसन्न करने केलिए 'हवि' दिया जाता है। यह शब्द पूर्णत: भारत की यज्ञ संस्कृति से जुडा है। इसका अनुवाद देखिए-

"There's no one to tell him the things I am suff'ring

That here's an ass trying to eat the God's off'ring."[59]

लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने 'पुरोडास' केलिए off'ring शब्द का प्रयोग किया है जो अर्थ की दृष्टि से सटीक है। मानसकार ने यहाँ सीता का रावण के हाथों हरण होने पर उसकी व्यथा को चित्रित करते हुए उक्त पंक्तियों को प्रस्तुत किया है। हवन का भारतीय संदर्भ में क्या महत्त्व है, यह किसे और क्यों दिया जाता है इस तथ्य को समझे बिना लक्ष्य भाषा-भाषी इसे ग्रहण नहीं कर सकते। संदर्भ को गंभीर बनाने केलिए मानसकार ने यहाँ पुरोडास जैसे पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया। जहाँ लक्ष्य भाषा में इसकेलिए और कोई समान शब्द न मिलने के कारण अनुवादक को off'ring शब्द देकर तृप्त होना पडा।

ब्राह्मणों खाने से पहले भोजन के पाँच ग्रास अन्न लेते हैं जिसे 'पंचकवल' कहा जाता है। मानसकार ने 'पंचकवल' शब्द का प्रयोग किया है जो पारिभाषिक शब्द के अन्दर रखा जा सकता है-

'पंचकवलि करि जेवन लागे।'[60]

---

58. मानस-3/28/3
59. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III, Chaupai31, Pg.544
60. मानस- 1/328/1

"Five morsels they offered and then began eating."[61]

'पंचकवल' भोजन की एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है जिसमें पांच ग्रास पांच मंत्रों द्वारा खाए जाते हैं। पांच प्राणों केलिए यह पांच ग्रास लिए जाते हैं। भोजन से पहले आचमन करके 'प्राणाय स्वाहा' (प्राणवायु केलिए), 'अपानाय स्वाहा' (अपानवायु केलिए), 'व्यानाय स्वाहा' (व्यानवायु केलिए), 'उदानाय स्वाहा' (उदानवायु केलिए) और 'समानाय स्वाहा' (समानवायु केलिए) के मंत्रों का उच्चारण करते हुए पाँच ग्रास खाए जाते हैं, इन्हें ही 'पंचकवल' कहा जाता है।[62] अनुवादक ने 'पंचकवल' केलिए 'Five morsels' रखा है। इसकेलिए अनुवादक ने पाद-टिप्पणि भी दी है।[63] यह पाद टिप्पणि केवल इस पांच ग्रास को लेने का कारण बताते हैं। इनसे संबंधित जो मंत्र है उसका संकेत नहीं देता। यद्यपि अनूदित शब्द मूल शब्द के अर्थ को व्यक्त करता है वह मूल जितना प्रभावात्मक नहीं है।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने महाकाव्य रामचरितमानस की रचना अवधी भाषा में की है। साथ ही साथ मानस में शब्द चयन की अपनी विशेषता है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्दों का प्रयोग कर अपने उदार हृदय और ज्ञान का परिचय दिया है।

तत्सम शब्द

मानसकार ने तत्सम शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। ऐसे शब्दों का चयन भाषा की शब्द सम्पत्ति की ओर इशारा करता है। अनुवाद में मूल में प्रयुक्त इन तत्सम शब्दों का अर्थ मात्र लेकर अभिव्यक्त किया जा सकता है। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

---

61. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 333, Pg.255

62. गोस्वामी तुलसी कृत रामचरितमानस- आर.सी. प्रसाद, पृ.189

63. The first five morsels are offered with five mantras directed to five vital airs or breathe of the body.viz; for breathing, for evacuation, for circulation or vitality, for brain and for digestion. Pg. 255

"सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा।"[64]

इधर पुत्रि शब्द तत्सम है जो 'बेटी' अर्थ को व्यक्त करता है। अनुवादक ने इसके समान अर्थ वाले शब्द को लेकर अनुवाद किया है जिसमें वे सफल हुए हैं-

"Do not give way to fear **daughter** Sita he cried."[65]

इसके अलावा 'सुमुखि'[66] केलिए 'O fair one'[67] अनुवाद जो किया गया है वह मूल का शब्दानुवाद है। 'अनल'[68] आग केलिए प्रयुक्त शब्द है जो संस्कृत से आया है। इसकेलिए 'hot flaming'[69] शब्द का प्रयोग किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं है क्योंकि 'hot flaming' का सामान्य अर्थ 'बहुत गर्म' है जो मूल अर्थ को अभिव्यक्त नहीं करता। उसीप्रकार 'नदी'[70], 'कर्म'[71], 'तिलक'[72], 'गृह'[73] जैसे तत्सम शब्द के प्रयोग जो रामचरितमानस में हुआ है उसमें अनुवादक एक हद तक सफल हुए हैं। इनकेलिए लक्ष्य भाषा में क्रमश: 'Stream'[74], 'doings'[75] और 'home'[76] रखा गया है। 'नदी' केलिए उचित शब्द 'river' है लेकिन 'stream' इससे मिलता-जुलता शब्द है। 'हरि'[77] शब्द

---

64. मानस- 3/28/5
65. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book .III, Chaupai 31, Pg.544
66. मानस-5/8/2
67. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Chaupai 9, Pg.596.
68. मानस- 5/9/3
69. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Chaupai 10, Pg.597
70. मानस- 6/25/3
71. वही, 7/51/2
72. वही, 3/28/4
73. वही, 7/15/1
74. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 26, Pg.658
75. Ibid, Book VII Chaupai 50, Pg.793
76. Ibid, Chaupai 14, Pg.766
77. मानस- 3/31/1

इन उदाहरणों से संदर्भगत जो प्रभावपूर्ण अर्थ प्रकट हुआ है वह अनूदित शब्दों में नहीं आ सका है। अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा में हिन्दी की भाँति तत्सम शब्दों की परंपरा नहीं है। इसलिए अनूदित कृति में मूल तत्सम शब्दों का अनुवाद मूल में प्रयुक्त शब्दों के प्रतिशब्द से किया गया है जिससे संदर्भ वर्णन की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति में व्याघात पहुँचा है।

तद्भव शब्द

तुलसी कृत रामचरितमानस में तद्भव शब्दों का भी सुन्दरता के साथ प्रयोग किया हैं जिससे यह रचना जन-साधारण केलिए सुग्राह्य बन गई है। जैसे 'केवट'[79], 'बांझ'[80], 'बेनी'[81], 'मुकुताहल तारा'[82], 'करनधार'[83], 'मानुषकरनि'[84] आदि। अनुवाद में कहीं कहीं पर इन तद्भव शब्दों का शब्दानुवाद हुआ है कहीं कहीं पर भावानुवाद। अनुवाद में इनकेलिए 'boatman'[85], 'barren womb'[86], 'one hair bard'[87], 'pearl like stars'[88], human beings'[89] दिया है। मूल शब्दों में जो प्रभाव और सहजता है वह लक्ष्य भाषा में नहीं मिलता। इन उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है कि अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा में मूल जैसा शब्द भण्डार नहीं हैं। इसी कारण अनुवाद में इन तद्भव शब्दों केलिए उचित

---

79. मानस- 2/100
80. वही, 1/96/2
81. वही, 5/7/4
82. वही, 6/11/2
83. वही, 7/43/4
84. वही, 2/99/2
85. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Soratha 4, Pg.352
86. Ibid, Book I Chaupai 97, Pg.81
87. Ibid, (Vol.II) Book V, Chaupai 8, Pg.596
88. Ibid, Book VI, Chaupai 12, Pg.646
89. Ibid, (Vol.I) Book II Chaupai100, Pg.351

शब्द न मिलने के कारण अनुवादक ने इन्हें छोड भी दिया है जैसे 'करनधार' आदि शब्दों के संदर्भ में। इससे इन शब्दों के अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष उत्पन्न समस्याओं की थाह मिल जाती हैं।

देशी या देशज शब्द

रामचरितमानस अवधी भाषा का सुन्दर महाकाव्य है। जनता को केन्द्रबिन्दु में रखकर रचे हुए इस महाकाव्य में साधारण जन की भाषा का बहुलता से प्रयोग हुआ है। इसका स्पष्ट विवरण मानस में तुलसी द्वारा प्रयुक्त प्रादेशिक भाषाओं तथा बोलियों के शब्दों से मिलता है। तुलसीदास ने मानस में राजस्थानी, बुन्देली, पंजाबी, गुजराती, भोजपुरी जैसे भाषाओं से शब्द ग्रहण किये हैं।

'मेला', 'सारा', 'दासु', 'धुआँ', 'कोपर', पालिबी, धायल, तिमुहानी आदि शब्द प्रादेशिक भाषाओं से लिया है। उदाहरण केलिए-

"तुरत बिभीषन पाछे मेला।"[90]

'मेला' शब्द राजस्थानी बोली में प्रयुक्त शब्द है जिसका अर्थ 'कर लेना है'। इसका जो अनुवाद किया गया है उसे देखिए-

"And thrusting Vibhishan at once to the rear."[91]

'मेला' शब्द केलिए अंग्रेजी जैसे भाषा में उचित शब्द मिलना दुष्कर है। अत: अनुवादक ने 'thrusting' शब्द का प्रयोग किया है जो मूल अर्थ को, पूर्ण रूप से वहन नहीं करता लेकिन उसका अर्थ संकेत कराती है।

"कनक कलस मनि कोपर रूरे।"[92]

---

90. मानस- 6/93/1
91. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 94, Pg.718
92. मानस- 1/323/3

मणि जटित सुन्दर परातें के अर्थ में कोपर का प्रयोग हुआ है। गुजराती से लिया गया यह शब्द भारतीय संस्कृति से जुडे वस्तुओं का विवरण देता है। मांगलिक अवसरों पर इनका प्रयोग होता है। इसका अनुवाद देखिए-

"Gold vessels and platters all costly and rare."[93]

अनुवादक ने 'कोपर' केलिए उचित शब्द न मिलने के कारण भावार्थ के सहारे इस बात को अभिव्यक्त किया है। platters शब्द के प्रयोग से मूल शब्द से जुडी महत्ता अभिव्यक्त नहीं होती।

"लंका सन्मुख सिखर चलावहिं।"[94]

पंजाबी से ग्रहित 'सिखर' शब्द शिखरों के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इसका अनुवाद देखिए-

'And at Lanka town threw great rocks as their greetings."[95]

अनुवादक ने सिखर केलिए 'great rocks' का प्रयोग किया है जो मूल अर्थ से दूर है। 'सिखर' का अर्थ 'peaks' या 'mountain tops' है। 'Great rocks' बडे चट्टान अर्थ को ही अभिव्यक्त करते हैं। यहाँ जिस गहनता से साधारण बोलचाल की भाषा में बात को मूल में अभिव्यक्त किया गया वह अनुवाद में बहुत ही सरल और सरस भाषा में अभिव्यक्त हुई है लेकिन मूल अर्थ को अभिव्यक्त करने में असफल हुआ है।

जानिएगा केलिए बुंदेली में 'जानिबी' शब्द का प्रयोग होता है। मानसकार ने 'बुंदेली' से इस शब्द को लेकर मानस की पंक्ति में इस प्रकार दिया है-

"परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी।"[96]

---

93. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 328, Pg.247
94. मानस- 6/4/3
95. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 5, Pg.647
96. मानस- 1/335/ (छं.)

इसका अनुवाद देखिए-

"To friends and relations, to folks of all stations,

To me and the king Sita's dearer."[97]

अनूदित पंक्ति में 'जानिबी' शब्द को छोडकर बाकि पंक्तियों का अनुवाद अनुवादक ने किया है। अर्थ के संप्रेषण में तो यह अनुवाद ठीक हुआ है।

भोजपुरी से भी मानसकार प्रभावित हुए हैं और कहीं कहीं इस भाषा के शब्दों को भी अनुवादक ने मानस में जोड दिया है। जैसे-

"अति बडि मोरि ढिठाई खोरी।"[98]

इसका अनुवाद देखिए-

"Yes great my conceited presumption and daring."[99]

मूल में 'खोरी' शब्द का प्रयोग दोष अर्थ में किया गया है। लेकिन अनुवाद में इस अर्थ को सूचित करनेवाला कोई भी शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है। अनुवादक ने मात्र भाव को लेकर अनुवाद प्रस्तुत किया है।

विदेशी शब्द

तुलसी के रामचरितमानस में अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग भी देखा जा सकता है जो उस समय प्रचलन में थे और बोलचाल के विशेष संदर्भों के साथ ग्रहीत हुए हैं। मुस्लिम सभ्यता और शासन का दबदबा जनता पर था। तुलसी अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचना चाहते थे और इसलिए उन्होंने ऐसे शब्दों को अपनाया जिसे सोलहवीं शताब्दी के उत्तरी भारतवर्ष की जनता बोलती थी। 'गनी गरीब, नेब, फौज, बजाज-सराफ

---

97. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chhand 38, Pg.260
98. मानस- 1/28/1
99. The Ramayana of Tulsidas (Vol.1) Book I, Chaupai29, Pg.27

जैसे अरबी शब्दों केलिए उचित लक्ष्य भाषा शब्द का प्रयोग करते हुए अनुवादक बात को सफलता के साथ साथ प्रस्तुत कर पाए हैं। तो एक या दो स्थानों में वे असफल भी हुए हैं जैसे-

"आजु करौं खलु काल हवालें।"[100]

"Wretch ! Today you shall surely to Death be despatched;"[101]

यहाँ 'हवालें' शब्द हवाले अर्थात् सौंपने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अनूदित पाठ में 'हवालें' केलिए 'despatched' शब्द का प्रयोग किया गया है जो भेजने का अर्थ देता है। अतः मूल में प्रयुक्त मूल अर्थ से बिल्कुल विचलित शब्द को ही अनुवादक ने रख है।

कबुली, ताजी (अरबी घोडे) जैसे फारसी शब्दों केलिए अनुवाद में मिलते जुलते शब्दों में रखा है तो 'चौगाना' 'नफीरि' आदि केलिए अपने सीमित शब्द भण्डार से शब्दों का प्रयोग करना पडता है। देखिए-

"भेरि नफीरि बाज सहनाई।"[102]

'नफीरि' तुरही केलिए प्रयुक्त फारसी शब्द है जोकि एक वाद्य उपकरण है। इसका अनुवाद देखिए-

"Bugles, trumpets and cymbals gave forth war like strains."[103]

अनुावादक ने 'नफीरि' केलिए 'trumpets' शब्द का प्रयोग किया है जो अर्थ की दृष्टि से सही है। जहाँ तुलसी अपने विस्तृत ज्ञान भण्डार से भिन्न शब्दों का प्रयोग करते हुए आवर्त्तन से बचे हैं वहीं अनुवादक के पास सीमित शब्दों के कारण उन्हीं का प्रयोग बार-बार करते हुए उन्हें खुश रहना पडा है।

---

100. मानस- 6/89/4
101. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 90 Pg.714
102. मानस- 6/78/5
103. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 79, Pg.702

एक और उदाहरण देखिए-

"महि बहु रंग रचित गच काँचा।"[104]

'गच' शब्द डाली के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। फारसी से चुना गया यह शब्द रंगोली को सजाने के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। लक्ष्य भाषा में इसके लिए उचित शब्द न मिलने के कारण अनुवादक ने 'in laid'[105] शब्द को रखा है जो मूल का भावानुवाद है। मूल शब्द में जो अर्थ-सौष्ठव और सौन्दर्य है वह लक्ष्य भाषा में नहीं मिलता।

इससे यह सिद्ध होता है कि 'रामचरितमानस' में तुलसीदास ने अयोध्या के निकट बोले जानेवाले शब्दों का प्रयोग किया है। तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का प्रयोग करके भाषा को और सशक्त बनाया है। इससे तुलसी के विस्तृत शब्द भण्डार का परिचय मिलता है। अनुवादक ने इस संदर्भ में केवल मूल शब्द के प्रतिरूप शब्द रखकर अनुवाद दिया है। इस सीमित शब्द भण्डार से शब्द चयन करने के कारण कई स्थानों पर शब्दों की आवृत्ति हुई है। इससे यह उतना प्रभावात्मक नहीं बन पाया है। जितना कि मूलरचना। यहीं नहीं तुलसी की महान प्रतिभा जैसे कि मूल में अभिव्यक्ति हुई है अनुवाद में नहीं आ पाई है।

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में ध्वनि के अनुवाद की समस्याएँ

काव्यशास्त्रीय परिभाषा के अनुसार वाच्य से अधिक उत्कर्षक चारुता-प्रतिपादक व्यंग्य को ध्वनि कहते हैं। जिस काव्य में व्यंग्य वाच्य से अधिक चमत्कारक होता है, उसे ध्वनिकाव्य कहते हैं। अनुवाद के संदर्भ में इन व्यंग्यवाच्यों का सही अर्थ पकडे बिना अनुवादक इन शब्दों का अनुवाद लक्ष्य भाषा में नहीं कर सकता। अनुवादक मात्र शब्दानुवाद या भावानुवाद कर इन शब्दों का अनुवाद लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करता है।

---

104. मानस- 7/26/3
105. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 25, Pg.775

तुलसीदास के मानस में ध्वनि पर आधारित कई उदाहरण हमें प्राप्त होते हैं जो बहुत ही प्रभाव पूर्ण ढंग से चित्रित किए गए हैं। इसके कुछ उदाहरण देखिए

"कान नाक बिनु भगिनि निहारी। क्षमा कीन्हि तुम्ह धर्म बिचारी ॥

धर्मसीलता तव जग जागी। पावा दरसु महूँ बहुभागी ॥"[106]

इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"When your sister returned home without nose and ears,

You forgave it ! for reasons that true faith reveres!

The whole world knows how good and how righteous you are !

And I've seen it i, born 'neath the luckiest star !"[107]

इस उदाहरण में व्यंग्यार्थ ही व्यक्त होता है। 'क्षमा कीन्हि' और 'धर्मसीलता तव जग जागी' में मुख्यार्थ की बाधा है। इन शब्दों के माध्यम से रावण के प्रति तिरस्कार भाव की अवगति ही दर्शायी गयी है अत: यहाँ लक्ष्यार्थ की प्रधानता है। रावण को तिरस्कार्य बताना व्यंग्य है। अनुवादक ने 'क्षमा कीन्हि' केलिए 'you forgave it' और 'धर्मसीलता तव जग जागी' का 'The whole world knows how good and how righteous you are' देकर मूल का शब्दानुवाद ही किया है। मूल में जो तिरस्कार्य भावना व्यंग्य के सहारे मानसकार ने चित्रित की है वह लक्ष्य भाषा में नहीं आयी है। मूल पंक्तियों के माध्यम से कवि जिस व्यंग्य को प्रभावात्मक रूप से प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं उसे लक्ष्य भाषा में अनुवादक नहीं ला पाए हैं।

"श्रीफल कनक कदलि हरषाही। नेक नसंक सकुच मनमहि ॥"[108]

106. मानस- 6/21/4
107. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 22, Pg.654
108. मानस- 3/29/7

"Custard- apple, banana, and finest fruit trees

Can rejoice without fear, knowing now they will please."[109]

इस उद्धरण में सीता का अंग प्रस्तुत और 'श्रीफल' (बिल्व) तथा कदलि (केला) अप्रस्तुत हैं। यहाँ मानसकार ने प्रस्तुत के वर्णन केलिए अप्रस्तुत का वर्णन किया है। यहाँ मानसकार ने 'श्रीफल कनक कदलि' द्वारा प्रसिद्ध उपमानों का तिरस्कार कराया है। सीता की अपूर्व रूप-संपदा के सामने ये बेल, सुवर्ण और केला हमेशा अपनी निन्दा सुना करते थे, लेकिन अब जब सीता श्रीराम के पास नहीं है तो ये अपनी प्रशंसा सुन रहे हैं। लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने मूल पंक्तियों का शब्दानुवाद ही किया है जिससे मूल में अभिव्यक्त व्यंग्य को अनुवादक किसी भी हालत में चित्रित नहीं कर पाए हैं। अनुवादक ने अनूदित पंक्तियों केलिए पाद टिप्पणि दी है।[110] इस पाद-टिप्पणि में भी मूल बात की सही अभिव्यक्ति नहीं हो पाई है। अत: लक्ष्य भाषा में अनुवादक सीधे अर्थ को अभिव्यक्त कर पाए हैं लेकिन मूल पंक्तियों में छिपे व्यंग्य को चित्रित करने में असफल हो गए हैं। इसका मूल कारण मूल के शब्दों की अर्थ द्योतन शक्ति अनुवाद की भाषा के शब्दों में नहीं है।

"मोरें जिय भरोस दृढ सोई। मिलिहहिं रामु सगुन सुभ होई॥

बीते अवधि रहहिं जो प्राना। अधम कवन जग मोहि समाना।"[111]

"So deep down in my heart of this one thing I'm sure,

As these good omens say, I shall see him once more,

If - his, term done and he not here I lived on then,

It would mean on this earth I'm the basest of men."[112]

---

109. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III, Chaupai 32, Pg.546
110. No serious rival now with sita away : The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Pg.546
111. मानस-7/4
112. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VII, Chaupai 1, Pg.751

भारतीय संस्कृति में 'शकुन' और 'अपशकुन' पर विश्वास किया जाता है। मूल पंक्तियों में शुभ शकुन का होना, और साथ ही भरत की प्रतीक्षारत दशा 'मिलिहहि राम सगुन सुभ होई' में ध्वनित है। अंग्रेजी अनुवाद में शब्दानुवाद और भावानुवाद के माध्यम से मूलपाठ को चित्रित किया हैं। इन पंक्तियों में प्रतीक्षा की जो गहनता व्यक्त हो रही है लक्ष्य भाषा के "I shall see him once more' पंक्तियों में पूरी गहनता से व्यक्त नहीं होता।

इन उदाहरणों से यह व्यक्त होता है कि स्रोत भाषा में विशेष संदर्भों को अभिव्यक्त करने केलिए काव्य में व्यंग्य ध्वनियों का सहारा लेकर चौपाई में प्रभाव और ओज की सृष्टि की है जो लक्ष्य भाषा में आते-आते नष्ट हो जाता है।

शब्द-शक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ

अर्थ के स्तर पर जब हम काव्य भाषा पर विचार करते हैं तो वहाँ पर शब्दशक्ति का प्रमुख स्थान है। शब्द और शब्द के अर्थ में जो संबंध है, उसी संबंध का नाम शक्ति है। शब्द शक्तियों से काव्यार्थ की प्राप्ति होती है। ये शब्द तीन प्रकार के माने गए हैं- अभिधार्थक शब्द, लक्षणार्थक शब्द और व्यंजनार्थक शब्द।

वास्तव में शब्द और अर्थ मिलकर ही काव्य की सृष्टि करते हैं। दोनों में परस्पर दृढ़ संबंध होता हैं। काव्य में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ से ही काव्य बोधगम्य होता है। तुलसी के रामचरितमानस में सजीव मात्रा में शब्दशक्ति का प्रयोग हुआ।

अभिधा शब्दशक्ति

जिस शक्ति से सीधे अर्थ का संकेत हो उसे अभिधा शक्ति कहते हैं। इसके अंतर्गत किसी शब्द के केवल मुख्य वा संकेतित अर्थ का बोध होता है। रामचरित मानस की भाषा में अभिधा शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। इतिवृत्तात्मकता और कथा की साधारण स्थिति में यह शक्ति गतिमयता प्रदान करती है। कथा के अन्दर चलनेवाले

पौराणिक, धार्मिक आदि वातावरण को प्रकट करने में अभिधा का विशेष हाथ रहता है।[113] इसके कुछ उदाहरण देखिए-

"ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी। दसमुख बसवर्ती नरनारी।"[114]

Where'er in creation were warriors of might,

Male or female, fierce Ravan was eager to fight"[115]

मूल में 'तनुधारी' का अर्थ शरीर-धारी स्त्री पुरुष हैं। तनु अर्थात् शरीर और धारी याने धारण करने वाला। यहाँ दोनों शब्द पृथक-पृथक अर्थ रखते हैं और इन शब्दों के योग से नया शब्द निकलता है और समुदायार्थ की प्रतीति कराती है। अनुवादक ने 'तनुधारी' केलिए 'warriors of might' अर्थ लिया है जो गलत है। साथ ही मूल में जो यौगिक शब्द का प्रयोग हुआ है वहीं अनुवाद में अनुवादक नहीं ला पाए हैं। उसी प्रकार 'दसमुख' का अर्थ 'दस मुख वाले केलिए प्रयुक्त है जो रावण का पर्याय वाची शब्द है। 'दसमुख' भी यौगिक शब्द है जहाँ 'दस और मुख को पृथक करने पर अलग अर्थ निकलता है और उनके योग से नया शब्द मिलता है जो बिलकुल अलग अर्थ देता है। अनुवाद में एटकिन्स मात्र 'Ravan' देकर शांत हो गए हैं। लक्ष्य भाषा में 'दसमुख' केलिए समतुल्य शब्द नहीं है क्योंकि यह शब्द पूर्ण रूप से भारतीय विश्वास और पुराण से जुडा है। मूल में इन शब्दों के प्रयोग से पंक्ति में जो सौन्दर्य और सहजता आ गई है वह लक्ष्य भाषा में खो गया है।

"सुनु गिरिजा अति दृढ मति तोरी।"[116]

"Said Siva, I know, **Uma**, your faithful soul."[117]

---

113. रामचरितमानस की काव्य भाषा- डॉ. रामदेव प्रसाद, पृ.213

114. मानस- 1/181/6

115. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 182, Pg.143

116. मानस- 1/165/2

117. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I Chaupai 201, Pg.154

पार्वती केलिए प्रयुक्त पर्यायों में 'गिरिजा' का भी प्रयोग होता है। 'गिरिजा' का विशेष अर्थ गिरि की पुत्री याने पर्वत पुत्री है। उससे संबद्ध अन्य अर्थ नहीं हैं। Uma शब्द रखकर अनुवादक को तृप्त होना पडा है। दृढ़ता का वाचक शब्द है 'गिरिजा' और यह 'Uma' शब्द में नहीं है। अतः अनुवाद में मूल जैसा योग नहीं मिलता। इस उदाहरण में जो शब्द प्रयुक्त हुआ है वह रचना की दृष्टि से यौगिक है और अर्थ की दृष्टि से रूढ़ है जो लक्ष्य भाषा में पता नहीं चलता।

"जो सुमिरत सिधि होइ गननायक करिबर बदन।"[118]

"O Thou, whom rememb'ring, success

Comes surely, Lord Ganesh, the elephant-headed'[119]

'गननायक' याने गणों के स्वामी अर्थात् गणेशजी। यह शब्द योगरूढ है। अर्थ की दृष्टि से 'गननायक' शब्द रूढ है। अनूदित भाषा में गननायक शब्द न मिलने के कारण 'Lord Ganesh' शब्द से काम चलाना पडा है। "Lord Ganesh' में यद्यपि अर्थ अभिव्यक्त हो रहा हैं उसमें 'गननायक' का अर्थ अभिव्यंजित नहीं होता।

लक्षणा शब्दशक्ति

लक्षणा शक्ति उसे कहते हैं जिसके द्‌वारा, मुख्यार्थ की बाधा होने पर भी रूढ़ि अथवा प्रयोजन को लेकर मुख्यार्थ से संबन्धित अन्य अर्थ लक्षित हो। मानसकार ने 'मानस' में ऐसे लक्षणिक शब्दों का प्रयोग किया है।

'रघुपति कर संदेसु अब, सुनु जननी धरि धीर।'[120]

"Of your lord Raghupati I'll give you glad news,
Listen well, putting off now all fears."[121]

---

118. मानस- 1/1/सोरठा
119. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I Soratha 1, Pg.1
120. मानस- 5/14
121. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Doha 13, Pg.601

'जननी' का संकेतित अर्थ जन्मदेने वाली स्त्री अर्थात् माता हैं। हनुमान्'को जन्म देने वाली 'अंजनी' हैं। किन्तु हनुमान् सीता जी को 'जननी' कहकर संबोधित करते हैं क्योंकि माता अंजनी के समान जानकी जी में भी वे वही श्रद्धा भक्ति और स्नेह रखते हैं। अत: उक्त उद्धरण में 'जननी' शब्द के मुख्यार्थ में बाधा है। इसी कारण यहाँ 'जननी' शब्द के अर्थ में लक्षणा शक्ति ही प्रमुख है। अनुवादक ने लक्ष्य भाषा पाठ में इस शब्द का परित्याग कर दिया है जिससे मूल के उद्दिष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं हो सकी है।

"तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामुसब भाँति सनेही॥" [122]

"Vaidehi's your **mother**, my son, as you know;
To you, Rama, a **father**'s love always will show."[123]

यहाँ जानकी को माता और राम को पिता बताना मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित करता है क्योंकि राम और सीता लक्ष्मण के भ्राता और भाभी हैं। इन पंक्तियों में कवि का बताने का यही प्रयोजन है कि श्रीराम उनके रक्षक हैं और सीता सुख देनेवाली हैं। लक्ष्य भाषा में कवि ने मातु का 'mother' और पिता का 'father' प्रतिरूप रख दिया है। लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने कवि के इस प्रयोजन को ध्यान रखे बिना अनुवाद को प्रस्तुत किया है। मूल में जिस गहनता के साथ बात को व्यक्त किया गया है वह अनुवाद में नहीं आया है।

"मंगलमोद उछाह नित जाहिं दिवस येहि भांति।
उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति।" [124]

"As day after day in this manner was passed,
With their festive delights never ceasing,
The people of Avadh all shared in the blessing
Their happiness never increasing."[125]

---

122. मानस- 2/73/1
123. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II Chaupai 74, Pg.333
124. मानस- 1/359
125. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Doha 350. Pg.276

इन पंक्तियों में 'अवध अनंद' से आनंद की व्यापक प्रतीति कराने के प्रयोजन से अवध में रहने वालों केलिए अवध नगरी को ही आनंद से उमडती कहा गया है। अवध का उमँग होना संभव नहीं अत: यहाँ प्रयोजनवती शुद्धा लक्षणा के माध्यम से अवध निवासियों के उल्लास की व्यापकता स्पष्ट करना ही इसका प्रयोजन है। अवध में एक भी ऐसा नहीं जो आनन्द का अनुभव न करे इसलिए अवधपुरी के स्थान पर अवध अनंद से बात की अभिव्यक्ति हुई है। अनुवादक ने अवध अनंद केलिए 'people of Avadh' दिया है। अनूदित शब्द में मूल ध्वनि चित्रित नहीं होता यद्यपि अर्थ में अन्तर नहीं।

"कौसल्य के बचन सुनि भरत सहित रनिवासु।
व्याकुल बिलपत राजगृह मानहु सोकनिवासु॥"[126]

उक्त दोहे में 'रनिवासु' शब्द का लक्ष्यार्थ है 'रनवास में रहने वाली स्त्रियाँ। इसका मुख्यार्थ है- 'रानियों के रहने का महल'। वह न व्याकुल हो सकता है और न ही विलाप कर सकता है। अत: मुख्यार्थ में बाधा है। चिन्ता और दु:ख की तीव्रता एवं व्यापकत्व को दिखाना ही इस शब्द का प्रयोजन है। लक्ष्य भाषा में इसका अनुवाद देखिए-

"As Kausalya said this, all those in the **queen's quarters**,
With Bharat their deep distress showed;
The whole palace seemed now given up to its wailing ,
And turned into sorrow's abode."[127]

लक्ष्य भाषा में रनिवासु केलिए 'queens quarters' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'quarters' का अर्थ निवास (स्थान), आवास है जो मुख्यार्थ के अर्थ में प्रयुक्त होता है। अनुवाद में अनुवादक ने मूलपंक्तियों को अंग्रेजी भाषा की संरचना के अनुरूप ढाल दिया है जिससे लक्ष्य भाषा पाठ में सीधा अर्थ ग्रहण किया जा सकता है।

---

126. मानस- 2/166
127. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II Chaupai 167, Pg.398

व्यंजना शब्द-शक्ति

कभी कभी अभिधा और लक्षणा से वाक्य का अभिप्रेत अर्थ पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता, तो जिस शक्ति से अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यक्ति होती हैं, उसे व्यंजना शब्दशक्ति कहते हैं। व्यंजनामूला अभिव्यक्ति सांकेतिक, प्रतीकात्मक सूक्ष्म होती है। अनुवादक जब तक इन शब्दों का गूढार्थ नहीं समझेगा अनुवाद में यह कमी दृष्टिगोचर होगी। जैसे-

"कंत करष हरि सन परिहरहू। मोरा कहा अति हित हिय धरहू॥"[128]

"Heed the words, husbhand mine, of your dutiful wife,
Meant for good; with the Lord give up all thought of strife."[129]

'हरि' शब्द के अनेक अर्थ हैं- बंदर, सिंह, विष्णु राम, कृष्ण इत्यादि। प्रसंग तथा वातावरण की उक्ति में 'हरि' का अर्थ 'रामचन्द्र' है। इस प्रकरण के आधार पर मन्दोदरी के कथन का व्यंग्यार्थ है कि राम लंका तथा लंकापति का सर्वनाश कर देंगे। वक्ता के कथन विशेष से जो व्यंग्यार्थ निकल रहा हैं, वह प्रकरण पर ही निर्भर है। 'हरि' केलिए 'Lord' शब्द का प्रयोग लक्ष्य भाषा में हुआ है। यह शब्द मूल के भाव और अर्थ तक नहीं पहुँचता। 'Lord' शब्द की व्याख्या किसी भी अर्थ में की जा सकती है। मूल शब्द में जो अर्थ है वह लक्ष्यभाषा में प्रकट नहीं हुआ है। जब संपूर्ण वाक्य की विशेषता से व्यंग्यार्थ प्रकट होता है तभी उसमें वाक्य वैशिष्ट्य उत्पन्न होता है। नारद-मोह प्रसंग के निम्नलिखित पंक्तियों में यह द्रष्टव्य है-

"जेहिबिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तम्हार।
सोइ हम करब न आन कछ्उ बचन न मृषा हमार॥"[130]

इसका अनुवाद है-

---

128. मानस- 5/35/3
129. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V Chaupai 36, Pg.618
130. मानस- 1/132

"Hear me saintly Narad, your welfare I seek;

"Your good I desire, nothing else;

"Be sure this one thing, and this only I'll do,

"And that words of mine never prove flase."[131]

नारद विश्वमोहिनी पर मुग्ध होकर उसके द्वारा वरण किए जाने की लालसा से, भगवान विष्णु से उन्हीं का रूप माँगते हैं। मूल पंक्ति भगवान विष्णु का उत्तर है जिसमें वे कहते हैं कि वे सत्य वचन ही कहते है कि वे वही करेंगे, जिसमें नारद का परम हित संभव हो। नारद इससे समझते हैं कि उनका अभिप्राय सिद्ध हो गया हैं। किन्तु यहाँ वाच्यार्थ द्वारा बोधित यह व्यंग्यार्थ से स्पष्ट है कि भगवान के इस कथन का तात्पार्य यह है कि वे नारद की आध्यात्मिक साधना में विघ्न-रूप इस वासना की पूर्ति केलिए अपना रूप उन्हें न देंगे; और इस प्रकार नैतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से उनका परम हित करेंगे, वह परम हित नहीं जो उस समय नारद के मन में गूँज रहा था। इस पूरे लक्ष्य वाक्य के वैशिष्ट्य से आर्थी व्यंजना सिद्ध होती है। एटकिन्स द्वारा किए गए इस पंक्ति के अनुवाद में मूल का शब्दानुवाद ही है जिसमें अर्थ की अभिव्यक्ति तो होती है लेकिन मूल पंक्तियों में जो व्यंग्यार्थ अंतर्निहित है उसका स्पष्टीकरण लक्ष्य भाषा में नहीं हो पाया है। अनुवादक मूल पंक्तियों में अभिव्यंजित वैशिष्ट्य को पकड़ नहीं पाए हैं जिससे लक्ष्य भाषा की पंक्ति प्रभावात्मक नहीं है और साथ ही अपनी सहजता खो बैठी हैं।

"भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी।"[132]

"As the ash of the dead, when on Siva's limbs spread,

Is made bright-with his glory uniting."[133]

---

131. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Doha 127. Pg.108
132. मानस- 1/9 छं.
133. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I)Book I, Chhand 1, Pg.11

'भव' के कई अर्थ हैं इस पंक्ति से 'भव' शिव के अर्थ में निश्चित हो गया है, श्मशान की राख शरीर में लगाने के कारण। 'श्मशान की राख' के संयोग से भव का अर्थ यहाँ शिव मान्य है। व्यंजना से अर्थ निकलता है कि तुच्छ वस्तु भी महान की संगति में अच्छी लगने लगती है। अंग्रेजी अनुवाद में 'भव' के स्थान पर 'Siva' का प्रयोग करना पडा है क्योंकि 'भव' केलिए उचित शब्द लक्ष्य भाषा में मिलना कठिन है। क्योंकि यह शब्द भारतीय चिंतन और विश्वास से जुडा है उसका उचित पर्याय अनुवाद में मिलना कठिन है। अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में मूल भाव को लेकर ही उसमें प्रस्तुत कर दिया है। तुलसी ने 'भव' जैसे विशेष शब्द का प्रयोग कर पंक्तियों में जो सौंदर्य की सृष्टि और व्यंग्यार्थ की अभिव्यंजना की है वह लक्ष्यभाषा में खो गया है। लक्ष्य भाषा में अर्थ की अभिव्यक्ति अनुवादक ने की है। लक्ष्यभाषा में मूल जैस विशेष शब्द का भी प्रयोग नहीं हुआ है।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि जहाँ स्रोत भाषा में विशेष अभिव्यक्ति केलिए विशेष शब्दों के प्रयोग से कवि अपने काव्य जादू की सृष्टि करता है वह लक्ष्यभाषा में उतार पाना कठिन हो जाता है। अनुवाद में शब्द शक्तियों को प्रस्तुत करना अनुवादक केलिए इसलिए कठिन है क्योंकि वह इन वाच्यार्थ, व्यंग्यार्थ और लक्ष्यार्थ को उसके सही रूप में नहीं समझता।

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में अलंकारों के अनुवाद की समस्याएँ

काव्य में अलंकारों का स्थान बहुत महत्वपूर्ण हैं। जिस प्रकार आभूषणों से नारी का सौन्दर्य बढता है उसी प्रकार अलंकारों के प्रयोग से काव्य सौन्दर्य की सृष्टि होती है। 'सौन्दर्यमल्ङकार:' यही तो प्रमाण है। 'काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारन्प्रचक्षते' वाली दण्डी की उक्ति इसी बात का समर्थन करती है। शब्द और अर्थ के आधार पर अलंकारों के दो मुख्य भेद हैं-

शब्द संबंधी चमत्कार से युक्त, जिन्हें शब्दालंकार कहते हैं जैसे अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि। अर्थ संबंधी विशेषता उत्पन्न करने वाले, जिन्हें अर्थालंकार कहते हैं जैसे

उपमा, रूपक, उत्पेक्षा आदि । साथ ही जहाँ एक साथ शब्द और अर्थ उभय (दोनों) विशेषता हो वहाँ उभयालंकार मांना जाता है ।

आंग्ल भाषा में अलंकारों का वर्गीकरण के एकाधिक रूप उपलब्ध हैं किन्तु सभी प्रकारों पर ग्रीक तथा लेटिन अलंङ्कार वर्गीकरण का स्पष्ट प्रभाव है । अंग्रेजी में अलंकार केलिए 'फिगर्स' (figures) शब्द अभिहित है ।

'रामचरितमानस' में गोस्वामी तुलसीदास ने बडे ही स्वाभाविक एवं उचित ढंग से अलंकारों का प्रयोग किया है । 'मानस' में कहीं भी अलंकारों का प्रयोग चमत्कार प्रदर्शन हेतु नहीं किया गया । प्रस्तुत अलंकारों के माध्यम से काव्य में भाव के उत्कर्ष को बढ़ाने या कलात्मक सौन्दर्य की समुचित अभिव्यक्ति केलिए अलंकारों का प्रयोग किया गया है । इसी कारण से मानस में अलंकार योजना बड़ी ही मनोरम और स्वाभाविक बनी हुई है ।

शब्दालंकार

शब्द और अर्थ दोनों मिलकर काव्य के बाह्य शरीर का निर्माण करते हैं । गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में शब्दालंकारों में अनुप्रास (Alliteration), यमक (Pun), श्लेष (Paronomasia) और वक्रोक्ति का प्रयोग प्रमुख रूप से किया है ।

अनुप्रास

जिस अलंकार में अक्षर या व्यंजन साम्य या आवृत्ति होती है उसे अनुप्रास कहते हैं । मानस में चित्रित इसके कुछ उदाहरण देखिए-

"मुदित महीपति मंदिर आए । सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए ॥"[134]

इसका अनुवाद देखिए-

"The king called at once, when he came to his dwelling,
For sumant,his minister, gladness upwelling."[135]

134. मानस- 2/4/1
135. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 5, Pg.285

राम को राज्यभार देने की बात निश्चित कर राजा दशरथ अपने मंत्री और सुमंत को बुलाते हैं। इसी प्रसंग का वर्णन कवि अनुप्रास अलंकार के माध्यम से करते हैं। 'म' और 'स' वर्णों की एक ही पंक्ति में कई बार आवृत्ति होने से सौन्दर्य की सृष्टि होती है वह अनुवाद में खो गया है। अनुप्रास अलंकार के प्रयोग से मूल में जो लयात्मकता और संगीतात्मकता आ गयी है वह लक्ष्य भाषा में नष्ट हो गयी है। अनुवाद में अनुप्रास की छटा ही नहीं मिलती। 'मुदित महीपति मंदिर' में जो 'म' की आवृत्ति मिलती है और 'सेवक सचिव सुमंत्र' में जो 'स' की आवृत्ति मिलती है दोनों अनुवाद में नष्ट हो गयी है। यही नहीं मूल के कई शब्द अनुवाद में नष्ट हो गये हैं।

"अति तरल तरुन प्रताप तर्पहिं तमकि गढ चढि चढि गए।"[136]

"Th' most youthful and active and daring ones climb
The fort's walls, their foes taunting.'[137]

यह वृत्यनुप्रास का एक उदाहरण है। यूँ तो अंग्रेजी में भी अनुप्रास का प्रयोग होता है जिसे Alliteration कहते हैं। दि रामायण ऑफ तुलसीदास में से एक उदाहरण देखिए- **"Much more than mere man must he be"** में 'm' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंङ्कार का प्रयोग किया है। मूल उदाहरण में जहाँ अनुप्रास का प्रयोग हुआ है वहीं अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में इसका प्रयोग नहीं किया है। इस उदाहरण में (तर, रत, तर) अनेक व्यंजनों की अनेक बार आवृत्ति हुई है। अनुवाद में अनुप्रास के इस भेद को अनुवादक लक्ष्य भाषा में उतार नहीं पाए हैं। वृत्यानुप्रास से मूल में जो प्रभाव और सौन्दर्य की सृष्टि मानसकार ने की है वह अनुवादक लक्ष्य भाषा में ला नहीं पाया है।

यमक

'यमक' शब्द का अर्थ है दो। इसलिए इस अलंकार में एक ही आकार वाले शब्दों का बारंबार प्रयोग होता है। जहाँ निरर्थक अथवा सार्थक स्वर-व्यंजनों के समूह की

136. मानस- 6/40 छं.
137. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chhand I, Pg.671

आवृत्ति हो वहाँ यमकालंकार होता है। मानस में यमक के कई सुन्दर उदाहरण हमें मिल जाते हैं-

"मूरति मधुर मनोहर देखी। भयेउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी।"[138]

"At sight of such loveliness, true to his name,

Videha as one without body' became."[139]

मानसकार 'बिदेहु' शब्द का एक ही पंक्ति में दो बार प्रयोग करते हैं। दोनों बार अर्थ में भिन्नता है। 'भयेउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी' में पहला अर्थ राजा जनक है और 'वि+देह' अर्थात् देहरहित दूसरा अर्थ है। मानसकार ने इन शब्दों का प्रयोग करके चौपाई में सौंदर्य की सृष्टि की है। लक्ष्य भाषा में यमक केलिए repetition of the same words कहते हैं। लक्ष्य भाषा में समान अलंकार होने पर भी अनुवादक 'यमक' का प्रयोग नहीं कर सके। अनुवाद में अनुवादक ने पहले शब्द का लिप्यंतरण और दूसरे शब्द का शब्दानुवाद किया है 'without body'। हिन्दी की शब्द संरचना और अंग्रेजी शब्द संरचना का अन्तर इसका एक कारण है। दूसरा कारण यह है कि अंग्रेजी में 'विदेह' का संकल्प नहीं है। इसे यह सिद्ध होता है कि लक्ष्य भाषा में अनुवादक मात्र शब्दानुवाद या भावनुवाद द्वारा ही बात को प्रस्तुत कर सकता है जो मूल से अनुवाद को दूर रखता है। मूल का सौन्दर्य और अर्थ द्योतन की विशेष शक्ति अनुवाद में नष्ट हो जाती है। यमक का एक और उदाहरण देखिए-

"बरनत बरनप्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती॥"[140]

"When severed by love they're for utterance fitted

Yet as the supreme soul and man's in one knitted."[141]

138. मानस- 1/214/4
139. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 219, Pg.169
140. मानस- 1/19/2
141. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 20, Pg.20

"बरनत बरनप्रीति बिलगाती' में सार्थक शब्द एवं निरर्थक स्वर-व्यंजन- समुदाय की. आवृत्ति से यमक अलंकार है। 'बरनत' में 'बरन' निरर्थक शब्द जोकि इसका खंड है। इसमें 'वर्ण' अर्थ में और 'वर्णन' अर्थ में ही इन शब्दों का प्रयोग हुआ है। लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने भावानुवाद के माध्यम से इन मूल पंक्तियों को प्रस्तुत किया है। मानसकार का यहाँ 'रा' और 'म' वर्णों का अलग-अलग वर्णन करने में प्रीति बिलगाती है याने बीजमन्त्र की दृष्टि से इनके उच्चारण, अर्थ और फल में भिन्नता दीख पडती है।"[142] यह अर्थ अनुवाद में अभिव्यक्त नहीं होता। अनुवादक ने मात्र 'बरनत' का 'utterance' शब्द दिया है और 'बरन' (वर्ण) शब्द को छोड दिया है। इससे मूल का प्रभाव और अर्थ द्योतन अनुवाद में नष्ट हो गया है।

श्लेष

'श्लेष' का अर्थ चिपकना या मिलना है। दूसरे शब्दों में शलेष अलंकार में ऐसे शब्दों का प्रयोग है जिसमें एक से अधिक अर्थ निकलते हैं। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

"रावनसिर सरोजबन चारी। चलि रघुबीर सिलीमुख धारी॥"[143]

"Those swift arrows to Ravan's huge heads straight way sped,
As in swarms forest-bees seek, a thick lotus-bed."[144]

अंग्रेजी में श्लेष केलिए 'pun' या 'paronomasis' कहते हैं। यह 'मानस' का अनुवाद है जो मुख्य रूप से भारतीय संस्कृति का परिचायक है। अनुवादक ने इस अलंकार का प्रयोग अनुवाद में नहीं किया। मूल में 'सिलीमुख' शब्द श्लेष का उदाहरण है। सिलीमुख बाण और भ्रमर अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'चलि रघुबीर सिलीमुख धारी' में कहने का अभिप्राय यह है कि जैसे रात से प्यासे भ्रमर प्रात: काल कमल की ओर मधु पान

142. गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस - आर.सी. प्रसाद, पृ.16

143. मानस- 6/91/4

144. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 92, Pg.716

रक्त पान केलिए चली। अत: उक्त अर्द्धाली में श्लेष अलंकार है। भाषा की प्रकृति की भिन्नता के कारण उचित शब्द लक्ष्य भाषा में मिलना कठिन है। एटकिन्स ने स्रोत भाषा में प्रयुक्त शब्द के स्थान पर 'arrows' और 'bees' अलग-अलग शब्द रख दिया है। इससे मूल का सौन्दर्य तो लक्ष्य भाषा में नष्ट हो ही गया है साथ ही जो अर्थ द्योतन इस शब्द के माध्यम से तुलसी करते हैं वह लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त नहीं हुआ है।

"कहमुनि सुनु रघुबीर कृपाला। संकर मानस राजमराला॥"[145]

"Said the saint, Listen,Rama, to kindliness giv'n `
In the god's lake like mind the swan royal of heav'n![146]

'मानस' शब्द 'मन' और 'मानसरोवर' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। शिव के मन रूपी मानसरोवर के राजहंस इस वाक्यार्थ में तुलसी ने मूल अर्थ को प्रस्तुत किया है। मानस और मराल का बिम्ब अंग्रेजी कविता केलिए अन्य है। ऐसा माना जाता है कि राम कथा का जन्म शंकर के मन में उपजा था इसलिए 'संकरमानस' का प्रयोग तुलसी ने जो किया है उसकेलिए अनुवादक ने "god's lake like mind' दिया है जिसमें 'उपमा' अलंकार का प्रयोग हुआ है। 'मानस' शब्द में जो प्रभाव है और एक ही शब्द से दो अर्थों का द्योतन किया गया है वह अनूदित पंक्ति में नहीं हुआ है। इससे अनूदित पंक्ति में मूल का प्रभाव और अर्थ द्योतन की शक्ति नष्ट हो गया है। एक ओर उदाहरण देखिए-

"हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद।"[147]

"These bevies of fair, bright-eyed girls scattered flowers,
With joy that their hearts scarce contained."[148]

145.. मानस- 3/7/1
146. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III, Chaupai 10, Pg.520
147.. मानस- 1/223
148. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Doha 221, Pg.174

'सुमन' सभंग श्लेष का उदाहरण है। इसमें एक शब्द को तोड़कर दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हैं। मानसकार 'सुमन' का फूल एवं सुन्दर मन (सु+मन) अर्थ में दिया है। श्रीराम को देखने के बाद सीता के सखी उन्हें जानकी का वर कहते हैं और हर्ष से पवित्र मन से फूल बरसतें हैं यही इन पंक्तियों का अर्थ है। अनुवाद में अनुवादक ने इसकेलिए 'flower' शब्द रखा है। केवल 'सुमन' का सीधा अर्थ देकर अनुवादक तृप्त हो गए हैं। इस शब्द से अभिव्यंजित दूसरे अर्थ को छोड दिया है जिससे मूल का अर्थ अनुवाद में नहीं आ पाया है।

वीप्सा

हर्ष, आदर, आश्चर्य, उत्साह, घृणा, शोक आदि मनोभावों की बहुलता प्रकट करने केलिए शब्दों की आवृत्ति हो, वहाँ वीप्सा अलंकार होता है। इसके प्रयोग से पंक्तियों में सौन्दर्य के साथ प्रभाव भी उत्पन्न होता है। रामचरितमानस में तुलसीदास ने वीप्सा का प्रयोग कर सौंदर्य की सृष्टि की हैं। इसके कुछ उदाहरण हैं-

"जयति जयति जय कृपानिधाना।"[149]

"Crying 'victory ! Glory ! O fount of all grace."[150]

कुम्भकर्ण और सुग्रीव के बीच युद्ध होता है जिसमें सुग्रीव श्रीराम की स्तुति करते हुए उसे मारते हैं और प्रभु के पास आकर उनका जयगान करते हैं। 'जयति जयति' से पंक्तियों में सौंदर्य उत्पन्न हुई है। वीप्स भारतीय भाषाओं केलिए सहज है लेकिन पाश्चात्य भाषा अंग्रेजी में वह सहजता खो जाता है। अनुवादक ने 'जयति जयति' के जगह मात्र 'victory' दिया है क्योंकि अगर इस शब्द की आवृत्ति लक्ष्य भाषा में होगी तो वह सौंदर्य नष्ट होगा।

'लंका काण्ड' में युद्ध के समय वानर सेना की उत्साह को चित्रित करने के लिए अनुवादक ने वीप्सा का प्रयोग किया। जैसे-

---

149. मानस- 6/65/4
150. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 66, Pg.690

'जय जय जय रघुबंसमनि धाए कपि दै हूह।'[151]

'Rushed with one intent, 'vict'ry to Rama, the gem
Of great Raghu's line !" Crying aloud."[152]

रघुवंश मणि की जय हो, जय हो, जय हो' वानरसेना की हर्ष के सूचित करता है। अनुवाद 'जय जय जय' के जगह मात्र 'vict'ry to Rama' रख है। लक्ष्य भाषा में मूल का शब्दानुवाद किया है। इससे अनुवाद में वीप्सा का सहज सौन्दर्य नहीं आ सका है।

जो अर्थ में चमत्कार उत्पन्न करे उसे अर्थालकार कहते हैं। अनुवाद के संदर्भ में अर्थालाकारों का अनुवाद हमेशा कठिनाई उत्पन्न करते हैं क्योंकि इनमें प्रयुक्त उपमान, शब्द-विशेष आदि का लक्ष्य भाषा में चयन करना इसकी प्रमुख समस्या है। जैसे-

"देखि पवनसुत कटक बिहाला। क्रोधवंत जनु धायउ काला॥"[153]

"Hot with rage, when he saw his great forces so crushed,
Fierce as death, Hanuman, son of wind, forward rushed."[154]

युद्ध में अपनी समस्त सेना को बेहाल देखकर पवनपुत्र हनुमान क्रोधित होकर ऐसे दौडे मानों 'काल' दौड आता हो। मानसकार ने हनुमान के क्रोध की तीव्रता को काल के साथ तुलना की है। इससे यहाँ उपमा अलंकार है। काल एक प्रतीक है जिसे सुनते ही भारतीय पाठक के मन में भय और डर की सृष्टि होती है। मूल पंक्तियों में हनुमान के इस क्रोध को जिस प्रकार उपमित किया गया है उसका लक्ष्य भाषा में शब्दानुवाद हुआ है। अनुवादक ने भी 'as' का प्रयोग कर अनुवाद में उपमा अलंकार का प्रयोग किया है। अनुवाद में उपमा का प्रयोग करके अनुवादक मूल की सहजता तो ला पाए हैं लेकिन

---

151. मानस- 6/66
152. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Doha 63, Pg.691

153. मानस- 6/50/1
154. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 51, Pg.679

'क्रोधवंत जनु धायउ काला' इन चार शब्दों में मानसकार ने बहुत ही संक्षिप्तता से गंभीर बात को अभिव्यक्त किया वह अंग्रेजी भाषा के संरचना के कारण विस्तार पूर्वक अनुवादक को रखना पडा है। 'Hot with rage' और 'Fierce as death' इन दोनों वाक्यों से अनुवादक को मूल पंक्तियों को व्याख्यायित करना पडा।

"बिरहवंत भगवंतहि देखी। नारद मनभा सोच बिसेषी ॥
मोर साप करि अंगीकारा। सहत राम नाना दुख भारा।"[155]

"Saint Narad was greatly distressed and disturbed,
Seeing God supreme in loss and suff'ring absorbed;
He my curse has accepted," he thought, "that is why
In this mourning and anguish I now see him lie."[156]

जहाँ किसी सदृश वस्तु या स्थिति के स्मरण से अन्य वस्तु का स्मरण हो वहाँ स्मरण अलंकार होता है। इन पंक्तियों में वैसे दृश्य के द्वारा उत्पन्न स्मरण अलंकार का प्रयोग मिलता है। राम अवतार का एक कारण नारद शाप भी माना जाता है। जब नारद श्रीराम को सीता की खोज में वन में घूमते-फिरते दिखाई देते हैं तब नारद को अपने द्वारा दिए गए श्राप का स्मरण आता है। 'नारद मन भा सोच बिसेषी मोर साप करि अंगीकारा' इन पंक्तियों को पुष्ट करता है। लक्ष्य भाषा में इन पंक्तियों का शब्दानुवाद करते हुए मूल बात को रख दिया है। तुलसी के उक्त कथन में स्मरण अलंकार का जो चमत्कार है, वह अनुवाद में गायब हो गया है।

"को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु बन वीरा ॥
कठिन भूमि कोमलपद गामी। कवनहेतु बिचरहु बन स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुंदर गाता। सहत दुसह बन आतप बाता ॥
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ। नर नारायन की तुम्ह दोऊ ॥"[157]

155. मानस- 3/40/3
156. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III, Chaupai 43, Pg.556
157. मानस-4/1/4-5

'You are wandering here in the woods, noble pair
Of great Kshatriya heroes, one dark and one fair;
Roads are hard and your feet are of tenderest stuff
Why then wander these wood paths, sirs tiring and rough?
To the wood's fearful heat you should not be exposed
With these frames of fine delicate beauty composed;
You must be either from the three chief gods sublime,
Or great Nara and Narayan, gods of old time."[158]

जब मन किसी एक वस्तु पर या बिंदु पर नहीं टिकता और कई बिंदुओं पर गतिशील रहता है तो संदेह अलंकार होता है। वनवासी राम लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव और उनकी सेना का दोनों पर संदेह उत्पन्न होना निवारण हेतु हनुमान को भेजना और हनुमान का बिप्र वेश धारण कर उनके पास आना और उनसे सवाल पूछना गोस्वामी तुलसीदास द्वारा दिया गया उत्तम उदाहरण है। 'को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। एवं 'की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ' में संदेह निवारणार्थ पूछे गए प्रश्न बडे ही सजग और गंभीर है। एटकिन्स द्वारा किए गए पद्यानुवाद में इन पंक्तियों का शब्दानुवाद हुआ है। संदेह अलंकार से अपरिचय के कारण अनुवाद में इसका रूपान्तरण नहीं किया जा सकता। इसलिए अनुवादक ने उक्त चौपाई का जो अनुवाद किया वह अर्थ की दृष्टि से सही है लेकिन प्रश्नवाचक उक्तियों का प्रयोग जिस प्रकार मूल में किया गया वह अनुवाद में गायब हो गया है।

"जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई॥
सुन्दरता कहुँ सुंदर करई। छबिगृह दीप सिखा जनु बरई॥"[159]

"It seemed the creator had shown all his pow'r
After making the worlds, in one marvellous dow'r

---

158. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV, Chaupai 1, Pg.563
159. मानस- 1/229/3

To beautify beauty, it seemed, or as flame
In the lamp crowning glory's ows palace, she came."[160]

रामचरितमानस में उत्प्रेक्षा का प्रयोग कई जगहों में हुआ है। सीता के सौंदर्य का सही चित्र खींचने केलिए कवि तीनों लोकों का पर्यटन करता है, किन्तु उन्हें एक भी उपमा नहीं मिलती। विधाता अपना सारा अनुभव निचोड कर सीता की अनन्वित मूर्ति गढ कर लोगों के सामने सीना तानकर, कहता है कि यदि सुन्दरता का सही रूप देखना हो, तो सीता को देखो। इन पंक्तियों में तुलसीदास की कला का पूरा परिचय मिलता है। 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में स्रोत भाषा की पंक्तियों का शब्दानुवाद किया है लेकिन यह मूल में व्यक्त अर्थ और भाव को स्पष्ट नहीं कर पाता। मूल में जहाँ उत्प्रेक्षा के प्रयोग से कवि सौंदर्य उत्पन्न करते हैं वहीं लक्ष्य भाषा में यह फीका पड गया है। आगे मानसकार ने 'दीपसिखा जनु बरई मेंउत्प्रेक्षा से जो सौंदर्य सृष्टि कि है वह अवर्णनीय है। दीपसिखा केलिए 'flame' शब्द जनु बरई में उत्प्रेक्षा से जो सौंदर्य सृष्टि कि है वह अवर्णनीय है। दीपसिखा केलिए 'flame' शब्द रखकर अनुवादक ने मूल के साथ अन्याय किया है। छबिगृह केलिए 'crowning glory's ows palace' दिया है। मूल में जिन शब्दों के माध्यम से तुलसी उत्प्रेक्षा को प्रस्तुत करते हुए सीता सौन्दर्य का वर्णन करते हैं वह अनुवाद में गायब हो गया है।

"चारु चरन नख लेखति धरनी। नुपुर मुखर मधुर कवि बरनी॥
मनहूँ प्रेम बस बिनतीकरही। हमहि सीय पद जनि परिहरहि।"[161]

"She scratched with her toes on the ground, downward glalncing;
Her anklets gave off jingling tones with her dancing
As tho' they were praying aloud, loving-hearted,
Oh, from Sita's feet may we ever be parted."[162]

160.. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 234, Pg.179
161. मानस- 2/57/3
162.. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 58, Pg.332

इस चौपाई के एक एक शब्द में सौदर्य झलक रहा है। 'चारु चरन नख लेखति घरनी' के अंतर्गत सीता की पैरों की शोभा और सीता की मानसिक अवस्था का सुन्दर चित्रण हुआ है। 'चारु' शब्द के जरिए यह सुन्दरता अपने आप प्रकट हुई है। अंग्रेजी में इसके समतुल्य 'scratched with her toes on the ground' दिया गया है जिसमें, कहने की आवश्यकता नहीं है कि मूल की छाव का पूर्ण रूप से नष्ट हो गई है। उसी प्रकार 'नुपुर मुखर मधुर कवि बरनी' में जो सौंन्दर्य है वो लक्ष्य भाषा में नहीं आ पाया है। 'नुपुर मुखरमधुर' केलिए अनुवादक ने जो दिया है 'they were praying aloud' है। स्पष्ट है मूल का सौन्दर्य यहाँ नष्ट हो गया है। नुपुरों के शब्द को तुलसी ने उत्पेक्षा के जरिए नूपुरों की याचना को बडे ही हृदयस्पर्शी ढग से चित्रित किया है। सीता के वनगमन की करुण परिस्थिति को ही तुलसी ने यहाँ उत्प्रेक्षा के जरिए सहज रूप से प्रस्तुत किया है। अनुवाद में मूल पंक्तियों का शब्दानुवादा किया गया है। जो सौंदर्य मूल में प्रयुक्त शब्दों में मिलता है वह अनुवाद में फीका पड गया है। नुपूरों की प्रार्थना को जिस प्रकार शब्दों के सुन्दर प्रयोग से कवि ने चित्रित किया है वह अनुवाद में गायब हो गया है।

इन उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि जिस प्रकार आभूषणों से सौंदर्य बढ़ता है उसी प्रकार अलंकारों के प्रयोग से पंक्तियों में सौंदर्य का सृजन होता है। शब्दालंकारों में शब्दों के चमत्कार से जिसप्रकार पंक्तियों में लय और संगीतात्मकता के साथ साथ विशेष शब्दों से एक से अधिक अर्थ को द्योतित करता है उसे लक्ष्य भाषा में लाना कठिन हो जाता है। अर्थ संबंधी विशेषता से चमत्कार की उद्भावना होती है, अंग्रेजी भाषा की संरचना के कारण और अलग भाषा शैली के कारण प्राय: रूपान्तरित करना संभव नहीं हो पाया है।

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में बिंबों के अनुवाद की समस्याएँ

बिम्ब शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से 'छाया', 'प्रतिछाया' तथा 'अनुकृति' केलिए किया जाता है। साहित्यिक बिंबों में अनुभूति, भावना और आवेग का महत्वपूर्ण स्थान है। काव्य में मूलभूत तत्व बिंब होता है। समय के साथ साथ काव्य के उपकरण परिवर्तित होते हैं, विषयवस्तु आदि में परिवर्तन होता है, परन्तु बिंब सदैव विद्यमान रहता है। बिम्ब की सफलता केलिए अनुभूति, भाव, ऐन्द्रियता, आवेग जैसी विशेषताएँ नितान्त अनिवार्य है।

अंग्रेजी शब्द 'इमेज' का पर्याय है बिंब। इसका अर्थ स्पष्ट करने केलिए 'इमेज' शब्द की व्याख्या अपेक्षित है क्योंकि 'बिम्ब' स्वतंत्र या मौलिक शब्द न होकर 'इमेज' का हिन्दी रूपान्तर है। साहित्य एवं अन्य कलाओं में इसका अर्थ है किसी सजीव या निर्जीव वस्तु की प्रतिच्छाया या उसका समान।[163]

'बिम्ब' एक प्रकार का चित्र है जो किसी पदार्थ के साथ विभिन्न इन्द्रियों के सन्निकर्ष से प्रमाता के चित्र में उद्बुद्ध हो जाता है।"[164] सृजनात्मक साहित्य में बिंबों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से किया जाता है। कवि अपनी संवेदना को सीमित परिधि में पर्याप्त, अभिव्यंजित और सुनियोजित अर्थ प्रदान करने केलिए बिंबों का प्रयोग करता है, और इसी संवेदनात्मक उद्देश्य को लक्ष्य भाषा में यथावत् संप्रेक्षित करना अनुवादक केलिए सबसे बडी चुनौती है।

तुलसीदास ने अपने आसपास के जीवन के विविध उपकरणों से ही नहीं परंपरा से प्राप्त बिंबों का भी विधान रामचरित मानस में किया है। समुद्र पार कर हनुमान जब वन

163. Images are representation or likeness of an animate or inanimate object. Encyclopeadia Britanica (Vol.XIV) Pg.328
164. काव्यबिम्ब- डॉ. नगेन्द्र, पृ.5

पहुँचते हैं, उसकी शोभा निरखते हैं, तो सर्वप्रथम उनकी दृष्टि मधुलोभी भ्रमरों के गुंजन पर जाती है-

'तहँ जाइ देखी बनसोभा। गुंजत चंचरीक मधुलौभा।"[165]

इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"There before him beautiful forest grove lay,
Where the bees gathered longingly honey all day"[166]

'गुंजत चंचरीक मधुलौभा' में मानसकार ने श्रव्य बिंब की कोमल और मधुर ध्वनि का चित्रण किया है। भ्रमरों का गुंजन कर फूलों पर मँड़राते हुए मधु पान करने के सुन्दर चित्र को मानसकार ने चित्रित किया है। लक्ष्य भाषा में मूल पंक्तियों का भावानुवाद किया है जिसमें 'भ्रमरों के गुंजन' को अनुवादक चित्रित नहीं कर पाए हैं जिससे मूल में ध्वनित श्रव्य बिंब अनुवाद में खो गया है।

मानस में चक्रवाक युगल के बिंब का वर्णन मानसकार करते हैं। देखिए-

"चक्क चक्कि जिमि पुर नर नारी। चहत प्रात उर आरत भारी।"[167]

चकवा चकवी जिस प्रकार रात में बिछड़ कर प्रात: काल मिलने केलिए आतुर होते हैं उसी प्रकार चित्रकूट में राम से मिलने केलिए नगर के नर-नारी हृदय में अति होकर प्रात:काल की प्रतिक्षा करते हैं। इसका अनुवाद जो किया गया है उसे देखिए-

"Happy townsmen and women, like birds after night,
Were all eager to start with the first rays of light."[168]

चकवा चकवी का संकल्प जो भारतीयों केलिए है उसे किसी विजातीय भाषा में उतार पाना कठिन है। अनुवाद में 'चक्रवाक केलिए मात्र 'birds' शब्द रखकर मूल में

---

165. मानस- 5/2/3
166. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Chaupai 3, Pg.591
167. मानस- 2/186/1
168. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Doha 180, Pg.412

प्रयुक्त बिंब से अनुवादक हट गए हैं। इन पक्षी युगलों के बिंब से मिलन की आतुरता को जिस तीव्रता से मानसकार ने चित्रित किया है वह गंभीरता अनुवाद में गायब हो गयी है।

तुलसीदास ने मानस में तलवारों का बिंब बुराइयों को मिटाने केलिए और ज्ञान, भक्ति को ऊपर उठाने केलिए प्रयुक्त किया है। इसका एक उदाहरण देखिए-

"ज्ञानपंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहि बारा॥"[169]

"Wisdom's pathway is like the sharp edge of a sword;
If one falls there, no way of escape it assured."[170]

मानसकार कहते हैं कि ज्ञान-मार्ग तलवार की धार के समान है और इस मार्ग से गिरते या पथभ्रष्ट होते देर नहीं लगती। भारतीयों में भक्ति पर बडा ही विश्वास है। भक्ति से ही मनुष्य सही रास्ते पर चल सकता है और मोक्ष प्राप्त कर सकता है यही भारतीयों का मानना है। अनुवाद में मूल पंक्ति का शब्दानुवाद किया गया है। तुलसी द्वारा प्रयुक्त इस बिंब में जो गंभीरता है वह अनुवाद में नहीं झलकती। यद्यपि अर्थद्योतन में अनुवादक सफल हुए हैं मूल बिंब को प्रभाव पूर्वक चित्रित नहीं कर पाए हैं।

वनवास प्रसंग में राम को जाने की आज्ञा प्रदान करने में दशरथ के मन की व्याकुलता को बिंब के माध्यम से तुलसी ने प्रस्तुत किया है। पीपल के पते को उपमान के रूप में लेते हुए दशरथ के मन के भावोद्वेग को प्रत्यक्ष रूप से इसी बिंब द्वारा दिया गया है। देखिए-

"अस मन गुनइ राउ नहिं बोला। पीपरपात सरिस मन डोला।"[171]

"Not a word could he say, but these thoughts stirred his mind
Till it shook like a peepul-tree's leaves in the wind."[172]

169. मानस- 7/118/1
170.. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VII, Chaupai 114, Pg.855
171.. मानस- 2/44/2
172. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 45, Pg.313

अनुवादक ने मूल पंक्तियों का शब्दानुवाद करते हुए लक्ष्य भाषा में 'पीपर पात' का लिप्यंतरण 'peepul-tree's leaves' रख दिया है जिससे उसका पूरा सौंदर्य नष्ट हो गया है। जो भाव मूल में बिंब के माध्यम से मानसकार ने प्रस्तुत किया है उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने में अनुवादक असफल हो गया है।

तुलसी ने जलीय जन्तु मीन के बिंब भी मानस में पर्याप्त मात्रा में प्रस्तुत किया हैं। राजा दशरथ की व्याकुलता की अभिव्यक्ति को 'मीन' विषयक बिंब के द्वारा ही दिखाते हैं। जैसे-

"कंठु सूख मुख आव न बानी। जनु पाठीनु दीनु बिनु पानी।"[173]

एटकिन्स द्वारा किया गया अनुवाद देखिए-

"Not a sound could he utter, so dry was his throat;
He was helpless as fish in a waterless moat."[174]

कैकेयी द्वारा याचित वरों को सुनकर राजा दशरथ का कंठ सुख जाता है, वे व्याकुल हो उठते हैं जैसे पानी बिना मछली छटपटा रही हो। यहाँ मानसकार ने 'पाठीन' का बिंब दिया है। अनुवाद में अनुवादक ने मूल पंक्ति का शब्दानुवाद किया है जिससे मूल में चित्रित बिंब फीका पड़ा गया हैं।

"दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई। बेद पढ़हिंजनु बटु समुदाई॥"[175]

"Frogs around us expressing their joy in loud croaks,
Sounds like students when reading aloud sacred books."[176]

मानसकार ने मूल पंक्ति में श्रव्य बिंब का प्रयोग किया है। वर्षा काल में चारों ओर मेंढ़कों की ध्वनि ऐसी सुहावनी लगती है मानों ब्रह्मचारियों का समूह वेद पाठ कर रहे हों।

173. मानस- 2/34/1
174. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 35, Pg.306
175. मानस- 4/14/1
176. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV, Chaupai 15, Pg.575

वेद-पाठ करते समय वेदों के उच्चारण में जो आरोह अवरोह है वह एक भारतीय पाठक ही समझ सकता है। अतः मूल में प्रयुक्त इस बिंब का अनुभव वह पूर्ण रूप से समझ सकता है। विजातीय पाठक मेंढक की ध्वनि का अनुभव कर सकता है लेकिन वेद पाठ के साथ इसकी जो तुलना मूल में की गई है उसे अनुभव नहीं कर सकता क्योंकि वह इससे परिचित नहीं है। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि मूल में जो सौदर्य है उसे अनुवाद में पूर्ण रूप से अनुवादक चित्रित नहीं कर पाए हैं।

श्रव्य बिंब का कठोर रूप भी तुलसी के मानस में मिलता है। जैसे-

"घन घमंड नभ गर्जत घोरा।"[177]

"In the heavens, of hope thunder gathering clouds".[178]

वर्षा ऋतु के समय आकाश में जो मेघ हैं उनके गर्जन को बहुत प्रभावात्मकता से प्रस्तुत किया है। अनुवादक ने जो अनुवाद दिया है वह किसी भी प्रकार से मूल के प्रभाव को चित्रित नहीं करता। मूल पंक्ति को पढने के बाद पाठक जिस प्रकार कवि के अनुभूति को महसूस कर सकता है लक्ष्यभाषा में नहीं मिलता। अतः मूल में जो प्रभाव इस श्रव्य बिंब के माध्यम से कवि अपने कौशल को दिखाते हैं वहीं अनुवादक लक्ष्यभाषा में प्रभाव सृष्टि को सर्जित नहीं कर सके हैं।

तुलसी की बिंब योजना से भाषा में जो सहजता और चमत्कार का सृजन हुआ वहीं अनुवाद में चत्रित करने में अनुवादक असफल हो गए हैं।

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में प्रतीकानुवाद की समस्यायें

प्रतीक से भाषा में सौदर्य आता है। प्रतीक योजना के द्वारा कवि अपने भावों एवं अनुभूतियों का संप्रेषण कम से कम शब्दों में कर सकता है। इनके द्वारा ही कवि काव्य में सूक्ष्म तथा अमूर्त भावों का मूर्तिकरण करके उन्हें बोधगम्य बना सकता है।

177. मानस- 4/13/1

178. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV, Chaupai 14, Pg.574

'प्रतीक' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'प्रति+अंच्' शब्द के आधार पर हुई है जिसका अर्थ है प्रतिस्थान अथवा एक वस्तु केलिए किसी वस्तु की स्थापना। प्रतीक शब्द अंग्रेजी के 'सिम्बल' शब्द के पर्याय के रूप में आता है। 'प्रतीक का शब्दिक अर्थ है 'चिह्न'।"[179] यह शब्द संस्कृत में प्रतिमा, चिह्न अथवा संकेत के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। प्रतीक मानव मन से जन्में आत्माभिव्यक्ति का सूक्ष्म माध्यम है।

प्रतीक एक ऐसा तथ्य है जिसमें साधारण भाषा में अव्यक्त विचारों को सहज ही अभिव्यक्त कर देता है। किन्हीं दो भाषाओं में प्रयुक्त प्रतीक बहुत बार एक नहीं होते। यह संदर्भ पर आधारित होता है। मूल संदर्भ और प्रतीक की कल्पना का बहुत गहरा संबंध होता है। इस संबंध को पहचानना ही अनुवाद के संदर्भ में कठिन हो जाता है जो अनुवादक के समाने एक पेचीदा समस्या बन जाती है।

तुलसीदास के रामचरितमानस में वर्ण्य विषय को ग्राह्य बनाने केलिए जिन प्रतीकों का सहारा लिया है वे अत्यंत सुंदर हैं। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

"गंगासकलमुद मंगल मूला। सब सुख करनि हरनि सब सूला।"[180]

भारतीय संस्कृति में गंगा पवित्रता, कष्ट निवारण और श्रद्धा की प्रतीक है। सब प्रकार के सुख देने वाली गंगा भारतीय मानस में ऊँचा स्थान रखती है। इसका अनुवाद यूँ है-

"For the Ganges bring blessings wherever she flows
She destroys ev'ry sorrow and pleasure bestows."[181]

अनुवादक यद्यपि शब्दानुवाद के माध्यम से मूल पंक्तियों का अर्थ द्योतन करने में सफल हुए हैं वे गंगा के सांस्कृतिक महत्त्व को अभिव्यक्त नहीं कर पाए हैं। लक्ष्य भाषा

179. हिन्दी साहित्य में विविधवाद- डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल, पृ.414
180. मानस- 2/86/2
181. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 87, Pg.342

पाठक इन पंक्तियों को पूर्णत: तभी तक समझ नहीं पाता जब तक वह इस प्रतीक को इस नदी से जुडे भारतीयों के विश्वास को नहीं समझता ।

सीता के वियोग में राम की प्रतीकात्मक भाषा से तुलसी की प्रतीकमयी भाषा का सुन्दर विवरण मिलजाता है । प्राकृतिक उपमानों से प्रतीक योजना का सुन्दर चित्रण निम्न लिखित पंक्तियों में मिलता है-

"हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी । तुम्ह देखी सीता मृगनयनी
खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुप निकर कोकिला प्रबीना ॥
कुंदकली दाडिमदामिनी । कमल सरद ससि अहि भामिनी ॥
बरुनपास मनोजधनु हंसा । गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ।"[182]

इधर मानसकार ने 'खंजन मृग मीन और कमल' को नेत्र केलिए, 'कपोत' को गर्दन केलिए, 'कोकिल' को मीठी बोल केलिए, 'कुंदकली दाडिमा' को दांत केलिए, 'दामिनी' दांतों की चमक केलिए, 'हंसा', 'गज' चाल केलिए और 'सुक' को नाक के प्रतीक रूप में लिया है । पशु-पक्षी, फल आदि को प्रतीक के रूप में लेकर सीता के सौंदर्य का यहाँ पूरा चित्रण किया गया हैं । परंपरा से चले आने वाले इन प्रतीकों का प्रयोग उचित ढंग से मानसकार ने कर दिया है । इसका अनुवाद देखिए-

"Tell me trees, tell me deers, tell me birds, and bee swarms,
Have you seen fawn-eyed Sita, the home of all charms?
Now the birds-wagtails, parrots and doves, all the fish
Deer and bees, cuckoos too skilled as any could wish
The sweet jasmine and lotus and pomegranate flow'rs;
Gliding snakes, lighting flashes; moon bright'ning night's hours;
Bright star clusters; the elephant, lion and swan
Can again hear their praise with fair Sita's charm gone."[183]

मूल पंक्तियों के साथ लक्ष्य भाषा पंक्तियों की तुलना करने पर यह स्पष्टत: पाता चलता है कि यहाँ स्रोत भाषा का शब्दानुवाद ही किया गया है । मानसकार ने जिन प्रतीकों के माध्यम से सीता के सौदर्य में चमत्कार की उद्‌भावना की है वह अनुवाद में गायब हो

182. मानस- 3/29/5-6

183. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III, Chaupai 32, Pg.546

गयी है। लक्ष्य भाषा में मात्र 'मृग' (fawn), और कोयल' (cuckoos) नेत्र और मीठी बोली के प्रतीक रूप में चित्रित होती है। अत: जब तक लक्ष्य भाषा पाठक अन्य प्रतीकों को नहीं समझता वह इन पंक्तियों का आस्वादन नहीं कर सकता।

मनचाहे सुख वाले प्रतीक के रूप में 'कलपतरु' को माना जाता है। मानस में भी इच्छा पूर्ति केलिए ही इस प्रतीक को लिया गया है।

"जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई। बहु संपति माँगत सँकुचाई।"[184]

I'm like a poor man who cannot tell his wishes,
Tho' finding his way to the heav'nly tree's riches."[185]

'बिबुधतरु' कल्पतरु के अर्थ में ही प्रयुक्त किया गया है। इस वृक्ष की महत्ता के विषय में कहा गया है कि यह मनोवांछित फल प्रदान करनेवाला होता है।[186] पाश्चात्य संस्कृति में ऐसा विश्वास या प्रतीक नहीं है। इसीकारण से भारतीय विश्वास से जुडे इस सांस्कृतिक प्रतीक का अनुवाद अनुवादक ने 'heav'nly tree's' रख दिया है। यह मूल शब्द का भावानुवाद है जिससे मूल प्रतीक का अर्थ द्योतन नहीं होता। इस वृक्ष के सांस्कृतिक महत्त्व को लक्ष्य भाषा पाठक तक पहुँचने केलिए अनुवादक ने पाद-टिप्पणि का प्रयोग भी नहीं किया है।

ईश्वरीय प्रतीक का भी भारतीय संस्कृति में अधिक महत्व है। इसका एक उदाहरण देखिए-

"लिंग थापि बिधिवत् कर पूजा। सिव समान प्रिय मोहि न दूजा।।"[187]

"Tis a much desired plan and intention of mine
That I here to Lord Siva should set up a shrine.'[188]

---

184. मानस- 1/148/3
185. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 149, Pg.120
186. सांस्कृतिक प्रतीक कोश- शोभानाथ पाठक, पृ.69
187. मानस- 6/1/3
188. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI Chaupai 2, Pg.639

शिव और शक्ति दोनों का संयोगात्मक प्रतीक है शिवलिंग और यही इनकी माया का चिह्न है। माना जाता है कि पुरुष और प्रकृति से ही सृष्टि की रचना हुई है। इस प्रकार शिव और शक्ति ही लिंग और योनि के रूप में सर्वत्र प्रतिष्ठित हैं। शिवलिंग समस्त दैवी शक्ति के प्रतीक के रूप में पूज्य है।

लक्ष्य भाषा में 'लिंग' केलिए 'Lord Siva should set up a shrine' रखा गया है जो मूल में व्यक्त सांस्कृतिक महत्व का स्पष्टीकारण नहीं कर पाता। 'shrine' शब्द का अर्थ 'तीर्थ-मंदिर'[189] है जो लिंग अर्थ को व्यक्त ही नहीं करता। अत: यह मूल में व्यक्त अर्थ और भाव को लक्ष्य भाषा में अंकित नहीं कर पाता। इस शब्द से मूल में चित्रित प्रतीक का अर्थ नष्ट हो गया है।

कमल, हंस,चकोर, कोकिल आदि प्रतीकों से भाषा की व्यंजनाशक्ति का संबंध है। इन प्रतीकों के माध्यम से तुलसी हमारा सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक अवबोध को बढाते हैं। मानस में देखिए-

"बिकसे सरसिज नाना रंगा। मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा।
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा। प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा ॥"[190]

"Water lilies of all kinds and colours there bloomed
Over which busy bees music made as they hummed;
Many water-fowls and stately swans raised their call,
As tho' at the sight praising the great Lord of all."[191]

तुलसीदास ने जिन प्रतीकों का प्रयोग इस पंक्ति में किया है उनका भारतीय संस्कृति में श्रेष्ठ स्थान है। जैसे 'सरसिज याने कमल निर्मलता का प्रतीक है। उसीप्रकार हंस

---

189. अंग्रेजी-हिन्दी कोश- फादर कामिल बुल्के. पृ.482
190. मानस- 3/39/1-2
191. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III, Chaupai 42, Pg.555

विवेक, निर्मलता, पावनता और निष्कपटता का प्रतीक है। लक्ष्य भाषा में 'सरसिजं' केलिए 'Water lilies' का प्रयोग किया गया है जिसमें पवित्रता का बोध नहीं मिलता और साथ ही 'हंस' केलिए 'swan' शब्द रख दिया है। पाश्चात्य संस्कृति में यह स्नेह और शांति का प्रतीक है जो मूल प्रतीक के संदर्भ से बिलकुल भिन्न है। प्रतीक के माद्यम से मानसकार ने मूल पंक्तियों में अपना कौशल दिखलाया है वहीं अनुवादक उतनी कुशलता से उसे चित्रित नहीं कर पाए हैं।

नागिन को दुष्टता एवं कुटिलता का प्रतीक माना जाता है। मानस में देखिए-

"सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारून जस अहिनी॥"[192]

इसका अनुवाद देखिए-

"Now a sister had Ravan the demon, by name
Surpanakha, snake-like in ill deeds and ill fame."[193]

जहाँ एक ओर भारतीय संस्कृति में नाग को देवता मानकर उसकी पूजा-उपासना की जाती है वहीं दूसरी ओर काली नागिन को दुष्ट और कुटिल माना जाता है। इसी कारण दोनों का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्त्व है। मूल में जहाँ 'अहिनी' शब्द से ही शूर्पणखा के स्वभाव का पूरा चित्रण मिल जाता है वहीं लक्ष्य भाषा में अनुवादक को भाव के सहारे मूल बात की अभिव्यंजना करनी पड़ी। इससे मूल में जो संक्षिप्तता है वह लक्ष्य भाषा में नष्ट हो गयी है।

प्रतीक किसी देश की संस्कृति और सभ्यता से जुड़े हैं अत: इनका अनुवाद दुष्कर और कभी असंभव भी है। तुलसी ने जिस प्रकार प्रतीकों के प्रयोग से भाषा में भारतीय संस्कृति का परिचय दिया है और पंक्तियों में प्रभाव उत्पन्न किया है उसे उसी प्रभाव के साथ अनुवाद में चित्रित करने में अनुवादक सफल नहीं हुआ है।

192. मानस- 3/16/2
193. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III Chaupai 19, Pg.529

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में छन्दानुवाद की समस्याएँ

'छन्दस्' शब्द छद् धातु से बना है। इसका धातुगत व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है- जो अपनी इच्छा से चलता है। अत: छन्द शब्द के मूल में 'गति' का भाव प्रमुख है।

भाषा की उत्पत्ति के साथ छन्द का भी जन्म हुआ होगा। छोटी-छोटी अथवा छोटी बडी ध्वनियाँ जब व्यवस्थित होकर सामंजस्य प्राप्त करती हैं तब उसे शास्त्रीय ढंग से छंद नाम से अभिहित करते हैं। कविता को गोचर रूप प्रदान करनेवाला छंद काव्यशिल्प का महत्वपूर्ण अंग है। 'काव्याभिव्यक्ति के स्वर लहरियों के भावालम्बित लयात्मक नियमन द्वारा छंद विधान किया जाता है। अर्थात् लयात्मक नियमन छंद है।[194]

कविता छन्द बद्ध होती है और हर छंद की अपनी गति जिसका प्रभाव भी पंक्तियों पर पडता है। एक हद तक कविता के भाव भी इनसे संबंधित होती है। अनुवाद में स्रोत सामग्री के छंद को उतार पाना दुष्कर ही नहीं असंभव भी है। क्योंकि एक भाषा में प्रयुक्त छंद कभी कभी अन्य भाषा में नहीं होता। जैसे संस्कृत में 'श्लोक' केलिए 'अनुष्टुप्' पर्याय का प्रयोग होता है जिसके प्रत्येक चरण में आठ आठ अक्षर हैं। अंग्रेजी जैसी भाषा में अनुष्टुप् छंद या उसके समतुल्य छंद का प्रयोग नहीं मिलता अत: अनुवादक मूल छंद का जो प्रभाव है किसी भी तरह से लक्ष्य भाषा भाषी पर नहीं डाल सकता।

महाकवि तुलसी के मानस में जितने भी छंद हैं, वे सार्थक एवं विषयानुकूल हैं। मानसकार ने सभी काण्डों के आरंभ में और कभी-कभी ईश्वरस्तुति केलिए संस्कृत श्लोकों का प्रयोग किया है। उसके कुछ उदाहरण देखिए-

"नमामि इंदिरा पति' । सुखाकरं सतां गति ॥
भजे सशक्ति सानुजं । शची पति प्रियानुजं ॥" [195]

194. तुलसी काव्य की लोकतात्विक संरचना- गयासिंह, पृ.185
195. मानस- 3/3/6

यहाँ 'अनुष्टुप्' छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में आठ-आठ अक्षर हैं। सम चरणों में सातवाँ अक्षर लघु होता है।• और प्रत्येक चरण में पाँचवाँ अक्षर लघु एवं छठा अक्षर गुरु होता हैं। मूल में इस छंद को व्यक्त करनेवाले सारे लक्षण इसमें है। इसका अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"Thee I promise, home of all joy and peace,
Lakshmi's lord, giving true souls release;
Praise both lakshman and Sita, world-mother,
With thee owning Indra as brother."[196]

लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने मात्र इसका शब्दानुवाद प्रस्तुत किया है। अनुवाद में अनुवादक किसी भी छंद का प्रयोग नहीं कर पाए हैं। इसका एक और उदाहरण देखिए-

"वन्दे बोधमयं नित्यं,गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि, चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥"[197]

इसका अनुवाद है-

"Hail to thee, all wise and deathless Master Siva incarnating,
By whose favour e'en the crescent moon if rev'renced in all places'[198]

तुलसीदास का संपूर्ण मानस दोहा, चौपाई शैली का अनुपम काव्य है। कथानक को गतिशील प्रवाह देने में यह छंद सहायक सिद्ध हुए हैं। तुलसी का छंद चयन एक गहरे कवि कौशल का परिचायक है। मानस में दोहा-चौपाई एवं सोरठा छंद का प्रयोग किया है। तुलसी के मात्रिक छंदों में चौपाई का प्रमुख स्थान है। इस छंद में हर्ष-शोक, पाप-पुण्य, दिन-रात, साधु-असाधु, सुजाति-कुजाति, देव-दानव, ऊँच-नीच, अमृत-विष,

196. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III Chhand I, Pg.514
197. मानस- 1/3 (श्लोक)
198. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I Sanskrit invocation and Praise, Pg.1

माया-ब्रह्म, कवि-ईश्वर, राजा-रंक आदि विपुल प्रवृत्तियों के टोने की अतुल शक्ति है[199]। इसके कुछ उदाहरण देखिए

"रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन॥
त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन। कलिकुचालि कलि कलुष नसावन।"[200]

"This pure Lake of Lord Rama's deeds was first made
By Lord Siva; and Sages it charmed when displayed
The three ills of willful wrong, woe and want dire,
And all sins of this age are consumed in this fire."[201]

""जब तें राम ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए।
भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी।"[202]

"From the time Rama came to his home newly wed,
All around daily new joys an pleasures were spread
The fourteen created realms seemed like greatmountains,
And bliss-showers fell from good deeds like cloud fountains;"[203]

चौपाई के एक चरण में 16 मात्राएँ होती है। इसमें चार चरण होते हैं। मानस में चित्रित चौपाई छंद केलिए लक्ष्य भाषा में समान छंद का प्रयोग नहीं हुआ हैं। इन उदाहरणों में किसी भी छंद का प्रयोग अनुवादक ने नहीं किया है। चौपाई की तरह दोहा छंद का भी प्रयोग आद्यन्त किया गया हैं। इसके पहले और तीसरे चरणों में 13 मात्राएँ होती है तो दूसरे और चौथे चरणों में 11 मात्राएँ हैं। उदाहरण स्वरूप राम के प्रति तुलसी की भक्ति को अत्यंत प्रभावशाली दोहे के द्वारा व्यक्त किया गया है-

199. रामचरितमानस की काव्य भाषा- डॉ. रामदेव प्रसाद, पृ.149
200.. मानस- 1/34/5
201. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I Chaupai 35, Pg.33
202. मानस- 2/1
203. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II Chaupai 1, Pg.282

"गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न ।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥"[204]

इसका अनुवाद-

"As water and wave, as a word and its meaning,
Are one tho divided when spoken,
So Sita and Rama as one do I worship
Who love the man suff'ring and broken."[205]

मूल में दोहा छंद है । परंतु लक्ष्य भाषा में अनुवादकें ने समतुल्य छंद का प्रयोग नहीं किया है । अनुवाद में उन्होंने मिश्रित छंद (Mixed meter) का प्रयोग किया है । इसकेलिए भी कोई नियमित तरीके को अनुवादक ने अपनाया नहीं है । एक ओर उदाहरण देखिए-

"अवधपुरी बासिन्ह कर सुख संपदा समाज ।
सहस सेष नहिंकहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज ॥"[206]

"The peace and prosperity known by the people
Of Avadh, when Rama reigned o'er them
Could never be told, tho' a thousand divine tongues
Should try- and with alltime before them."[207]

मूल में जहाँ यह 'दोहा छंद' का उदाहरण है वहीं लक्ष्य भाषा में किसी भी छंद का प्रयोग नहीं किया गया है ।

204. मानस- 1/18
205. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I Doha 17, Pg.19
206. मानस- 7/26
207. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VII Doha 27, Pg.774

दोहे का सीधा उलटा है सोरठा। इसके प्रयोग केलिए विशेष स्थान नहीं। दो. चौपाइयों के बीच या दो दोहों के बीच इसका प्रयोग होता है। मानस के अयोध्या, अरण्य एवं किष्किंध काण्डों में इसका प्रयोग किया है। जैसे-

"सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन॥"[208]

इस सोरठे में निषादराज की प्रार्थना को दिखाया है। इसका लक्ष्य भाषा में अनुवाद देखिए-

"The Merciful one gave a look
And a smile, as he heard, to his wife and his brother
These words of the boatman he took,
To his heart, full of love as they were, tho' so simple."[209]

"भरतचरन सिरु नाइ तुरत गएउ कपि राम पहिं।
कहीं कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढि॥"[210]

"The monkey then quickly returned
To Lord Rama, his leave humbly taking of Bharat.
The Lord, in this way having learned
All was well, started out in his chariot seated."[211]

अनुवाद में अनुवादक मूल के समतुल्य छंद का प्रयोग नहीं कर पाए हैं। इसप्रकार तुलसीदास के दोहा, चौपाई एवं सोरठा जैसे छंदों के आधार पर मानस की मुख्य कथा को आगे बढाते हैं। सूक्ष्म छन्दबद्धता का परिचय उन्होंने मानस के द्वारा किया है। एटकिन्स

---

208. मानस- 2/100
209. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Soratha 2, Pg.588
210. मानस- 7/2 (ख)
211. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VII, Soratha 1, Pg.753

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में मूल के समतुल्य छंद का प्रयोग नहीं कर पाए हैं। इससे लक्ष्य भाषा में प्रभाव खो गया है।

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में अनुवाद की भाषागत समस्याएँ

भाषा के प्रयोग में गोस्वामी तुलसीदास की अद्भुत प्रतिभा का परिचय मिलता है। उनके समक्ष भाषा की दो परंपराएँ प्रचलित थी एक संस्कृत और दूसरी जन भाषा। रामचरितमानस में कवि ने जनभाषा अवधी का प्रयोग किया है। 'भाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति' जनभाषा के साथ-साथ संस्कृत की स्तुतियों का ब्रज, राजस्थानी आदि प्रमुख प्रचलित बोलियों का अरबी-फारसी आदि विदेशी शब्दों का ग्रहण उनकी प्रगतिशीलता का परिचायक है। *'भाषा भनिति भोरि मति मोरी'*[212] पंक्तियों में तुलसी की जन भाषा की ओर की पक्षधरता स्पष्टत: दिखाई देती है।

तुलसी की भाषा में अपभ्रंश आदि मध्यकालीन भाषाओं के प्रयोग कई रूपों में देखे जाते हैं। जैसे भाव की वृद्धि, रस की अभिव्यक्ति आदि केलिए अपभ्रंश भाषा के शब्दों का चयन। यह शब्दावली मानस में प्रसंग को ज्यादा प्रभावपूर्ण बना देती है। लेकिन जहाँ पर अनुवाद का प्रश्न उठता हैं वहाँ इस प्रकार के भाषा भेद असंभव हो जाते हैं। वहाँ पर न संस्कृत का भेद दिखाया जा सकता है, न ही देशी भाषा का। अपभ्रंश के शब्द 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' जैसे अनूदित ग्रंथ केलिए बिलकुल अपरिचित हैं। इस प्रकार मूल के भाषा भेदों का अनुवाद में उतारना कठिन ही नहीं असंभव भी है। 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में यह आसानी से देखा जा सकता है। उदाहरण केलिए-

"भरत कि राउर पूत न होही। आनेहु मोल बेसाहि कि मोही॥
जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारें। काहे न बोलह बचनु सँभारें॥
देहु उतरु अनु करहु कि नाहीं। सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं॥

212. मानस- 1/8/2

देन कहेउ अब जनि बरु देहू । तजहु सत्य जग अपजसु लेहू ॥

सत्य सराहि कहेंहु बरु देना । जानेहु लेइहि मागि चबेना ॥'[213]

इसका अनुवाद देखिए-

"Pray tell me, Bharat your son, Sir, or not?
What am I? Am I something you paid for and got?
If what I have asked for is hurting you now,
Why didn't you think before making your vow?
You're a truthful one in truthful line I Let me know
What your answer is; what do you say? Yes or No?
If now you won't give what you promised to give,
Break your word, and in shame before men hence forth live
Did you think I would ask for a little parched grain
When you praised truth and made me your promise again."[214]

प्रस्तुत उदाहरण में कई स्रोतों से शब्दों को कवि ने एकत्र किया है और प्रभावात्मक ढंग से शब्दों को सजाया है । 'भरतु कि राउर पूत न होही' में नकारात्मक प्रश्न के जरिए कवि ने देशी शब्दों का सहारा लेकर प्रसंग का अर्थ, गांभीर्या प्रदान कर दिया है । अनुवाद में 'tell me, Bharat your son, Sir,or not?' में मूल की यह तीव्रता नष्ट हो गई है । राजा दशरथ के मन को चोट पहुँचाने के उद्देश्य से कैकेई ने मूल में शरों के समान राजा पर जो शब्द वर्ष की है अनुवाद में उसका प्रभाव नहीं आ सका है । 'आनेहु मोल बेसाहि की मोही' में विधिवत विवाह की संतति भरत को पिता की संपत्ति पर अधिकार व्यंजित किया गया है । अंग्रेजी में 'Am I something you paid for and got' में यह व्यंजकता नष्ट हो गई है । 'जो सुनि सरु अस लाग' में कैकई के शब्दों की तुलना शरों से की गई है और उसमें शरों की तीव्रता दिखाई गई है । जो अंग्रेजी अनुवाद 'hurting' में

213. मानस- 2/29/1-3
214. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II Chaupai , Pg.351

नहीं है। 'काहे न बोलहु बचनु सँभारें' और 'सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माही' में कैंकई का प्रतिवाद तथा महाराज पर व्यंग्य स्पष्ट रूप से कही गई है। मूल का यह प्रभाव अनुवाद में नहीं है। दशरथ के प्रति कैकेई का शत्रु जैसे व्यवहार उसके शब्दों से जो मूल में व्यक्त होता है वह अनुवाद में नहीं आ पाया है। वरों की तुलना 'चना छबना' से करते हुए दशरथ के द्वारा वरों को तुच्छ समझने की बात पर जोर दिया है। 'चबेना' का अनुवाद 'parched grain' के रूप में जो दिया गया है उससे मूल शब्द की अर्थ द्योतन की शक्ति बिलकुल नष्ट हुई सी लगती है। 'चना चबेना' देशी भाषा में प्रभावकारी प्रयोग कहा जा सकता है जिसका समतुल्य शब्द अनुवाद में मिलना असंभव है। रूढी एवं प्रयोग से परंपरागत रूप में तुलसी को प्राप्त शब्दावली इस उदाहरण में देखी जा सकती है जिसका अक्षरार्थ में अनुवाद संभव नहीं हो सकता। संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न देशी शब्दों के प्रयोग से प्रसंग में जो तीव्रता उत्पन्न हुई है अनुवाद में उसी ढंग से वह प्रस्तुत नहीं की जा सकी है।

लोकभाषा का प्रयोग भी मानस में हम देख सकते हैं। अनुवाद में अनुवादक इन स्थानों पर मात्र शब्दानुवाद कर सकता है या भाव अनुवाद। वह मूल की सशक्त भावाभिव्यक्ति में सफल नहीं हो सकता। इसका एक उत्तम उदाहरण है-

"छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।
तरनिउँ मुनिधरिनी होई जाई। बाट परै मोरि नाव उड़ाई॥"[215]

तुलसीदास ने यहाँ केवट द्वारा प्रयुक्त सरल भावों और भाषा का प्रयोग किया है जो प्रसंगोचित एवं पात्रोचित है। 'छुअत भइ पाहन तरनिउँ बाट जाई मोरि उड़ाई' आदि शब्द इस ओर संकेत करते हैं। इन शब्दों का अनुवाद अंग्रेजी में उतना सफल नहीं हुआ है जितना कि मूल में। देखिए-

"So a rock a fair woman became 'tis well-known
And you know as do wood is softer than stone

215. मानस- 2/99/3

If to make of my boat a saint's wife you're disposed,

Then the boat will be lost and the ferry be closed;"[216]

मूल और लक्ष्य भाषा पंक्तियों की तुलना अगर की जाए तो यह देख सकते हैं कि 'छुअत' अर्थात् छुना केलिए किसी भी शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। 'अहल्या प्रसंग' के आधार पर ही केवट उक्त पंक्तियों को कहता है। 'सिला' केलिए 'rock' शब्द अर्थ की दृष्टि से ठीक है। मूल शब्दों का शब्दानुवाद करते हुए अनुवादक ने मूल बात को अभिव्यक्त किया है। लेकिन दूसरी पंक्ति 'बाट परै मोरि नाव उडाई' मेंअनुवादक मूल बात को ठीक अर्थ से अभिव्यक्त नहीं कर पाए हैं। इस पंक्ति का अर्थ है 'नाव उड जायगी, मैं लुट जाऊँगा। इस केलिए जो अनुवाद अनुवादक ने दिया है वह यूँ है "Then the boat will be lost and the ferry be closed" में केवल भावाभिव्यक्ति हुई है। मूल की सहजता अनूदित पंक्तियों में नहीं है। 'छुअत सिला ङ्स नारिसुहाई' शब्दों के पीछे जो जादू है वह हमारी संस्कृति के सौजन्य से उत्पन्न है। ऐसी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से उत्पन्न शब्दों का अनुवाद किसी भी हालत में नहीं किया जा सकता।

भाषा में प्रयुक्त शब्द, वस्तुओं, भावों, विचारों आदि के प्रतीक होते हैं। भाषा की व्यवस्था कारक, वचन, लिंग, काल, अन्वय आदि विषय और उनके अनेकानेक नियमों के रूप में दिखाई पडती है। भाषा ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद में इसी व्यवस्था को दूसरी भाषा में परिवर्तित किया जाता है। दोनों भाषाओं में (स्रोत और लक्ष्य) में विभिन्न चीजों, भावों, क्रियाओं आदि केलिए अपने अपने ध्वनि प्रतीक होते हैं। जब भाषाओं में दूरी रहती है तो अनुवाद में कठिनाई होती है। भाषाएँ एक ही परिवार की होती हैं तो भाषाओं के बीच की खाई कम रहती है और अनुवाद सफल रहता है। हिन्दी और अंग्रेजी के बीच एक गहरी खाई होने के कारण इन भाषाओं का अनुवाद कई स्थानों पर असंभव रह जाता है। जैसे-

216. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II Chaupai 100, Pg.351

"पुलक गात लोचन जलु बरषेउ।"[217]

"His whole body was thrilled tears of joy filled his eyes."[218]

भारतीय भाषाओं में एक ही शब्द के अनेक पर्याय होते हैं। यथास्थान इनका प्रयोग अत्यन्त कठिन है। 'पुलक' केलिए 'thrilled' शब्द का प्रयोग अर्थ की दृष्टि से सही है। परन्तु 'लोचन' शब्द में जो लचीलापन है वह 'eyes' में नहीं है। 'जलु' केलिए 'tears' ध्वनि प्रतीक अर्थाभिव्यक्ति में सटीक है। जो सौन्दर्य मूल में प्रयुक्त हुआ है वह लक्ष्यभाषा में आते आते अपनी सहजता और प्रभाव खो बैठी हैं। मूल भाषा के संरचना के कारण क्रिया पद के अंत में प्रयुक्त हुआ है जबकि अनुवाद में यह वाक्य के बीच में ही प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार अनुवाद में भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन का भी सहारा अत्यन्त आवश्यक रहता है।

अनुवाद और भाषाविज्ञान

अनुवाद स्रोत भाषा के शब्दों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के शब्दों का प्रयोग और स्रोत भाषा की संरचना के स्थान पर लक्ष्य भाषा की संरचना का प्रयोग होता है। इसकेलिए दोनों भाषाओं की तुलना आवश्यक है। अनुवाद मूलतः इस तुलना पर आधारित होता है, और इस नाते उसका सीधा संबंध भाषा-विज्ञान के तुलनात्मक रूप से है। अतः भाषा विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषा अथवा भाषाओं का एककालिक, बहुकालिक, तुलनात्मक, व्यतिरेकी अथवा अनुप्रयुक्त अध्ययन-विश्लेषण तथा तद्विषयक सिद्धांतों का निर्धारण किया जाता है।[219] इसके अन्तर्गत ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ इत्यादि के आधार पर भाषा का अध्ययन किया जाता है। अनुवाद के संदर्भ में ध्वनि,

---

217. मानस- 7/1/1

218. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VII Chaupai 2 Pg.751

219. भाषाविज्ञान-भोलानाथ तिवारी, पृ.2

शब्द, रूप, वाक्य और अर्थ की दृष्टि से स्रोत और लक्ष्य भाषाओं की तुलना करनी होती है। अतः अनुवाद का संबंध भाषाविज्ञान के इन पाँचों अंगों से है। मूलतः भाषाविज्ञान के तुलनात्मक, व्यतिरेकी और अनुप्रयुक्त रूपों के साथ अनुवाद का सीधा संबंध रहता है।

तुलनात्मक भाषाविज्ञान में दो या अधिक भाषाओं की तुलना करके ध्वनि शब्द तथा व्याकरण की समानताओं का पता लगाया जाता है। तुलनात्मक होने से भाषाविज्ञान की इस शाखा का अनुवाद से सीधा संबंध है। इसमें दो भाषाओं की तुलना करके मुख्यतः समानताओं और विषमताओं का पता लगाया जाता है। अनुवाद में भी दो भाषाओं के शब्द प्रतीकों की अर्थ की दृष्टि से तुलना की जाती है। जैसे-

"एवमस्तु कहि कपटमुनि बोल कुटिल बहोरि ॥"[220]

"Amen, may it be so, the false hermit said."[221]

यहाँ 'एवमस्तु' संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है ऐसा ही हो। अनुवादक ने अनुवाद में 'Amen' शब्द का प्रयोग कर पाश्चात्य संस्कृति का पूरा परिचय दिया है। यहाँ अनुवादक ने मूल में प्रयुक्त शब्द का लक्ष्य भाषा में हनन किया है। 'एवमस्तु' की तुलना में 'Amen' शब्द ठीक नहीं बैठता। वैसे ही 'कपटमुनि' की तुलना में 'false hermit' को भी देखा जा सकता है। दूसरा उदाहरण देखिए-

'कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी ॥'[222]

"Thee I cannot, without thine aid, worthily praise."[223]

'तोरी' अर्थात् तेरी (आपकी) केलिए अनुवादक ने पुरानी अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द 'Thee' अर्थात् 'तुम' का प्रयोग किया है। यह प्रायः पाश्चात्य देशों के धार्मिक ग्रंथों में प्रयुक्त शब्दावली है। 'तोरी' में जो आदर भाव उमड पडता है वह 'Thee' शब्द में नहीं

---

220. मानस-1/165
221. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I Doha 156, Pg.131
222. मानस- 3/10/1
223. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book III Chaupai 13, Pg.523

मिलता। फिर भी ऐसा करते हुए अनुवादक ने तुलनात्मक शब्द प्रतीकों को चुनने में काफी. पटुता दिखाई है।

इन उदाहरण से यह बात व्यक्त हो जाती है कि 'रामचरितमानस' जो हिन्दू जनता का धार्मिक ग्रंथ माना जाता है जिसमें सांस्कृतिक, धार्मिक आचारानुष्ठानों से संबन्धित शब्द प्रतीकों की भरमार रहती है। अनुवाद में किसी भी हालत में सफल शब्द प्रतीकों से काम नहीं लिया जा सकता। मूल की तुलना में लक्ष्य भाषा के शब्द प्रतीक भोडे रह जाते हैं। फिर भी यह एक सत्य है कि 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में एटकिन्स ने अपने अनुवाद में पाश्चात्य लोगों के पुराने धर्म ग्रंथों में प्रयुक्त; शब्द प्रतीकों को यथोचित रूप में सजाने का प्रयत्न किया है।

व्यतिरेकी भाषाविज्ञान से अनुवाद का अटूट संबंध है। मूलत: यह भाषागत व्यतिरेक ही अनुवादक के समक्ष समस्याएँ उत्पन्न करता है। अनुवादक को सचेत होकर स्रोत एवं लक्ष्य भाषा का व्यतिरेकी विश्लेषण करते हुए व्याघात बिन्दुओं को समझकर अनुवाद करते समय उनसे दूर रहना पड़ता है। व्यतिरेक कई तरह के होते हैं। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

'सतरूपहि बिलोकि कर जोरें।"[224]

"Then seeing **shatrupa** hands clasped, meek and quiet."[225]

'सतरूपा' नाम भारतीय पुराणों में अंकित है, ये मनु की पत्नी थीं और बाद में अयोध्या नरेश दशरथ और राम की माँ बनी। 'शतरूपा' हिन्दी भाषा में प्रयुक्त शब्द है। अंग्रेजी अनुवाद में 'सत' (शत) के स्थान पर 'shat' ध्वनि का प्रयोग मूल उच्चारण से बिलकुल भिन्न है। यह ध्वनि व्यतिरेक की समस्या का उत्तम उदाहरण कहा जा सकता है।

224. मानस-1/149/2
225. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I Chaupai 150, Pg.120

किसी भाषा के शब्द का ठीक पर्याय दूसरी भाषा में नहीं मिलता तो वहाँ शब्द व्यतिरेक कहा जा सकता है। शब्द के स्तर पर भाषा में कई प्रकार के व्यतिरेक मिलते हैं। सबसे स्पष्ट व्यतिरेक वहाँ मिलता हैं जहाँ एक भाषा में शब्द है, किंतु उसका ठीक शब्द रूपांतरण या पर्याय अनूदित भाषा में नहीं मिलता हो। अधिकतर यह समस्या दो भिन्न संस्कृतियों को लेकर चलने वाली भाषाओं में देख सकते हैं। 'रामचरित मानस' का अंग्रेजी अनुवाद 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में शब्द व्यतिरेक के कई उदाहरण प्राप्त होते हैं। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

"जरत महानल जनु घृतु परा।"[226]

"As when **butter** is thrown in a fierce flaming fire."[227]

'धृतु' शब्द 'घी' केलिए प्रयुक्त होता है। इस शब्द केलिए लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने 'butter' शब्द रख दिया है जोकि 'मक्खन' केलिए प्रयुक्त होता है। 'मक्खन' जब पिघलता है तब उसी को 'घी' कहते हैं। अंग्रेजी भाषा में 'घृतु' केलिए उचित पर्याय मिलना कठिन ही नहीं असंभव भी है। अत: अनुवादक ने अपनी भाषा में पाए जाने वाले शब्द का प्रयोग कर अर्थ का अनर्थ कर दिया है। उसी प्रकार एक और उदाहरण देखिए-

"चातक रटत तृषा अति ओही।"[228]

"The **bird** that drinks rain drops is tortured with thirst."[229]

'चातक' वह पक्षी है जो भारत में कवि संप्रदाय के अनुसार केवल वर्षा, बल्कि स्वाती नक्षत्र में होनेवाली वर्षा का जल पीता है, फलत: सदा बादलों की ओर टकटकी लगाए रहता है। मानस में इस पक्षी विशेष का प्रयोग कई बार हुआ है। लक्ष्य भाषा के अनुवाद में इस शब्द केलिए उचित उचित शब्द नहीं है और मिलना भी कठिन है।

226. मानस- 6/26/4
227. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book VI Chaupai 27, Pg.659
228. मानस- 4/16/3
229. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book IV Chaupai 17, Pg.577

अत: अनुवादक ने इस स्थान पर मात्र 'bird' शब्द का प्रयोग किया है। और पंक्तियों में ही इस पक्षी के विशेषता का वर्णन दिया है। इससे मूल में व्यक्त सौंदर्य तो नष्ट हो गया है साथ ही उचित शब्द न मिलने के कारण मात्र 'bird' शब्द के प्रयोग से अनुवादक को अपनी बात को अभिव्यक्त करना पडा है।

एक भाषा में शब्द का जितना महत्त्व है उतना ही अर्थ का भी है क्योंकि इससे व्यक्ति के मन में भाव संप्रेषित होता है जिसका सही संप्रेषण होने पर ही अनुवाद मूल के अनुरूप होता है। 'रामचरितमानस' का अंग्रेजी अनुवाद 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में अर्थ व्यतिरेक के कई उदाहरण हमें प्राप्त होते हैं जिनकेलिए उचित शब्दावली अनूदित भाषा में मिलना कठिन है।

> *"द्विजभोजन मख होम सराधा।"*[230]
>
> "Go ! where Brahmans eat, where oblations they render,
> Or sacrifice make, ..."[231]

भारतीय संस्कृति में 'द्विजभोजन' और 'सराधा' का अपना महत्व है। 'द्विजभोजन' विशेष अवसरों पर ब्राह्मणों के प्रति श्रद्धा भाव और पितरौ के उद्धार केलिए दिया जाता है। लक्ष्य भाषा में 'Brahmans eat' में साधारण चलते भाषा में अनुवाद करने से मूल शब्द की प्रमुखता और श्रद्धा भाव नष्ट हो गया है। 'सराधा' याने 'श्राद्ध' का अपना महत्व है। इसमें अपने पूर्वजों एवं दिवंगत माता पिता का स्मरण श्राद्धपक्ष में करके उनके प्रति असीम श्रद्धा के साथ तर्पण, पिंडदान,भोजन का प्रावधान किया जाता हैं। जिस तिथि को वे दिवंगत होते हैं, पितृपक्ष की उसी तिथि को उन्हें उक्त विधि से पूजने की प्रथा श्राद्ध कहलाती है। अंग्रेजी भाषा के अनुवाद में अनुवादक ने 'सराधा' केलिए

230. मानस- 1/180/4
231. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I Chaupai 181, Pg.142

'oblations' शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ है- 'things offered to a divine being."[232] भारतीय संदर्भ में श्रांद्ध शब्द और द्विजभोज का जो सांस्कृतिक, सामाजिक और पारिवारिक परिवेश है वह अनूदित शब्दों में जागृत नहीं होता और वह श्रद्धा भाव लक्ष्यभाषा शब्द के प्रयोग में नहीं मिलता जो मूल में है। वह अर्थ भी पूर्णत: व्यक्त नहीं होता जो मूलभाषा पाठ से व्यक्त होता है।

ध्वनि विज्ञान में ध्वनि समूह का विवेचन उनका सामान्य वर्गीकरण और फिर उच्चारण तथा ध्वनि परिवर्तन पर विचार किया जाता है। शब्दों को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में लाने केलिए अनुवादक को ध्वनि विज्ञान का सहारा लेना पडता हैं। मानस में तुलसीदास ने स्वरों और व्यंजनों का प्रयोग किया है। इनका अनुवाद करना अनुवादक केलिए कभी कभी मुश्किल होता है और कभी कभी असंभव भी होता है। 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में कई जगहों पर ये कठिनाइयाँ समस्या बन जाती हैं। हिन्दी और अंग्रेजी ध्वनि समूह में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है। अनुवाद के समय लिप्यंतरण एवं अनुकूलन में मूल ध्वनियों का काफी मात्रा में सहारा लिया जाता है। एटकिन्स ने भी रामचरितमानस में अपने अनुवाद में इसका सहारा लिया है। यह समस्या मूलत: ध्वन्यात्मक स्वरों के संदर्भ में उठती है। जैसे-

"जंबुक निकर कटक्कट कट्टहिं। खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं॥
कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु डोल्लहिं। सीस परे महि जय जय बोलहि॥"[233]

मानसकार ने ध्वन्यात्मकता के आधार पर युद्ध के भीषण चित्र को प्रस्तुत किया है। इस भीषणता को चित्रित करने केलिए ही ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसका अनुवाद देखिए-

232. The Little Oxford Dictionary (7th Edition) Pg.434
233. मानस- 6/87/5

"Herds of jackals, at each other snarling and swearing
The flesh ate to gorging, teeth snatching and tearing
While thousands of bodies ran headless about
Heads without bodies 'vic'ry !' continued to shout."[234]

'कटक्कट कट्टहिं दपट्टींह रूंड, मुड बिनु डोल्लहिं, बोल्लहि शब्दों में 'ट' 'ड' और 'हि' वर्णों की कई बार आवृत्ति से पंक्तियों में जो सौन्दर्य और लयात्मकता की उद्भावना हुई है उसे अनुवाद में अनुवादक सुरक्षित नहीं रख पाए हैं। अगर भाषाविज्ञान के इन तत्त्वों के आधार पर इनका विश्लेषण करे तो हम व्यतिरेक को देख सकते हैं। इसीकारण से अनुवादक मूल में प्रयुक्त शब्दों केलिए लक्ष्य भाषा में ठीक शब्द रखने में असफल हुआ है। कहीं पर वे भाव को मात्र संप्रेषित कर पाये हैं।

भाषा में उपसर्ग, प्रत्यय एवं अनुवाद की समस्याएँ

उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो किसी शब्द से पूर्व लगाकर उस शब्द का अर्थ बदल देते हैं या उसमें नई विशेषता उत्पन्न कर देते हैं। संज्ञा अथवा क्रिया के मूल अर्थ को रखते हुए उसमें विशिष्टता उत्पन्न करते हैं। विशेष भावों और क्षणों को कवि विशेष शब्दों से प्रकट करता है और इस हेतु उपसर्ग का महत्त्व होता है। अनुवाद करते समय अनुवादक को उपसर्गों के प्रयोग के संदर्भ में काफी सतर्क रहना है। क्योंकि इसके प्रयोग से जो अर्थ परिवर्तन होता है उसको ठीक ग्रहण करना पडता है वरन् अर्थ का अनर्थ हो सकता हैं। जैसे-

"पिअत नयन पुट रूपु पियूषा। मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा।"[235]

'सुअसनु' शब्द में 'सु' उपसर्ग जोड़कर स्वादिष्ट भोजन, अर्थ को अभिव्यक्त किया गया है। इसका अनुवाद देखिए-

234. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book VI Chaupai 88, Pg.712
235. मानस- 2/110/3

"He drank in beauty's nectar from well-filled eye-cups,
Glad as one who, when hungry, on finest fare sups."[236]

जिस प्रकार स्वादिष्ट भोजन से परमानन्द प्राप्त होता है, उसीप्रकार तापस रूप तुलसी को भी राम दर्शन का परमानंद मिला। 'असनु' शब्द का सामान्य अर्थ भोजन है जिसमें 'सु' उपसर्ग जोडकर 'सुअसनु' शब्द से चमत्कार सृष्टि की गई है। लक्ष्य भाषा में इसकेलिए 'hungry, on finest fare sups' रखागया है जिससे मूल की संक्षिप्तता और प्रभाव अनुवाद में गायब हो गया। इसका एक और उदाहरण देखिए-

"अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभव गम्य अखंड अनूपा॥"[237]

ईश्वर की अद्वितीयता प्रमाणित करने केलिए तुलसी ने 'अ' उपसर्ग जोडकर ईश्वर की गरिमा को बताया है। 'अकल अनीह अनाम अरूपा, अखंड शब्दों का प्रयोग किया हैं। ईश्वर 'अकल' याने घटता-बढता नहीं, अनीह माने चेष्टारहित, अनाम एवं अरूपा अर्थात् नाम और रहित एवं अखंड याने निराकर है। मात्र अनुभव से ये प्राप्त होता हैं अर्थात् जाने जाते हैं। अनुवादक ने इसे इस प्रकार रखा है-

"Of the heart's Lord,the spirit supreme, gan to preach.
One unlimited, unborn, beyond finite reach,
Without like, parts, division form, name or desire,
To know whom but by parables can one aspire."[238]

मूल में खंड, नाम, अनीह जैसे शब्दों में उपसर्ग 'अ' केजुडने से अर्थ परिवर्तन हुआ है जो ईश्वरीय शक्ति को प्रामाणिक सिद्ध करता है। इन उपसर्ग के जुडने से शब्दों में जो प्रभाव और ताकत आ गई है वह अनूदित शब्दों में नहीं दिखाई देती। कुछ शब्दों केलिए अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में भी 'un' उपसर्ग को जोडकर मूल सा प्रभाव लाने का प्रयास

---

236. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book II Chaupai 111, Pg.359
237. मानस- 7/110/2
238. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book VII Chaupai 106, Pg.844

किया है । 'अकल' केलिए 'unlimited' शब्द सही है । लेकिन 'unborn' शब्द अनुवादक ने अपनी ओर से रख दिया है । लेकिन अन्य शब्दों केलिए उचित शब्द न मिलने केकारण अनुवादक ने इसका शब्दानुवाद रख दिया है जिससे मूल का प्रभाव और संक्षिप्तता नष्ट हो गयी है ।

'रामचरितमानस' में अधिकतर भाववाचक शब्दों का प्रयोग करते समय प्रत्ययों को लिया गया है । शब्दांश धातु रूप या शब्दों के अन्त में लगाकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं । जैसे-

"आरति बिनय दीनता मोरी । लघुतालतित सुबारिन थोरी ॥"[239]

मानसकार ने यहाँ गुणवाचक विशेषणों के साथ ता प्रत्यय का योग करके भाव वाचक संज्ञाओं का निर्माण किया है जैसे दीनता और लघुता जो क्रमश: दीन और लघु में 'ता' प्रत्यय जुड़ने से बने हैं । इसका अनुवाद है-

"My own humble longings and pray'rs are no failing
But pure water's bright, bubbling freshness upwelling."[240]

अनुवादक ने 'दीनता' केलिए 'humble' शब्द का प्रयोग किया है जो मूल अर्थ को ठीक से अभिव्यंजित करने में सफल हुआ है ।'लघुता'शब्द का परित्याग अनुवाद में हुआ है जिसका मात्र भावानुवाद रखा गया हैं । इस भावानुवाद से अर्थ की सही पकड़ नहीं हुई है ।

"अब जनि बतबढाव खल करही । सुनु मम बचन मान परिहरही ॥"[241]

239. मानस- 1/42/1
240. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I Chaupai 43, Pg.39
241. मानस- 6/29/1

'बतबढाव' का अर्थ है बात को आगे बढाना । 'बढ' में 'आव' प्रत्यय जोडकर शब्द को बनाया गया है । 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में अनुवादक ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है-

"Listen to me ! Do not in your pride go too far !
Give up being the swollen head fool that you are !"[242]

'बातबढावा' का शब्दानुवाद ही अनुवाद में रख गया है । प्रत्यय के प्रयोग से जो प्रभाव मूल में आया हैं वह लक्ष्य भाषा में नष्ट हो गया हैं ।

प्रत्ययों के योग से तुलसीदास ने भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया है जिसका लक्ष्य भाषा में अनुवाद कर पाना कठिन ही नहीं असंभव भी है । जैसे-

"सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर ।।"[243]

"It was always the same kindly, glorious Lord
Raghubir in the form of a child."[244]

'पन' प्रत्यय के योग से सिसुपन शब्द बना है । यह शब्द शिशु अवस्था की और सूचित करता है । अनुवादक ने 'सिसुपन' का शब्दानुवाद किया है लेकिन सिसुपन शब्द में जो अर्थ की गहराई है वह 'in the form of a child' में नहीं है । नवजात से लेकर आठ वर्ष तक की उम्र की अवस्था को शिशु अवस्था मान सकते हैं । 'child' शब्द मात्र 'बच्चा' अर्थ देता है । अत: इस शब्द से पता चलता है कि मूल में जहाँ मानसकार ने प्रत्यय का प्रयोग कर एक अवस्था का वर्णन किया है वहीं अर्थ सृष्टि लाने में अनुवादक चूक गया है । इसीप्रकार का और एक उदाहरण देखिए-

242. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book VI Chaupai 30, Pg.661
243. मानस- 7/80 (ख)
244. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book VII Doha 81, Pg.817

"हम भरि जन्म सुनहु सब भाई। देखी नहि असि सुंदरताई।"[245]

"Brother demons,we never in all our born days
Upon beauty like this have been able to gaze."[246]

'सुंन्दरता' गुणवाचक विशेषण शब्द है जो खुद भाववाचक संज्ञा है । इसमें 'ई' प्रत्यय जोडकर 'सुंदरताई' शब्द बनाया गया है । इसलिए लक्ष्य भाषा में मात्र ' beauty' शब्द का प्रयोग कर अर्थ का संकेत तो कर देता है लेकिन मूल में व्यक्त सौंदर्य सृष्टि नहीं कर पाता ।

इसमें हम कह सकते हैं कि उपसर्ग और प्रत्यय के प्रयोग से मानसकार जो चमत्कार पंक्तियों में लाते हैं वह अनुवाद में कई स्थानों पर फीका पड गया है तो कहीं अपना प्रभाव और सहजता पूर्ण रूप से खो बैठा है ।

समस्त पदों का अनुवाद और उसकी समस्यायें

दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की क्रिया को समास कहते हैं । इस विधि से बने शब्दों को समस्तपद कहते हैं । अनुवाद में स्रोत भाषा में प्रयुक्त समासिक शब्दों का लक्ष्य भाषा में अनुवाद होना कठिन है । अनुवादक इन शब्दों का अनुवाद का मात्र शब्दानुवाद कर सकता है या फिर इसका भावानुवाद प्रस्तुत कर सकता है । मानसकार ने रामचरितमानस में समासों का प्रयोग किया है और मानस के अंग्रेजी अनुवाद में अनुवादक के समक्ष इसके अनुवाद में जो कठिनाई हुई है यह स्पष्टत: देखा जा सकता है । इसके कुछ उदाहरण देखिए-

"जिन्ह के रामचरन भल भाऊ ॥"[247]

245. मानस- 3/18/2
246. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book III Chaupai 22, Pg.533
247. मानस-1/38/4

"All those who are Rama's sincere devotees

Never will leave this lake, here the mind is at ease."[248]

इस पंक्ति में 'रामचरन' समस्त पद है जिसका विग्रह है राम के चरणों में। नवधा भक्ति का रूप 'पदसेवनम्' के अर्थ में ही यह प्रयुक्त है। अनुवाद में 'रामचरन' शब्द को उतार पाना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी है। अनुवादक ने इसके लिए 'sincere devotees' शब्द रखा है जो मूल शब्द से और अर्थ से विचलित होता है। उसी प्रकार-

"सो सतसंग करौ मन लाई॥"[249]

"Then keep the **good man as companion** no other."[250]

'संतों के संग से ही सतसंग' शब्द बना है। सतसंग भक्ति मार्ग का एक अंगु है। इसकी बडी महत्ता है। इस शब्द की संपूर्ण अर्थाभिव्यक्ति 'the good man as companion' में नहीं हुआ है।

इसीप्रकार भारतीय भाषाओं में पर्यायों की भरमार हम देख सकते हैं जिसे किसी और विदेशी भाषा में संरक्षित रखना कठिन है। इनके प्रयोग से भाषा में जादू की सृष्टि होती है। समस्तपदों के संदर्भ में भी इनका प्रयोग पंक्तियों में चमत्कार सृष्टि केलिए किया जाता है। कहीं कहीं कुछ शब्द साथ-साथ प्रयोग किए जाते है जो प्रभाव उत्पन्न करते हैं। देखिए-

"नाथ कतारथ भएउँ मैं तव दरसन खगराज।"[251]

"My lord I seeing you, our king, with my own eyes."[252]

248. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I Chaupai 39, Pg.36
249. मानस- 1/38/4
250. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I Chaupai 39, Pg.37
251 मानस-7/63 (क)
252. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book VII Doha 64, Pg.802

पक्षियों का राजा है जो- गरुड यही खगराज का अर्थ है। लक्ष्य भाषा में 'खगराज'. की उपेक्षा की गई है। यह शब्द लक्ष्य भाषा केलिए अनजान है क्योंकि यह पूर्णतः भारतीय संस्कृति का अंश है। दूसरा उदाहरण देखिए-

"सासु ससुर सन मोरि हुँति विनय करबि परि पायँ।"[253]

"At the feet of my parents-in-law humbly falling."[254]

'सासु-ससुर' के प्रयोग से पंक्ति में विशेष प्रभाव आ गया है। हिन्दी भाषा में संबंधों के संदर्भ में विशेषणों के प्रयोग में ऐसे पदों का प्रयोग किया जाता है। अनुवाद में 'सासु ससुर' का अर्थ बिम्ब और प्रभाव अनुवाद ला नहीं पाया हैं। इसकेलिए 'parents-in-law' का प्रयोग कर मूल के प्रभाव और अर्थ बिम्ब को अनुवादक ने नष्ट कर दिया है।

समस्त पदों के प्रयोग से भाषा में जो कौशल मानसकार ने दर्शाया है उसे पूरी सहजता से प्रस्तुत करने में अनुवादक असफल हुए हैं।

लिप्यंतरण

स्रोत भाषा के शब्दों के समतुल्य लक्ष्यभाषा में जब शब्द नहीं मिलते या दोनों में अर्थगत सम्य अनउपलब्ध रहता है वहाँ पर मूल के शब्द को लक्ष्यभाषा में यथा-तथा ग्रहण किया जाता है। यहाँ पर लिप्यंतरण की आवश्यकता महसूस होती है। लिप्यंतरण के समय मूल के ध्वनि नियमों का यथा संभव अनुसरण किया जाता है। और कभी-कभी यहाँ अनुकरण असंभव हो जाता है तो लक्ष्य भाषा में ध्वनियों का अनुकूलन किया जाता है।

रामचरितमानस में प्रयुक्त कुछ शब्दों के लिए अनुवादक ने लिप्यंतरण का प्रयोग किया है। ये शब्द प्रायः भारतीय संस्कृति और रीति-रिवाज से जुड़े हैं। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

253. मानस- 2/98
254. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book II Doha 96, Pg.350

". . . . कालनेमि जिमि रावन राहू ।

. . . . जिमि जग जामवंत हनुमान् ॥"[255]

इसका अनुवाद देखिए-

"As Rahu, Ravan and Kalanemi all failed

As the ape Hanuman and the bear Jamavant."[256]

मूल पंक्ति में भारतीय पुराणों में चित्रित पात्रों के नामों केलिए अनुवादक ने उन्हीं शब्दों का लिप्यंतरण प्रस्तुत किया है 'कालनेमि' का 'Kalanemi', 'रावन' का 'Ravan', 'राहू' का 'Rahu' सामान ध्वनियों के आधार पर ही इन शब्दों का लिप्यंतरण किया गया हैं क्योंकि लक्ष्य भाषा में ये पात्र नहीं है ।

उसी प्रकार मूल में प्रयुक्त व्यक्तिवाचक नामों का लिप्यंतरण अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत किया है- 'सारद', 'सेष', 'लछिमन' का क्रमश: 'sharda, shesh-nag, Gange, Narad, Lachhman आदि शब्दों में लिप्यंतरण गलत हुआ । कहीं कहीं मूल की ध्वनियों के साथ ये मेल नहीं खाते जैसे 'सारद' को 'sharda, 'शेष' के 'shesh' लछिमन का "Lachhman' । ये नाम-विशेष मात्र भारत के हैं जिनका विदेशी भाषा में प्रयोग नही होता और इसी कारण से अनुवादक को लिप्यंतरण का सहारा लेना पडा ।

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में सांस्कृतिक शब्दों को प्रस्तुत करने केलिए अनुवादक ने लिप्यंतरण का सहारा लिया है । संस्कृति किसी भी देश का आधार है । वहाँ पाए जाने वाले भौगलिक विशेषताएँ उसकी अपनी है । 'मंदाकनी', 'यमुना', 'सरस्वती' आदि नदियाँ भारतीय जनता के विश्वास से जुडी हैं । इनमें पवित्रता की भावना के साथ-साथ असीम श्रद्धाभाव भी नीहित है । इनकेलिए 'Mandakini' , 'Sarasvati' और

255. मानस-1/6/3

256. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book I Chaupai 7, Pg.8

'Yam'na'[257] रख दिया है जो अर्थद्योतन में सहायक रहा है लेकिन भारतीय विश्वासों की अभिव्यक्त करने में असफल रहा है। पाद-टिप्पणियों से इनके महत्त्व को समझाया जा सकता था लेकिन अनुवादक ने ऐसा नहीं किया है। इसी प्रकार अपने सुंदर प्रकृति चित्रण केलिए प्रसिद्ध। मानस में 'अयोध्या काण्ड' और 'अरण्यकाण्ड' में प्रकृति का सुन्दर वर्णन कई स्थानों पर मिलता है। पम्प नदी के आस-पास पहुँचने के बाद जो प्रकृति वर्णन तुलसीदास ने प्रस्तुत किया है वह अपने आप में मनोहर है देखिए-

"चंपक बकुल कदंब तमाला। पाटल पनस परास रसाला॥"[258]

लक्ष्य भाषा मूल शब्दों केलिए उचित शब्द न मिलने के कारण इनका लिप्यंतरण प्रस्तुत किया है।

"The Champak, Kadamba, Bakul and Tamala,
The Patala, Panas, Palash and Rasala."[259]

स्रोत भाषा में प्रयुक्त शब्दों केलिए समान ध्वनियों के आधार पर ही लक्ष्य भाषा में शब्दों में रखकर अनुवादक को तृप्त होना पडा है। इनकेलिए अनुवादक ने पाद-टिप्पणि नहीं दी है। इसलिए लक्ष्य भाषा पाठक मूल शब्दों को, विशेषताओं को, भलीभाँति समझ नहीं सकते। इससे हम यह कह सकते हैं कि जब मूल में प्रयुक्त शब्दों केलिए लक्ष्य भाषा में उचित शब्द न मिलें तो अनुवादक लिप्यंतरण का प्रयोग करते हुए बातों को अनुवाद में अभिव्यक्त कर सकता है। अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति का माध्यम है जहाँ मूल में अभिव्यंजित बात को यथासंभव सुरक्षित रखती है। अत: लिप्यंतरण का सहारा लेते समय अनुवादक को पाद-टिप्पणि के माध्यम से मूल शब्दों को लक्ष्य भाषा तक पहुँचना पड़ता है तभी वह सफल माना जाएगा। 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में

257. The Ramayana of Tulsidas (Vol. I) Book II Chaupai 138, Pg.378
258. मानस-3/39/
259. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II) Book III Chaupai 42, Pg.555

अनुवादक ने लिप्यंतरण का प्रयोग किया है लेकिन कहीं भी इसका विवरण या अर्थ समझने का प्रयास नहीं किया है।

निष्कर्ष

काव्य का पूर्ण सौन्दर्य उसकी भाषा, अलंकार, प्रतीक, बिंब, छंद आदि से होते हैं। मानस में भाषा का जो रूप मिलता है, वह सोलहवीं सदी की जनभाषा है। इसी कारण से अनुवाद में अनुवादक उसी प्रभाव से उसे प्रस्तुत करने में चूक गया है। अलंकार काव्य में संगीतात्मकता एवं लय की सृष्टि करते हैं जिनमें दोहा, चौपाई छंदों का प्रयोग भी, खास भूमिका अदा करता है। भारतीय काव्यशास्त्र और पाश्चात्य काव्यशास्त्र में काफी अंतर है। काव्य के ये तत्व अपने मूल सौंदर्य के साथ अनुवाद में चित्रित नहीं हो सकते। अनुवाद के संदर्भ में भाषाविज्ञान के ज्ञान भी अनुवादक केलिए होना आवश्यक है जिसके बिना वह सफल रूप से अनुवाद को प्रस्तुत नहीं कर पाएगा।

चौथा अध्याय

दि रामायण ऑफ तुलसीदास" में कहावतें, मुहावरें एवं शीर्षकों के अनुवाद की समस्यायें

मनुष्य के ज्ञान का क्षितिज दिनोंदिन विस्तृत होता जा रहा है। ज्ञानार्जन की विधाएँ और प्रणालियाँ भी आज बढ रही हैं। भाषा के माध्यम से मनुष्य की अर्जित जानकारी का आदान-प्रदान संभव है। दूसरे शब्दों में मनुष्य के भाव और विचार भाषा के जरिए ही अभिव्यक्त होते हैं। भाषा के विकास की कई सीढियां होती हैं। हर भाषा के दो भेद माने गए हैं- बोलचाल का रूप और लिखित रूप। बोलचाल की भाषा की कुछ विशेषताएँ होती हैं। इसमें भाषा के मूलरूप का प्रयोग होता है। साहित्यिक भाषा का बीज इसमें देखा जा सकता है। बोलचाल की भाषा से लिखित भाषा समृद्ध और संपन्न हो सकती है। इस प्रसंग में मुहावरे और कहावतों की चर्चा सांदर्भिक होगी। मुहावरे और कहावतें हर भाषा की अमूल्य निधि हैं। इनका संपर्क बोलचाल की भाषा से है या यों कहें, जनजीवन से इनका चोली-दामन का संबंध है।

कहावतें

कहावत का दूसरा नाम 'लोकोक्ति' है। कहावत मानव जीवन की अनुभूति का निचोड होती है। इस अनुभूति में वैयक्तिकता की अपेक्षा सामाजिकता निहित है। दूसरे शब्दों में, कहावतें सांसारिक व्यवहार-कुशलता और सामान्य बुद्धि की उत्कृष्ट परिचायक एवं निदर्शन हैं। 'कहावतें मानव-स्वभाव और व्यवहार-कौशल के सिक्के के रूप में प्रचलित होती हैं और वर्तमान पीढी को पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होती हैं।'[1] कहावतें विशिष्ट प्रसंग में विशिष्ट संदर्भ के साथ प्रयुक्त होती हैं। इनके प्रयोग से प्रसंग अधिक प्रभावपूर्ण बनता है और सन्दर्भ अधिक अर्थवान् बनता है। कहावतें सभी

---

1. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन-कन्हैयालाल सहल, पृ.1

भाषाओं में कथन को पुष्ट करने वाली होती हैं और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं। इनमें व्यावहारिक सत्य निहित होने के कारण ये अभिव्यंजना की दृष्टि से अत्यन्त सशक्त होती हैं। अनुवाद की दृष्टि से भाषा में अभिव्यक्त इस तथ्य की अभिव्यंजना अधिक कठिन होती हैं, क्योंकि लोकोक्ति की जडें भाषा-विशेष के जीवन और संस्कृति से गहरा संबंध रखती हैं। इसीकारण से इसकी अर्थवत्ता सामान्य शब्दों द्वारा व्यक्त भाव से अधिक गहरी है। इनका अनुवाद और अभिव्यक्ति अनुवादक केलिए टेढी खीर बन जाती है।

सुप्रसिद्ध भाषाविद डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा के मतानुसार 'कहावत' शब्द का अभिधेयार्थ है 'उक्ति'। इसकी व्युत्पत्ति हिन्दी 'कहना' से हुई है जिसके आगे दो प्रत्यय जुडे हैं- (1) 'आव' जैसा कि सुझाव में देखा जाता है और (2) 'अत' प्रत्यय कहावत की संक्षिप्तता और सारगर्भितता का सूचक है।[2]

'कहावत' शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में भाषा-शास्त्र के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सुनीतिकुमार चाटर्जी का मत है- "The origin of the word kahawat would appear to be old Indo Aryan kathay √ katha+Early M.I.A, causative or denominative affix (satr) – ant * katha payanta > * kadhavayanta > * kahavaanta kahavanta / kahawat." स्पष्ट है कि कहावत में लक्षणिकता और व्यंग्यात्मकता की प्रमुखता रहती है जो अनुवाद के क्षेत्र में सशक्त बनती है।

कन्हैयालाल सहल के अनुसार 'अपने कथन की पुष्टि में, किसी को शिक्षा या चेतावनी देने के उद्देश्य से किसी बात को किसी की आड में कहने के अभिप्राय अथवा किसी को उपालम्भ देने व किसी पर व्यंग्य कसने आदि केलिए अपने में स्वतंत्र अर्थ रखनेवाली जिस लोक-प्रचलित तथा सामान्यतः सारगर्भित, संक्षिप्त एवं चटपटी उक्ति का

2. "The Hindi word (Kahavat) literally means a 'Saying'. It is derived from Hindi (Kahna) to say, by the addition of two suffixes. (1) (av), as in (Sujhav), which is a purely nominal suffix and (2) (at), being a dimumitive suffix which suggests the shortness and pithiness of a proverb. – Dr.Siddheshwar Varma.

लोग प्रयोग करते हैं, उसे लोकोक्ति अथवा कहावत का नाम दिया जा सकता है।[3] 'आड में कहीं जानेवाली संक्षिप्त, सारगर्भित चटपटी उक्ति स्वयं अनुवाद के क्षेत्र में कहावत के असांगत्य की ओर लक्ष्य करती है। यह आवश्यक नहीं है की स्रोत भाषा में आड में कहीं गयी संक्षिप्त चटपटी उक्ति लक्ष्य भाषा में भी उसी शैली में आ जाए। यह अनुवाद में एक समस्या बन जाती है।

कहावतें किसी सत्य अथवा किसी उपयोगी विचार को एक संक्षिप्त वाक्य में कहती हैं। इनके प्रयोग से भाषा में सरसता एवं चित्रात्मकता आ जाती है। इनका प्रयोग चिरकाल से अनेक व्यक्तियों द्वारा होता रहा है और आज भी प्रसंग के उपस्थित होने पर इनका प्रयोग होता है। कहावतों के अनुवाद में अनुवादक को यह बात ध्यान रखनी है कि लक्ष्य भाषा में भी वही सरसता एवं चित्रात्मकता आए जो स्रोत भाषा की कहावतों में हो।

कहावतें प्राय: सभी भाषाओं में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती हैं। ये अभिव्यंजना की दृष्टि से जितनी सशक्त हैं, अनुवाद करने की दृष्टि से उतनी ही अधिक कठिन होती हैं। कहावतों की जडें भाषा-विशेष के जीवन और संस्कृति में बहुत गहरी होती हैं। लोकोक्तियों की प्रसंग विशेष में अर्थवत्ता मात्र सामान्य शब्दों द्वारा व्यक्त भाव या विचार से कहीं अधिक गहरी होती है, और वह गहराई कहावत में ही निहित होती है। इस संदर्भ में यह बात और भी महत्त्वपूर्ण है कि 'अधिकांश कहावतें जीवन के अनुभव से गढी हुई हैं और पीढियों से पीढियों को प्राप्त होती हैं। पुराण-कथा, लोक-कथा आदि से भी कहावतें जन्म लेती हैं। ऐसी कहावतों का विस्तृत अर्थ समझने केलिए उनमें सूचित कथा तत्त्व की जानकारी भी जरूरी है।' अनुवाद के संदर्भ में यह निश्चित रूप से समस्या बन जाती है कि स्रोत भाषा से संबंधित लोक कथाएँ लक्ष्य भाषा से संबंधित नहीं होती और मूल कहावत अनूदित कहावत के समतुल्य नहीं हो सकती।

3. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन-कन्हैयालाल सहल, पृ.20

कहावतों का अनुवाद

कहावतों में संजोए हुए तथ्यों का संकलन लक्ष्य भाषा में यथावत् संप्रेषित करना समस्या बन जाता है। कहावतों में व्यावहारिक सत्य निहित होने के कारण ये अभिव्यंजना की दृष्टि से अत्यन्त सशक्त होती हैं। किन्तु अभिव्यंजना की दृष्टि से जितनी सशक्त होती हैं अनुवाद में उतनी ही कठिन होती हैं। स्रोत भाषा की कहावतों का लक्ष्य भाषा में समान रूप से अनुवाद करने में जिन कारणों से समस्याएँ खड़ी होती हैं वे हैं-

1. सामाजिक रीति-रिवाजों का पार्थक्य।
2. सांस्कृतिक परंपराओं का अलगाव।
3. भिन्न-भिन्न प्रतीकों का प्रयोग।
4. व्यंग्यात्मकता।
5. शब्द एवं अर्थ की दृष्टि से समान कहावतों का अभाव।
6. अर्थ-बिंब में भिन्नता।
7. प्रसंग तथा संदर्भ की विशिष्टता।

'रामचरितमानस' के अनुवाद में कहावतों का इन्हीं विभागों के आधार पर प्रयोग हुआ है। वस्तुत: हर समाज के अपने रीति रिवाज होते हैं और उसके अनुसार उसमें कहावतों का प्रचलन होता है। इस रीति रिवाजों के पार्थक्य के कारण स्रोत भाषा की कहावतों को लक्ष्य भाषा में समान रूप से अनूदित करने में कठिनाई आ जाती है। कहावतों का अनुवाद एक सृजनात्मक कार्य है और इसलिए अनुवादक में सृजनात्मक प्रतिभा की भी आवश्यकता पड़ती है। प्राय: इन लोकाश्रित तत्त्वों का अनुवाद अनुवादक केलिए एक विडंबनापूर्ण स्थिति उत्पन्न कर देता है। इस संदर्भ में कई प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होती हैं। इसकी एक समस्या यह है कि जब लक्ष्य भाषा में समानार्थक कहावतें नहीं मिलतीं और मिलती भी हैं तो बहुत कम और वह भी बहुत प्रयास के बाद और उनके

अनुवाद में स्रोत भाषा में अभिव्यक्त कहावत का शब्दानुवाद या भावानुवाद असल में एक समस्या ही बन जाता है क्योंकि दोनों भाषाओं की संस्कृतियाँ भिन्न रहती है जैसे-

"लिखित सुधाकर गा लिखि राहू। बिधिगति बाम सदा सब काहू॥"[4]

'When about to write moon, fate has written Eclipse'.[5]

'राहू' का भारतीय विश्वास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। समुद्रमंथन के समय जो अमृत निकला वह मात्र देवताओं केलिए था। लेकिन राहू जो असुर था अमृत वितरण के समय छिपकर इसका पान कर लेता है। यह भेद जब सूर्य और चंद्र, मोहिनी याने विष्णु से खोल देते हैं तो विष्णु अपने चक्र से उसे मारते हैं। अमृत पान करने से उसका सिर अमर रह गया और धड से अलग होने पर भी वह मरता नहीं। तभी से सूर्य और चन्द्र से वैर शोधन केलिए यह दोनों को ग्रसता है। राम के वनवास की बात सुनकर माता कौसल्या अपने पुत्र की ओर कर्त्तव्य और ममता के संघर्ष के कारण संताप करती है और मन में सोचती है कि विधाता की गति टेढी होती है, इसलिए जहॉ चन्द्रमा लिखना था वहाँ राहु लिखा गया। राहु को हमेशा भारतीय विचार के अनुसार बाधा माना जाता है जो पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार नहीं माना जाता। अनुवाद में 'राहू' केलिए 'Eclipse' शब्द का प्रयोग किया गया है। भारतीयों के बीच 'राहू' की जो संकल्पना की जाती है वह पाश्चात्यों के बीच नहीं है। इसीकारण से 'Eclipse' शब्द से मूल में जो अर्थ और भाव चित्रित है वह अनूदित शब्द में नहीं मिलते। अत: इस कहावत के पीछे छिपे अर्थ और भाव को अंग्रेजी पाठक तब तक समझ नहीं सकता जब तक वह इस प्रतीक को न समझे।

4. मानस - 2/54/1
5. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) : Book II : Chaupai 55, Pg.320

दि रामायण ऑफ तुलसीदास में कहावतों के अनुवाद की समस्या

'रामचरितमानस' में तुलसीदास ने कहावतों का विशेष रूप से प्रयोग किया है। ये कहावतें प्राय: ब्रज और अवधी से तथा कतिपय अन्य बोलियों से ली गई हैं। 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में अनुवादक ने कहीं कहीं पर लक्ष्य भाषा में कहावतों का भावानुवाद किया है। कहीं कही उन्होंने इन कहावतों का शाब्दिक अनुवाद ही प्रस्तुत किया है। जैसे-

"को न कुसंगति पाइ नसाई। रहइ न नीच मतें चतुराई॥"[6]

'Evil company always good plans will disrupt'.[7]

मूल कहावत का भावानुवाद किया गया है। मूल कहावत प्रश्नवाचक होने के कारण मूल में अभिव्यंजना की जो शक्ति है वही प्रश्नवाचक न होने के कारण अनुवाद में नष्ट हो गई है। लक्ष्य भाषा में मूल का संक्षिप्त रूप भी नष्ट हो गया है। और कुछ उदा -हरण देखिए-

"जस काछिअ तस चाहिअ नाच"[8]

"As you wish and pull strings, so our part we must play."[9]

ईश्वर सर्वत्यापी है। मनुष्य की डोरी उसी के हाथों में हैं। सभी प्राणी उसी के हाथों की कठपुतली हैं। वह उसे जैसे खींचता है मनुष्य वैसा नाचता है। यही इस सृष्टि का नियम है ऐसा भारतीय लोग मानते हैं। वनवास के दौरान श्रीरामचन्द्र वालमीकि जी के आश्रम में पहुँचते हैं और उनकी स्तुति करते हुए वाल्मीकि जी उनसे कहते हैं कि इस समय अपने मनुष्य का स्वाँग रचा है, अत: नर-शरीर के अनुकूल व्यवहार

---

6. मानस : 2/23/4
7. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 24, Pg.299
8. मानस- 2/126/4
9. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 127, Pg.370

करना उचित है। तुलसी की इस कहावत की समानार्थवाची कहावत न मिलने के कारण मूल का शब्दानुवाद ही अंग्रेजी में प्रस्तुत किया गया है। 'काछिअ' का अर्थ है 'परिधान सजाया जाय'। यह अर्थ और भाव अनुवाद में नहीं आया है। अनुवादक ने इस को त्याग दिया है इससे मूल अर्थ अनुवाद में आते-आते नष्ट हो गया है। साथ ही मूल कहावत भारतीय विश्वास का पूरा चित्रण देती है और इसी कारण से अनुवाद को पढते समय लक्ष्य भाषा के पाठक भारतीय विश्वास से संबंधित इस तथ्य को उसके सही अर्थों में ग्रहण नहीं कर पाते।

"बांझ कि जान प्रसव कै पीडा।" [9 a]

कहावत समाज से जन्म लेती है। उनमें समाज की रीति-नीति, विश्वास-विचार आदि का विश्लेषण रहता है। अनुभव के आधार पर बनी कहावतें विषय प्रधान बन जाती हैं। इसी पर आधारित है उक्त कहावत। शिव और उनके बाराती को देखकर मैना दु:खी होती है और नारद को इसका दोषी टहराती है। नारद के पास कुछ भी नहीं है अत: वे दूसरों का दु:ख कैसे समझ पाएँगे। इसी संदर्भ को व्यक्त करते हुए उक्त कहावत का प्रयोग किया गया है। जो स्त्री बांझ है वह कैसे प्रसव की पीडा जान सकती है। इसका अनुवाद है-

"A barren womb knows not the pangs of a mother." [9 b]

मूल कहावत का भावानुवाद ही अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में किया है लेकिन इसमें वे असफल रहे हैं क्योंकि 'प्रसव कै पीडा' को उन्होंने छोड दिया है और उसके स्थान पर 'Pangs of a mother' का प्रयोग किया है। 'Mother' शब्द का अर्थ 'female parent' है। इस शब्द के अन्तर्गत प्रसव पीडा ही नहीं अन्य कई संकल्पनाएँ निहित हैं।

9 a. मानस- 1/96/2

9 b. The Ramayana of Tulsidas : (Vol-I) Book I : Chaupai 97, Pg.81

इसलिए 'mother' शब्द यहाँ सटीक नहीं है। 'प्रसव पीडा' केलिए उचित पर्याय है 'labour pain' जिसका प्रयोग अनुवादक ने नहीं किया है।

'जो जस करइ सो तस फल चाखा।'[9c]

भारत में कर्मवाद पर विश्वास किया जाता है। मनुष्य जिस प्रकार का कर्म करता है उसका फल भी भोगता है। पुराणों में ही कर्मवाद का चित्रण हमें मिलता है। उपर्युक्त कहावत मनुष्य के कर्म पर आधारित है। पाश्चात्य पाठक कर्मवाद पर पूर्णत: विश्वास नहीं करते। मूल कहावत के अनुवाद से ही इसका पता चलता है-

"Altho' as he has done each the fruit must obtain." [10]

यह अनुवाद मूल कहावत का शब्दानुवाद है। यद्यपि लक्ष्य भाषा में समान कहावत प्राप्त है अनुवादक ने उसका प्रयोग नहीं किया है। 'जो जस करइ' का 'altho' as he has done each' मूल अर्थ को संप्रेषित नहीं करता। इससे मूल कहावत का प्रभाव नष्ट हो गया है और इसका अर्थ और मूल भाव को लक्ष्य भाषा के पाठक समझ नहीं पाते।

"रघुकुलरीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई॥"[11]

"Tis a known rule in Raghu's line, one naught can shake-

"Life may go, but his word a man never must break." [12]

'रघुकुल वंश' में उनकी यह नीति थी कि वह जो कहते थे, वही करते थे चाहे प्राणों की बाजी ही क्यों न लगानी पडे। कैकेयी को दिए गए वचन और उसे पालन करने का वादा राजा दशरथ करते हैं। इसी संदर्भ में मानसकार ने इस कहावत का

9c मानस- 2/218/2
10. The Ramayana of Tulsidas (Vol I) : Book II, Chaupai 219, Pg.434
11. मानस : 2/27/2.
12. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 28, Pg.301

प्रयोग किया है। 'रघुकुल' वंश का उल्लेख पुराणों में मिलता है और राम राज्य का भी चित्रण मात्र भारतीयों को पता है। लेकिन एक पाश्चात्य पाठक इस कहावत को तब तक नहीं समझता जब तक वह इस तथ्य को समझ नहीं पाता। 'रघुकुलरीति सदा चली आई' का 'Tis a known rule in Raghu's line' मूल जितना प्रभावी नहीं है। 'प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई' का 'Life may go, but his word a man never must break' का यद्यपि शब्दानुवाद से अर्थ को व्यक्त करने का प्रयास अनुवादक ने किया है, इसके पूर्ण भाव को पाश्चात्य पाठक तब तक नहीं समझ सकते जब तक वे 'रघुकुल' और उसकी रीति को पूर्ण रूप से ग्रहण न करें।

"का पूँछहु तुम्ह अबहुँ न जाना। निज हित अनहित पसु पहिचाना॥"[13]

"Their own good or their harm even birds and beast knows" [14]

मात्र मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी भी अपने हित और अनहित को समझते हैं। कभी-कभी मनष्य इसमें गलती कर बैठता है लेकिन पशु ऐसा नहीं है। भरत को राजा बनाने केलिए कुटिल मंथरा कैकेयी को समझाबूझाकर उसका हृदय परिवर्तन करती है। मंथरा की होनहार बातें से कैकेयी के हृदय में विश्वास हो गया। तभी मंथरा रानी से बोलती है - क्या पूछती हो, तुमने अब तक नहीं समझा? अपने भले-बुरे को तो पशु तक पहचान लेते हैं। लक्ष्य भाषा में उचित कहावत न मिलने के कारण अनुवादक ने मूल कहावत का शब्दानुवाद किया है। 'हित अनहित' भले-बुरे अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अनुवाद में इसकेलिए 'good or their harm' दिया है जिसका अर्थ है भला या अपनी बुराई जिससे वह मूल की सहजता खो बैठा है।

"का आचरजु भरत अस करहीं। नहिं बिष बेलि अमिअ फल फरहीं॥"[15]

13. मानस : 2/18/1
14. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II : Chaupai 19, Pg.295
15. मानस : 2/189/4

व्यक्ति की पहचान उसके कुल और माता-पिता से होती है। भरत कैकेई के पुत्र हैं, जो बुरी संगति में पड़कर अपयश का पात्र बन जाती है। लेकिन भरत अपनी माता द्वारा किए गए कुकृत्यों से बुरी तरह आहत है और इसके प्रायश्चित स्वरूप वन की ओर सारे अवधवासियों के साथ चल पड़ते हैं। इससे अज्ञात निषादराज भरत के वन आगमन को उसकी कुटिलता समझते हैं क्योंकि जो माता अपने स्वार्थ केलिए राम को चौदह वर्ष के वनवास और अपने पुत्र केलिए राजसिंहासन छीनसकती है वह पुत्र भी उसी प्रकार सोचेगा। इसी संदर्भ को सूचित करने केलिए तुलसीदास ने इस कहावत का प्रयोग किया है कि विष की लताओं में अमृत फल नहीं फलते। अनुवादक ने मूल कहावत का शब्द अनुवाद किया है-

"from a poison vine's shoot heav'nly fruit does not rise." [16]

'अमिअ फल' केलिए "heav'nly fruit" शब्द अटपटा सा लगता है क्योंकि लक्ष्य भाषा के पाठक इस शब्द के पूर्ण अर्थ को ग्रहण नहीं कर पाएँगे। इस शब्द का ठीक पर्याय 'ambrosia' है। इसलिए यहाँ 'heav'nly fruit' उचित शब्द नहीं है। अनूदित कहावत मूल कहावत के संदर्भ को भी पूर्ण रूप में अभिव्यक्त नहीं करती।

"जे न मित्र दुःख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥" [17]

'They from whom a friend's suffering seen does not win

"Sympathetic response, thus commit a great sin." [18]

सच्चा मित्र वह है जो अपने मित्र का साथ अच्छे और बुरे वक्त में देता हो। वह मित्र अच्छा मित्र नहीं होगा जो संकट के समय उसका साथ छोड दे। बालि को मारने केलिए राम सुग्रीव की मदद करते हैं और इसी संदर्भ में इस कहावत का प्रयोग

16. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II : Chaupai 189, Pg.413
17. मानस : 4/3/1
18. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) : Book IV, Chaupai 7, Pg.567

किया गया है जिसका अर्थ है जो मित्र की व्यथा से व्यथित नहीं होते, उन्हें देखना भी पाप है। अनुवाद में मूल कहावत का भावानुवाद किया गया है। मूल में कहावत के प्रयोग से जो बात बहुत सरल और प्रभावात्मक ढंग से बताई गई है वही अनूदित पंक्ति में क्लिष्ट रूप से प्रस्तुत है जिससे उसकी सहजता और प्रभावात्मकता नष्ट हो गई है। 'तिन्हहि बिलोकत पातक भारी' का अर्थ उस व्यक्ति को देखना ही पाप है जिसकेलिए 'Thus commit a great sin' दिया है जो ठीक नहीं है। मूल में जो अर्थ संप्रेषण हुआ है वह अनुवाद में नहीं आ पाया है।

"नारि सुभाउ सत्य सव कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥"[19]

पुराणों में यह विवरण मिलता है कि नारी चाहे कितनी अच्छी क्यों न हो उसमें जन्म जात आठ अवगुण वास करते हैं- साहस, झूठ, चपलता,छल, भय, अविवेक, अपवित्रता और निर्दयता।"[20] उसके स्वभाव के संबंध में कवि भी सत्य ही कहते हैं। रावण जब श्रीराम से वैर करते हैं तो अपने सुहाग को बचाए रखने केलिए मंदोदरी उनसे प्रार्थना करती है तो रावण अपनी पत्नी से उक्त बातें कहते हैं। इसका अनुवाद है-

"Very true is the character all poets give
In a women's heart all the eight evil things live."[21]

अनुवादक ने इस पंक्तियों का शब्दानुवाद किया है। लक्ष्य भाषा में समान कहावत न मिलने के कारण अनुवादक को शब्दानुवाद का सहारा लेना पडा। इसी से मूल सौन्दर्य अनुवाद में आते-आते नष्ट हो गया है।

19. मानस : 415/1
20. मानस पियूष लंका काण्ड
21. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 16, Pg.649

'कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार ।

देव दनुज नर नाग मुनि कोइ न मेटन हार ॥" [22]

कहते हैं कि जो नसीब में लिखा होता है, वह होकर रहता है, इस नियति को कोई नहीं टाल सकता। होनी होकर ही रहती है। 'महापुराण' में भी यह बात कही गई है। 'भाग्यवाद' पर पूर्ण विश्वास रखने वाले भारतीय इसी राह पर चलते हैं। इसका अनुवाद देखिए-

"What providence writes on fate's table . . . . . .

That word to erase nor divine nor devil

Nor man, Saint or serpent is able."[23]

गोस्वामी तुलसीदास 'भाग्य लेख' की पुष्टि देव, दनुज, नर, नाग का परिचय कर मौलिकता का परिचय देते हैं। 'जो बिधि लिखा लिलार' का अनुवाद "What providence writes on fates table" मूल भाव को उसकी पूर्ण गहनता में अभिव्यक्त करने में असफल है क्योंकि भाग्यवाद पर भारतीयों का जो विश्वास है वह पाश्चात्य संस्कृति में नहीं है। 'लिखा लिलार' में नियति अर्थ जो निकलता है वह 'fate's table' में नहीं मिलता। यह अनुवाद मूल जितना प्रभावी भी नहीं है। 'table' शब्द का प्रयोग अनुवादक ने जोड़ दिया है जिससे अंग्रेजी भाषा में मूल प्रभाव नष्ट हो गया है। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण लक्ष्य भाषा में मूल सहज समान कहावत मिलना कठिन है इसलिए अनुवादक को इसका शब्दानुवाद करना पड़ा।

"भलो भलाइहि पै लहै लहै निचाइहिं नीचु।

सुधा सराहिअ अमरता गरल सराहिअ मीचु॥" [24]

22. मानस : 1/68
23. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) : Book I, Doha 66, Pg.58
24. मानस : 1/5

अमृत की प्रशंसा अमरत्व गुण ही की होती है और विष की प्रशंसा जब होगी तब उसके मृत्यु कारक गुण ही की होगी; यदि विष से मृत्यु न हुई तो उसकी बुराई होगी कि वह असल न था। इसका अनुवाद है-

"For a long life there is nectar and poison for death.

Both are sought for and sold at high price."[25]

मूल कहावत केलिए उचित कहावत न मिलने पर अनुवादक ने इसका शब्दानुवाद किया है। पुराणों में यह संकेत मिलता है कि सागर मंथन के समय 'सुधा' प्राप्त हुई थी जिसमें 'अमरतत्व' प्रधान करने की शक्ति है और यह विश्वास भारतीय के बीच बरसों से चला आ रहा है। लेकिन इस मूल को पाश्चात्य पाठक तब तक नहीं समझता जब तक वह इस कहावत को, उसके पूर्ण अर्थ को समझ नहीं पाएगा। अनुवादक ने 'अमरता' के स्थान पर 'long life' रख दिया है जो गलत है क्योंकि 'अमरता' का अर्थ 'जो अमर है या जिसकी मृत्यु न हो' है परंतु 'long life' शब्द 'लंबी आयु' अर्थ देता है जो मूल अर्थ से हटकर है। अत: मूल कहावत में जो अर्थ संप्रेषण हुआ है वह लक्ष्य भाषा में नष्ट हो गया है।

पुत्र कुल दीपक माना गया है। वंश वृद्धि भी उसी पर निर्भर है। जहाँ सुपुत्र गुणवान, विनीत, पितृभक्त, आज्ञाकारी, वृत्तियों से युक्त होता है वहीं कुपुत्र इन सब गुणों से वंचित रहता है। इस ओर 'मानस' में संकेत किया गया है-

"कबहूँ प्रबल वह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूत कें उपजें कुल सद्धर्म नसाहिं॥" [26]

प्रवर्षण पर्वत पर रहते समय श्रीराम लक्ष्मण को भक्ति, वैराग्य, राजनीति और विवेक की शिक्षाप्रद कथाएँ सुनाते हैं। वे कहते हैं कि जब हवा बडे जोर से बहने लगती

25. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I Doha 5, Pg.6
26. मानस : 4/15/(क)

है तो बादल जहाँ-तहाँ छिन्न-भिन्न हो जाते हैं वैसे ही एक कुपुत्र के जन्म से कुल के उत्तम धर्म नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। जहाँ सुपुत्र कुल को तारनेवाला होता है वहीं कुपूत सारे कुल को अपनी करनी से डुबो देता है। इसका अनुवाद है-

"Here and there sometimes great clouds are scattered and driven

By wind's irresistible force,

Just so virtue and wealth are destroyed when a bad son

Is born and pursues his vile course." [27]

मूल कहावत को शब्दानुवाद के माध्यम से अनुवादक ने प्रस्तुत कर दिया है। भारतीय संस्कृति में व्यक्ति और परिवार के बीच गहरा संबंध है। माता-पिता, भाई-बहन, पिता-पुत्र आदि अपने कर्त्तव्य को पूरी आत्मीयता से निभाते हैं। परिवार के हर सदस्य का अपना कर्त्तव्य होता है जिसे वह समय-समय पर निभाता है लेकिन अगर एक व्यक्ति परिवार में ऐसा हो जो विपरीत स्वभाववाला है तो उस कुल को डूबने में समय नहीं लगता। इन तथ्यों को जब तक एक पाश्चात्य पाठक ग्रहण नहीं करता वह इस कहावत को उसकी पूर्णता में समझ नहीं सकता।

"तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा। चोरहि चंदिनि राति न भावा॥" [28]

मनुष्य में वृत्ति के अनुसार विभिन्नता पाई जाती है। चोर को चाँदनी रात पसन्द नहीं होती क्योंकि वह उसके लक्ष्य में बाधक है। चोर हमेशा अंधेरी रात में ही शिकार करने को निकलता है। इसका अनुवाद है-

"No hope or joy found they in Avadh's great pleasure

Bright moons do not please thieves who seek stolen treasure." [29]

27. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV Doha 15, Pg.576
28. मानस : 2/10/4
29. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai II, Pg.290

राम के राजतिलक की तैयारी के प्रसंग में यह कहावत प्रभावक बनती है क्योंकि रामावतार का लक्ष्य राज्य भोग नहीं अपितु दुष्टों का दमन था। इसीलिए देवताओं को यह तैयारी बाई नहीं क्योंकि वह उनके लक्ष्य में बाधक है। 'चोरहि चंदिनिरात न भावा' कहावत है जिसका शब्दानुवाद ही अनुवादक ने दिया है। मूल कहावत में जो लय और प्रभाव है वह लक्ष्य भाषा में नष्ट हो गया है। साथ ही पंक्तियों में ही अनुवादक ने कारण को भी जोड दिया है कि चोर को चाँदनी रात पसंद क्यों नहीं हैं ?

बेत दो प्रकार के होते हैं। जलवेत और स्थलवेत। जलवेत नदियों या तालाबों के किनारे होता है। यह फूलता-फलता है किन्तु स्थल वेत जिसे संस्कृत में 'बंजुल' कहते हैं पर्वतों पर होता है, फूलता-फलता नहीं है। इस प्रकार की बेंत में वर्षा में भी फल-फूल नहीं लगते यही इसकी खासियत है। मानसकार ने इस प्रकार की बेंत का वर्णन किया है-

"फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद।" [30]

इसका अनुवाद है-

"On the bamboo no flow'r or fruit grows

Even tho' the clouds rain on it life giving water". [31]

मूल कहावत केलिए लक्ष्य भाषा में उचित कहावत न मिलने पर शब्दानुवाद के सहारे इसका अनुवाद दिया गया है। 'सुधा बरषहिं जलद' केलिए 'clouds rain on it life giving water' दिया है। 'सुधा' का अर्थ अमृत है जिसका 'life giving' अनुवाद किया गया है जो सही नहीं है। 'अमृत' केलिए उचित पर्याय 'nectar' है। 'life giving' शब्द मूल अर्थ के समक्ष फीका पड गया है। अत: मूल कहावत प्रभाव

30. मानस : 6/16 (ख)
31. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Soratha 2, Pg.650

की दृष्टि से जितना सहज लगती है, अनुवाद में आते आते उसकी सहजता नष्ट हो गयी है।

"मूरख हृदयँ न चेत जौंगुरु मिलहिं बिरंचि सम ।।" [32]

मूर्ख हमेशा मूर्ख ही रहता है। ब्रह्मा जैसे बडे और वेदों के ज्ञानी अगर गुरु समान मिले तो भी मूर्ख के हृदय में ज्ञान नहीं होता। हिंदू धर्म में माने हुए त्रिदेव में से प्रथम जिसे सृष्टि रचना का काम सौंपा गया था। यही विश्वास भारतीयों के मन में है जिस पर आधारित होकर ही मानसकार ने इस कहावत का प्रयोग किया है। इसका अंग्रेजी अनुवाद है-

"The fool's heart the right never knows

Nor perceives, tho' his teacher be wise as Lord Brahma".[33]

'ब्रह्मा' शब्द सुनते ही भारतीय के मन में जो विश्वास और श्रद्धा भाव जाग उठता है उसे लक्ष्यभाषा का पाठक समझ नहीं सकता। पुराणों, वेदों और संहिताओं में 'ब्रह्मा' के बारे में जो कहा गया है उसे बिना पाद-टिप्पणि और विवरण दिए बिना विजातीय पाठक समझ नहीं सकता। इसलिए भारतीय विश्वास और संस्कृति में 'ब्रह्मा' केलिए जो शब्द है, उसकेलिए उचित शब्द न मिलने के कारण उसी प्रकार रख दिया है।

उक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि मूल भाषा में प्रयुक्त कहावत का अनुवाद, अनुवादक ने प्राय: शब्दानुवाद और भावानुवाद के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यहाँ यह बात स्पष्ट रूप से पाता चलता है कि कहावत जीवन के अनुभव से गढी होती हैं और पीढियों से ही प्राप्त होती हैं। कहावतों को समझने केलिए अनुवादक को चाहिए कि वह उनके विस्तृत अर्थ को समझे और उनमें सूचित कथा तत्त्व की जानकारी भी कर ले।

32. मानस : 6/16 (ख)
33. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Soratha 2, Pg.650

कहावत को उनके स्रोत से अलग करके देखा नहीं जा सकता। स्रोत से अलग करने पर उनका खास अर्थ नष्ट हो जाता है। कहावतों के अनुवाद में उनके स्रोत का प्रतिरोपण अन्य भाषा में करने की जरूरत पडती है। एक भाषा की कहावत में प्रस्तुत तथ्य का दूसरी भाषा में प्रस्तुतीकरण उस कहावत के सीधे अनुवाद से नहीं होता। 'रामचरितमानस' के अंग्रेजी अनुवाद में अनुवादक ने जिन लोकोक्तियों का अनुवाद किया है वहाँ अधिकतर भावानुवाद का प्रयोग किया है और कहीं कहीं शब्दानुवाद का। जिससे मूल सामग्री के सौन्दर्य ही नहीं बल्कि उसके अर्थ ग्रहण में भी बाधा पहुँची है।

मुहावरा-स्वरूप विवेचन

'मुहावरा' अरबी भाषा का शब्द है, जिसकी व्यत्पत्ति 'हौर' (हे-वाव-रे) से हुई है। और इसका अर्थ है अभ्यास। इसका एक पर्याय है, 'रोजमर्रा' जो फारसी शब्द है। इसका अर्थ है बराबर प्रयोग में आनेवाला।[34] आंग्ल भाषा में मुहावरे के पर्याय के रूप में इडियम (Idiom) शब्द का प्रयोग होता है। अंग्रेजी में यह शब्द लैटिन और फ्रेंच से होता हुआ ग्रीक भाषा से आया है। सोलहवीं शताब्दी में ग्रीक शब्द 'इडियोमा' (Idioma) से लैटिन में इडियोमा (Idioma), फ्रेंच से इडियोटिस्म (Idiotisme) के रूप में वही शब्द अंग्रेजी में आया। व्युत्पत्ति की दृष्टि से यह शब्द मूढता की ओर संकेत करता है। अंग्रेजी में इस शब्द का प्राय: लोप हो गया और इसके स्थान पर 'इडियम' शब्द का प्रयोग हुआ।[35]

वेबस्टर के अन्तर्राष्ट्रीय कोश के अनुसार इसका अर्थ है-

(i) अ) किसी भाषा के विशेष ढांचे में ढला वाक्य।

34. त्रिवेणी प्रसाद -मुहावरा रहस्य, पृ.17
35. डॉ. ओमप्रकाश गुप्त, : मुहावरा-मीमांसा, पृ.5-6
36. (i) (a) The syntacial, grammatical, or structural form peculiar to any language; the genius, habit or cast of language.

आ) वह वाक्य जिसकी व्याकरण संबंधी रचना उसी केलिए विशिष्ट हो और जिसका अर्थ उसकी साधारण शब्द-योजना से न निकल सके।

(ii) किसी एक लेख की व्यंजना शैली का विषयरूप अथवा वाग्वैचित्र्य।[36]

स्रोत भाषा में व्यक्त उस भाषा विशेष के मुहावरे, वाक्य, शब्द योजना आदि का अनुवादक व्याकरण के साथ साथ मूल लेखक की अभिव्यंजना शैली की ठीक पकड होने पर ही लक्ष्य भाषा में सही अर्थों में अभिव्यक्त कर सकता है। अनुवाद में इन बातों का विशेष महत्त्व है, जिसके बिना अनुवाद नीरस और बेजान प्रतीत होगा।

आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार 'मुहावरा'-

(1) किसी देश या जनसमूह अथवा उचित बोलने की भाषा या बोली की विशिष्टता है।

(2) किसी भाषा का विशिष्ट रूप, गुण या प्रज्ञा, अभिव्यक्ति का ढंग जो कि इसके प्रति स्वाभाविक और विशिष्ट है।[37]

इस विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि मुहावरा किसी देश, प्रान्त, जाति अथवा जनसमूह की विलक्षण वाक् शैली का नाम है या वह किसी भाषा का विशिष्ट वाक्यांश या पदावली है, जिससे भाषा में विचित्रता अथवा वाग्वैचित्र्य की सृष्टि होती है जिसका अर्थ सामान्य भाषा एवं उसकी शब्द योजना से ग्राह्य नहीं होता है।

b) An Expression established in the usage of of a language that is peculiar to itself either in grammatical construction, or in having a meaning which can not be derived as a whole from the conjoined meaning of its elements.

(ii) A form or form of expression characteristic of an author.
–Webster's International Dictionary , Col.3, Pg.1067

37. (i) The form of speech peculiar or proper to a people or country : own language or tongue.

(ii) The specific character, property,or genius of any language the manner of expression which is natural or peculiar to it.
– The Oxford English Dictionary, Vol.V, Pg.21

यह भाषा के विशिष्ट ढांचे में ढला हुआ होता है। अनुवादक को अनुवाद करते वक्त इस अंगभूत शब्दों का अभिधार्थ को ध्यान में रखना है वरन् अर्थ का अनर्थ होगा।

'भाषा विशेष में प्रचलित प्रयोग, वाक्यांश या कुछ पदों या शब्दों का समूह जिसका लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ लिया जाता हो, मुहावरा कहलाता है। इसका अर्थ अभिधार्थ से भिन्न हो।[38] सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति की तुलना में मुहावरों के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति जितनी अधिक प्रभावशाली तथा व्यंजक होती है, उसका अनुवाद उतना ही कठिन होता है। मुहावरों से अनुवादक को एक तरह से जूझना पडता है। मुहावरों द्वारा कही गई बात अधिक प्रभावशाली, व्यंजक, मार्मिक एवं सरस होती है। किन्तु एक भाषा के मुहावरों को दूसरी भाषा में संप्रेषित करना अत्यन्त कष्ट साध्य होता है। मुहावरों के अनुवाद में प्रधानत: जिन समस्याओं से जूझना पडता है वे हैं-

(1) मूल के समान लक्ष्य भाषा में मुहावरा खोजना।

(2) समान मुहावरा न मिलने पर समानार्थी मुहावरा खोजना।

(3) मूल में स्थित सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशिष्टता लाना।

(4) मूल का अर्थगत एवं शब्दगत सौन्दर्य को बनाए रखना।

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में मुहावरों के अनुवाद की समस्या

तुलसीदास के 'रामचरितमानस' की कुछ चौपाइयाँ मुहावरों का कार्य करती हैं, कुछ मुहावरों के पर्याय के रूप में सामने आती हैं और कुछ का अर्थ मुहावरा हो जाता है। 'रामचरितमानस' के अंग्रेजी अनुवाद 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में समान अनुवाद न मिलने पर कई मुहावरों का शब्दानुवाद किया है और कुछ

38. भाषा विज्ञान कोश : डॉ.भोलानाथ तिवारी., पृ.524-525

ऐसे स्थान भी हैं जहाँ लक्ष्य भाषा ग्रन्थ में कुछ मुहावरों का परित्याग हुआ है । इसके कुछ उदाहरण हैं-

"चहत बारि पर भीति उठावा ॥" [39]

"Tho' like one his house upon water constructing." [40]

बारि पर भीति उठावा का अर्थ है जल पर दीवार उठाना अर्थात् असंभव कार्य करने में प्रवृत्त होना । शिव को प्राप्त करने केलिए पार्वती की तपस्या और उनके प्रेम की परीक्षा केलिए सप्तर्षियों का जाना और पूछने पर पार्वती का उत्तर देने के संदर्भ में उक्त मुहावरे का प्रयोग किया गया है । पार्वती का कहना "मेरा मन हठ में है, जिसके कारण वह किसी का सिखाया नहीं मानती और जल पर दीवार उठाना चाहती है । अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में भावानुवाद के माध्यम से इस मुहावरे को प्रस्तुत किया है । परंतु भावार्थ मूल अर्थ का वहन नहीं कर पाया है । मूल को पढने और समझने के बाद अगर लक्ष्य भाषा को पढे तो अर्थ ग्रहण विपरीत दृष्टि से होगा । अत: यह स्पष्ट है कि अनुवादक मूल के अनुकूल इस मुहावरे को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत नहीं कर पाए हैं ।

"पुरनारि सुरसुंदरी बरहिं बिलोकि सब तिन तोरही ॥" [41]

"And broke grass,evil chance thus preventing." [42]

'तिन तोरही' अर्थात् 'तृन तोडना' जो हमारी संस्कृति से जुड़ा हुआ मुहावरा है । यह हमारे विश्वासों से जुडा हुआ है । बुरी नजर से बचने केलिए बच्चे के जन्म के अवसर पर, विवाह के अवसर अपशकुन को दूर करने केलिए यह प्रथा हमारे समाज में चलती है । अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा में समतुल्य मुहावरा नहीं मिलेगा । अनुवादक ने इसलिए शब्दिक अनुवाद के जरिये उक्त मुहावरे को प्रस्तुत किया है जिससे मूल से जुड़ा

39. मानस : 1/77/3
40. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chaupai 78, Pg.65
41. मानस : 1/326 छं.1
42. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book I, Chhand 37, Pg.253

सांस्कृतिक महत्त्व पूर्ण रूप से नष्ट हो गया है। और पाठक को, जो मूल से परिचित है अनूदित मुहावरा बेजान प्रतीत होता है। अनुवाद हमारे सांस्कृतिक महत्त्व को कतई दिखा नहीं सकता।

"गाथें महामुनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।" [43]

". . . . . . Won all onlooker's hearts."[44]

इस पंक्ति का अर्थ है- मंजुल-मनोहर मौर में बहुमूल्य मणियाँ गुँथी हुई हैं, सभी अंग चित्त को चुराये लेते हैं। अत: यहाँ चित चोरहीं का अर्थ है चित्त चुराना। यद्यपि अनुवाद में मूल अर्थ को ग्रहण किया गया है, मात्र इसका शब्दानुवाद ही अनुवादक प्रस्तुत कर पाए हैं। मूल भाषा में अभिव्यक्त बात को व्यक्त करने केलिए और मूल अर्थ द्योतन केलिए अनुवादक को अपनी ओर से Onlooker's शब्द का प्रयोग करना पडा। मूल में अंग वर्णन केलिए ही यह मुहावरा प्रयुक्त हुआ है। यहाँ Onlooker's 'देखने वालों' का अर्थ द्योतित करता है।

"पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल।" [45]

"With strong arms uplifted as witness to heaven
of videha's Oath now we tell you . . . . " [46]

'भुजा उठाइ बिसाल' अर्थात् प्रतिज्ञा करना। धनुष यज्ञ के समय जनक जी के प्रण की घोषणा के संदर्भ में मानसकार ने इस मुहावरे का प्रयोग किया है। यहाँ अनुवादक ने शब्दानुवाद प्रस्तुत किया है जो मूल के मुहावरे का शब्दिक अनुवाद मात्र है- 'भुजा उठाइ बिसाल' का 'strong arms uplifted' मात्र है। अनुवादक ने इस मुहावरे के अर्थ को समझे बिना इस शब्दिक अनुवाद को दिया है और बाद में 'videha's oath' दिया है जो

43. मानस : 1/326 छ.1
44. The Ramayana of Thulsidas (Vol.I) Book I, Chhand 37, Pg.253
45. मानस : 1/249
46. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) : Book I, Doha-245, Pg.193

अर्थ विचलन है । यहाँ यह सिद्ध हो जाता है कि अनुवादक ने मूल को समझे बिना ही लक्ष्य भाषा पाठ को प्रस्तुत कियाँ है । अत: मूल के अर्थ बिना समझे लक्ष्य भाषा में मात्र सामग्री प्रस्तुत करना अनुवाद की एक समस्या है ।

"हँसि कह रानि गालु बड तोरे।"[47]

"The queen laughing said you 're an impudent minx" [48]

'गालु बड तोरे' -गाल करना → बढ़ बढ़कर बात करना : मुँहजोरी करना अर्थ में ही इस मुहावरे का प्रयोग किया जाता है । 'गालु बड तोरे' केलिए प्रयुक्त 'impudent minx' न इस मुहावरे का शब्दानुवाद है या न भावानुवाद । 'impudent' का अर्थ है ढीठ, निर्लज्ज, गुस्ताख आदि ।[49] अत: जिस अर्थ से इस मुहावरे को लक्ष्यभाषा में अनुवादक ने अभिव्यक्त किया है वह गलत है । यहाँ अनुवादक के ठीक अर्थ ग्रहण न करने से लक्ष्य भाषा में व्यक्त वाक्य हास्यास्पद हो गया है ।

'गालु करब केहि कर बलु पाई।।' [50]

"Could I dare to be impudent ever indeed"[51].

यहाँ गालु करब का अर्थ 'मिजाज करने' के संदर्भ में हुआ है । यहाँ अनुवादक ने 'impudent' शब्द का प्रयोग गुस्ताख, निर्लज्ज आदि अर्थों में प्रयोग किया है जो मूल अर्थ को ग्रहण करने में बाधा उपस्थित करता है । यहाँ अनुवादक ने न ही शब्दानुवाद को अपनाया है और न ही भावानुवाद को ।

'हमहुँ कहबि अब ठकुर सोहाती ।।' [52]

"I too will speak just to please you and flatter."[53]

47. मानस : 2/12/4
48. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II. Chaupai 13, Pg.291
49. अंग्रेजी-हिन्दी कोश-फादर कामिल बुल्के, पृ.244
50. मानस- 2/13/1
51. The Ramayana of Tulsildas (Vol.I) Book II, Chaupai 14, Pg.291
52. मानस : 2/15/1
53. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 16, Pg.293

'ठकुर सोहाती' का अर्थ है व्यक्तिविशेष वा स्वामी को प्रिय लगनेवाली बात। यहाँ इस प्रसंग में मंथरा कैकेयी को खुश करने केलिए उसे अपने वश में करने केलिए कहती है कि 'अब में भी ठकुर सहाती ही कहूँगी।' इस मुहावरे के शब्दार्थ को अनुवादक ने इस संदर्भ में प्रस्तुत किया है। हर एक भाषा की अपनी शैली होती है जिसे दूसरी भाषा में व्यक्त कर पाना अनुवादक केलिए पेचीदा कार्य है। मूल में उस मुहावरे के प्रयोग से उस चौपाई में सौन्दर्य की सृष्टि हुई है तो लक्ष्य भाषा में मात्र अर्थ द्वारा उस चौपाई को प्रस्तुत करने से उसका रंग उतर गया है।

"बवा सो लुनिअ, जो दीन्हा ॥' [54]

"We reap as we've sown." [55]

जो बोया सो काटती हूँ, दिया सो पाती हूँ। अंग्रेजी अनुवाद में अनुवादक ने मुहावरे के पहले भाग का अनुवाद दिया है, दूसरे भाग का परित्याग किया है। मूल में मात्र 'बवासो . . . . .' दो मुहावरों की अभिव्यक्ति हुई है परन्तु अंग्रेजी जैसी भाषा में ऐसा संभव नहीं होगा क्योंकि उसकी संरचना ऐसी है जिसमें संपूर्ण बात कहे बिना अर्थ ग्रहण संभव नहीं होता। यहाँ अनुवादक द्वारा बात की त्यागना अनुवाद की प्रमुख समस्या बन जाती है जो उसे मूल से विच्छिन्न कर देता है।

'तुम्ह कहूँ बिपतिबीजु बिधि बयेऊ।' [56]

"Then for you will the seed of misforture be sown." [57]

'बिपतिबीजु बिधि बयेऊ' का अर्थ है दुःखमय जीवन का आरंभ होना। भारतीय संस्कृति में बिधि पर लोग बहुत विश्वास करते हैं। यहाँ राम के राजतिलक को लेकर मंथरा का कैकेयी के मन में विष के बीज बोना और उसके भविष्य के संबंध में उसे चेतावनी देने की बात है। यहाँ इस मुहावरे के प्रयोग से एक गंभीर वातावरण की सृष्टि मानसकार करते हैं। लक्ष्य-भाषा में समतुल्य मुहावरा न मिलने के कारण अनुवादक ने

54. मानस : 2/15/3
55. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 16, Pg.293
56. मानस : 2/18/3
57. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 19, Pg.295

यहाँ शब्दानुवाद के माध्यम से उक्त मुहावरे को प्रस्तुत किया है जिसमें अर्थ ग्रहण तो होता है लेकिन इसमें मूल जैसी गंभीरता प्राप्त नहीं होती ।

"भामिनी भइहु दूध कइ माखी ।।" [58]

"Just a fly in a milk bowl". [59]

यहाँ राम के राजतिलक के बाद कैकेयी की अवस्था पर मंथरा की भविष्यवाणी के संदर्भ में अभिव्यक्त विचार है । मंथरा का मानना है कि कैकेयी की अवस्था वही होगी जैसे दूध में पडी मक्खी की होती है । शब्दानुवाद के माध्यम से ही इस मुहावरे को अनुवादक ने अनूदित ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है ।

"मागहु आजु जुडावहु छाती ।।" [60]

"Ease your heart today". [61]

'जुडावहु छाती' छाती ठंडी करना या छाती ठंड़ी होना । इस मुहावरे का अर्थगत अनुवाद हुआ है जोंकि समतुल्य मुहावरा अंग्रेजी में नहीं है । अनुवादक को इस मुहावरे के अर्थ को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना पडा है ।

"करौं तोहि चखपूतरि आली ।।" [62]

"You as my own eyes dear I'll not you perish." [63]

"आँख की पुतली बनना' चखपूतरि आली का अर्थ है । सबसे प्रिय होना ही इसका अर्थ है । मूल का अगर लक्ष्य भाषा के साथ तुलना की जाए तो यह पता चलता है कि अनुवादक ने इसके अर्थ को लेते हुए इसका अर्थानुवाद प्रस्तुत किया है ।

58. मानस : 2/18/4
59. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 19, Pg.295
60. मानस : 2/21/3
61. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 22, Pg.297
62. मानस : 2/22/2
63. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 23, Pg.298

'मानहुँ लोन जरे पर देई।' [64]

"Keen as salt were her words upon burnt flesh applied." [65]

'जरे पर देई' अर्थात् जले पर नमक छिडकना। अर्थात् दुखिया को और दुःख देना। मंथरा और कैकेयी की बातचीत के बाद कैकेयी राजा दशरथ के पास अपनी माँग रखती है तब दुःखी राजा कैकेयी से ये वाक्य कहते हैं। जिस पीडा को जिस दर्द को इस मुहावरे में प्रस्तुत किया गया है वह मूल में व्यक्त हो जाता है। परन्तु लक्ष्य भाषा में इस पीडा या दर्द को अभिव्यक्ति देने में असफल रहे हैं अनुवादक। लक्ष्य भाषा में अनुवदक ने शब्दानुवाद के माध्यम से इस मुहावरे को प्रस्तुत किया है परन्तु इस अनुवाद में मूल के जितनी अर्थ की गहराई नहीं है। अंग्रेजी अनुवाद पढने पर ऐसा लगता है जैसे मूल में अभिव्यक्त मुहावरे को सूचित करने वाले शब्दों को अंग्रेजी में रखा गया है।

"सिरु धुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठायँ।' [66]

"She has fatally wounded me, said he still beating
His head and with deep anguished sighs." [67]

इस मुहावरे का अर्थ है बडे कुठौर मारना या कुजगाह बार करना। या कहे मर्म पर वार करना। कैकेयी ने जो वर माँगे उसे राजा कभी सोच भी नहीं सकते थे। राम के प्रति अपार स्नेह रखने वाले राजा कैकेयी के बातों पर विश्वास न कर सके और न ही बेटे से बिछडने की बात सोच सके। और रानी ने इसी बात को छेडा जो राजा के मर्म में लगी। लक्ष्य भाषा में इस मुहावरे का भावानुवाद प्रस्तुत करने का प्रयास अनुवादक ने किया है। परन्तु 'मारेसि मोहि कुठायँ' केलिए 'fatally wounded me' अर्थ लागू नहीं होता। दोनों में

64. मानस : 2/29/4
65. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 30, Pg.303
66. मानस : 2/30
67. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Doha 30, Pg.303

बहुत अन्तर है । 'fatally wounded' का अर्थ है गहरी चोट पहुँचना जो मूल अर्थ से विपरीत अर्थ का संकेत करता है। अत: अनुवादक ने यद्यपि भावानुवाद को प्रस्तुत करने का प्रयास किया वह मूल अर्थ से भिन्न अर्थ को अभिव्यक्त कर रहा है ।

"पालव बैठि, पेड़ु एहिं काटा।" [68]

"Here she sits on a branch while the tree she cuts down." [69]

इस मुहावरे का अर्थ है खुद को हानि पहुँचाना । अनुवादक ने इस मुहावरे का शब्दानुवाद ही प्रस्तुत किया है । इस मुहावरे के माध्यम से जो बात बड़ी गंभीरता से कहनी थी उसे अभिव्यक्त किया गया । परन्तु लक्ष्य भाषा के इस अनुवाद को पढ़ने पर बात की गंभीरता या उसके तह तक पहुँचना असंभव है । यहाँ मूल का शब्दानुवाद मात्र अनुवादक ने दिया है जो बात के मूल भाव को व्यक्त करने में असमर्थ है ।

"निज कृत कर्म जानित फल पाएउँ।।" [70]

इन्द्र पुत्र जयन्त प्रभु श्रीरामजी के बल की परीक्षा केलिए कौए का रूप धारण करता है और इसकेलिए सीता जी के चरणों में चोंच मारता है । और वहाँ से जब खून बहने लगता है तो श्रीराम मंत्र प्रेरित ब्रह्मबाण लेकर उसकी ओर दौड़ते हैं । जब भयभीत जयन्त को इन्द्लोक, ब्रह्मलोक, शिवलोक और अन्य लोकों में शरण नहीं मिलता तो नारद के कहने पर वह श्रीराम के पास शरणागत बनकर जाता है । अपने अपराध पर क्षमा माँगता है और इसी पृष्ठभूमि पर उक्त मुहावरे का प्रयोग किया गया है । इस मुहावरे का अर्थ है जो जैसा कर्म करता है वही फल पाता है । इस मुहावरे का अनुवादक ने लक्ष्य भाषा अनुवाद में परित्याग किया है । अनुवाद में यह एक मुख्य समस्या है जहाँ अनुवादक

68. मानस : 2/46/3
69. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 47, Pg.314
70. मानस : 3/1/7

मूल में अभिव्यक्त तथ्य को लक्ष्य भाषा में त्याग दे। यहाँ अनुवाद तभी असफल माना जाएगा जो मूल से विचलित होकर प्रस्तुत होता है।

"मनहुँ अनल आहुति घृत परई।"[71]

"As a fire blazes out when one pours on it oil."[72]

'अनल आहुति घृत' अर्थात् आग में घी पडना। आग में घी डालने पर अग्नि की तीव्रता ज्यादा हो जाती है। यह यज्ञ संस्कृति की ओर संकेत करती है। भारत में यज्ञ का माहात्म्य वैदिक काल से चला आ रहा है। अत: आर्य संस्कृति वैदिक युग से ही यज्ञ प्रधान है। यज्ञ का अर्थ सत्कर्म अथवा जीवन का श्रेष्ठतम कर्म है।[73] मानवी मंगल केलिए किया जानेवाला यज्ञकार्य सभी प्राणियों केलिए कल्याणकारी है क्योंकि इससे वातावरण शुद्ध होता है तथा धरती एवं आकाशीय तत्त्वों पर इसका प्रभाव पडता है।[74] इस संदर्भ में जब राजा दशरथ कैकेयी से कहते हैं कि राम के बिना जीना उनकेलिए कष्ट साध्य है, तो ये कोमल वचन सुनकर दुर्बुद्धि कैकेयी अत्यन्त जलने लगी मानो आग में घी की आहुति पड रही है। मन के जलन को अभिव्यक्त करने केलिए यह मुहावरा बहुत उचित है। अनुवादक ने इस मुहावरे का शब्दानुवाद प्रस्तुत किया है। 'घृत' का अर्थ है 'घी' परन्तु अनुवादक ने 'घी' के बदले 'Oil' शब्द का प्रयोग किया है। यद्यपि अर्थ परिवर्तन नहीं होता मुहावरे का सौन्दर्य नष्ट होता है। क्योंकि अक्सर यज्ञ में हवन केलिए घी की आहुति होती है तेल नहीं। भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस मुहावरे में शब्द चयन की समस्या भी देखा जा सकता है।

"जिमि कोउ करै गरुड सैं खेला। डरपावै गहि स्वल्प सपेला।"[75]

---

71. मानस : 2/32/2
72. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Book II, Chaupai 33, Pg.305
73. भारतीय संस्कृति की सुगंध- सोती वीरेन्द्र चंद्र पृ.63
74. सांस्कृतिक प्रतीक कोश- शोभनाथ पाठक, पृ.270
75. मानस : 6/50/4

UNIVERSITY LIBRARY COCHIN - 682 022

"As tho' someone . . . Garur frightened by showing to him

a mere snake." [76]

अर्थात् जैसे कोई व्यक्ति साँप का छोटा-सा बच्चा हाथ में लेकर गरुड से खेल करे और उसे डराए।

गरुड़ साँप का शत्रु है और उसी गरुड़ को डरने केलिए अगर साँप को दिखाए तो क्या होगा? भारतीय पुराण में गरुड़ और साँप यद्यपि भाई हैं, इनके बीच शत्रुता है और इसका क्या कारण है ये भारतीय जानता है लेकिन पाश्चात्य सभ्यता के पाठक इस तथ्य को समझते नहीं अत: इसके शब्दानुवाद करने पर भी इस तथ्य के पीछे छिपे भाव को एक विजातीय पाठक ग्रहण नहीं कर पाता। अत: अनुवादक का इसे शब्दानुवाद करना व्यर्थ हो जाता है क्योंकि लक्ष्य भाषा पाठक इसके अर्थ और भाव दोनों को समझ नहीं पाते। इस कारण बिना अर्थ या भाव को समझे अगर लक्ष्य भाषा में उसे अभिव्यक्त करे तो यह एक प्रमुख समस्या बन जाता है।

जब मूल में कोई मुहावरा या कहावत का प्रयोग नहीं होता, परन्तु लक्ष्य भाषा में अनुवादक इसके लिए कोई मुहावरे या कहावत का प्रयोग करे तो यह अनुवाद की एक प्रमुख समस्या है। 'दि रामायण ऑफ 'तुलीदास' में अनुवादक एटकिन्स ने कई जगहों पर कहावत और मुहावरों का प्रयोग किया है जबकि रामचरितमानस में ये साधारण वाक्य मात्र हैं। ऐसे कुछ उदाहरण है- "Cannot serve life's highest ends"[77] का प्रयोग अनुवादक ने अपनी तरफ से जोड़ा है। मूल में इसका कोई संकेत नहीं है। अनुवाद करते समय जब अनुवादक मूल से हटकर लक्ष्य भाषा में कुछ बातों को जोड़ देता है या कुछ बातों का परित्याग करता है यह अनुवाद में एक प्रमुख समस्या बन जाता है।

---

76. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 51, Pg.679
77. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV, Chaupai 7, Pg.568

"To burn up" [78] 'उपजेह बंस अनल' [79] अर्थात् कुलनाशक जो अपने कुल केलिए अग्निरूप ही पैदा हुआ है। मानसकार ने संबोधन करते हुए अंगद को कहा है। इसमें जिस रूप से बात को व्यक्त किया गया है उससे भिन्न मुहावरे के प्रयोग से अनवादक ने लक्ष्य भाषा में अपनी बात को अभिव्यक्त किया है। जब अनुवादक अनुवाद करते समय मूल से हटकर लक्ष्य भाषा में बात को जोडता है तो मूल शैली से हटकर अनुवादक की शैली झलकती है।

Lend ears [80] सुनहु तात कछु मोर सिखावन ॥ [81] अंग्रेजी में 'Lend ears' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है 'सुनना'। मानसकार ने जिस रूप में इस बात के अर्थ को व्यक्त किया है वह इस प्रकार है- 'कुछ मेरी भी सीख सुनो। मूल कृति में इस स्थान पर मानसकार ने मुहावरे का प्रयोग नहीं किया है परन्तु अनुवादक ने इस बात को व्यक्त करने केलिए मुहावरे का सहारा लिया है।

hand to hand [82] 'मो सन भिरिहि कवन जोधा बदा ॥ [83] 'hand to hand' अर्थात् बहुत पास या नसदिक से अर्थ में प्रयुक्त होता है- [of fighting] at close quarters. [84] मूल कृति में साधारण वाक्य से इस बात की अभिव्यक्ति हुई है। ऐसा कौन योद्धा है जो मुझसे भिड सकेगा? इस बात को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने केलिए अनुवादक ने मुहावरे का प्रयोग किया है। यह मुहावरा मूल अर्थ को पूर्ण रूप से वहन करने में असमर्थ है क्योंकि लक्ष्यभाषा में प्रयुक्त अर्थ को भाव के अनुरूप ही व्यक्त किया है।

---

78. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 21, Pg.654
79. मानस : 6/20/3
80. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 48, Pg.676
81. मानस : 6/47/3
82. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book VI, Chaupai 23, Pg.655
83. मानस : 6/22/1
84. The Little Oxford Dictionary of current English, Pg.287

Out of your wits [85] चकित चित तोर ।[86] 'Out of your wits' का प्रयोग अनुवादक ने जिस संदर्भ में किया है वह मूल से बिल्कुल अलग है । मूल में इसका अर्थ है 'तेरा चित्त बहुत ही चकित हो रहा है ।' लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त शब्द का अर्थ है - चतुराई से । मूल में जहाँ यह दोहा व्यंग्य की प्रतीति दिलाती है वहीं लक्ष्य भाषा में यह गंभीर भाव की प्रतीति कराती है ।

मूल में साधारण वाक्यांशों के स्थान पर लक्ष्य भाषा में मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से अनुवादक मूल से विपरीत एक नये शैली को प्रस्तुत करते हैं । लक्ष्य भाषा में इन मुहावरों के प्रयोग से मूल में प्रयुक्त वाक्यों के अर्थ और भाव को अभिव्यक्त करने में ये मुहावरे असफल हुए है । अधिकतर जगहों पर लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त शब्द मूल से विचलित होता है ।

भाषा में मुहावरे और कहावतें जो सौन्दर्य उत्पन्न करते हैं उसे लक्ष्य भाषा में उसकी सफल अभिव्यक्ति केलिए अनुवादक को मूल मुहावरे और कहावत के अर्थ को समझना है साथ ही उससे जुड़े सांस्कृतिक तत्वों को भी ग्रहण करना है तभी वह अनुवाद सफल रहेगा नहीं तो मात्र शब्दों का ढ़ेर बन जाएगा ।

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में शीर्षकों के अनुवाद की समस्या

रचना में शीर्षक ही शीर्षस्थ होता है । उस का वही स्थान है जो मन्दिर में महाद्वार का होता है । कोशों में इसका अर्थ इस प्रकार दिया गया है- किसी ग्रन्थ आदि के विषय का परिचायक शब्द, शब्द समूह जो निबंध, ग्रंथ आदि के ऊपर रखा जाता है ।[87] वह शब्द या वाक्यजो विषयके परिचय केलिए किसी लेख के ऊपर हो ।[88]

---

85. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book V, Doha 52, Pg.631
86. मनस : 5/53
87. बृहत् हिन्दी कोश, पृ.1134
88. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, पृ.926

अंग्रेजी में इसे 'title' कहा जाता है। वेब्स्टर ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है- 'किसी भी अध्याय, अनुच्छेद या पुस्तक के किसी भाग के विवरणात्मक शीर्ष भाग को शीर्षक कहते हैं।[89] रचना की भव्यता और श्रेष्ठता उसके शीर्षक से ज्ञात होती है। किसी भी रचना की श्रेष्ठता के जितने भी विभिन्न मानदण्ड हैं उनमें सर्वप्रथम है उसका 'शीर्षक'। अनुवाद में भी शीर्षक, मार्मिक, सार्थक, आकर्षक तथा सभी गुणों से युक्त हो जो मूल भाषा में है। किन्तु लक्ष्य भाषा में मूल के समान शीर्षक खोजना एक जटिल समस्या है। मूल शीर्षक में जो गुण विद्यमान हैं उन्हें अनुवाद में लाना कभी-कभी बहुत मुश्किल हो जाता है। शीर्षक लक्ष्य भाषा की छाप के अनुकूल तथा स्रोत भाषा के भावानुकूल न हो तो उसका अनुवाद सदोष और प्रभावहीन हो जाता है। शीर्षकों का अनुवाद प्राय: चार प्रकार से किया जाता हैं-

(अ) मूल शीर्षक का यथावत् अनुवाद।

(आ) मूल शीर्षक का भावानुवाद।

(इ) मूल शीर्षक के बदले नया शीर्षक

(ई) मूल शीर्षक का लिप्यंतरण।

शीर्षक के अनुवाद में सामाजिक तथा सांस्कृतिक भिन्नता के कारण समस्या खडी होती है। अगर शीर्षक सांस्कृतिक विरासत को दिखाने वाला हो और लक्ष्य भाषा में वह विरासत नहीं मिलती तो उस शीर्षक का अनुवाद समस्या उत्पन्न करता है।

'रामचरितमानस' में संदर्भ और घटना पर आधारित होकर ही शीर्षकों का नामकरण हुआ है। तुलसीदास ने अपनी इस कृति का नाम 'रामचरित मानस' रखा जिसका अर्थ है- राम का चरित्र यानी राम के चरित्र का मानस, ऐसा सरोवर जिसमें राम

---

89. A descriptive heading or caption, as of a chapter. Section or other part of a book. Webster's Encyclopedic, Pg.1488.

कथा का पान किया जा सके।[90] दूसरे शब्दों में अगर कहें तो 'मानस' में दो अर्थ निहित हैं एक तो राम के चरित्र का आदि से अन्त तक विशद वर्णन और दूसरा राम का पूरा चरित जो मन से उत्पन्न है या मनःकृत। इस कृति में मानसकार तुलसी ने रामकथा से संबोधित बातों का उल्लेख किया है जो कवि की अपनी परिस्थितियों से संबंधित है। अगर लक्ष्य भाषा में इस शीर्षक का मूल्यांकन करें तो हम देख सकते हैं कि अनुवादक एटकिन्स ने लक्ष्य भाषा के पाठकों के अनुकूल ही इसका अनुवाद प्रस्तुत किया है। अनुवादक ने इसका शीर्षक दिया है 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' (THE RAMAYANA OF TULSIDAS) लक्ष्य भाषा में शीर्षक का प्रस्तुतीकरण मूल के भाव से हटकर हुआ है। अनूदित शीर्षक में मात्र यह अर्थ-संकेत मिलता है कि यह रामायण तुलसीदास की है। मूल शीर्षक में जो अर्थ गहराई और जो अर्थ द्योतन हुआ है वह अनुवाद में नहीं हुआ है। साथ ही लक्ष्य भाषा में जो शीर्षक है उससे लक्ष्य भाषा के पाठक न ही 'रामायण' के महत्व को समझ सकते हैं और न ही कवि तुलसीदास को। अनूदित पाठ से मात्र यह संकेत मिलता है कि 'रामायण' तुलसीदास द्वारा कृत है। इसमें मूल कृति का ऐतिहासिक महत्त्व एवं उद्देश्य नष्ट हो जाता है। लक्ष्य भाषा के शीर्षक में ऐसा कोई शब्द नहीं है जो मूल के उद्देश्य को प्रकट करे। इसलिए यह अनुवाद सफल नहीं कहा जा सकता।

रामचरितमानस में सात काण्ड हैं। पहला काण्ड 'बालकाण्ड' है जिसमें पुनर्जन्म से संबंधित अनेक कथाएँ हैं और मूल कथा-भाग में राम-जन्म, राम-विश्वमित्र मिलन, सीता स्वयंवर, राम विवाह आदि प्रसंग हैं। 'बाल' अर्थात् बालक, जिसकी उम्र सोलह वर्ष से ऊपर न हो। और 'काण्ड' का अर्थ है कथा। अनूदित ग्रंथ में इस शीर्षक का अनुवाद भावार्थ को लेकर हुआ है- "childhood and youth" [91] मूल पाठ में 'बाल' शब्द के प्रयोग से ही पाठक समझ जाता है कि इसमें राम के जन्म से लेकर, उनकी शिक्षा, गुरु सेवा और विवाह तक की बातों का ज्ञात इस शब्द से होता है। अंग्रेजी जैसी

---

90. रामचरितमानस की सूक्तियों का विवेचनात्मक अध्ययन, पृ.64
91. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Pg.1

भाषा में 'childhood' का अर्थ है "the state of being a child"[92] अर्थात् 'बचपन' की अवस्था। अत: लक्ष्य भाषा में यह मात्र इस अर्थ को द्योतित करता है और 'youth' का अर्थ है 'the period immediately succeeding childhood'[93] अर्थात् वह अवस्था जो बचपन के बाद आती है। अंग्रेजी जैसी भाषा में 'बाल' अर्थ को सूचित करने वाले उचित शब्द मिलना कठिन ही नहीं असंभव भी है, इसलिए अनुवादक को दो शब्दों के माध्यम से लक्ष्य भाषा के शीर्षक को प्रस्तुत करना पडा। मूल के 'बाल' शब्द में जो अर्थ गौरव और मनोहारिता रही है वह लक्ष्य भाषा में नहीं आ पाई है।

'काण्ड' शब्द केलिए अनुवादक ने किसी भी शब्द का प्रयोग नहीं किया है। अनूदित ग्रन्थ में 'Book I' [94] ही दिया गया है जिसका अर्थ मूल पाठक 'पुस्तक' रूप में लेंगे। यहाँ 'Book' शब्द काण्ड केलिए उचित शब्द नहीं है। यहाँ अनुवादक के समक्ष उत्पन्न समस्या का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

'बालकाण्ड' में हर एक घटना केलिए शीर्षक दिए गए हैं। काण्ड की शुरूआत में मङ्गलाचरण' केलिए अनुवादक ने मात्र 'Invocation and salutation'[95] शीर्षक देकर अनुवाद किया है। यह अनुवाद मूल के शब्द का पूरा भाव प्रस्तुत नहीं करता। 'मंङ्गलाचरण' शब्द में जो संकल्पना निहित है वह 'Invocation and salutation' में नहीं है। यहाँ पर सामान्य अर्थ में ही इसका प्रयोग हुआ है। राम कथा की व्युत्पत्ति के प्रसंग में 'श्रीरामचरितमानस' में 'भरद्वाज-याज्ञवल्क्य 'संवाद' जो शीर्षक है उसका अनुवाद 'Yajnavalkya And Bharadvaja'[96] किया गया है। इसमें 'संवाद' शब्द का अनुवाद नहीं किया गया है। इसी प्रकार 'सतीमोह प्रसंग' के उपशीर्षक के अन्तर्गत 'satis

92 Chambers's 20th Century Dictionary, Pg.183

93. Chambers's 20th Century Dictionary, Pg.1295

94. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Pg.1

95. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Pg.1

96. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Pg. Pg.41

Folly'[97] अनुवाद बिल्कुल सहज बन गया है। रामचरितमानस में अनेक ऐसे उपशीर्षक मिलते हैं [98] जिनको अनुवादक नें छोड दिया है। 'दक्ष यज्ञ में सतीजी का जाना और देहोत्सर्ग करना' शीर्षकों का भी अनुवादक ने "Daksha's sacrifice और 'Satis Death' [99] कहकर काफी सफल अनुवाद प्रस्तुत किया है। 'शंभुचरित' के अन्तर्गत 'शिव की समाधि' एवं 'काम दहन' को भी अनुवादक ने शीर्षकों के रूप में ग्रहण किया है- 'Siva's contemplation'[100] और 'Kama's Destruction'[101] आदि।

'रामावतार' रामचरितमानस का प्रमुख प्रसंग है जिससे संबंधित अनेक उपशीर्षक 'भानुप्रताप की कथा', 'नारद मोह' आदि मिलते हैं। 'रामावतार प्रसंग का अनुवाद 'Birth of Rama and his brothers'[102] कहकर किया है जिससे मूल शीर्षक के प्रभाव पर व्याघात पड गया है। 'Birth of Rama' कहने से अर्थाभिव्यक्ति तो होती है लेकिन 'And his brother's जोड़ने से शीर्षक का प्रभाव नष्ट हो गया है। यही नहीं अवतार की संकल्पना भी नहीं है।

'बालचरित प्रसंग' का अनुवाद 'childhood of Rama'[103] कहकर किया गया है जो शीर्षकों के अनुवाद की दृष्टि से सफल कहा जा सकता है। 'विश्वमित्र यज्ञ रक्षा' का अनुवाद 'Demons slain to Aid visvamitra'[104] कहकर किया गया है जो शीर्षकों के अनुवाद की दृष्टि से सफल नहीं कहा जा सकता। 'अहल्योद्धार' का Deliverance and

---

97. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Pg.45
98. शिवाजी का सतीजी को समझाना, सतीजी का श्रीराम की परीक्षा को जाना सतीत्याग का संकल्प', सती का पश्चात्ताप आदि।
99. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I) Pg55
100. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I), Pg.68
101. Ibid, Pg.70
102. Ibid, Pg.148
103. Ibid, Pg.157
104. Ibid, Pg.161

Joy of Ahalya' [105] कहकर जो अनुवाद प्रस्तुत किया है वो भी अपने व्यापक विस्तृत कलेवर के कारण शीर्षकों के अनुवाद के दृष्टि से असफल ही कहा जा सकता है।

मानस का 'जनकपुर वर्णन' का अनुवाद 'Rama and Lakshman in Janakpur' [106] कहकर जो किया है शीर्षक की दृष्टि से बिल्कुल सहज ही कहा जा सकता है। इस शीर्षक के अन्तर्गत लेखक ने जनकपुर का वर्णन मूल के अनुसरण पर ही किया है।

'फुलवारी प्रसंग' का अनुवाद 'Rama and Sita : Love at First sight'[107] जो किया शीर्षक की दृष्टि से उतना सफल नहीं कहा जा सकता। यहाँ शीर्षक बहुत ही लंबा बन गया है। मूल की तुलना में प्रभाावहीन बन गया है। यही नहीं' धनुष भङ्ग' जैसे छोटे और प्रभावपूर्ण शीर्षक का अनुवाद 'Siva's Bow Broken and Sita won' [108] के रूप में जो किया वो भी लंबाई के कारण शीर्षक के अयोग्य ही कहा जा सकता है। 'विवाह प्रसंग' जैसे छोटे और प्रभावपूर्ण शीर्षक का अनुवाद 'Wedding of Rama and his brother.'[109] कहकर उसकी संक्षिप्तता नष्ट कर दी है। 'परशुराम रोष और पराजय' प्रसंग का 'Parsuram And the Two brothers'[110] कहकर अनुवादक ने मूल शीर्षक के साथ न्याय ही किया है।

'बालकाण्ड के अन्तर्गत 'रामचरितमानस' के अनेक शीर्षकों और उपशीर्षकों में जो वर्णन मिलता है उसे अनुवाद में बहुत संक्षिप्त बनाया गया है। मूल के कई शीर्षक अनुवाद में नहीं दिखाई देते। इससे कथा की धारा में कोई अड़चन नहीं आई है। कहीं कहीं अनुवादक ने मूल की अपेक्षा लंबे शीर्षक का प्रयोग किया है जो शीर्षक के अनुवाद के दृष्टि से उतना सफल नहीं कहा जा सकता। कई शीर्षक ऐसे भी है जो शीर्षकों के अनुवाद के दृष्टि से सफल कहे जा सकते हैं।

---

105. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I),, Pg.165
106. Ibid, Pg.166
107. Ibid, Pg.177
108. Ibid, Pg.185
109. Ibid, Pg.218
110. Ibid, Pg.206

'अयोध्याकाण्ड' द्वितीय काण्ड है जिसमें राम का राज्याभिषेक, कैकेई की वर याचना, राम-वन गमन, सीता और लक्ष्मण का अनुगमन, राम-निषाद मिलन,राम-मुनि मिलन, दशरथ-मरण,राम-भरत का चित्रकूट में मिलन, भरत के नन्दिग्राम-प्रवास आदि आता है। इस शीर्षक का अंग्रेजी अनुवाद हुआ है- 'Events in Avadh' और साथ ही एक उपशीर्षक भी 'Happiness and Tragic sorrow in Avadh city and kingdom' [111] इसमें अनुवादक ने भावार्थ के माध्यम से शीर्षक का अनुवाद किया है। मात्र 'Events in Avadh' देने के बजाय अनुवादक ने एक उपशीर्षक भी दिया है जिससे इस काण्ड की सारी बातों, घटनाओं के संकेत लक्ष्य भाषा-भाषी पाठक को एक झलक में प्राप्त हो जाते हैं। अगर इस शीर्षक के अनुवाद पर नजर डालें तो यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि अनुवादक ने इस काण्ड के सारांश को लेकर शीर्षक का भावानुवाद किया है। लक्ष्य भाषा शीर्षक का अगर अर्थ ले तो इसका अर्थ निकलता है 'अवध में घटनाएँ' या 'अवध में घटित घटनाएँ' जोकि मूल शीर्षक से मेल नहीं खाता। अतः हम कह सकते हैं कि अनुवाद में अनुवादक मूल के साथ पूर्ण रूप से न्याय नहीं कर पाए हैं।

'अयोध्याकाण्ड' में घटनाओं के आधार पर शीर्षकों का नामकरण हुआ है। काण्ड का आरंभ 'मङ्गलाचरण' से शुरू होता है जिसका अनुवादक ने 'Invocation' [112] शीर्षक देकर अनुवाद किया है। 'रामाभिषेक प्रसंग' में अवध में जो उत्सव है उसकेलिए अनुवादक ने 'Plans for Rama's coronation' [113] किया है जो अनुवाद की दृष्टि से सफल माना जा सकता है। इसके अन्तर्गत कई उपशीर्षक मिलते हैं जिनका परित्याग अनुवादक ने अनुवाद में किया है। मूल में 'राम-वनवास' के बारे में सुनकर 'प्रजा-विरह' और राम के कौशल्य से और अन्य माताओं से वन जाने की आज्ञा माँगना, 'राम-लक्ष्मण संवाद' प्रसंग

111. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I), Book II, Pg.282
112. Ibid, Pg.282
113. Ibid, Pg.283

जिसमें लक्ष्मण को राम के साथ जाने की अनुमति आदि शीर्षकों केलिए लक्ष्य भाषा में 'Kaikeyi's Enmity and Rama's Banishment'[114] अनुवाद बिलकुल सहज बन गया है।

'वनगमन' रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में प्रमुख है जिसमें 'केवट-अनुराग' प्रसंग आता है। अनुवादक ने इसका अनुवाद 'By the Ganges'[115] और 'Meeting with Guha' [116] शीर्षक देकर विस्तार से किया है। और इस लंबे शीर्षक से मूल में जो प्रभावात्मकता है वह लक्ष्य भाषा में नष्ट हुई है। वाल्मीकि प्रसंग का अनुवाद अनुवादक ने 'with Valmiki' [117] कहकर किया है जिसे अनुवाद की दृष्टि से हम सफल मान सकते हैं। 'चित्रकूट निवास-प्रसंग' केलिए 'Living on hill chitrakuta'[118] देकर उसे सहज बना दिया है।

'अयोध्याकाण्ड' में सबसे मर्मिक प्रसंग राजा दशरथ की मृत्यु है जो 'मानस' का एक प्रमुख प्रसंग है। इस प्रसंग का अनुवाद 'Death of King Dasrath'[119] कहकर किया गया है जो अनुवाद की दृष्टि से सफल कहा जा सकता है। 'भरतागमन प्रसंग' का 'Bharat Returns'[120] शीर्षक से अनुवाद किया है जो अच्छा अनुवाद माना जा सकता है। 'नृप-क्रिया प्रसंग का 'Dasrath's cremation'[121] किया गया है।

'भरत का चित्रकूट प्रस्तान प्रसंग शीर्षक केलिए 'Bharat's Journey to chitrakuta'[122] अनुवाद की दृष्टि से सफल है। इसकेअन्तर्गत जो उपशीर्षक मानस में हैं लक्ष्मण क्रोध प्रसंग, उसे अनुवाद ने छोड दिया है। 'रामजी से भेंट' केलिए 'Bharat

114. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I), Book II, Pg.291
115. Ibid, Pg.342
116. Ibid, Pg.343
117. Ibid, Pg.368
118. Ibid, Pg.374
119. Ibid, Pg.388
120. Ibid, Pg.392
121. Ibid, Pg.400
122. Ibid, Pg.410

meets Rama'[123] किया है । 'जनकागमन प्रसंग' केलिए 'Janak arrives at chitrakuta'[124] किया गया है । •राम की पादुकाओं को लेकर भरत का अवध की ओर प्रत्यागमन भी मानस का प्रमुख प्रसंग है जिसकेलिए अनुवादक ने 'Bharat Returns to Avadh'[125] कहकर किया है ।

'अयोध्याकाण्ड' में अनेक शीर्षकों और उपशीर्षकों की योजना हुई है जिसके अनुवाद में अनुवादक सफल हुए हैं । परंतु कहीं कहीं पर अनुवादक ने मूल से हटकर अत्यंत संक्षिप्त शीर्षकों का प्रयोग भी किया है । कई शीर्षक ऐसे भी हैं जिनके साथ अनुवादक न्याय कर पाए हैं ।

जयन्त-शासन, शूर्पणखा-विरूपण, सीता हरण, जटायु-मरण, शबरी-मिलन आदि कथाएँ 'अरण्य काण्ड' में मिलती हैं । 'अरण्य' शब्द मूल रूप से संस्कृत का है जिसका अर्थ है वन या जंगल । लक्ष्य भाषा में इस शीर्षक का अनुवाद 'In the forest'[126] किया है । यहाँ अनुवादक ने विषय का सहारा लेकर इस शीर्षक का अनुवाद किया है । इस शीर्षक के साथ अनुवादक न्याय कर पाए हैं । अनुवाद की दृष्टि से इसे हम सफल मान सकते हैं ।

इस काण्ड में कथा के अनुसार ही शीर्षक दिए गए हैं । काण्ड की शुरूआत मंगलाचरण से होती है । इसका अनुवाद 'Invocation' कहकर किया है । वनवास के समय राम कई ऋषियों से मिलते है जिनका 'रामचरित मानस' में वर्णन मिलता है । इसी प्रसंग में 'राम-अत्रि भेंट' का अनुवादक ने 'In Atri's Ashram'[127] किया है । मूल का शब्दानुवाद न रहते हुए भी शीर्षक की दृष्टि से यह प्रभावात्मक बन गया है । इसी प्रसंग में

---

123. The Ramayana of Tulsidas (Vol.I), Book II, Pg.449
124. Ibid, Pg.470
125. Ibid, Pg.503
126. Ibid, (Vol.II), Book III Pg.511
127. Ibid, Pg 513

मानस में कई उपशीर्षक मिलते हैं।[129] ये उपशीर्षक अनुवाद में नहीं मिलते। 'शरभंग देहत्याग प्रसंग' का अनुवाद 'Rama and Saint Sarabhang'[130] के रूप में जो किया है वह अनुवाद की दृष्टि से उतना सफल नहीं कहा जा सकता क्योंकि अनूदित शीर्षक में 'शरभंग' की सूचना नहीं मिलती जो मूल शीर्षक में है।

'सुतीक्ष्ण प्रीति' केलिए 'Sutikshan's Devotion'[131] शीर्षक अनुवाद की दृष्टि से सफल कहा जा सकता है। 'पंचवटी निवास प्रकरण' के प्रमुख शीर्षक को अनुवाद में छोड दिया गया है। 'सूर्पणखा कुरूपकरण' का अनुवाद 'Disfiguration of Surpanakha'[132] के रूप में मिलता है जो अनुवाद की दृष्टि से बल्किुल सफल कहा जा सकता है। 'मारीच प्रसंग जो मूल में मिलता है उसका अनुवाद 'Marich slain in Deer-guise'[133] के रूप में मिलता है जो शीर्षक के अनुवाद की दृष्टि से उतना सफल नहीं कहा जा सकता। मूल का शीर्षक संक्षिप्त एवं प्रभावोत्पादक है और अनुवाद इसके ठीक विपरीत विस्तृत बन गया है जिससे मूल की प्रभावात्मकता नष्ट हो गई है। यहाँ पर 'Deer guise' की कोई आवश्यकता नहीं है।

'सीता हरण' के रूप में राम कथा आगे बढती है। इसके अन्तर्गत 'माया सीता प्रसंग' के मूल शीर्षक को अनुवादक ने 'Capture of Sita'[134] के रूप में प्रस्तुत किया है। शीर्षक के अनुवाद की दृष्टि से इसमें अव्यक्ति दोष रहता है। 'माया' विशेषण से मूल में जिस भाव की अभिव्यक्ति हुई है वह अनुवाद में दिखाई नहीं पडती। तुलसी राम और सीता को देव और देवी मानते हैं और उनकेलिए देवी (सीता) का अपहरण किसी भी हालत में उचित नहीं दिखाई देता। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि अपने मन को आस्वसन देने

---

129. The Ramayana ofTulsidas (Vol. II), Book III Pg.519
130. Ibid, Pg 521
131. Ibid, Pg 530
132. Ibid, Pg 539
133. Ibid, Pg 543
134. Ibid, Pg 544

केलिए यहाँ माया सीता को विभूषित किया गया है। अनुवाद में यह मनोवैज्ञानिक तथ्य नहीं आ पाया है। 'गीधक्रिया प्रसंग' केलिए अनुवदक ने 'Death of the Vulture Jatayu'[135] कहकर किया है। अनुवाद की दृष्टि से यह सही नहीं है क्योंकि 'क्रिया' का अर्थ यहाँ अंत्योष्टि संस्कार से है जिसका अर्थ अनुवाद में नहीं आया है। यह शीर्षक अनुवाद की दृष्टि से असफल ही कहा जा सकता है क्योंकि इस शीर्षक में मूल अर्थ नष्ट हो गया है। 'शबरी प्रसंग' का 'With Saint Sabari'[136] रूप में हुआ है।

'अरण्य काण्ड' में जिन शीर्षकों का अनुवाद हुआ है उसे बहुत ही संक्षिप्त बनाया गया है। तो कहीं कहींपर शीर्षकों और उपशीर्षकों की योजना बहुत ही विस्तृत हो गई है। कुछ शीर्षकों के साथ अनुवादक न्याय नहीं कर पाए हैं।

'किष्किंधा काण्ड' में 'राम-सुग्रीव मैत्री', 'सीता शोध', 'स्वयंप्रभा कथा' और 'संपाति-कथा' आदि का विवरण है। किष्किन्धा बालि और सुग्रीव की राजधानी है। वानर दक्षिण भारत में निवास करनेवाला एक प्राचीन मानवजाति समूह है जिसका अत्यंत गौरवपूर्ण उल्लेख वाल्मीकि-रामायण में प्राप्त है। 'मानस' में भी वानरों का उल्लेख मिलता है जो नारद शाप के कारण ही राम के सहायक बने[137]। रामायण में निर्दिष्ट वानर, मनुष्यों की तरह बुद्धि संपन्न हैं, मानव भाषा बोलते हैं, कपड़े पहनते हैं, घरों में निवास करते हैं, विवाह संस्कार को मान्यता देते हैं, एवं राजा के शासन के अधीन रहते हैं। पुराणों में वानरों को हरि नामकरण दिया गया है, एवं उन्हें पुलह और हरिभद्रा की संतान बताया गया है। हरिभद्रा नामक माता से उत्पन्न होने के कारण वानरों को 'हरि' नाम प्राप्त हुआ।[138]

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में अनुवादक ने 'किष्किन्धा' का लित्यंतरण प्रस्तुत किया है और साथ ही वानरों की राजधानी अर्थ में भी इस शीर्षक का अनुवाद प्रस्तुत

---

135. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II), Book III Pg.544

136. Ibid, Pg 550

137. मानस- 1/136/4

138. प्राचीन चरित्र कोश, पृ.822

किया है 'Kishkindha or the monkey Kingdom' [139] भारतीय पुराणों से जुडे इस तथ्य को ठीक से समझे बिना ही अनुवादक ने अनूदित कृति में 'The monkey kingdom' का प्रयोग किया है। इस काण्ड में वानरों को चित्रित करने के कारण अनुवादक ने 'monkey' शब्द का प्रयोग किया है। अंग्रेजी भाषा में 'वानर' केलिए और कोई पर्याय मिलना कठिन है। 'monkey' शब्द के प्रयोग से 'वानर' जैसे शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। 'Monkey' का कोशार्थ है 'any mammal of the primates except man and (usually). The anthropoid apes.[140] अतः यहाँ अनुवादक ने जिस प्रकार से इस शीर्षक का अनुवाद किया है वह सही अर्थ की अभिव्यक्ति में सफल नहीं है और यह व्यक्त करता है कि भारतीय परंपरा से जुडे हुए इस शब्द का अनुवाद उतना आसान नहीं है।

घटनाओं के आधार पर ही 'किष्किन्धाकाण्ड' में शीर्षकों का नामकरण किया गया है। 'मारुतिमिलन' प्रसंग का अनुवाद 'Rama and Hanuman'[141] जो किया गया है वह मूल के अनुसरण पर ही किया गया है। मानस में वनवास के दौरान राम और सुग्रीव मिलन महत्वपूर्ण है। मूल में सुग्रीव मिताई प्रसंग' शीर्षक अनुवाद 'Rama and Sugriva seal friendship'[142] कहकर किया है। मूल शीर्षक जोकि बहुत संक्षिप्त है उसे अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में विस्तार प्रदान किया है। 'बालिवध प्रसंग' का 'Bali slain'[143] अनुवाद की दृष्टि से अत्यन्त सफल कहा जा सकता है। सुग्रीव का राज-तिलक से संबंधित 'कपि-तिलक प्रसंग' केलिए 'Sugraiva's coronation'[144] शीर्षक अनुवाद की दृष्टि से सफल कहा जा सकता है। 'राम का प्रवर्षण शैल-वास' केलिए 'Rama waits on hill Pravarshana'[145] रूप से शीर्षक का अनुवाद हुआ है। इसी काण्ड में वर्ष कालीन ऋतु और शरद ऋतु का

---

139. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II), Book IV Pg.563
140. Chambers's 20th Century Dictionary, Pg.688
141. The Ramayana of Tulsidas (Vol. II), Book IV Pg.563
142. Ibid, Pg 565
143. Ibid, Pg 567
144. Ibid, Pg 572
145. Ibid, Pg 574

मनोरम चित्रण मानस में 'वर्षा-शरद-वर्णन-प्रसंग' में पाठक को मिलता है जिसे अनुवादक ने छोड़ दिया है। लेकिन इससे कथा प्रवाह में कोई बाधा नहीं आई है।

सीता खोज से संबंधित शीर्षक है 'सुग्रीवदूत प्रेरणा' प्रसंग जिसका अनुवाद 'Search for Sita'[146] कहकर हुआ है जिसे अनुवाद की दृष्टि से सही कह सकते हैं। 'सम्पाती-मिलन प्रसंग' शीर्षक का अनुवाद 'The monkeys and Sampati'[147] दिया है और मूल शीर्षक के साथ न्याय किया है। इस शीर्षक में जटायु भ्राता संपाती के साथ वानरों के मिलन का विवरण मूल जैसे ही किया गया है। 'हनुमंत् चरित' के अन्तर्गत 'हनुमान का आवेश' उपशीर्षक का अनुवाद 'Hanuman plans his leap to Lanka'[148] किया गया है जो मूल शीर्षक के तरह संक्षिप्त नहीं है। अपने लंबे कलेवर के कारण मूल जितना प्रभावी भी नहीं है।

'अरण्य काण्ड' में कई; उपशीर्षकों का भी वर्णन मिलता है जिनको अनुवादक ने छोड़ दिया है। अन्य शीर्षकों के अनुवाद में अनुवादक सफल हुए हैं। कहीं कहीं पर मूल से भी लंबे शीर्षक का प्रयोग किया है जो शीर्षक के अनुवाद के दृष्टि से उतना सफल नहीं हुआ है।

'सुन्दर काण्ड' में हनुमान-विभीषण-मिलन, हनुमान्-सीता-मिलन, लंका दहन, विभीषण की शरणागति आदि का वर्णन किया गया है। सीता शोक और लंका नगर का मनोहर वर्णन इस काण्ड में मिलता है और मानसकार ने सीता विरह का पिघलाने वाला चित्र प्रस्तुत किया है। तो वहीं सुन्दर काण्ड लंका नगर के मनोहर चित्र को प्रस्तुत करने में सफल हुआ है। यहाँ 'सुन्दर' शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है 'मन को पिघलानेवाला' और 'मनोहर'। लक्ष्य भाषा में इस शीर्षक का अनुवाद 'The beautiful [149] कहकर किया

146. The Ramayana ofTulsidas (Vol. II), Book IV Pg.579

147. Ibid, Pg 585

148. Ibid, Pg 587

149. The Ramayana ofTulsidas (Vol. II), Book V Pg.589

गया है। 'सुन्दर' का अंग्रेजी पर्याय है 'Beautiful' और इसी अर्थ को लेकर इसका अनुवाद प्रस्तुत हुआ है। 'The beautiful' शीर्षक मूल शीर्षक का शब्दानुवाद मात्र है लेकिन मूल की भावुकता या अर्थ गहनता को वह व्यक्त नहीं कर पाता। यहाँ यह अनुवाद मात्र शब्दों का जाल लगता है। अनुवाद करते समय अनुवादक को ध्यान रखना है कि मूल में व्यक्त अर्थ और भाव का प्रतिपादन लक्ष्य भाषा में भी आ जाए। अनूदित शीर्षक इस तथ्य को प्रस्तुत नहीं कर पाता और इसीकारण से यह सफल नहीं कहा जा सकता। यहाँ यहीं बात स्पष्ट झलकती है।

अनुवादक ने यहाँ मात्र 'beautiful' शब्द का प्रयोग नहीं किया है उसने 'The' का भी प्रयोग किया है जो एक संयोजक का कार्य मात्र करते हुए दिखाई देता है। जिस अर्थ में अनुवादक इस शीर्षक के माध्यम से बात को अभिव्यक्ति देना चाहते थे उस हद तक वे इसमें सफल नहीं हो पाए हैं।

इस काण्ड में हनुमान का लंका पहुँचना और सीता मिलन प्रमुख है। 'समुद्रोल्लङ्घन' सुन्दर काण्ड से संबंधित प्रमुख प्रसंग है जिसको अनुवादक ने छोड दिया है। इससे कथा की प्रवाह में कोई अडचन तो नहीं आई है। 'लंका प्रवेश' प्रसंग केलिए अनुवादक ने 'Hanuman Reaches Lanka'[150] कहकर किया है। इसी प्रसंग से संबंधित उपशीर्षक 'विभीषण भेंट' को अनुवादक ने छोड दिया है। 'वन विध्वंस प्रसंग' उपशीर्षक के अन्तर्गत हनुमान का नागपाश से मेघनाथ द्वारा बाँधी बनाने' का 'Hanuman captured by Meghnad'[151] अनुवाद हुआ है जो एक हद तक सफल अनुवाद कहा जा सकता है। 'लंका-दाह प्रसंग का अनुवाद 'The burning of Lanka'[151a] कहकर अनुवादक ने मूल शीर्षक का सफल अनुवाद किया है।

150. The Ramayana ofTulsidas (Vol. II), Book V Pg.589
151. Ibid, Pg 603
151a. Ibid, Pg 609

'विभीषण मिलन' शीर्षक का अनुवाद 'Vibhishan Received and blest by Rama'[151b] कहकर किया है जिससे मूल शीर्षक की संक्षिप्तता पर व्याघात पड़ गया है। यह शीर्षक बहुत ही विस्तृत है। 'सागर-निग्रह प्रसंग' का अनुवाद 'The Ocean submits to Rama'[152] किया गया है जो मूल शीर्षक जितना प्रभावशाली नहीं है।

सुन्दरकाण्ड के अन्तर्गत 'रामचरितमानस' के अनेक शीर्षक और उपशीर्षकों की योजना हुई है जो मूल जैसे ही संक्षिप्त है। कई मुख्य शीर्षक और उपशीर्षकों को अनुवादक ने छोड़ दिया है। इससे कथा की प्रवाह में कोई बाधा नहीं आई है। कुछ शीर्षक मूल के अपेक्षा लंबे हैं। बाकि शीर्षक अनुवाद के दृष्टि से सफल कहे जा सकते हैं।

'लंकाकाण्ड' में सेतु-निर्माण, अंगद-दौत्य, लक्ष्मण-मूर्च्छा, कुम्भकर्ण वध, मेघनाथ वध, रावण वध और सीता-शुद्धि आदि के प्रसंग हैं। अनूदित ग्रंथ में इसका शीर्षक दिया गया है, 'In Lanka'[153] यहाँ अनुवादक ने मूल का लिप्यंतरण प्रस्तुत किया है। अनुवादक ने इसके साथ 'in' शब्द को भी जोडा है जिससे शब्द में एक शक्ति आ गई है। मूल जैसे अगर अनुवादक मात्र 'Lanka' देता, अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा में यह मात्र एक देश या स्थान का नाम सूचित करता। इसलिएअनुवादक को 'in' शब्द भी जोडना पडा जिससे अर्थ संकेत मिले। यदि 'The events in Lanka' दिया जाता तो इससे भी बेहतर होता। शीर्षक अनुवाद के दृष्टि से इसे सफल कहा जा सकता है।

राक्षस विनाश और रावण वध से संबन्धित इस काण्ड में शीर्षकों के आधार पर ही नामकरण किए गए है। काण्ड की शुरूआत मंगलाचरण से होती है जिसके लिए अनुवादक ने 'Invocation' कहकर दिया है। वानरों का रामचन्द्र की आज्ञा से सेतुबन्ध बनाने के प्रसंग से संबंधित शीर्षक है 'सेतुबन्ध प्रंसग' जिसका अनुवाद में मात्र 'The

---

151b The Ramayana ofTulsidas (Vol. II), Book V Pg.622
152. Ibid, Pg.634
153. Ibid, Pg.637

bridge'[154] दिया है जो मूल में दिए गए शीर्षक सा प्रभावपूर्ण या सारगर्भित नहीं है। 'अंगद-दूत प्रसंग' केलिए Angad goes as Envoy to Ravan'[155] कहकर अनुवादक ने किया है। मूल शीर्षक जो बहुत ही संक्षिप्त है वही लक्ष्य भाषा में लंबा बन गया है। 'निशाचर कीश लडाई प्रसंग' का अनुवाद 'Battle Begins'[156] कहकर जो किया गया है वह शीर्षकों के अनुवाद की दृष्टि से सफल और सहज कहा जा सकता है। 'मेघनाथ लक्ष्मण प्रथम युद्ध' प्रसंग से संबंधित उपशीर्षक शक्ति प्रसंग लक्ष्मण का शक्ति लगने पर मूर्छित होना से संबंधित है। इस शीर्षक का अनुवाद 'Meghand smites Lakshman with his spear'[157] कहकर किया है जिसे अनुवाद की दृष्टि से सफल नहीं कह सकते। 'शक्ति-प्रसंग' जैसे छोटे और प्रभावपूर्ण शीर्षक केलिए यह शीर्षक बहुत ही विस्तृत होने के कारण और अर्थ संप्रेषण में असफल होने के कारण अयोग्य कहा जा सकता है। इस प्रसंग के कई उपशीर्षक[158] आदि को अनुवादक ने जोडा नहीं है।

रावण के छोटे भाई 'कुम्भकर्ण के बल पौरुष संहार प्रसंग' से संबंधित शीर्षक को अनुवादक ने छोड दिया है। इस शीर्षक से संबंधित उपशीर्षक 'कुम्भकर्ण वध' का अनुवाद 'Kumbhakaran killed'[159] किया है जिसमें अनुवादक सफल हुए है। 'रावण-यज्ञ-विध्वंस' केलिए 'Ravan's sacrifice foiled'[160] शीर्षक के साथ अनुवादक न्याय कर पाए हैं। 'रघुपति-रावण-समर प्रसंग' शीर्षक को अनुवादक ने छोड दिया है। राम अवतार का एक कारण 'रावण वध है और लंका काण्ड में 'राम-रावण युद्ध' उपशीर्षक का अनुवाद 'Battle of Rama and Ravan'[161] कहकर किया है। रावण वध प्रसंग' मानस में महत्वपूर्ण है जिसका अनुवाद 'Ravan killed'[162] देकर, अनुवादक ने उसके साथ न्याय किया है।

---

154. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book V Pg.638
155. Ibid, Pg.651
156. Ibid, Pg.669
157. Ibid, Pg.680
158. सुषेण वैद्य- कालनेमि प्रसंग
159. The Ramayana of Thulsidas, Vol.II, Pg.687
160. Ibid, Pg.708
161. Ibid, Pg.714
162. Ibid, Pg.726

'विभीषण-राज्य प्रसंग का अनुवाद 'Vibhishan Enthroned' [163]किया है उसे बिलकुल सहज ही कहा जा सकता है ।

'श्रीसीता-रघुपति मिलन' का अनुवाद 'Meeting of Rama and Sita'[164] कहकर किया है । मानस में कई उपशीर्षक मिलते हैं 'सुग्रीवादि सहित अवध' को प्रस्थान का अनुवाद 'Rama Leaves for Ayodhya'[165] कहकर किया है जो सहज है और प्रस्थान का वर्णन मूल के अनुसरण पर किया है । कई उपशीर्षक[166] को अनुवादक ने छोड़ दिया है ।

रामचरितमानस में 'लंकाकाण्ड' के अनेक शीर्षकों और उपशीर्षकों का अनुवाद अनुवादक ने बहुत ही सहज रूप से किया है । तो कई उपशीर्षकों और शीर्षकों का परित्याग भी अनुवादक ने किया है । कथा प्रवाह में कोई अडचन नहीं आई है । कई स्थानों पर अनुवादक ने मूल की तुलना से बहुत ही विस्तृत बनाया है । संक्षिप्तता, प्रभावात्मकता शीर्षक के लक्षण है जिसका पालन कहीं कहीं पर लक्ष्य भाषा में नष्ट हो गया है ।

'उत्तरकाण्ड' के मूल कथा भाग में राम का अयोध्या प्रत्यावर्तन, रामाभिषेक और रामराज्य आदि के प्रसंग है तथा उपसंहार भाग में काक-गरुड संवाद और कथा-माहात्म्य आदि का वर्णन किया गया है । 'The Finale' [167] नाम से इस काण्ड का अनुवाद लक्ष्य भाषा में हुआ है । अंतिम काण्ड होने के कारण अनुवादक ने 'Finale' शब्द का प्रयोग किया होगा क्योंकि इसका अर्थ है 'The end'.[168] यहाँ यह शीर्षक कुछ अस्वाभाविक सा दिखाई पडता है क्योंकि 'उत्तरकाण्ड' शीर्षक का अर्थ या भाव इस अनुवाद में नहीं है । यह अनुवाद मात्र कृति के अंत को सूचित करता है । लक्ष्य भाषा-भाषी पाठकों के मन में

---

163. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book VI Pg.732
164. Ibid. Pg.733
165, Ibid, Pg.743
166. त्रिवेणी स्नान, हनुमान को अवध भेजना, भरद्वाज दर्शन, निषादराज मिलन
167. The Ramayana of Thulsidas, Vol.II, Book VI Pg.750
168. CHAMBER'S 20th Century Dictionary, Pg.398

यह समस्या उत्पन्न हो सकती है। और यह शब्द न ही अर्थ का संकेत करता है और न ही भाव का। यहाँ शब्द प्रयोग की समस्या प्रमुख रूप से देखी जा सकती है। 'Finale' शब्द कदापि 'उत्तर' शब्द के समतुल्य नहीं हो सकता।

'रामचरितमानस' का अंतिम सोपान है 'उत्तरकाण्ड' जिसको कथा प्रवाह के आधार पर शीर्षकों का नामकरण किया गया है। चौदह वर्ष के वनवास के बाद श्रीराम का अवध पहुँचने से संबंधित शीर्षक है 'नगर-निकट' अगमन-विधि-प्रसंग' शीर्षक को अनुवादक ने जोडा नहीं है। इसी शीर्षक से संबंधित उपशीर्षक है। 'भरत विलाप' इसे भी अनुवादक ने छोड दिया है। अनुवादक ने अपने ओर से एक नए शीर्षक दिया है 'Rama Re-united with his people' [169] जो कथा धारा के आधार पर सहज लगता है। 'रामाभिषेक प्रसंग का अनुवाद 'The Enthronement of Rama'[170] कहकर शीर्षक के साथ न्याय किया है। 'रामाभिषेक प्रसंग' से संबंधित उपशीर्षक देवस्तुति', 'वेदस्तुति', वानरों आदि की विदाई', 'गुह निषादराज की विदाई' को भी अनुवादक ने शीर्षकों के रूप में ग्रहण किया है- 'Vedas and Gods praise Rama'[171] और 'Rama's Allies Return home"[172] है। पूर्वार्ध में हमें 'कथोपसंहार' शीर्षक मिलता है जिसको अनुवादक ने नहीं दिया है।

उत्तरार्ध में 'काकभुशुण्डि और गरुड संवाद' का अनुवाद 'Conversation of Bhusundi and Garur.[173] कहकर किया है। 'भुशुण्डि अनुभव' मानस का एक ऐसा प्रसंग है जिसमें भुशुण्डि गरुड को अपने जीवन चरित और राम कथा का वर्णन करते हैं। इसका अनुवादक ने 'Bhusundi tells his life story'[174] कहकर किया है। उत्तरकाण्ड में कई उपशीर्षक भी मिलते हैं। 'राम की महिमा' का अनुवाद 'Greatness of Rama's

---

169. The Ramayana of Thulsidas, Vol.II, Book VII Pg.750
170. Ibid Pg.760
171. Ibid, Pg.763
172. Ibid, Pg.766
173. Ibid, Pg.766
174. Ibid, Pg.794

story' [175] कहकर किया है जिसमें 'story' शब्द के प्रयोग से यह शीर्षक थोडा लंबा हो गया है और मूल शीर्षक का प्रभाव यहाँ नहीं आ पाया है।

'उत्तरकाण्ड' में कई शीर्षकों का अनुवाद बहुत सफल पूर्वक अनुवादक कर पाए है। किन्तु इस काण्ड में कई शीर्षक और उपशीर्षकों को अनुवादक ने प्रस्तुत नहीं किया है। 'मानस' में जो कथा प्रवाह है उसका लक्ष्य भाषा में कोई अडचन नहीं आया है। तो कुछ शीर्षक अपने विस्तृत कलेवर के कारण मूल जितना सहज नहीं बन पाए है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि रामचरितमानस का अनुवाद 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में शीर्षकों के अनुवाद की समस्या एक प्रमुख समस्या बनकर उभरती है कई शीर्षकों को छोड दिया है। जिनका अनुवाद हुआ है वह कहीं कहीं अर्थ द्योतन में सहायक है तो कहीं कहीं वे सहायक भी नहीं है। अनुवादक ने कहीं कहीं शब्दार्थ, भावार्थ और लिप्यंतरण का प्रयोग किया।

मुहावरे और कहावतें किसी भी जीवंत जन भाषा के प्राण हैं। संसार की सभी भाषाओं में समान मुहावरे और कहावतें मिलना कभी कठिन और कभी-कभी असंभव भी होता है और अनुवाद में यह एक प्रमुख समस्या बन जाती है। अनुवादक को मूल भाषा के मुहावरों और कहावतों को उसी अर्थ और भाव गहनता के साथ अभिव्यक्त करने केलिए बहुत प्रयत्न करना पडता है। 'रामचरितमानस' के अनुवाद 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में यह स्पष्ट दिखाई देता है। मानस में कई शीर्षक मिलते हैं। कई मुहावरे और कहावतें भी हैं। इन सबका अनुवाद अंग्रेजी ग्रंथ में नहीं मिलता। यही नहीं जिनका अनुवाद हुआ है वह उतना सफल भी नहीं कहा जा सकता। मुहावरों, कहावतों और शीर्षकों के अनुवाद में जिन बातों पर ध्यान देना होता है, लगता है सम्यक् रूप से नहीं दिया गया। कहीं कहीं सांस्कृतिक तथ्य भी अडचन के रूप में खडे हुए हैं। ऐसे स्थानों पर अनुवादक को पाद-टिप्पणियों का सहारा लिया जाना चाहिए था जो उन्होंने नहीं किया। इस प्रकार कहावतें, मुहावरों और शीर्षकों का अनुवाद इस ग्रंथ में सफल नहीं बन पाया है।

175. The Ramayana of Thulsidas, Vol.II, Book VII Pg.850

पाँचवाँ अध्याय

'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में अनुवाद की सांस्कृतिक समस्यायें

प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है। संस्कृति का संबंध मानव की अंतर्मुखी दशा से है। जिस कर्म व भाव से हमारे संस्कार सुंदर बने, जिससे 'कृति' का सौंदर्य तथा दिव्यता अधिक स्पष्टता से प्रकट हो सके, वही संस्कृति है। दूसरे शब्दों में अगर कहें तो किसी देश की उन्नति-अवनति, उत्थान-पतन, आचार-विचार, जीवन परिपाटी जानने केलिए उस देश की संस्कृति एक मुख्य साधन है। संस्कृति द्वारा उस देश या जाति की न केवल जीवन शैली की झलक मिलती है बल्कि उसकी समस्त विशिष्टताओं एवं दुर्बलताओं का यथा तथा चित्रण मिलता है।

संस्कृति शब्द-व्युत्पत्ति

'संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा की 'संस्कृ' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय लगाने से बनता है। इसका शाब्दिक अर्थ 'अच्छी स्थिति', 'सुधरी हुई स्थिति' आदि है।

'संस्कृति' शब्द की व्युत्पत्ति 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु में भावार्थ में 'क्तिन्' प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुई है। इसका मूल अर्थ साफ या परिष्कृत करना है।"[1]

"सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे" [2]

संस्कृति शब्द की उत्पत्ति संस्कार शब्द से हुई है। संस्कार से अभिप्राय संशोधन अथवा उत्तम बनाने वाले कार्य से है।

---

1. हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1, पृ.868
2. पाणिनि- अष्टाध्यायी

स्वरूप

संस्कृति शब्द का स्वरूप है - संस्कृ+ति → संस्कृति

जहाँ 'सम्' का अर्थ ठीक प्रकार है और 'कृति' का अर्थ क्रिया है, और संस्कृति का अर्थ रहता है- ठीक प्रकार की क्रिया।

संस्कृति शब्द का अर्थ

'संस्कृति' का शाब्दिक अर्थ है- संस्कारयुक्त होना, 'उन्नति करना', 'बढना', 'विकसित होना', 'शुद्ध होना' इत्यादि।[3]

शिवदत्त ज्ञानी इसके शाब्दिक अर्थ को 'अच्छी स्थिति', 'सुधरी हुई स्थिति' आदि का बोधक मानते हैं। 'संस्कृति' से मानव-समाज की उस स्थिति का बोध होता है, जिससे उसे 'सुधरा हुआ', 'ऊँचा', 'सभ्य' आदि विशेषणों से आभूषित किया जा सकता है।[4]

संस्कृति का विकास और उद्देश्य

आदिकाल में मानव की जीवन-विधि से संस्कृति का उद्भव हुआ। तत्पश्चात् जैसे मानव विकास करता गया उसकी मान्यताएँ आस्थाएँ प्रथाएँ आदि स्थापित होने लगीं और ये सभी संस्कृति के आधारभूत अंग बन गईं। संस्कृति किसी एक व्यक्ति के प्रयासों का फल नहीं और न ही किसी एक काल का प्रतिफल। संस्कृति एक अविरल अजस्र धारा है जिसमें युग-युग की मान्यताएँ उसका विकास करती रहती हैं।

संस्कृति का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य को सुसंस्कृत एवं सभ्य बनाना है। किसी भी देश की संस्कृति का लक्ष्य उसके जन समुदाय के आचरण एवं आचार-विचार के शुद्धीकरण का होता है। सामाजिक मनोवृत्तियों का निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण योगदान

---

3. भारतीय संस्कृति की महिमा:विविध आयाम -कृष्ण भावुक, पृ.9
4. भारतीय संस्कृति, शिवदत्त ज्ञानी पृ.16

देने के साथ-साथ वह देश के निवासियों की धारणाओं एवं व्यवहारादि का बाद दिलाती है।

संस्कृति : परिभाषा

संस्कृति शब्द के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत किसी देश या जाति के सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक धार्मिक, आर्थिक, दार्शनिक=सभी प्रकार के उत्थान-पतन का समावेश हो जाता है। संस्कृति किसी भी देश के जातीय जीवन की चरम उपलब्धि है जिसका अनुसरण कर लोग सुख-शान्ति का अनुभव कर सकते हैं।[5]

ये सांस्कृतिक तत्त्व के घटक हैं जो समन्वित रूप में एक देश की संस्कृति को दूसरे देश की संस्कृति से अलग करते हैं। ये तत्त्व ही अनुवादक केलिए बहुत बडी चुनौती होते हैं और अनुवाद करते समय अनेक प्रकार की समस्याएँ उसके सामने आती हैं। उदाहरण केलिए किसी देश की संस्कृति के अन्तर्गत पूजा, उपासना, अनुष्ठान व विविध पद्धतियों में प्रयुक्त प्रतीक, उपकरण, परंपराओं आदि का अद्वितीय स्थान है, यथा-कलश, रथ, तिलक, ध्वज, शंख, चंदन, रुद्राक्ष, तुलसी, आरती आदि। इसकी समानता हमें समन्वयात्मक भावना के सुदृढीकरण का संबल प्रदान करती है। इसके साथ ही हमारे जन-जीवन से संबंधित त्यौहार, खान-पान, आभूषण, वस्त्र आदि भी संस्कृति के परिचायक हैं। इन सब विषयों का अनुवाद दूसरी संस्कृति में प्रस्तुत करना अनुवादक केलिए टेढी खीर है।

संस्कृति और अनुवाद

किसी भी देश की नींव उसकी अपनी संस्कृति होती है। और प्रत्येक समाज का प्रतिफलन इसी संस्कृति के आधार पर होता है। संस्कृति के कई घटक हैं जैसे संस्कार, जलवायु, आचार-विचार, जीवन शैली, जीवन दर्शन आदि जो समन्वित रूप से एक देश की संस्कृति को दूसरे देश की संस्कृति से अलग करते हैं। भाषा संस्कृति की वाहक होती है

5. तुलसी काव्य में प्रकृति तथा खगोल, जनक खन्ना पृ.37

और भाषा से ही संस्कृति की पहचान संभव होती है। अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में होती है। और संस्कृति की सही पहचान अनुवादों के द्वारा ही संभव है।

प्रत्येक संस्कृति, आचार-विचार, धर्म, संस्कार, रीतिरिवाज, खान-पान, रहन-सहन आदि की दृष्टि में निजी विशिष्टता लिए हुए होती है, और इन्हें सूचित करने केलिए विशिष्ट शब्दावली तथा विशिष्ट अभिव्यक्तियों का प्रयोग होता है जिसकेलिए अन्य संस्कृति में समकक्ष शब्दावली एवं अभिव्यक्ति उसी रूप में प्रयोग हो। चूँकि यह सांस्कृतिक शब्दावली किसी संस्कृति विशेष में नीहित रहती है, उसका अनुवाद करना या उचित पर्याय देना अत्यंत दुष्कर कार्य है। इसका कारण है उस शब्दावली में अंतर्निहित सूक्ष्म बारीकियाँ उदाहरणत 'धर्म' शब्द का अनुवाद। धर्म के संदर्भ में अनेक अर्थ दृष्टिगत हैं जैसे- religion, right truth, righteousness, duty, system, religious duties, law आदि। यद्यपि 'धर्म' और religion शब्द पर्यायवाची है, तथापि 'धर्म' शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग होता है। 'धर्म' शब्द अपने विस्तृत परिप्रेक्ष्य में जो भाव अभिव्यंजित करता है, वह उपर्युक्त किसी शब्द में नहीं मिलता। 'Duty' के संदर्भ में 'धर्म' का प्रयोग संदर्भानुकूल है। लेकिन 'धर्म' के संदर्भ में 'righteousness' का प्रयोग मूल शब्द का पर्याय नहीं है क्योंकि इसका अनुवाद है 'धर्मपरायणता'। अत: सांस्कृतिक शब्दावली तथा अभिव्यक्तियों का अनुवाद करते समय अनुवादक को ध्यान रखना है कि उस शब्द में निहित भाव को यथावत् सुरक्षित रखे।

एक भाषा से दूसरी भाषा के अनुवाद में समानान्तर सांस्कृतिक संदर्भ की पहचान अनिवार्य होती है। इसीलिए भारतीय भाषाओं से विदेशी भाषाओं में अनुवाद में कठिनाई अधिक होती हैं। उदाहरण 'गोदान' शब्द। 'गोदान' की गरिमा का भरपूर गान भारतीय संस्कृति में किया गया है। ऐसा विश्वास है कि जीवन के अंतिम समय में वैतरणी को पार करनेकेलिए, और मोक्ष की कामना से 'गोदान' किया जाता है। प्राचीन काल में गोधन सर्वोत्तम धन माना जाता था तथा राजा इसे दान में देते थे। गाय सदुपयोगी पशु है जिसकी पावनता तथा उपयोगिता मानव कल्याण केलिए अक्षुण्ण है। इसीकारण से यह

शब्द पूर्ण रूप से भारतीय संस्कृति और संस्कार से गहरे रूप से जुडे हैं। इस शब्द का अर्थ भारतीय संस्कृति के अनुसार कई घटकों से संबंधित है इसलिए अंग्रेजी जैसे भाषा में इन्हें अभिव्यक्त करना अत्यन्त कठिन हो जाता है। यदि किया भी जाए तो मूल अर्थ को समझने में अनुवादक को कठिनाई होती है जैसे 'Gift of cow' के अलावा और कोई शब्द अंग्रेजी में नहीं है जो इस मूल शब्द को सूचित करे। यह शब्द भारतीय संस्कृति से जुडे अर्थ को सूचित करने में असफल रह जाता है। अतः अनुवादक को पादटिप्पणी की सहायता से ही इस सांस्कृतिक तथ्य को समझाना पडता है।

भारतीय आचार-विचार से जुडी शब्दावली का अनुवाद जब एक विषम संस्कृति वाले पाठक केलिए किया जा रहा है तो उसकी उचित व्याख्या देना आवश्यक है जिससे उस पाठक के सामने शब्द का पूर्ण अर्थ अभिव्यंजित हो। जैसे 'सौभाग्यवती भव' का अनुवाद अगर 'lucky' या "Be fortunate' के रूप में करें तो वास्तविक अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं हो पाती क्योंकि किसी महिला केलिए 'सौभाग्यवती' विशेषण का प्रयोग किया जाता है जो विशिष्ट सांस्कृतिक अर्थ की अभिव्यंजना करता है। इस शब्द का अर्थ है वह स्त्री जिसका पति जीवित है। अनुवादक को इसका शाब्दिक अनुवाद न करके पाद टिप्पणी की सहायता से ही इस सांस्कृतिक तथ्य को समझाना पडता है।

भारतीय संस्कृति में परिवार-पद्धति में सास-ससुर, चाचा-चाची, नाना-नानी, दादा-दादी, देवर-जेठ आदि संबंधों कापूरा परिचय मिलता है। लेकिन अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा में इन संबंधों केलिए उचित शब्दावली मिलना दुष्कर ही नहीं असंभव भी है। जैसे 'देवर' और जेठ ' शब्द केलिए अंग्रेजी में मात्र 'Brother-in-law' का प्रयोग होता है। परन्तु इनके अलग-अलग अर्थ है। देवर-पति के छोटे भाई और 'जेठ' बडे भाई केलिए प्रयुक्त होते हैं। 'Brother-in-law' शब्द पूर्ण अर्थ को अभिव्यक्त करने में असफल रहा जाता है।

खान-पान की सामाग्री के अनुवाद की समस्या भी सांस्कृकि तत्वों के सन्दर्भ में हम देख सकते हैं। अपनी संस्कृति और भौगोलिक स्थिति के अनुसार हर देश का, समाज का अपना खान पान होता है। प्रायः जैसी संस्कृति वैसा ही खान-पान दिखाई देता है।

भारत जैसे विशाल भू-भाग में किस्म-किस्म के खान-पान मिलते हैं और उसकेलिए दूसरी भाषा में शब्दावली मिलना कठिन और असंभव भी है। जैसे 'रोटी' , 'दाल', 'रायता' आदि शब्द। अंग्रेजी भाषा में इनके लिए उचित पर्याय नहीं मिलते। ये शब्द अनुवाद की सीमा से बाहर हैं।

भारतीय समाज में पूजा-पाठ का अपना विशेष महत्त्व है। 'मूर्ति पूजा', 'आरती', 'प्रसाद', 'मधुपर्क', 'दीप', 'नैवेद्य' आदि शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। अंग्रेजी अथवा अन्य विदेशी भाषा में इन शब्दों को उतार पाना कठिन है। उसी प्रकार व्रत-उपवास का प्रचलन भी भारतीय संस्कृति में विशेष महत्त्व रखता है। हिन्दू धर्म में 'एकादशी' व्रत है जिसका मूल अर्थ है प्रत्येक पक्ष की ग्यारहवीं तिथि। अन्य किसी भी विदेशी भाषा में इस शब्द का उचित पर्याय मिलना कठिन है। इन शब्दों को उसी प्रकार देकर पाद-टिप्पणि देना ठीक है।

जैसा देश वैसा वेश। वेशभूषा भी एक ऐसा सांस्कृतिक घटक है जिसमें विविधता पाई जाती है। 'साडी ', 'धोती', 'कुरता' आदि भारतीयों की एसी वेश-भूषा है जिसकेलिए विदेशी भाषा में सही पर्याय नहीं मिलता। पाश्चात्य संस्कृति में 'मंगलसूत्र' पहनने की प्रथा नहीं है और इसीकारण से इसकेलिए शब्द न मिलना स्वाभाविक ही है। प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति के अनुसार वेशभूषा रहा करती है और अनुवाद में वेशभूषा की यह शब्दावली समस्या बनती है।

भारतीय संस्कृति अपने संस्कारों केलिए विशेष महत्त्व रखती है और षोड्श संस्कारों का प्रमुख स्थान है जो गर्भावस्था से ही शुरू होता है। जातकर्म, नामकरण, यज्ञोपवीत आदि संस्कारें केलिए अंग्रेजी जैसी लक्ष्य भाषा में पर्याय खोजना अत्यन्त दुरूह बनता है। विवाह संस्कार संस्कृति का अभिन्न घटक है। विवाह में कई रीतियाँ भी प्रचलित हैं। जो संस्कृति यहाँ प्रचलित है वह कहीं और नहीं मिलती। विवाह के संदर्भ में ऐसे कई शब्द हैं जैसे 'माँग भरना', 'पाणि ग्रहण' , 'आरती उतारना', 'अर्घ्य देना' आदि जोकि भारतीय संस्कृति से संबंधित हैं। पाश्चात्य संस्कृति में इस संस्कार से उपर्युक्त शब्दों केलिए लाख कोशिश करने पर भी शब्द नहीं मिलते और यह स्रोत भाषा के

अनुवाद में सांस्कृतिक समस्या बन जाती है। अंत्योष्टि संस्कार भी प्रत्येक संस्कृति के साथ बदलता रहता है। भारतीय संस्कृति से जुडी शब्दावली है 'तर्पण', 'श्राद्ध', 'दशगात्र-विधान', 'दानदक्षिणा देना' आदि जिनकेलिए अंग्रेजी जैसी लक्ष्य भाषा में उचित पर्याय निकाल पाना अत्यन्त कठिन है। ऐसे कई विधि विधान हर संस्कृति और प्रत्येक समाज के अपने हुआ करते हैं जिन्हें लक्ष्य भाषा में समान रूप से लाना कठिन होता है।

इस प्रकार सांसकृतिक संदर्भों का अनुवाद अत्यन्त कठिन एवं जटिल कहा जा सकता है। 'रामचरितमानस' में भारतीय संस्कृति से संबंधित ऐसे कई संदर्भ हैं जिनका अनुवाद एटकिन्स ने अंग्रेजी प्रस्तुत किया है। यह अनुवाद मूल की अपेक्षा खांटा ही रहा है और सांस्कृतिक संदर्भों की थाह इस अनुवाद से मिलना अत्यन्त कठिन है।

भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताएँ

भारतीय संस्कृति मानव जीवन की ऊर्जा के मूल स्रोत को खोजती है और उसके साथ प्रवाहित होती है। हमारे देश की जलावायु, भौगोलिक संरचना, प्राकृतिक संपदा, वानस्पतिक समृद्धि आदि के साथ मनुष्यों का रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार आदि संबद्ध रहे हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति को संसार में सर्वदा सराहा जाता है और उसे सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वव्यापी माना जाता है।

भारतीय धर्म, दर्शन, साहित्य, धर्मपरता, आध्यात्मिकता, कर्मफल, पुनर्जन्मवाद , सर्वेसुखिन:सन्तु, वसुधैव कुटुम्बकम् आदि विशेषताओं के कारण भी भारतीय संस्कृति अन्य संस्कृतियों से अलग मानी जाती है। अगर, इन विशेषताओं को पृथक्-पृथक् लें तो इसका स्पष्ट उल्लेख अभिव्यंजित हो जाता है।

भारतीय संस्कृति में 'धर्म' शब्द की अभिव्यक्ति कई अभिव्यंजनाओं के साथ जुडी है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के अभ्युदय केसाथ आध्यात्मिक प्रगति को उसके आचार-विचार उसका कल्याण और उत्कर्ष को ही धर्म कहा जाता है। 'धर्म' वह तत्त्व है जो भारतीय संस्कृति के अणु-अणु में व्याप्त है। 'आध्यात्मिकता' भारतीय संस्कृति का ऐसा

घटक है जिसकी अपनी मौलिकता है। अध्यात्म से तात्पर्य आत्मा का चिंतन है और इस दृष्टि से आध्यात्मिकता का मुख्य लक्ष्य मानव का आत्मिक उत्कर्ष है। 'अवतारवाद' का भारतीय धार्मिक ग्रंथों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। विष्णु द्वारा समय-समय पर अवतार लेने का उल्लेख धार्मिक ग्रथों में मिलता है। गीता में कहा गया है-

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि-र्भवति भारत।
अभ्युत्थान-मधर्मस्य तदात्मानं सृजामयहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥"[6]

यही विश्वास भारतीय संस्कृति में बडा महत्त्व रखता है। और इसी विश्वास के कारण भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषता भी है। पुनर्जन्मवाद पर भी भारतीयों का विश्वास रहा है। यह व्यक्ति के सत् और असत् पर ही आधारित है। मनुष्य को अपने कर्मों का फल भोगना पडता है, इस सिद्धान्त पर कर्मवाद का विश्वास टिका हुआ है। भारत की सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति को अपने मुख्य कर्त्तव्यों को भली-भांति संपन्न करने के उद्देश्य से चार आश्रम प्रस्थापित किए गए। भारतीय संस्कृति में जिस लोक जीवन का विधान किया गया वह पुरुषार्थ-सिद्धान्त के नाम से अभिहित है और ये जीवन के चार आधार भूत स्तंभ है धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। इसका उद्देश्य अपने कर्त्तव्य कर्मों को धर्मपूर्वक संपादित कर पूर्ण आयु पर्यन्त मोक्ष प्राप्त करना है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष एक दूसरे के पूरक माने गए हैं। इसमें वर्णाश्रम धर्म का भी प्रमुख स्थान है। वर्णव्यवस्था भारतीय समाज में आर्य समाज के अन्तर्गत आती है। प्रत्येक व्यक्ति की जाति के आधार पर इसे विभाजित किया जाता था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इनके मूल दो वर्ग थे शिल्पी वर्ग और दास वर्ग। खेती, पशुपालन, तप और वैदिक मन्त्रों की रचना ब्राह्मण के मुख्य कार्य थे। क्षत्रिय का मुख्य कर्त्तव्य राष्ट्र में सुख-शांति की

6. श्रीमद्भगवत् गीता, 4/7-8

स्थापना करना था। कृषि, पशुपालन और व्यापार वैश्य के प्रमुख व्यवसाय थे। शूद्रों में शिल्पी वर्ग शिल्प बनाते थे और दास वर्ग अन्य जातियों की सेवा करते थे।

उसी प्रकार रहन-सहन के अन्तर्गत भोजन-वस्त्र, श्रृंगार-पद्धति, मनोरंजन आदि का अपना अलग महत्त्व है साथ ही उद्योग तथा व्यापार भी संस्कृति का वाहक है।

वैदिक साहित्य में हमें 'यज्ञ संस्कृति' का पूरा परिचय मिलता है जो भारतीय संस्कृति में विशिष्ट स्थान रखता है। इसके दो प्रकार थे- नित्य और नैमित्तिक। संस्कारों का विशेष महत्त्व जीवन में है। संस्कारों में विभिन्न अवसरों पर किसी व्यक्ति की उन्नति और मंगल की कामना की जाती है। भारतीय संस्कृति में षोडश संस्कारों का विशेष स्थान है। इसमें 'गर्भाधान संस्कार' से लेकर अंत्योष्टि संस्कार तक को अपनाया गया है। इन्हीं विशेषताओं के कारण भारतीय संस्कृति विश्व की अन्य संस्कृतियों से विशिष्ट मानी जाती है।

मानस में चित्रित सांस्कृतिक प्रसंग और उनका अनुवाद

तुलसीदास का 'रामचरितमानस' अपने युग की संस्कृति को चित्रित करनेवाला प्रतिनिधि काव्य है। समग्र भारत की एक मूलभूत संस्कृति है जो आर्य, द्रविड़, आदिवासी आदि विविध संस्कृतियों केसमन्वय का परिणाम है। किसी भी देश का साहित्यउस देश का पूरा परिचय प्रस्तुत करता है। 'मानस' भारतीय साहित्य में इसलिए विशिष्ट स्थान रखता है क्योंकि यह महाकाव्य भारतीय संस्कृति के व्यापक रूप को चित्रित करने के साथ लोक संस्कृति, प्रादेशिक विशेषताओं का चित्रण भी करता है।

भारतीय संस्कृति के हर एक तत्त्व का उल्लेख मानस में हमें प्राप्त होता है। मानसकार ने गीता से प्रभावित होकर उससे प्रेरणा प्राप्त करके अवतारवाद मीमांसा को ग्रहण किया और भारतीय संस्कृति का पूरा परिचय दिया। कर्मवाद, पुनर्जन्मवाद, आध्यात्मिकता का वर्णन भी मानस में हमें मिल जाता है। भारतीय संस्कृति से जुड़े इन

तत्त्वों से संबंधित शब्दावली पूर्णतः भारतीय है और इसी कारण से किसी भी विदेशी भाषा में इसकेलिए शब्द मिलना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी है। आगे उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण किया गया है।

'नवधा भक्ति' का उल्लेख हमारे शास्त्रों में किया गया है जोकि इस प्रकार है- श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चअन, वंनद, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन । भक्त श्रद्धापूर्वक भक्ति से भगवान के प्रति समर्पित होता है और शांति का अनुभव करता है। मानस में राम और उनके भक्तों के संदर्भ में 'नवधा भक्ति' का वर्णन हमें मिलता है। पुरुषार्थों का वर्णव्यवस्था दर्शअन आदि तत्त्वों से भी प्रभावित होकर मानसकार ने अपने महाकाव्य में इसे जोड दिया है।

संस्कृति के बाह्य स्वरूप जैसे वस्त्राभूषण, खान-पान, संस्कार तथा मनोरंजन, उत्सव, त्यौहार, रिश्ते-नाते, आचारण-व्यवहार का पूर्ण चित्रण 'मानस' में मिल जाता है जो भारतीय संस्कृति का वाहक बनकर चलता है। इसी कारण से अंग्रेजी जैसी लक्ष्य भाषा जो अलग संस्कृति को पनाती है भारतीय संस्कृति से जुडी इस शब्दावली को लक्ष्य भाषा में उसी अर्थ गहनता, बारीकियाँ और भाव के साथ अभिव्यंजित करने में असफल रही है। भारतीय संस्कृति के इन शब्दों को और अनूदित शब्दों को लक्ष्य भाषा में किस प्रकार रखा गया है इसका उल्लेख आगे किया जा रहा है जिससे यह स्पष्ट रूप से व्यक्त हो जाता है कि एक संस्कृति को दूसरी भिन्न संस्कृति में लाना अनुवादक केलिए बहुत ही दुरूह कार्य है।

अवतारवाद

भारतीय संस्कृति में अवतारवाद की कल्पना अत्यंत रोचक, आकर्षक एवं मनोहारी है। मानस में तुलसी 'गीता' से प्रेरित होकर 'राम' के अवतार के संदर्भ में इस प्रकार कहते हैं-

"जब जब होइ धरम कै हानी । बाढहिं असुर अधम अभिमानी ।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी । सीदहिं बिप्रधेनु सुरधरनी ।।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा । हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ।।
असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु ।।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु ।। [7]

अवतारवाद का उल्लेख भारतीय धर्म ग्रन्थों में अत्यंत प्राचीन काल से मिलता है । ईश्वर द्वारा विशिष्ट कार्य के हेतु मनुष्य या किसी संसारी प्राणी का शणीर धारण करना ही इसका मूल आधार है । गीता में कहा गया है-

"यदायदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थान मधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।। [8]

इससे यही उल्लेख मिलता है कि ईश्वर अपनी इच्छा से दुष्कृतों के विनाश और साधुओं के परित्राण केलिए अवतार लेता है ।[9]

'प्रभु धरि बिबिध सरीरा' में अवतारवाद से भगवान का नूतन शरीर धारण करने की ओर इशारा मिलता है । अवतारवाद पर भारतीयों का जो विश्वास है वह पश्चिम में नहीं है । इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"Whenever religion and goodness are waning
When devilish proud evil power is gaining,
Whenever the earth, Brahmans, cows and the gods

---

7. मानस, प/120/3-4, 1/121
8. गीता 4/7-8
9. भारतीय संस्कृति कोश, पृ.67-68

Are threatened with wrong and face tyrannous odds,

Tis then he some bodily form must assume

The godly to save and all evil consume

The gods he establishes, demons destroys,

And the bridge of the scriptures restores;

That's why he takes birth; thus his glory and grace

Once again o'er the whole earth he pours."[10]

सत् की स्थापना और असत् का नाश ही हिन्दू विश्वास का आधार है । 'प्रभु धरि बिबिध सरीरा' इसी विश्वास पर आधारित है । इसका अनुवाद 'he some bodily form must assume' दिया है जो सभी प्रकार से असफल माना जाता है क्योंकि इसमें मूल भाव का संप्रेषण नहीं हुआ है । अर्थ की दृष्टि से यह अनुवाद सही है लेकिन एक विजातीय पाठक इसके सांस्कृतिक तत्त्व से परिचित न होने के कारण दुविधा में पड सकता है क्योंकि अवतारवाद का यह सिद्धांत पश्चिम में नहीं है ।

अवतारवाद से संबन्धित कई कहानियाँ हमारे पुराण कथा-साहित्य में प्राप्त हैं । 'दसशावतार' प्रसंग में भगवान विष्णु का संसार में अवतार लेने की कथा प्रचलित है । मानस में मानसकार इस पर कहते हैं-

"हरि अवतार हेतु जेहि होई । इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥"[11]

इसका अनुवाद है-

"Why God becomes incarnate, tho' 'tis a fact."[12]

हरि का अवतार किस कारण होता है? उसके अनेक कारण हो सकते हैं । हमारे पुराणों और धार्मिक ग्रंथों में विष्णु अवतार के कारण बताये गये हैं । लक्ष्य भाषा के पाठक इस कथा से या इन बातों से अवगत नहीं हैं । अनुवादक ने अनुवाद में कहीं भी इसका

---

10. The Ramayana of Tulsidas Vol.I, Book I, Ch.121, Doha 116, Pg.101
11. मानस, 1/120/1
12. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 121, Pg.100

संकेत नहीं किया है। यहाँ 'हरि' विष्णु के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है इसके लिए मात्र 'God' दिया है। इससे मूल अर्थ व्यक्त नहीं होता। अवतारवाद वैष्णव भावना की उपज है इसलिए 'हरि' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'God' कोई भी ईश्वर हो कता है। इस शब्द के अतिरिक्त अंग्रेजी में दूसरे किसी शब्द में इसकी अभिव्यक्ति असंभव है। इसी कारण से यह एक समस्या के रूप में लिया जा सकता है जहाँ मूल भाषा में व्यक्त बातों का ठीक अर्थग्रहण होता है वहीं एक विभिन्न संस्कृति में रहनेवाला इसे स्पष्ट समझ नहीं सकता। भारतीय संस्कृति से संबंधित बातों को अनुवाद के माध्यम से अभिव्यक्त करने का अर्थ मात्र मूल का शब्दानुवाद या भावानुवाद नहीं बल्कि ऐसे तथ्यों का विवरण है जो पाद-टिप्पणि में देना आवश्यक है। एक और उदाहरण देखिए-

"भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।" [13]

हमारे पुराणों में अवतारवाद का विश्वास स्थान-स्थान पर चित्रित दिखाई पडता है। इसके अनुसार विष्णु के दस अवतार माने गए हैं। हर एक अवतार में विष्णु याने ईश्वर नया शरीर धारण करता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार अवतारवाद का बडा ही महत्त्व है। गीता[14] में भी इसका विवरण मिलता है। इसके अनुसार सज्जनों की रक्षा और दुर्जनों के नाश केलिए समय-समय पर भागवान अवतार ग्रहण करते रहे हैं। 'भगत हेतु' में गीता के सज्जनों के परित्राण की ओर संकेत किया गया है। उसी प्रकार 'तनु धरेउ' में भिन्न अवतारों में भगवान के नूतन शरीर धारण करने की ओर संकेत मिलता है। भारतीय संस्कृति और अवतारवाद के तत्त्व को जानने वाला व्यक्ति ही इसे ठीक तरह से समझ सकता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"For the sake of those trusting in him Rama took
A form, meanwhile with man to abide."[15]

---

13. मानस, 7/72 (क)
14. श्रीमद्भगवत गीता, 4/7-8
15. The Ramayana of Tulsidas, VolI, Book I, Doha 72, Pg.809

'भगत हेतु' केलिए अनुवादक ने 'for the sake of those trusting in him' अनुवाद दिया गया है जो मूल की दृष्टि से सभी प्रकार से हेय माना जाता है। 'भक्त' का सही पर्याय 'devotee' हो सकता है जिसका प्रयोग अनुवादक ने नहीं किया है। इसी प्रकार 'तनु धरेउ' केलिए 'took a form' कहा है। प्रभाव की दृष्टि से यह असफल ही माना जाएगा। 'तनु धरेउ' में अवतारवाद का जो सांस्कृतिक तत्त्व अभिव्यक्त हुआ है 'took a form' से नहीं मिल किता। पाश्चात्य दृष्टि में अवतार तत्त्व नहीं है इसलिए तुलसी का ऊपर दिया गया अनुवाद अंग्रेजी में किसी भी हालत में उसका मूल अर्थ नहीं दे सकता।

कर्मवाद एवं पुनर्जन्म

कर्मवाद पर आस्था रखने केकारण ही हमारी संस्कृति में निवृत्ति की अपेक्षा प्रवृत्ति पर विशेष बल दिया गया है। हिन्दू धर्म का यहविश्वासहै कि मुष्य जो कर्म करता है उसका फल भोगता है। और कर्मवश विविध योनियों में जन्म लेता है; कर्म से ही उसे सद्‌गति मिलती है। तुलसीदास 'मानस' में कहते हैं-

"काहु न कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सब भ्राता।"[16]

इसका अनुवाद है-

'No man can give sorrow or joy to another;
Its always the fruite of one's own actions, brother.'[17]

कोई भी किसी को सुख-दु:ख का देनेवाला नहीं है। सब अपने ही किए हुए कर्मों का फल भोगते हैं। कर्म-फल दो प्रकार के हैं- सुख तथा दु:ख। ऐसा विश्वास है कि कर्मफल का प्रभाव जन्मजन्मांतर तक बना रहता है। जब तक चित्तवृत्तियों का अत्यंतिक नाश नहीं होता, तब तक जीव को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है। अनुवाद की दृष्टि से अगर इन पंक्तियों का विशलेषण किया जाए तो कहना होगा कि यहाँ भाव और अर्थ की

---

16. मानस- 2/91/2
17. The Ramayana of Tulsidas, VolI, Book II, Ch.92, –Pg.345

दृष्टि से अनुवाद सफल हुआ है । और अगर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर इन पंक्तियों का विश्लेषण किया जाए तो भारतीय संस्कृति का पूरा परिचाय जो मूल में है वह अनूदित पंक्तियों में प्राप्त नहीं है और साथ ही भारतीय विश्वासों का उल्लेख जो मूल पंक्तियों में मिलता है अनुवाद में नहीं है । कर्मवाद भारतीय संस्कृति का जो मूल मंत्र है वह 'the fruit's i. of one's own actions' से अभिव्यक्त नहीं हो सकता क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति में कर्मवाद में विश्वास नहीं है । इस अनूदित कृति को अगर कोई अंग्रेज पढे जो भारतीय संस्कृति या विश्वासों से परिचित न होता इसका सही अर्थ ग्रहण नहीं कर सकता ।

पुराणों में पुनर्जन्म का चित्रण हम स्थान स्थान पर देख सकते हैं । भारतीय विश्वास के अनुसार पुर्नजन्मवाद का सिद्धांत कर्मवाद से जुडा हुआ है । 'रामचरितमानस' में भी पुनर्जन्म का वर्णन हमें सती-पार्वती, रावण आदि के जन्मों के सन्दर्भ में मिलता है । पार्वती के जन्म से संबंधित ये पंक्तियों देखिए-

"जनमीं प्रथम दच्छ गृह जाई । नामु सती सुंदर तनु पाई ॥

++ ++ ++

जनमि तुम्हरे भवन । निज पति लागि दारुन तपु किया ।"[18]

As dauaghter of Daksha to earth once she came,
Her beauty unrivalled and Sati her name

xx xx xx

Now again come to earth, in your house she took birth"[19]

पार्वती का पूर्वजन्म सती के रूप में दक्ष के घर हुआ । अपने पिताजी से अपमान पाकर उसने अपना शरीर अग्नि को समर्पित किया । दूसरे जन्म में पार्वती के रूप में शरीर धारण किया और शिव को पाने केलिए घोर तपस्या की । ऊपर की पंक्तियों में पार्वती के जन्मांतरों की कथा सूचित की गई है । इन पंक्तियों का अनुवाद अंग्रेजी में जो प्रस्तुत किया गया है मूल के प्रभाव को जैसे के तैसे नहीं दिखाता । मूल पंक्तियों में यह बात

---

18. मानस-1/97, छ.1/97
19. The Ramayana of Tulsidas Vol.I, Book I, Ch.98, Chhand 12 Pg.82

जितनी सहजता और प्रभाव पूर्ण रूप से अभिव्यक्त की गयी है वह लक्ष्य भाषा में प्रभावात्मकता की दृष्टि से सफल नहीं मानी जाएगी। 'अब जनमि तुम्हरे भवन' में पुनर्जन्मवाद का जो सांस्कृतिक तत्त्व अभिव्यक्त हुआ है 'In your house she took birth' में नहीं मिलता। भारतीय संस्कृति और पुनर्जन्मवाद के तत्त्व को जाननेवाला व्यक्ति ही इसे ठीक तरह से समझ सकता है। पुनर्जन्म में विश्वास न रखनेवाला अंग्रेज व्यक्ति न इसे समझ सकता है और न ही इसमें विश्वास कर सिकता है। इसीप्रकार 'अब जनमि तुम्हरे भवन' का 'Now again come to earth' में भी यही बात देखी जा सकती है। अनुवादक ने अनुवाद तो प्रस्तुत किया है लेकिन यह अनुवाद मूल के भाव को पूर्ण रूप से उतार नहीं सका है। इसका मूल कारण सांस्कृतिक भिन्नता ही है।

रावण, काकभुशुण्डि आदि शापग्रस्त धरती पर जन्म लेते हैं। अपने कुकर्म के कारण ही ये इस धरती में जन्म लेते है-

"तासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना। कौतुकनिधि कृपाल भगवाना॥

तहाँ जलंधर रावन भयऊ। रन हति राम परम पद दयऊ॥"[20]

इसका अनुवाद है-

'Lord Vishnu accepted her curse and its power
He's playful in kindness was so in that hour
Jalandhar as Ravan by Rama was slain
And thus in this third birth could freedom obtain.'[21]

अंतिम पंक्ति में मानसकार 'जलन्धर' के जन्म का उल्लेख करते हैं। 'राम परम दयऊ' का अर्थ युद्ध में मारकर उसेपरम पद (अपना धाम, मोक्ष) दिया, जिसका भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। अनुवादक ने इसका अनुवाद 'third birth could freedom obtain' से मूल के अनुकूल अर्थ को प्रस्तुत नहीं किया है। यहाँ 'राम परम पद दयऊ' का अर्थ है राम रावणको शाप से मुक्त करके अपना धाम देते हैं परन्तु अनुवाद में 'could

---

20. मानस- 1/123/1
21. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Ch.124, Pg.102

freedom obtain' से मूल अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं होती । 'परम पद' भारतीय दर्शन के अनुसार आत्मा परमात्मा का मिलन है । पाश्चात्य दर्शन में उसका सही अर्थ एवं शब्द प्रस्तुत कर पाना असंभव है क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति में पुनर्जन्म या मोक्ष संबंधी विश्वास नहीं है ।

भारतीय संस्कृति में ऐसा विश्वास है कि पति-पत्नी के बीच जन्म-जन्मान्तर का संबंध रहता है, दूसरी कोई संस्कृति इस विश्वास को नहीं मानती । इसीकारण एक भिन्न संस्कृति का पाठक बिना पाद-टिप्पणियों के इस तथ्य को समझ नहीं पाता । मानस में सती-शिव-पर्वती के संबंध इसका स्पष्ट उदाहरण है-

"अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तपु किया ।"[22]

'Now again come to earth in your house she took birth,
And her lord to win much she endured.'[23]

भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी का गहरा रिश्ता है और यह विश्वास है कि सातों जन्मों तक इनका यह रिश्ता बना रहता है । शिव सती के पूर्वजन्म के पति थे और दूसरे जन्म में भी पार्वती शिव को पाने केलिए घोर तपस्या करती है । 'निज पति लागि दारुन तपु किया' में यह बात स्पष्ट रूप से भारतीय संस्कृति की इस बात की अभिव्यक्त करता है । 'निज पति लागि' केलिए अनुवादक ने 'And her lord to win' अनुवाद दिया है । मूल में यह बात जितनी सहजता से व्यक्त हुई है अनुवाद में प्रभावात्मकता की दृष्टि से सफल नहीं मानी जाएगी । भारतीय संस्कृति से जुडे इस तत्व को जाननेवाला व्यक्ति ही इसे ठीक तरह से समझ सकता है । पाश्चात्य संस्कृति में इस प्रकार का विश्वास नहीं हैं और इसलिए इस पर विश्वास भी नहीं करते । अनुवादक ने मूल पंक्ति का अनुवाद तो प्रस्तुत किया है लेकिन अनुवाद मूल अर्थ और इसके पीछे छिपे सांस्कृतिक तत्त्व को व्यक्त नहीं कर पाया है ।

---

22. मानस- 1/97 (छ)
23. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chhand 12, Pg.82

वर्णाश्रम व्यवस्था

हमारे वेदों, संहिताओं आदि में भारतीय समाज का चार वर्णों में विभाजन दिखाया गया है। समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का विभाजन दिखाया गया है। यह विभाजन कर्म के अनुसार किया गया था। मानस में वर्णाश्रम व्यवस्था की ओर संकेत मिलता है-

'बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।

चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहि भय सोक न रोग॥'[24]

वर्ण व्यवस्था भारतीय संस्कृति में समाज संगठन का महत्त्वपूर्ण आधार थी। वैदिक साहित्य में 'वर्णाश्रम व्यवस्था का चित्रण दिखाई देता है। व्यक्ति के वर्ग और जाति के अनुसार समाज में उसे चार वर्णों में विभाजित किया गया- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण पूजापाठ, क्षत्रिया देश की रक्षा, वैश्य व्यापार, पशु-पालन और कृषि करते थे। शूद्र इन तीनों वर्णों की सेवा करते थे। हर व्यक्ति अपने वर्ण के अनुसार कर्मरत थे और इसका पालन करते थे। ऊपर की पंक्ति में इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है। 'बरनाश्रम निज निज धरम निरत' में इसका संकेत मिलता है। उसीप्रकार 'चलहिं' सदा पावहिं सुखहिं नहि भय सोक न रोग' इस व्यवस्था का सही पालन करने पर समाज में सुख और शांति का वातावरण बना रहता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"There was no sickness, sorrow or fear but all found
In their path way true pleasure and beauty,
By happily following, as scripture teaches,
The path of their caste orderd duty."[25]

'बरनाश्रम निज निज धरम निरत' केलिए अनुवादक ने 'the path of their caste – orderd duty' अनुवाद दिया है जो मूल के भावों के अभिव्यक्ति में असफल माना

24. मानस- 7/20
25. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book VII, Doha 21, Pg.770

सकते हैं। 'बरनास्रम' केलिए अंग्रेजी भाषा में उचित शब्दावली मिलना कठिन है और अनुवादक इसकेलिए 'Their caste –orderd duty' देकर मूल अर्थ के साथ न्याय नहीं कर पाया है। भारतीय संस्कृति में सामाजिक व्यवस्था को चित्रित करने वाला या तत्त्व पाश्चात्य संस्कृति में नहीं मिलता और इसी कारण से अंग्रेजी में यह व्यवस्था किसी भी हालत में उसके मूल अर्थ को प्रस्तुत नहीं कर पाती।

ब्राह्मण

'ब्राह्मण' का समाज में एक स्थान है उसीप्रकार अन्य जातियों काभी। ब्राह्मण का प्रमुख कर्म 'यज्ञ' पूजा पाठ आदि माना जाता था। वे सत्वगुण प्रधान थे।

"करिहहिं बिप्र होम मख सेवा। तेहिं प्रसंग सहजेहिं बस देवा।"[26]

'Of trouble, the brahmans to you will submit;
In turn they will serve in their works sacrificial,
The gods they'll win to you and make beneficial"[27]

वर्णव्यवस्था में 'ब्राह्मण' का कार्य हवन, यज्ञ और पूजा-पाठ करना है और यही वर्णाश्रम धर्म पद्धति है। तुलसी ने रामचरितमानस में ब्राह्मण धर्म की और संकेत करते हुए मूल पंक्तियों को प्रस्तुत किया है। लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने मूल का शब्दानुवाद किया है और ब्राह्मण धर्म को न समझते हुए उसके ठीक भाव को लिए बिना यहाँ अनुवाद किया है। 'ब्राह्मण' भारत का जाति विशेष है और इसीकारण पाश्चात्य पाठक इस जाति विशेष या उनके द्वारा किए जाने वालेकर्म सेपरिचित नहीं है। इस अनूदित कृति को अगर अंग्रेजी पाठक पढे तो वह इसीकारण से इसका सही अर्थ पकडा नहीं पाएगा।

'होम' और 'मख' (यज्ञ) का भी भारतीय संस्कृति में विशेष महत्त्व है। वैदिक वाङ्मय में 'हवन' और यज्ञ की महिमा का बहुत अधिक गुणगान किया गया है। इनका

26. मनस- 1/168/1
27. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, BookII, Chaupai 169, Pg.133

उद्देश्य मानव मंगल है क्योंकि इससे वातावरण शुद्ध होता है तथा धरती एवं आकाशीय तत्त्वों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। हवन में उपयोग किए जानेवाली सामग्री अनेक रोगों को दूर करती है और साथ ही शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक कल्याण भी इससे होता है। अनुवाद में 'हवन' शब्द को अनुवादक ने छोड़ दिया है। 'यज्ञ' केलिए 'Sacrificial' शब्द का अर्थ प्रयोग किया गया है। मूल अर्थ की अभिव्यक्ति तो होती है लेकिन सांस्कृतिक दृष्टि से 'यज्ञ' का पूरा अर्थ इस शब्द से प्रकट नहीं होता।

शूद्र

"जन्मत भएउँ सूद्र तनु पाई।"[28]

वर्णव्यवस्था में सबसे निम्न वर्ग है 'शूद्र जाति' जो उच्च वर्ग के लोगों की सेवा करते थे। भारतीय संस्कृति में वर्णव्यवस्था पर बडा जोर दिया जाता था। अनुवादक ने मूल पंक्ति का अनुवादा इस प्रकार किया है-

"At that time in Kosala came I to birth
As a Shudra, the class known for mere servile worth"[29]

यद्यपि अनुवादक ने मूल पंक्ति का अनुवाद किया है वह मूल अर्थ को समझे बिना किया गया है। 'तनु पाई' को अनुवादक ने छोड दिया है और 'शूद्र' जाति और उसकेकर्म का वर्णन एक ही पंक्ति में दे दिया है। पाश्चात्य पाठक भारत में प्रचलित वर्णव्यवस्था को इन पंक्तियों से पूर्ण रूप से समझ नहीं पाता क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति में वर्णव्यवस्था पद्धति नहीं है।

क्षत्रिय

अंग्रेजी जैसी भाषा में 'क्षत्रिय' केलिए उचित शब्द मिलता कठिन है। 'मानस' के अंग्रेजी अनुवाद में अनुवादक ने 'क्षत्रिय' शब्द का ही प्रयोग किया है और इसकेलिए कोई पाद-टिप्पणि भी नहीं दी है। देखिए-

---

28. मानस- 7/96/1
29. The Ramayana of Tulsidas Vol.II, Book VII, Ch.95, Pg.830

"छत्रियतन् धरि समर सकाना। कलकलंक तेहि पावर आना।"[30]

क्षत्रिय का अर्थ है रक्षा करने वाला। इस वर्ण का प्रधान कर्त्तव्य था - प्रजा की रक्षा करना, वेदाध्यायन करना आदि। भारतीय चिन्तन में व्यक्ति को उन्नत बनाने केलिए वर्णव्यवस्था पद्धति को अपनाया गया और इसे ठीक तरह से समझने वाला व्यक्ति ही इसके पूर्ण अर्थ को समझ सकता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"If one bom Kshatriya shrinks from the fight,

He's a shame to his clan and a cowardly wight"[30a]

अंग्रेजी में 'क्षत्रिय' शब्द केलिए उचित पर्याय न होने के कारण अनुवादक ने उसी शब्द का प्रयोग किया है। और साथ ही 'shrinks from the fight' देकर चुप हो गए हैं। इस बात को लक्ष्य भाषा पाठक तब तक पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर सकता जब तक वह भारतीय चिन्तन में प्रचलित वर्णव्यवस्था का अध्ययन करेगा।

निम्नवर्ग

समाज में ऐसे वर्ग भी पाए जाते थे जो निचले वर्ण में आते थे। भारतीय संदर्भ में इनके विशेष नाम हैं परन्तु विदेशी भाषाओं में इसे व्यक्त करना कठिन है, क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति में ऐसे विभाग नहीं हैं। 'मानस' में 'उत्तरकाण्ड' में इसका स्पष्ट विवरण मिलता है-

"जे बरनाधम तेलि कुम्हारा। स्वपच किरात कोल कलवारा।"[31]

इधर तेलि 'तेली' केलिए, 'कुम्हारा' कुम्हार, 'स्वपच' चाण्डाल, 'किरात' भील जाति केलिए 'कोल' कोल और 'कलवारा' कलवार जाति के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अनुवाद में इन मूल शब्दों का शब्दानुवाद दिया गया है-

30. मानस- 1/283/2
30a. The Ramayana of Thulsidas (Vol.I) Book I Ch.288,Pg.217
31. मानस-7/99/3

"Men low born the - oil man, the earthen ware – maker,

Wild jungle men, dog– keeper, sellers of liquor".[32]

वर्णव्यवस्था में चार वर्णों के अलावा निम्न वर्ग का भी संकेत मिलता है। 'तेली' केलिए oil man 'कुम्हारा' का earthen ware – maker, 'स्वपच' का dog– keeper, किरात, भील, कोल केलिए 'wild jungle men' और 'sellers of liquor' अनुवाद रख दिया है। जब तक पाश्चात्य पाठक पृथक-पृथक कर इन जातियों को समझता नहीं वह इन लोगों को समझ नहीं सकता और न ही इन वर्गों द्वारा किए जाने वाले कार्यों को। इससे यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि लक्ष्य भाषा पाठक इसके सही अर्थ को पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पाता।

वर्ण आश्रम

भारतीय वर्णव्यवस्था के अनुसार वर्ण आश्रम का भी चित्रण वेदों में दिखाई देता है जिसका विवरण तुलसीदास ने मानस में किया है-

"जिमि हरि भगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि।"[33]

वेदों में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक चार अवस्थों का चित्रण मिलता है जोकि इसप्रकार है- 'ब्रह्मचर्य', 'गृहस्थाश्रम', 'वानप्रस्थ' और 'संन्यास'। हर अवस्था में उसका अलग अलग कर्त्तव्य होता है जिससे वह धर्मपूर्वक संपादित कर पूर्ण आयु पर्यन्त 'मोक्ष' प्राप्त कर सके। भारतीय संस्कृति 'वर्णाश्रम' धर्म और उससे जुडे तत्त्वों पर बडा महत्व रखता है। उपर दिए गए मूल पंक्ति का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"As whatever their stage of life-finding the true,

Love of God, men all other things spurn."[34]

अनुवादक ने आश्रमी चारि' का अनुवाद 'Stage of life' मूल अर्थ का संप्रेषण नहीं करता, मात्र 'जीवन की अवस्था' अर्थ देता है। भारतीय सांस्कृतिक शब्दावली से जुडे

---

32. The Ramayana of Tulsidas, Vol II, Book VII, Cahupai 98, Pg.832
33. मानस- 4/16
34. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book IV, Doha 16, Pg.577

इस शब्द केलिए अंग्रेजी भाषा में उचित शब्द न मिलने के कारण अनुवादक ने इसका भावानुवाद किया है। पाश्चात्य संस्कृति में 'वर्णाश्रम पद्धति' नहीं है इसलिए 'मानस' में दिए गए सांस्कृतिक तत्त्व को अंग्रेजी जैसी लक्ष्य भाषा में अभिव्यंजित करना दुष्कर है। और इसी कारण इसका सही अर्थ ग्रहण नहीं किया जा सकता।

पुरुषार्थ

भारतीय संस्कृति में मनुष्य जीवन में वर्णाश्रम की तरह चार पुरुषार्थों का भी महत्त्व है। धर्म, अर्ध, काम और मोक्ष। धर्म का पालन करते हुए मानव को अर्थ एवं काम की प्राप्ति होती है और अंत में उसको मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिए। भारत की सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति को अपने मुख्य कर्त्तव्यों को भली भाँति संपन्न करने के उद्देश्य से ये चार तत्त्व प्रस्थापित किए गए। ये व्यक्ति के दायित्वों को रूपायित करने वाले थे। भारतीय जीवन और संस्कृति के अनुसार ये जीवन के चार आधारभूत स्तंभ है। इनका प्रमुख उद्देश्य यह है कि अपने कर्त्तव्य कर्मों को धर्मपूर्वक अर्थात् नैतिक मूल्यों के आधार पर संपादित करता हुआ मनुष्य अपनी आयु-पर्यन्त मोक्ष प्राप्त कर सके।

'मानस' में चार पुरुषार्थों के सही पालन करने पर 'मोक्ष' की प्राप्ति होती है। इसका विवरण 'मानस' में मिलता है-

"सगुन उपासक संग तहँरहहिं मोक्ष सुख त्यागि॥"[35]

चार पुरुषार्थों में से 'मोक्ष' के छः प्रकार माने गए हैं- 'सालोक्य' (इष्ट देव के पास वास करना), 'सामीप्य' (स्वर्ग में ईश्वर के साथ सामीप्य का अवसर), 'साष्टि' (ईशावरीय शक्ति के साथ सुख-सुविधा का भोग लेना) 'सारूप्य' (ईश्वर का वही रूप पाना), 'सायूज्य' (ईश्वर में लीन हो जाना) औरब्रह्म की पहचान पाना। वेदों में चित्रित इन मोक्ष-सुखों का ज्ञान केवल भारतीय संस्कृति से परिचित व्यक्ति ही ले सकता है। अंग्रेजी में इसका पूरा ाविवरण देना असंभव कार्य है। इसका अनुवाद देखिए-

35. मानस, 4/26

"Let us, therefore, ignoring salvation and comfort
To him all our hearts service give."[36]

मोक्ष सुख त्यागी का 'ignoring salvation and comfort' अनुवाद दिया है। मूल में व्यक्त भाव को पकड पाने में अनुवादक असमर्थ हुआ है और इसी कारण अनुवाद में अर्थ का ठीक प्रस्तुतीकरण नहीं हुआ है और न ही भाव को अभिव्यक्त किया गया। मोक्ष के चार प्रकारों का जो वर्णन मूल में हुआ है वह अनुवाद में नहीं आ सका है। यहाँ मूल में व्यक्त अर्थ को संप्रेषित करने में अनुवादक असफल हुआ है। भारतीय संस्कृति में चित्रित इस बात को अंग्रेजी पाठक किसी भी हालत में उसका मूल अर्थ नहीं दे सकता।

"सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधुसमाज प्रयाग ॥"[37]

भारतीय संस्कृति के चार आधारभूत स्तंभ हैं धर्म. अर्थ काम और मोक्ष। यहाँ 'चारिफल' चार पुरुषार्थों केलिए प्रयुक्त हुआ है। भारतीय संस्कृति की इस विशेषता को अंग्रेजी भाषा में उतार पाना कठिन है। मूल पंक्तियों का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"The man who will hear and perceive mind entralled,
And will bath with his whole heart and soul,
At this fair shrine of saints, in this happy concourse
Shall find wealth, joy and heaven's true goal."[39]

'चारि फल' केलिए 'wealth, joy and heaven's true goal' अनुवाद दिया है जो मूल अर्थ को अभिव्यंजित नहीं करता। 'धर्म'. नैतिकता, सदाचरण, कर्त्तव्य परायणता और दायित्व का द्योतक है, इस शब्द का अनुवाद अनुवादक ने नहीं किया है। 'अर्थ' धन संपत्ति केलिए प्रयुक्त होता है। पुरुषार्थ सिद्धान्त में अर्थ प्राप्ति 'धर्म' के अनुकूल होनी

---

36. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book IV, Doha 26 Pg.584
37. मानस- 1/2
39. The Ramayana of Tulsidas, VolI, Book I, Doha 2, Pg.4

चाहिए जिसकेलिए 'wealth' कहा है जो प्रभाव की दृष्टि से मूल अर्थ के आधार पर सही नहीं है। 'काम' का सामान्य अर्थ इच्छा है। मानव के भावुक जीवन की अभिव्यक्ति को 'काम' नाम दिया गया है जिसकेलिए joy शब्द का अनुवाद मूल अर्थ को किसी भी पहलू से अभिव्यक्त नहीं करता। इन्हीं तीन पुरुषार्थों से ही 'मोक्ष' प्राप्ति हो सकती है। Heaven's true goal मोक्ष का पूर्ण अर्थ प्रस्तुत नहीं करता। अत: 'चारि फल' में जो सांस्कृतिक तत्त्व अभिव्यक्त हुआ है वह 'Shall find joy, wealthand heaven's true goal' में नहीं मिलता। 'प्रयाग' के लिए 'fair shrine' शब्द का अनुवाद ठीक नहीं है क्योंकि 'प्रयोग' भारत के पुण्य तीर्थों में प्रमुख स्थान रखता है और हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है जो गंगा और यमुना के संगम पर बसा हुआ है। साथ ही यह तीर्थस्थानों में बडा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह श्रद्धालुओं केलिएमुक्ति प्रदाता तथा आध्यात्मिक उत्थान तथा नैतिक निखार की प्रेरणा एवं संदेश देता हैं। 'Fair shrine' के प्रयोग से अंग्रेजी पाठक किसी भी हालत में उसका मूल अर्थ और सांस्कृतिक विशेषता को समझ नहीं पाता।

षोडश संस्कार एवं उनके अनुवाद की समस्याएँ

भारतीय संस्कृति में व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जीवन में कई संस्कारों का विधान है जो आत्मा को पवित्र बनाने में सहायक हैं। 'रामचरितमानस' में इन संस्कारों का चित्रण यथा स्थान हुआ है।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता की एक प्रमुख पहचान रीति-रिवाज है जिनका शुभारंभ संस्कारों से होता है। हमारी संस्कृति में माता के गर्भ में आने से लेकर संस्कार शुरू होते हैं। इसके सोलह प्रकार माने जाते हैं। 'व्यासस्मृति' में इन सोलह प्रकार के संस्कारों का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

'गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च।
नामक्रिया निषक्रमोऽन्नप्राशनं वपन क्रिया॥
कर्ण बेधो व्रतादेशो वेदारंभ क्रिया विधि:॥

केशान्तः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्नि परिग्रहः ॥

त्रेताग्निसङ्ग्रहश्चेति संस्काराः षोडशः स्मृताः ॥'[40]

जातकर्म

इन षोडश संस्कारों में शैशव संस्कार प्रमुख रूप से 'मानस' में चित्रित हैं। शिशु के जन्म के अवसर पर किया जाने वाला संस्कार जातकर्म कहलाता है। 'मानस' में राम जन्म पर, जातकर्म अवसर पर, राजा दशरथ 'नंदीमुख श्राद्ध' करके ब्राह्मणों को स्वर्ण, धेनु वस्त्रादि दान देते हैं-

"नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह ॥"[41]

यहाँ पर बच्चे के पैदा होने पर जातकर्म के पहले नादीमुख श्राद्ध का जो विधान है वह पितरों केलिए किया जाने वाला एक विधान है।[42] भारतीय संस्कृति से परिचित व्यक्ति को ही इस शब्द को सुनने पर अर्थ का पता चल जाता है लेकिन इससे न अभिज्ञ व्यक्ति अनवाद का कुछ का कुछ कर बैठता है। मानस में राजकुमारों के जातकर्म से पहले किए गए इस विधान की ओर तुलसी ने संकेत किया हैं। अंग्रेजी अनुवाद में एटकिन्स ने उसी शब्द का प्रयोग ठीक माना है और पारिभाषिक शब्द के रूप में 'नंदीमुख श्राद्ध को ही रखा है-

"The Nandimukh-ancestor rites was gone through,

And all other birth-rites performed."[43]

---

40. भारतीय सांस्कृति पतीक कोश- शोभानाथक पाठक, पृ.327

41. मानस- 1/193

42. A sraddha cermony performed in memory of the Maner, preliminary to any festive occasion such as marriage. The Practical Sanskrit-English Dictionary- V.S, Apte, Pg,541

43. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Doha 191, Pg.152

नांदीमुख श्राद्ध का लिप्यंतरण करके उसे 'ancestor rites' कहकर वे तृप्त हुए हैं लेकिन इस विधान के संबंध में वे चुप हैं और न कोई पाद-टिप्पणी ही अनुवाद में दी गई है।

'जातकर्म' षोडश संस्कारों में से एक है जो बच्चे के जन्म के ग्यारहवे दिन किया जाता है।[44] ऐसा विश्वास है कि बच्चे के जन्म के बाद यह सारी अशुद्धियों को दूर करता है। शिशु के नाल छेदन की क्रिया भी इसी अवसर पर किया जाता है। अनुवाद में जातकर्म केलिए 'all other birth rites' कहकर अनुवादक ने बात को पूरा कर लिया है। लेकिन यह शब्द मूल अर्थ और उसके सांस्कृतिक महत्त्व को चित्रित करने में असफल रहा है।

नामकरन

"नामकरन कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी॥"[45]

"In due time the kind the fit season proclaimed,
And sent for Vashisth that the boys might be named".[46]

शास्त्रों में कहा गया है कि जन्म के ग्यारहवें दिन नवजात शिशु का नामकरण होना चाहिए। माना जाता है कि 'नाम' का मनुष्य के काम पर तथा व्यक्तित्व पर प्रभाव पडता है अत: शिशु के शुभाशुभ के परिप्रेक्ष्य में नामकरण संस्कार किया जाना चाहिए।[47] अनुवादक ने 'नामकरन' का 'named' अनुवाद किया है जो मूल अर्थ और विशेषता जोकि इस संस्कार में अंतर्निहित है पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पाया है।

44. Hindu Manners, customs and ceremonies-Abbe.J.A. Dubois, Ph.174
45. मानस- 1/196/1 (दो)
46. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Ch.202, Pg.154
47. सांस्कृतिक प्रतीक कोश, पृ. 329

चूड़ाकरन

"चूड़ाकरन कीन्ह गुर जाई। बिप्रन्ह पुनि दछिना बह पाई॥"[48]

दीर्घायु, शक्ति औरआनंद प्राप्त करने के उद्देश्य से इस संस्कार का विधान किया जाता है। बच्चे के जन्म के प्रथम वर्ष के अंत में अथवा तृतीय वर्ष के अंत में पुरोहित द्वारा मुंडन संस्कार कराया जाता है जिसमें विविध अनुष्ठानों के साथ बच्चे के सिर से बाल उतारे जाते हैं। इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"In time by the priest all the four heads were shaven"[49]

'चूडाकरन' केलिए 'four heads were shaven' अनुवाद दिया है जो मूल से सभी प्रकार से हेय माना जाएगा क्योंकि 'shaven' शब्द भारतीय विश्वास और संस्कार को व्यक्त करने में असफल हुआ है। पाश्चात्य संस्कृति से आनेवाला पाठक जो इन संस्कारों से अनजान है वह इस संस्कार का और इस शब्द का सही अर्थ ग्रहण नहीं कर सकता।

विद्यारंभ

बच्चे के विद्याध्ययन केलिए प्रारंभ किए जाने वाला संस्कार ' विद्यारंभ या अक्षरारंभ संस्कार' कहा जाता है। पहले विद्याध्ययन केलिए शिष्य अपने गुरु के घर में रहते हुए उनकी सेवा करते हुए ही विद्या का अध्ययन करते थे। इसे सूचित करने केलिए तुलसी द्वारा दी गई इस पंक्ति को देखिए-

'गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई।[50]

48. मानस- 1/202/1
49. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Ch.209, Pg.159
50. मानस- 1/203/2

षोडश संस्कारों में विद्यारंभ संस्कार' का शुभारंभ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। बच्चे के भविष्य केलिए माता-पिता इस संस्कार का शुभारंभ अच्छे मुहूर्त के साथ विधि-विधान के साथ कराते हैं। ब्रह्मचर्य के पालन केलिए भी यह महत्त्व रखता है। पाश्चात्य सभ्यता में 'विद्यारंभ संस्कार' नहीं है जिससे इस संस्कार को समझने में एक अंग्रेजी पाठक को दुरूहता होगी। इसका स्पष्ट संकेत मूल पंक्ति के अंग्रेजी अनुवाद से ही पता चलता है जोकि इसप्रकार है-

"Then they to their teacher's house went for instructions."[51]

यहाँ 'गए पढन' केलिए 'went for instructions' किया गया है। अंग्रेजी में 'instructions' का अर्थ है 'instructing or being instructed' [52] जो विद्यारंभ का पूरा अर्थ नहीं देता। 'पढन' पढने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसका अर्थ शिक्षा प्राप्त करना है। 'Instruct' का अर्थ 'teach a school subject'[53] है, यह मूल अर्थ को व्यक्त नहीं करता और न ही सांस्कृतिक गरिमा को प्रस्तुत करने में यह सफल हुआ है।

विवाह

संस्कारों के अन्तर्गत विवाह संस्कार और अंत्योष्टि संस्कार भी आते हैं। विवाह के साथ कई संस्कार जुडे हुए हैं जैसे पाणिग्रहण संस्कार, सप्तपदी, कुल देवताओं की पूजा आदि। भारतीय संस्कृति से जुडी हुई इन परंपराओं का अनुवाद कष्टसाध्य ही नहीं असंभव भी है। इसका एक उदाहरण है-

"करि होमु बिधिवत् गाँठि जोरी होन लागी भावँरी ।।" [54]

51. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 209, Pg.160
52. The Oxford Advanced learner's Dictionary of current English 3rd Edt. Pg.450
53. The Oxford Advanced learner's Dictionary of current English 3rd Edt. Pg.450
54. मानस- 1/323 छं.4

भारत में विवाह ऐसा संस्कार है जिसमें बहुत सारे विधान जुड़े हैं। हिन्दू विवाह में अग्नि का बहुत बड़ा महत्त्व है जो पवित्रता का प्रतीक है। 'होमु' का अर्थ यहाँ हवन है जिसमें पवित्र अग्नि में घी, दूध, सोम और दाने हव्य होता है। किसी भी शुभ कार्य से पहले हवन करने की प्रथा भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान रखता है। इसमें वर-वधू की रक्षा और समृद्धि की इच्छा की जाती है। दोनों की गाँठ बाँधी जाती है और अग्नि की परिक्रमा सात बार की जाती है। इसका अंग्रेजी अनुवाद है-

"Due offerings made, And wedding knot tied,

Then the rite of encircling proceeded."[55]

भारतीय संस्कारों से जुडी इस शब्दावली केलिए अंग्रेजी जैसे भाषा में शब्द मिलना कठिन है। इसका स्पष्ट संकेत मूल पंक्ति के अनुवाद में हम देख सकते हैं। होम का 'offerings' शब्द केवल हवन के एक पक्ष को सूचित करता है। इस शब्द के प्रयोग से हवन के अन्य पक्ष अंधकार में रह गए हैं। 'हवन' के पीछे जो सांस्कृतिक महत्त्व है वह 'offerings' शब्द में नहीं है। 'गाँठि' केलिए 'wedding knot' मूल अर्थ के पीछे छिपे अर्थ को व्यक्त नहीं करता। वर-वधू का साथ हमेशा रहे यहीं इस प्रथा के पीछे का सांस्कृतिक तत्त्व है जो 'wedding knot' में अभिव्यंजित नहीं होता। 'भाँवरी' केलिए 'encircling' शब्द का अनुवाद किसी भी हालत में मूलअर्थ नहीं देता। 'भाँवरा' वर-वधू के अग्नि की परिक्रमा है जो 'encircling' शब्द में नहीं मिलता। सांस्कृतिक भिन्नता ही इसका कारण है।

जब बाराती लडकी के घर पहुँचते हैं तो द्वार पर लडकी की माँ विवाहित स्त्रियाँ वर की आरती उतारती हैं जहाँ प्रथा के अनुसार मंगल गीत भी गाए जाते हैं ढ

"मैनाँ सुभ आरती सँवारी। संग सुमंगल गावहिं नारी॥"[56]

55. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I Book I, Chhand 3-4, Pg.248
56. मानस- 1/95/1

"And Maina the queen carried out the first rites

The women sang songs and prepared festive lights".[57]

'आरती' का भारतीय संदर्भ में विशेष महत्त्व है। व्यक्ति बुरी नजर से बचे यही इसका एक कारण है। वर के स्वागत केलिए घी के दीप जलाकर वर की अगवानी स्वागत आरती उतारकर की जाती है जिसमें पावनता, आत्मीयता अनुराग आदि के उच्च मानवीय आदर्श उफनते हैं। अंग्रेजी अनुवाद में 'आरती' केलिए प्रयुक्त 'festive lights' किसी भी दृष्टि से मूल अर्थ को व्यक्त नहीं करता और न ही भारतीय संस्कृति का छाप छोडता है। उसी प्रकार 'सुमंगल गावहिं नारी' केलिए 'women sang songs' अनुवाद ठीक नहीं है क्योंकि भारतीय संस्कृति में सभी अवसर पर अति मंगलकारी गीत गाने की प्रथा है। इसी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को मूल पंक्तियाँ व्यक्त करती है जिसको लक्ष्य भाषा में अनुवाद क नहीं ला पाए है। 'women sang songs' अनुवाद असफल हुआ है। 'सुमंगल' का ठीक अर्थ है 'auspicious' जिसका प्रयोग अनुवादक ने नहीं किया है। इससे हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं क लक्ष्य भाषा में मूल में चित्रित सांस्कृतिक तत्त्व को अनुवादक सही और पूर्ण भाव से उतार नहीं पाए है।

किसी भी शुभ कार्य करने से पहले भारतीय संस्कृति में गणेश गौरी और अन्य देवताओं की पूजा की जाती है। इसका उल्लेख 'मानस' में मिलता है-

"आचारु करि गुर गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं।

सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुखु पावहीं॥"[58]

गणपति, गौरी आदि देवताओं की पूजा अशुभ कार्य और विघ्नों को दूर करने केलिए की जाती है। तुलसी द्वारा दी गई ये पंक्तियाँ भारतीय संस्कृति का पूरा चित्र देती हैं। इसका अनुवाद है-

57. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 96, Pg.80
58. मानस- 1/322 छं.1

"The priests carried thro', All the rites that were due
To Parvati, Ganesh and the sages,
The gods then appeared, were devoutly revered,
Blessings gave, sharing joy of the ages."[59]

भारतीय संस्कृति के इस तत्त्व को समझे बिना ही अनुवादक ने मूल पंक्तियों का अनुवाद किया है। पाश्चात्य संस्कृति में ऐसी कोई प्रथा प्रचलित नहीं है और न ही वहाँ के लोगों का इस प्रकार का विश्वास है और इसीकारण से लक्ष्य भाषा में दी गई पंक्तियों का मूल अर्थ और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को अंग्रेजी पाठक समझ नहीं सकता।

दूसरा उदाहरण देखिए-

"राम सीय सिर सेंदुर देही।"[60]

दांपत्य सूत्र में बँधने अथवा पाणिग्रहण संस्कार के समय अग्निदेव को साक्षी मानकर वर द्वारा वधू की माँग में सिंदूर भरने की परंपरा भारत में है। ऊपर की पंक्ति से मानस में इसी ओर संकेत हुआ है। इसका अनुवाद देखिए-

"On Sita's brow Rama applied the vermilion"[61]

नारी के सुहाग का एवं सौ भाग्य का सूचक सिंदूर उसके सुखी दांपत्य जीवन का परिचायक है। यह नारी के कन्या से गृहिणी जीवन में प्रवेश करने का सूचक है। यहाँ सिंदूर शब्द केलिए अंग्रेजी प्रतिरूप 'vermilion' शब्द रखा गया है। भारतीय संस्कृति में सिंदूर का विवाह के समय क्या महत्त्व है,वर इसे वधू की माँग में क्यों भरता है इसका कोई विवरण लक्ष्य भाषा में नहीं है। 'vermilion' शब्द में वह पवित्रता नहीं है जो सिंदूर में है। इस सांस्कृतिक तत्त्व को पूरा सहजता और प्रभावात्मकता के साथ ग्रहण करने में अनुवादक असफल हुआ है। पाद-टिप्पणियों से इसे हल किया जा सकता है। एटकिन्स के अनुवाद में कोई पाद-टिप्पणि नहीं है।

---

59. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chhand 33, Pg.246
60. मानस- 1/324/4
61. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 329, Pg.249

विवाह के बाद जब वर-वधू वर के घर पहुँचते हैं तो उनकी आरती उतारी जाती है। पाश्चात्य सभ्यता में ऐसी प्रथा न होने के कारण इसे समझने में उन्हें कठिनाई होगी। इसका एक उदाहरण देखिए-

"निगम नीति कल रीति करि अरघ पाँवडें देत।
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत ॥"[62]

मूल पंक्तियों का अनुवाद देखिए-

"The queen sprinkled scent, laid down carpets,
according, To scripture and family rites,
And led to the house, with their brides the four princes,
Still waving their welcoming lights."[63]

'अरघ पाँवड' में अघर्य देने में असीम श्रद्धा भक्ति तथा कल्याण की कामना समाई रहती है। और मंगल कलश की भेंट शुभ लक्षण और समृद्धि की सूचक है जिसकेलिए अनुवादक ने 'spinkled scent, laid down carpets' दिया है। यह मूल अर्थ को पूर्ण रूप से उतार नहीं सका है। 'अरघ' केलिए 'spinkled scent' पर्याय ठीक हीं है क्योंकि इसमें मूल अर्थ अभिव्यक्त नहीं होता। 'पाँवडे' केलिए 'laid down carpets' एक प्रकार से ठीक है। 'परिछि' वर-वधू की रक्षा केलिए उनपर मांगलिक वस्तुओं से सोने की थाली भरकर आरती उतारी जाती है जो 'welcoming lights' में नहीं मिलता। भारतीय संस्कृति से जुडे इस संस्कार और विधान को अंग्रेजी भाषा में प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रित करने में अनुवादक असफल रह गए हैं।

62. मानस- 1/349
63. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Doha 340, Pg.270

अंत्येष्टि

मृत्यु के बाद जो संस्कार किया जाता है उसे 'अंत्येष्टि' कहते हैं। यह अपनी अपनी परंपरा के अनुसार संपन्न कराया जाता है । इसका अर्थ है- अन्तिम इष्टि (कर्म) । जीवात्मा के परलोक में भावी सुख या कल्याण के निमित्त इस संस्कार की कल्पना की गई है । भारतीय संस्कृति के अनुसार जनि मृत्यु के भय के कारण कई अनुष्ठानों का विधान मिलता है । मरने वाले व्यक्ति से भी अधिक उसके बन्धु लोग मृत्यु से भयभीत रहते हैं । पुराणों में मृत व्यक्ति के उत्थान केलिए अनेक विधान बताए गए हैं । अंत्येष्टि से लेकर कई तरह के शुद्धि कर्म इस संस्कार से जुड़े हैं । मानस में राजा दशरथ के मरणोपरान्त वैदिक रीति से आचार विचार के अनुसार उनके 'अंत्येष्टि संस्कार' का वर्णन हमें मिलता है जो इस प्रकार है-

"नृपतनु बेद बिदित अन्हवावा । परम बिचित्र बिमानु बनावा ।

xx xx xx xx

सरजु तीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥

एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्हा । बिधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही ॥

सोधि सुमृति सब बेद पुराना । कीन्ह भरत दसागत बिधाना ॥

xx xx xx xx xx

भए बिसुद्ध दिए सब दाना । धेनु बाजि गज बाहन नाना ।"[64]

मृत्यु के बाद शव के स्नान, और शव यात्रा में मृत शरीर की शुद्धि होती है । वेदों में कहा गया है कि मृत होने पर मानव शरीर दूषित होता है इसलिए शव को जलाना चाहिए क्योंकि अग्नि में भस्म हो जाने पर प्रदूषण की संभावनाएँ कम रहती हैं । यह भी माना

64. मानस- 2/169/1-4

जाता है कि अग्निशुद्धि के उपरान्त ही मृतात्मा परलोक में प्रवेश का अधिकार पाता है। दाहक्रिया के बाद मृत व्यक्ति के बन्धु जन भी स्नान करते हैं ताकि वे भी शुद्ध हो। उसके बाद मृत शरीर की शुद्धि और शांति केलिए तिल, पानी और कुश से तर्पण किया जाता है जिसे तिलांजली कहा जाता है। इसके बाद 'दशगात्र-विधान' किया जाता है जो दाहक्रिया के बाद होनेवाला विधान है। यह मनुष्य के मरने पर दस दिनों तक किया जाता है, जिसमें प्रतिदिन पिण्डदान दिया जाता है। पुराणों में लिखा गया है कि इसी पिंड के द्वारा क्रम से प्रेत का शरीर बनता है। ग्यारहवें दिन बन्धुओं का शुद्धीकरण होता है और ब्राह्मणों को दान दिया जाता है जिसमें यह विश्वास है कि मृत व्यक्ति के पर लोक जीवन में कल्याण केलिए यह सहायक होता है। अत: अंत्येष्टि संस्कार में सब तत्त्व बहुत गहराई से जुडे हैं जो हर संस्कृति में विभिन्न प्रकार से किए जाते हैं। 'दशरथ मरण' के संदर्भ में इसका पूरा विवरण हमें मिल जाता है लेकिन अनुवाद में कई स्थानों पर इन संस्कारों को उनके पूर्ण अर्थ और भाव के साथ प्रस्तुत नहीं किया है। ऊपर दिए गए इन सांस्कृतिक तत्त्वों से परिचित व्यक्ति ही अनुवाद के समय इसे लक्ष्य भाषा में ठीक प्रकार से उतार सकता है। मानस के इस प्रसंग का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"As the scripture directs, the king's body was bathed
On a beautiful car it was then laid enswathed
xx xx xx
They built a great pyre on the fair sarju's bank,
xx xx xx
All the cremating rites were performed as decreed
Bharat bathed and presented the sesame seeds
As scripture demands, with its precepts repeated,

Ten rice balls were offered, and all was completed
xx xx xx
Great gifts Bharat gave, and completed his cleansing."[65]

65. The Ramayana of Tulsidas, VolI, Book II, Chaupai 170, Pg.400

यहाँ 'नृपतनु बेद बिदित अन्हवावा' का 'king's body was bathed' अर्थ की दृष्टि से ठीक है किन्तु इसके पीछे जो सांस्कृतिक महत्त्व है वह अनूदित पंक्तियों में प्राप्त नहीं है। 'शव को ले जाने केलिए जो विमान, बनाया गया उसकेलिए 'बिमानु' शब्द का प्रयोग किया गया है जिसकेलिए 'beautiful car' दिया है जो मूल अर्थ को पूर्ण रूप से प्रस्तुत नहीं करता। 'चिता बनाई' का 'built a great pyre' अनुवाद दियागया है जो इसके पीछे अंतर्निहित सांस्कृतिक घटक को अभिव्यक्त नहीं करता। 'दाह क्रिया सब कीन्हा। बिधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही' का अनुवाद 'All the cremating rites were performed, Bharat bathed and presented the sesame seeds' किया है। पाश्चात्य संस्कृति में ऐसे संस्कार विधान नहीं हैं। इसलिए ऊपर दिए गए इस अनुवाद को लक्ष्य भाषा के पाठक किसी भी हालत में नहीं समझ सकते। 'दसगत विधान' भी एक ऐसा संस्कार है जो पूर्णतः भारतीय संस्कृति से जडा है। इसका अनुवाद 'Ten rice balls were offered' किया गया है जो किसी भी प्रकार से ठीक नहीं है। 'दसगात्र विधान' में पिण्डदान दिया जाता है। उसकेलिए 'rice balls' सही नहीं है क्योंकि वह मूल अर्थ को नहीं देता और इसके पीछे जो विश्वास है वह भी अभिव्यक्त नहीं होता। 'भए बिसुद्ध दिए सब दाना' का 'Great gifts Bharat gave, and completed his cleansing' अर्थ की दृष्टि से ठीक है लेकिन इसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अंग्रेजी पाठक जब तक परिचित नहीं होता वह इस तथ्य को पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर सकता। इसका पूरा विवरण स्रोतभाषा का पाठक ही समझ सकता है। सांस्कृतिक भिन्नता के कारण लक्ष्य भाषा पाठक इसे नहीं समझ पाता।

व्रत-उपवास-तप एवं त्योहार से संबंधित शब्द एवं उनका अनुवाद

आध्यात्मिक उत्थान, नैतिक निखार, चारित्रिक विकास एवं सामाजिक सँवार केलिए हमारी संस्कृतिक में विविध विधियों का विधान है। तप, साधाना तथा उग्र तपस्या करके मानावीय सद्गुणों का विकास हमारी संस्कृति का मेरुदंड है। व्रत-उपवास-तप

आदि का उद्देश्य होता है- पुण्य-संचय, पाप क्षय तथा मनोकामना की पूर्ति । इष्टप्राप्ति केलिए भी प्राय: व्रत-उपवास रखा जाता है । 'मानस' में इसके कई उदाहरण मिलते हैं-

'पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग ।

करत राम हित नेम ब्रत परिहरि भूषण भोग ।।[66]

प्राय: व्रत, उपवास इत्यादि आत्मिक शुद्धि एवं मानसिक शांति केलिए करते हैं । श्रीरामचन्द्र के हित केलिए सभी अवध वासीनेम-व्रत रखते हैं । 'नेम-व्रत धर्म की भावना से किए जानेवाला व्रत है जो सायंकाल तक लिया जाता है । तुलसी के इस दोहे का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"But once and at night, they ate fruit and drank milk,

And the time then they quietly spent

In their loyal devotion to Rama, all comfort,

And luxury each one forewent."[67]

'नेम-व्रत' का अनुवाद 'all comfort and luxury each on forewent' दिया है जो किसी भी रूप से मूल अर्थ को नहीं देता । भारतीय संस्कृति में प्रचलित इस विधान को अंग्रेजी पाठक पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पाता क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति में ऐसा कोई विधान नहीं है और न ही उचित शब्दावली । दूसरा उदाहरण देखिए-

"ब्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा । मुनिहुँ कहें जलु काहु न लीन्हा ।।" [68]

66. मानस- 2/188
67. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book II, Doha 182, Pg.413
68. मानस- 2/246/4

व्रत और उपवास मनुष्य के सर्वांगीण विकास केलिए अत्यधिक उपयोगी है। इंद्रियों पर संयम केलिए ही व्रत उपवास के विधान किए गए हैं। इन्हीं आधारों पर भारतीय संस्कृति में व्रत और उपवास का विशेष महत्त्व है। इसका अंग्रेजी अनुवाद है-

"That day without water or food Rama passed;

At the saint's word the people maintained the same fast."[69]

यद्यपि प्रभाव और अर्थ की दृष्टि से उक्त चौपाई को चित्रित करने में अनुवादक सफल हो पाए है किन्तु सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर इन पंक्तियों का विश्लेषण करें तो यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि व्रत और उपवास के पीछे जो सांस्कृतिक महत्त्व और लोगों का विश्वास है वह अनुवाद में हीं आया है। भारतीय संस्कृति और विधि-विधानों से अपरिचित पाठक इस मूल अर्थ को ग्रहण नहीं कर सकता।

तप

व्रत और उपवास के अलावा तपस्या का भी भारतीय संस्कृति में बहुत बड़ा महत्त्व है। उमा की तपस्या का 'मानस' में चित्रण हुआ है-

"उर धरि उमा प्रानपति चरना। जाइ बिपिन लागी तपु करना॥"[70]

'Thus Uma, her lord's dear feet keeping in thought,

Went off to the forest; there penance she wrought."[71]

तप, साधना तथा उग्र तपस्या करके मानावीय सद्गुणों का विकास करने से आत्मशुद्धि होती हैं, आत्मबल बढ़ता है तथा असीम आध्यत्मिक आनंद की अनुभूति होती है।[72]

69. The Ramayana of Tulsidas, Vol. I, Book II Chaupai 247, Pg.454
70. मानस- 1/73/1
71. The Ramayana of Tulsidas, Vol. I, Book I, Chaupai 74, Pg.62
72. भारतीय सांस्कृतिक प्रतीक, पृ.298

इसके अलावा यह विश्वास भी है कि उग्र तप करने पर मनोकामना की पूर्ति होती है और इसी उद्देश्य से उमा शिव को पति के रूप में पाने केलिए घोर तपस्या करती हैं। एटकिन्स ने मानस के अनुवाद में मूल अर्थ को ग्रहण तो किया है लेकिन तप और साधना के पीछे जो भारतीय विश्वास है वह अनूदित पंक्तियों में अभिव्यक्त नहीं हुआ है। और इसी कारण सही परिप्रेक्ष्य में इन पंक्तियों का अर्थ ग्रहण अंग्रेजी पाठक नहीं कर सकता।

त्योहार

भारतीय संस्कृति में त्योहारों का विशेष महत्व है। हर एक धर्म के अपने अपने त्योहार हैं। हरएक राज्य के हर एक गाँव के अपने अपने त्योहार है जिसे वहाँ के लोग बडी धूम-धाम से मनाते हैं। सारे काम रोक दिए जाते हैं मित्र और बन्धुलोग एक दूसरे से मिलते हैं। लोग अपने घरको सजाते हैं और सब लोग अच्छे वस्त्र और आभूषण पहनते हैं।[73] वैसे मानस में किसी त्यौहार का विशेष उल्लेख हमें प्राप्त नहीं होता है। लेकिन 'राम जन्म' के अवसर पर विवाह के अवसर पर, राज्याभिषेक के समय और राम के वनवास से लौटने पर लोगों का उत्साह इस प्रकार के माहौल पैदा करता है। जैसे-

"मंगलमय निज, निज भवन लोगन्ह रचे बनाइ।
बींथी सींचीं चतुरसम चौकें चारु पुराइ॥"[74]

भारत में विवाह के अवसर बहुत आह्लाद पूर्वक मनाए जाते हैं जहाँ घरों को सुन्दर बनाया जाता है चौक पुरे जाते हैं और बहुत सजावट की जाती है। राम विवाह के अवसरपर अवध के लोग भी अपने घर को सजाते हैं और चौक पूरते हैं। विशेष अवसरों पर उकेरे जाने वाले ये मांगलिक प्रतीक कल्याण के, और कामना के द्योतक हैं। साथ ही

73. Feast days are given upto rejoicing and diversions of all kinds; work is entirely suspended; relatives and friends meet together; thehouses are decorted, the best jewels and apparel are worn.
- Dubois, J.A. Abbe-Hindu Manners, Customs and cermonies, Pg.641

74. मानस- 1/296

इसमें असीम आस्था श्रद्धा तथा कल्याण की कामना समाई हुई है । 'मंगलमय शब्द मांगलिक कार्यों की ओर संकेत है जो भारतीय पाठक आसानी से समझ सकता है । अंग्रेजी अनुवाद मेंइन पंक्तियों का अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"Each one decorated his home and surroundings,

They soon beatified thus all places;

Then skilful men watered the streets and designs

Set in courtyards and all open spaces."[75]

लक्ष्य भाषा में 'मंगलमय' को सूचित करने वाला कोई शब्द नहीं दिया गया है जो इस विशेष अवसर को सूचित कर सके । 'मंगलमय' शब्द में जो मांगलिक कार्यों की ओर संकेत है उसे स्रोत भाषा केपाठक जानते ही हैं । लक्ष्यभाषा में इस शब्द का अनुवाद दिया जाय तो भी वह प्रसंग को स्पष्ट नहीं कर सकता । 'चौकें चारु पुराइ' का 'designs set in courtyards and all open spaces' के रूप में अनुवाद दिया है जो मूल अर्थ और सांस्कृतिक भाव को सूचित करने में असमर्थ है । पाश्चात्य सभ्यता में इस प्रकार की प्रथा नहीं है इसलिए इस प्रकार की शब्दावली में निहित सांस्कृतिक महत्त्व और अर्थ भाव को अंग्रेजी पाठक किसी भी हालत में नहीं समझ सकता ।

इसीप्रकार राम के वनवास से लौटने पर अयोध्या नगर का सौंदर्य वर्णन देखिए-

'कंचन कलस बिचित्र सँवारे । सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे ।

बंदनवार पताका केतू । सबन्हि बनाए मंगलहेतू ॥'[76]

मंगलिक कार्य में धार्मिक कार्यों का शुभारंभ में कलश, पताका, केले के बंदनवार का अत्यधिक महत्त्व है और भारतीय संस्कृति में सर्वोच्च स्थान भी दिया गया है । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुख-समृद्धि के साथ सर्वांगीण विकास मांगलिक भावनाएँ और आस्थाएँ

---

75. The Ramayana of Tulsidas, Vol. I, Book I, Doha 289, Pg.226
76. मानस- 7/8/1

समाहित हैं। 'पताका' पावन प्रतीक है,जिसके माध्यम से आंतरिक एवं सार्वजनिक भावनाएँ उजागर होती हैं। केले के खंभे पर आम की पत्तियोंमंडपाच्छादन और बंदनवार पर लगाने की परंपरा शुद्धीकरण प्रक्रिया केलिए की जाती है। भारतीय संस्कृति के इन तत्त्वों को जानने वाला व्यक्ति ही इन सांस्कृतिक प्रतीकों को ठीक से समझ सकता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"They brought out quickly fine golden pillars and domes,
Decorted, to set at the doors of their homes;
Handsome arches, gay streamers and flags were soon made,
Thus their joy at this happy event was displayed."[77]

'कलस' केलिए 'domes' अनुवाद दिया है जो मूल की दृष्टि से सभी प्रकार से हेय है। मूल अर्थ और सांस्कृतिक महत्त्व 'dome' शब्द में प्रतिपादित नहीं होता। 'बंदनवार पताका केतू' का 'Handsome arches, gay streamers and flags' मूल के प्रभाव और सांस्कृतिक तत्त्व को किसी भी रूप से अभिव्यंजित नहीं करता। 'मंगलहेतू' अर्थात् 'मंगल केलिए' का अनुवाद 'Thus their joy at this happy event was displayed' किसी भी प्रकार से मूल अर्थ को व्यक्त नहीं करता। यहाँ यह स्पष्ट है कि अनुवादक मूल में व्यक्त सांस्कृतिक तथ्यों को लक्ष्य भाषा में लाने में असफल हो गए हैं।

रिश्ते-नाते से संबन्धित शब्द और उनका अनुवाद

भारतीय समाज में रिश्ते-नाते बहुत ही पवित्र माने जाते हैं। माता, पिता, ज्येष्ठ, अनुज, देवर, भाभी आदि के प्रति आदर और स्नेह का भाव रखा जाता है। रिश्ते-नाते प्रत्येक संस्कृति में प्राप्त होते हैं लेकिन इन केलिए संबोधन शब्द सभी भाषाओं में समान नहीं मिलते। इसीलिए रिश्ते-नाते से संबन्धित शब्दों के अनुवाद में कठिनाई होती है। गोस्वामी तुलसीदास ने 'मानस' में इसका स्पष्ट विवरण दिया है। देखिए-

77. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book VII, Pg.759

"पति देवर सँग कुसल बहोरी । आइ करऊँजेहिं पूजा तोरी ॥"[78]

भारतीय समाज में परिवार का प्रमुख स्थान है इसलिए परिवारिक संबंधों को व्यक्त करने केलिए उचित शब्द भी मिलता है । रिश्तों के अनुसार संबोधन में परिवर्तन होता है । 'देवर' शब्द केवल पति के छोटे भाई केलिए किया जाता है । अंग्रेजी में इसकेलिए उचित शब्द मिलना दुष्कर है । अनुवादक के द्वारा इस मूल पंक्ति के अनुवाद से यह स्पष्टतः सिद्ध हो जाता है-

"With my husband and brother again to your banks."[79]

'देवर' केलिए अनुवादक ने 'brother' शब्द का प्रयोग किया है जो सही नहीं है । 'देवर' केलिए अंग्रेजी भाषा में उचित शब्द नहीं मिलता लेकिन 'brother-in-law' शब्द सि अंशिक अर्थ को अभिव्यक्त कर सकते हैं । 'Brother' शब्द पति का नहीं अपना भाई होता है । इससे हम कह सकते हैं कि मूल अर्थ को किसी भी हालत में अनुवादक नहीं दे पाता । इसका दूसरा उदाहरण देखिए-

"लछिमन बिहसि कहा सुनु माता ॥"[80]

इसका अनुवाद देखिए-

"But Lakshman replied with a smile, 'Lady, hear me."[81]

भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि ज्येष्ठ भ्राता की पत्नी माता-समान है और उसी दृष्टि से उनके साथ व्यवहार किया जाता है जिस प्रकार माता के साथ करते हैं । परन्तु एक अन्य देश के पाठक इस तथ्य को समझ नहीं पाते जब तक वे भारतीय संस्कृति से परिचित न हों । दो संस्कृतियों के बीच जो अन्तर है उसका स्पष्ट उदाहरण यहाँ प्राप्त

78. मानस-2/102/2
79. The Ramayana of Tulsidas Vol.I, Book II, Ch.103, Pg.353
80. मानस- 3/27/2
81. The Ramayana ofTulsidas, Vol.II, Book II, Chaupai 30, Pg.542

है। अनुवाद में अनुवादक ने 'माता' के स्थान पर 'Lady' शब्द का प्रयोग किया है जो उस श्रद्धा या आदर भाव को वहन नहीं करता जो मूल में है। 'Lady' शब्द का अर्थ है- 'The mistress of a house, a consort etc.'[82] इस उदाहरण से यह बात स्पष्ट है कि पाश्चात्य संस्कृति में भारतीय संस्कृति के तत्त्व विद्यमान नहीं है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि रिश्ते-नाते केलिए प्रयुक्त शब्दावली प्रत्येक भाषा में समान न होने के कारण इनके अनुवाद में समस्या खडी होती है। फलत: ऐसी शब्दावली में स्थित अर्थ की सूक्ष्मता को लक्ष्य भाषा में लाना कठिन ही नहीं असंभव भी होता है। एक ओर उदाहरण देखिए-

"कह कपि हृदयँधीरधरू माता।"[83]

भारतीय संस्कृति में माता का स्थान बहुत बडा होता है। देवर अपनी भाभी को माता का स्थान देता है। उसी प्रकार जब माता अपनी संतान को ही नहीं वरन् किसी और को जब संतान समान देखती है तो उसको आदर देना ही पडता है। सीता हनुमान को पुत्र का स्थान देती है। अत: हनुमान सीता को 'माता' नाम से अभिहित करता है। पाश्चात्य संस्कृति मेंइस बात को ग्रहण कर पाना कठिन है। 'माता' शब्द के समतुल्य कोई शब्द नहीं हो सकता। इसका अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"Said the monkey, 'My mistress, come! Lift up your heart."[84]

लक्ष्य भाषा में अनुवादक ने 'माता' के स्थान पर 'Mistress' का प्रयोग किया है। यहाँ दोनों देशों की भाषाओं के बीच अन्तर और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का पूरा परिचय प्राप्त होता है। 'माता' के स्थान पर 'Mistress' शब्द का प्रयोग ठीक नहीं है क्योंकि इसका अर्थ है श्रीमती, महोदया, गृहिणी, स्वामिनी, अध्यापिका आदि। अत: अनुवाद प्रभाव और सांस्कृतिक परिदृश्य की दृष्टि से असफल माना जाएगा।

82. Chamber's twentieth century Dictionary, Edt.By William Geddie, Pg.595
83. मानस- 5/14/5
84. The Ramayana of Tulsidas, Vol. II Book V, Chaupai 15, Pg.601

"अनुजन्ह संजुत भोजन करही।"[85]

'अनुज' केवल छोटे भाई केलिए प्रयुक्त होता है। भारत जैसे देश में जहाँ परिवार प्रमुख घटक है वहाँ सारे परिवारवाले संग मिलकर ही भोजन करते हैं और संयुक्त परिवार में रहते हैं। किसी और देश में जहाँ परिवार इतना नहीं है वहाँ का पाठक इस तथ्य को समझ नहीं पाता। इसका अनुवाद इस प्रकार है-

"Of his morning meal then he partakes with his brothers."[86]

'अनुजन्ह' केलिए 'brothers' शब्द का प्रयोग ठीक नहीं है क्योंकि 'brothers' कोई भी हो सकता है बडा या छोटा। साथ ही साथ मूल में मात्र 'भोजन' दिया है जिसमें किसी भी पहर का संकेत नहीं हुआ है। लेकिन अनुवादक ने यहाँ 'morning meal' का प्रयोग किया है जो मूल अर्थ को नष्ट कर देता है। पाश्चात्य संस्कृति में परिवारिक संबंधों के बीच इतनी गहराई न होने के कारण वे इस तथ्य को उसकेपूर्ण अर्थ में और रूप में ग्रहण नहीं कर सकते।

वेशभूषा से संबन्धित शब्द और उनके अनुवाद की समस्याएँ

वस्त्र

प्रत्येक समाज की जैसी संस्कृति होती है उसके अनुसार उसकी वेशभूषा रहा करती है। मध्ययुगीन समाज में पहने गए वस्त्रों तथा आभूषणों को आधुनिक समाज में चित्रित करना थोड़ा कठिन है और अगर यह किसी अन्य देश के हों तो और भी कठिन है। सीता स्वयंवर के समय राम को पीली धोती पहनाई जाती है-

"पीत पुनीत मनोहर धोती।"[87]

---

85. मानस- 7/25/2
86. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II Book VII, Ch.24, Pg.774
87. मानस- 1/326/2

देश के अनुसार वेश भी बदलता रहता है और उस देश की भौगोलिक विशेषता के आधार पर ही वहाँ वेश-विधान होता है। 'धोती' पूर्णत: भारतीय वेश-भूषा है जो कमर के नीचे का भाग ढकने केलिए होती है। 'पीत' अर्थात् पीलारंग। भारतीय संस्कृति में पीला रंग मंगलमय माना जाता है अत: विशेष अवसरों पर पीले रंग के कपडे धारण करना मंगल सूचक है। इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"The bright yellow loin-cloth his body adorning."[88]

अनुवादक ने 'धोती' केलिए 'loin-cloth' अनुवाद दिया है। 'loin' का अर्थ 'कमर'है लेकिन 'loin-cloth' शब्द धोती अर्थ को व्यक्त नहीं करता और पाश्चात्य पाठक इस शब्द को पूर्ण रूप से ग्रहण भी नहीं कर सकता। साथ ही साथ 'bright yellow loin-cloth' में जो सां स्कृतिक विशेषता है उसेभीसही अर्थ में ग्रहण नहीं कर सकता। अनुवादक ने इस शब्द को सूचित करने केलिए कोई पाद-टिप्पणि भी नहीं दी है।

"पिअर उपरना काखासोती।"[89]

पीला दुपट्टा, जिसे बाये कंधे के ऊपर और दहिनी बगल के नीचे से जनेऊ की तरह निकला जाता है, भारतीय देश विधान की एक रीति है। इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"A yellow scarf lies on his shoulders".[90]

अनुवाद में 'उपरना काखासोती' का 'scarf lies on his shoulders' किया है जो पूर्णत: मूल अर्थ को संप्रेषित नहीं करता और न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को। यद्यपि 'उपरना' (दुपट्टा) केलिए 'scarf' अर्थ ले तब भी वहाँ काखासोती का अर्थ संप्रेषित नहीं होता।

88. The Ramayana of Tulsidas Vol.I, Book I, Chaupai 331, Pg.252
89. मानस- 1/326/4
90. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 331, Pg.253

मूल पाठ को पढतेसमय जो भारतीय पाठक के मन में उभरता हैवहएक अंग्रेजी पाठक अनुवाद पढकर समझ नहीं सकता। एक और उदाहरण देखिए-

"सोह नवल तनु सुंदर सारी।"[91]

'सारी' भारतीय स्त्रियों की वेश-भूषा है जिसे कई प्रान्तों में अलग-अलग रूप से पहना जाता है। लक्ष्य भाषा में इस पंक्ति का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Her young body swathed in a beautiful robe".[92]

'सारी' का अनुवाद 'robe' अर्थ में हुआ है जो मात्र 'वस्त्र' के अर्थ को सूचित करता है। 'सारी' केलिए अंग्रेजी भाषा में उचित पर्याय न होने के कारण लक्ष्य भाषा पाठक इसका मूल अर्थ ग्रहण नहीं कर पाता।

आभूषण

वेशभूषा की शब्दावली अनुवाद में जिस प्रकार समस्या बनती है उसीप्रकार आभूषणों केलिए भी उचित शब्द ढूँढ़ना बहुत कठिन है। उदाहरण स्वरूप-

"कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा। + + +
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला। पदिक हार भूषन मनिजाला।"[93]

Fish like gems in his ears; on his head golden crown;
xx xx xx
A Costly gem rests on his breast, and his neck
Fair garlands of flowers and Jewels bedeck."[94]

91. मानस- 1/247/1

92. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I Book I, Ch.252, Pg.192
93. मानस- 1/146/3
94. The Ramayana of Tulsidas Vol.I, Book I, Chaupai 147, Pg.118

भारत में मात्र स्त्रियाँहीनहीं पुरुष भी आभूषण पहनते थे। इसका विवरण हमें पुराणों में मिलता है। 'कुंडल' कानें में पहनने वाले होते हैं जिसके लिए अनुवादक ने मात्र 'Fish like gems in his ears' दिया है जो मूल अर्थ को व्यक्त नहीं करता। 'gem' रत्न अर्थ को ही व्यक्त करता है। हृदय पर 'श्रीवत्स' अर्थात् 'कौस्तुभ' जो समुद्र मंथन से निकला हुआ रत्न है, धारण किया हुआ है। इसकेलिए मात्र 'a costly gem' दिया है जो किसी भी रूप में मूल अर्थ को नहीं देता और इसकेलिए कोई पाद-टिप्पणि भी नहीं दी गई है। गले में सुन्दर वनमाला जो विशेष प्रकार के फूलों से युक्त है, उनका मात्र 'fair garlands of flowers' अनुवाद दिया है जो मूल अर्थ को अभिव्यक्त करता है लेकिन मूल जितना प्रभावात्मक नहीं है। 'पदिक हार भूषन मनिजाला' केलिए मात्र 'Jewels bedeck' दिया है, यह भी मूल अर्थ को पूर्ण रूप से प्रस्तुत नहीं करता। भारतीय संस्कृति के बाह्य स्वरूप में आभूषणों का विशेष महत्त्व है। इसे पाश्चात्य पाठक जब तक नहीं समझता वह इन्हें पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पाता।

सोलह श्रृंगार

स्त्री श्रृंगार के सोलह प्रकार माने गए हैं। श्रृंगार करने की यह प्रथा प्राचीनकाल से ही दिखाई देती है। मध्य कालीन कवियों के रचनाओं में 'सोलह श्रृंगार को 'नवसप्त' कहा गया है। ये हैं-

1. सुगंधित द्रव्यों से शरीर को साफ करना और मलना।
2. स्नान या प्रक्षालन करना।
3. नए कपडे पहनना
4. पैरों को लाल रंग से रंगना।
5. बाल सँवारना।
6. सिंदूर से माँग सजाना।
7. ललाट में चंदन की धारियाँ लगाना।

8. ठोढी पर छोटा सा काला तिल लगाना ।

9. पैर और हाथों पर मेहंदी लगाना ।

10. शरीर पर गरहम लगाना

11. आभूषणों से शरीर को सँवारना ।

12. फूल इत्यादि से बालों को सजाना ।

13. पान चबाते हुए मुँह को रँगना ।

14. दाँतों को रँगना ।

15. होठों को रँगना ।

16. आँखों में सुरमा लगाना ।

मानस में राम विवाह के अवसर पर सोलहों श्रृंगार करती हुई स्त्रियों का वर्णन मिलता है । देखिए-

"जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि सजि नवसप्त सकल दुतिदामिनि ॥"[95]

'नवसप्त' का अर्थ सोलह है । यह पूर्ण रूप से संस्कृति का बाह्य स्वरूप है । इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Mean while bands of maidens the beauty were bright'ning.

With all female ornaments, brilliant as lightning."[96]

'भामिनी साजि नवसप्त' केलिए 'maidens the beauty were bright'ning.With all female ornaments' किसी भी प्रकार से ठीक नहीं है क्योंकि यह मूल अर्थ या भाव को अभिव्यक्त नहीं करता । साथ ही साथ इसमें भारतीय परंपरा में विद्यमान सोलह प्रकार के श्रृंगारों का वर्णन भी नहीं मिलता । 'female ornaments' का सामान्य अर्थ 'स्त्री

---

95. मानस- 1/296/1
96. The Ramayana of Tulsidas, Vol. II Book I, Chaupai 30, Pg.226

आभूषण' या 'स्त्रीश्रृंगार' ही लिया जाएगा। अनुवादक ने इस पंक्ति का अनुवादतो प्रस्तुत कियाहै, परंतु इसके मूलअर्थ औरभाव को प्रस्तुत करने में वेअसफल रहे हैं।

खान-पान से संबन्धित शब्द और उनके अनुवाद

भारत के खाद्य तथा पेय पदार्थों में नाना प्रकार के व्यंजनों, मिष्टान्न, मेवों, फलों एवं कई पेय पदार्थों का उल्लेख मिलता है। भोजन में मिलने वाली सामग्री सर्वत्र समान नहीं हुआ करती। प्राय: जैसी संस्कृति वैसा ही खान-पान दिखाई देता है। भारत जैसे विशाल भू-भाग में तरह तरह का खान पान परिलक्षित होता है उसकेलिए दूसरी भाषा में पर्यायवाची शब्द का मिलना कठिन है। जैसे-

"दधि चिउरा उपहार अपारा।"[97]

हमारे देश में खान-पान केकई प्रकार हैं और स्थान के अनुसार ये बदलते भी हैं। दधि याने दही 'चिउरा' अर्थात् चिवडा जिसे हरे धान को कूट कर बाद में भूना जाता है। भारत का विशेष खाद्य पदार्थ है। अत: किसी अन्य देश में इसका मिलना कठिन है। इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है।

"Light eatables too such as parched rice and curds."[98]

'दधि' का 'curds' और 'चिउरा' का 'parched rice' अनुवाद हुआ है। अर्थ की दृष्टि से दोनों शब्द सही है लेकिन इसका उपयोग कब और कैसे किया जाता है इससे अंग्रेजी पाठक अवगत नहीं है क्योंकि पाश्चात्य देश में ये खाद्य पदार्थ प्राप्त नहीं हैं। इसीकारण से पाश्चात्य पाठक इस खाद्य पदार्थों का अर्थ पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर सकता।

---

97. मानस- 1/304/3

98. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, BookI, Chaupai 309, Pg.232

'शराब' केलिए 'सुरा', 'मधु' शब्दों का प्रयोग होता है। 'मानस' में तुलसी ने 'सुरा' शब्द का प्रयोग किया है। देखिए-

"*असुर सुरा बिष संकरहि आपु रमा मनि चारु।*"[99]

इसका अनुवाद है-

"Giving poison to siva, to demons drink."[100]

पुराणों में ही यह संकेत मिलता है कि भारत में कई प्रकार के पेय पदार्थ हैं। अमृत, सुरा, मधु आदि का वर्णन इसमें मिलता है। 'सुरा' शब्द 'शराब' केलिए प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी अनुवाद में 'सुरा' केलिए 'drink' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'सुरा' का पर्याय 'wine' या 'liquor' है जिसका प्रयोग अनुवादक ने नहीं किया है। 'Drink' पर्याय मूल अर्थ को अभिव्यक्त करने में असफल रहा है क्योंकि सागर मंथन के समय बहुत से पदार्थ उत्पन्न हुए जिनमें अमृत विष औरसुरा भी निकले। असुरों को 'सुरा' दिया गया और देवताओं को अमृत। इस सांस्कृतिक तथ्य से पाश्चात्य पाठक परिचित नहीं है और इसी कारण से वह इसका अर्थ और सांस्कृतिक महत्व को ग्रहण नहीं कर पाते। एक और उदाहरण देखिए-

"सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत।"[101]

'सूपोदन' अर्थात् 'सूप+ओदन' याने दाल और भात। यह मात्र भारत में मिलता है। अंग्रेजी जैसी लक्ष्य भाषा में इसका यथावत् पर्याय मिलना असंभव है।

"There was rice with rice spices and butter, as much
And as tasty as any could wish."[102]

99. मानस- 1/136
100. The Ramayana of Tulsidas. Vol.I, Book I, Doha 131, Pg.111
101.मानस-1/329
102. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Doha 321, Pg.255

'सुपोदन' केलिए अंग्रेजी में ठीक पर्याय न होने के कारण अनुवादक ने 'rice with rice spices' दिया है। भारत मं खाद्य वस्तु में दाल सब्जी का जो महत्त्व है वह पाश्चात्य देशों में नहीं है। अत: अनुवदक ने लक्ष्य भाषा में जिस शब्द का प्रयोग किया है वह भी स्रोत भाषा के अर्थ को ठीक रूप से प्रस्तुत नहीं कर पाता।

भोजन के बाद 'पान' खाने की प्रथा भारत में प्रचलित है। शुभ अवसरों पर इस पर जरूर ध्यान दिया जाता है कि पान रखाजाए। इसके कई कारण है- एक तो इसमें षट् रसों का मिश्रण है और दूसरा इसे खाने के बाद इसके रस को निगलने से खाना जल्दी पचता है। तीसरा कारण यह भी है कि पान मंगलमय माना जाता है। राम-सीता विवाह के बाद राजा जनक आदरसूचक भाव से ही नहीं वरन् रीति-रिवाज के आधार पर 'पान' खिलाते हैं।

"देइ पान पूजेजनक दसरथु सहित समाज।"[103]

इसका उदाहरण देखिए-

"Then Janak to each guest the pan-leaf presented".[104]

'पान' शब्द केलिए अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द है 'Betel leaf' लेकिन अनुवादक ने यहाँ 'pan-leaf' का ही प्रयोग किया है जो मूल का लित्यंतरण है। लक्ष्य भाषा में 'पान' का क्या महत्त्व है शुभ अवसरों पर इसका प्रयोग क्यों होता है इसपर कोई टिप्पणि नहींदी गई है। और इसी कारण से पाश्चात्य पाठक इसके महत्त्व या संस्कृतिक तत्त्व को समझ नहीं पाते।

103. मानस-1/329

104. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Doha 321, Ph.255

पूजा-पाठ से संबन्धित शब्द एवं उनके अनुवाद

प्रत्येक समाज की संस्कृति में विभिन्न रूपों में पूजा-पाठ प्रचलित मिलते हैं। भारतीय समाज में पूजा-पाठ का प्रचलन है और इनसे संबद्ध शब्द प्रचुर मात्रा में हैं। 'मानस' में हमें पूजा-पाठ से संबंधित शब्द मिलते हैं। उदाहरण स्वरूप-

"मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महु चहें।"[105]

'मधुपर्क' दही, घी, शहद, जल और शक्कर के योग से बना मिश्रण है जिसका उपयोग पूजा-पाठ में प्रसाद के रूप में देवत को समर्पित किया जाता है। 'मधुपर्क' पूर्णतः भारतीय शब्दावली है। इसका अनुवाद है-

"On telling their wishes, Delectable dishes
To each saintly person were handed."[106]

इधर मधुपर्क केलिए 'Delectable dishes' का अनुवाद सही नहीं है क्योंकि 'Delectable dishes' किसी भी प्रकार से मूल अर्थ और उसके सांस्कृतिक महत्त्व को ग्रहण नहीं करता। इस शब्द के महत्त्व को सूचित करने केलिए न कोई पाद-टिप्पणि दी गई है। एक और उदाहरण देखिए-

"धूप दीप नैवेद बेदबिधि। ....
बारहि बार आरती करही॥"[107]

इसका अनुवाद है-

'With scriptural incense and lamp and oblation
Again and Again were the festal lights heaved."[108]

105. मानस-1/322 छं.1
106. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chhand 33, Pg.246
107. मानस- 1/349/2
108. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 354, Pg.270

भारत में पूजा-पाठ का विशेष महत्त्व है और इसी कारण से इससे संबंधित कई शब्दावली भी साहित्य में मिलती है। 'धूप', 'दीप', 'नैवैद', 'आरती', 'कपूर' आदि शब्द पूज-पाठ से संबंधित हैं। 'धूप', कपूर, गुलाब आदि सुगन्धित वस्तुओं से बनता है जिसे जलाया जाता है और जिसकी सुगंध से वातावरण शुद्ध होता है। इसका 'incense' अनुवाद किया गया है जो मूल जितना अर्थपूर्ण और प्रभावात्मक नहीं है। 'दीप' अंधकार को दूर कर प्रकाश की किरणें बिखेरता हैं साथ ही ये ऊर्जा, ऊष्मा और उजाले का स्रोत है वह 'lamp' शब्द में चित्रित नहीं होता। भारतीय संस्कृति में इसका जो महत्त्व है वह अंग्रेजी शब्द में नहीं है। 'नैवैद' नैवेद्य के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है भारतीय संस्कृति में पूजा-पाठ के संदर्भ में प्रमुख स्थान है। 'नैवेद्य' फल, चावल या कुछ और हो कता है जो ईश्वर को चढाया जाता है बाद में श्रद्धापूर्वक भक्त प्रसाद रूप में इसे ग्रहण करता है। अनुवाद में इसकेलिए 'oblations' शब्द का प्रयोग किया गया है जो मूल अर्थ को व्यक्त नहीं करता क्योंकि इसका अर्थ मात्रा 'चढावा' या 'अर्पण' है। एक पाश्चात्य पाठक इस शब्द के सांस्कृतिक महत्त्व को समझे बिना इन शब्दों को पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर सिकता। 'आरती' का भारतीय रीति-रिवाजों में प्रमुख स्थान है। मानव मन की निर्मलता और सात्विक भावना की जागर्ति केलिए आरती का विशेष महत्त्व है। इसकेलिए अनुवादक ने 'festal lights' का प्रयोग किया है जो न 'आरती' का अर्थ वहन करता है और न हीं इसके सांस्कृतिक महत्त्व को व्यक्त करता है। पाश्चात्य देशों में ऐसी सामग्रियों का प्रयोग नहीं होता और इसीकारण से अंग्रेजी पाठक इन शब्दों को और उनकी सांस्कृतिक विशेषताओं को समझ नहीं पाता।

सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं से संबद्ध शब्दावली और उनके अनुवाद की समस्याएँ

भारतीय संस्कृति में बडों का आदर करना उनकी सेवा करना आदि को पुण्य माना जाता है। उसी प्रकार लडकियों का सीधा पुरुष का मुँह देखना असभ्य माना जाता है। इन बातों का अनुवाद करना अनुवादक केलिए अत्यन्त कठिन है। एक उदाहरण देखिए-

"मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई। लगे चरन चापन देउ भाई।"[109]

भारतीय संस्कृति में छोटे, शिष्य पुत्र आदि आदार सूचक बडों का, गुरू आदि के पाँव दबाते हैं जिसमें श्रद्धा के साथ साथ सेवा भाव भी निहित है। इस पंक्ति का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Here lovingly massaged the feet of their teacher".[110]

'चरन चापन' का 'massaged the feet' शब्द यहाँ प्रभावात्मक नहीं है। मूल में चित्रित सांस्कृतिक महत्त्व और अर्थ गंभीरता अनुवाद में नहीं है। जो आदर भाव और श्रद्धा यहाँ चित्रित है वहअनुवाद को पढ़ते समय पाठक ग्रहण नहीं कर सकता।

भारत में लड़कियों या स्त्रियों केलिए आचरण के कुछ अलग विधान हैं। 'मानस' में ऐसे उदाहरण मिलते हैं जो हमारी संस्कृति का पूरा परिचय देते हैं। जैसे-

"बहुरि बदनु बिधु अंचल ढ़ाँकी। पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी॥
खंजन मंजु तिरीछे नयननि। नजि पति कहेउ तिन्हहि सयननि॥"[111]

इसका अनुवाद है-

"Brows lifted and face with her veil's border covered,
T'wards Rama she looked and her gaze o'er him hovered
'My husband' – her eyes gave the signal bewitching,
Aslant, like the tail of a wagtail quick twitching."[112]

---

109. मानस- 1/225/2
110. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 230, Pg.176
111. मानस- 2/116/3-4
112. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 117, Pg.363

'बदनु बिधु अंचल ढाँकी', 'भौंह करि बाँकी' और 'खंजन मंजु तिरीछे नयननि' में भारतीय संस्कृति का पूरा रूप मिलता है। लेकिन अनुवाद में वह भाव नष्ट हो गया क्योंकि मूल में सभी शब्दों में लज्जा भाव ही उन पंक्तियों में अभिव्यक्त होता है जबकि लक्ष्य भाषा में ऐसा कोई भाव व्यक्त नहीं होता। यहाँ भारतीय और पाश्चात्य सभ्यता में अन्तर स्पष्टत: व्यक्त होता है। 'बदनु बिधु अंचल ढाँकी' का 'face with her veil's border covered', 'भौंह करि बाँकी' का 'Brows lifted' अर्थ की दृष्टि से तो ठीक अनुवाद है लेकिन इसमें भारतीय संस्कृति की जो विशेषता है वह अभिव्यक्त नहीं होती। 'खंजन मंजु तिरीछे नयननि' का अर्थ है खंजन जैसे सुन्दर नेत्रों को तिरछी कर। काव्य में खंजन चंचल आँका उपमान माना गया है आपेने छोटे आकार के कारण। अत: सीता केनेत्रों की खंजन के साथ तुलना की गई है। अनुवाद में 'like the tail of a wagtail' अर्थ की दृष्टि से ठीक नहीं है। लक्ष्य भाषा में आँखों के इशारे को 'eyes gave the signal bewitching' संदर्भ को पूर्ण रूप से प्रभावात्मक नहीं बनाता क्योंकि भारतीय संस्कृति में पति का नाम लेना उचित नहीं माना जाता इसलिए मानसकार ने ऐसी उक्ति का प्रयोग किया है। इस भेद को समझे बिना ही अनुवादक ने इसका अनुवाद किया है।

आशीर्वाद

जब एक विवाहित स्त्रीआदर सूचक भाव से बडों से आशीर्वाद लेती है तो हमेशा सुहागन रहने का आशीर्वाद उसे प्राप्त होता है। यह प्रथा भारत की खास विशेषता है। उम्र के अनुसार आशीर्वाद दिया जाता है। 'मानस' में सीता जब अपनी सासुओं के पैर छूती है तब वे उसे 'सदा सुहागन रहने का आशीर्वाद देती है-

"रहिअहु भरी-सोहाग।"[113]

विवाहित औरत केलिए सुहाग का मतलब है सारे ऐश्वर्यों से पूर्ण अपने पति के साथ रहना। अत: यह प्रथा हमेशा रही है कि औरत को समाज में आदर तभी मिलता है जब तक वह सुहागन रहती है। भारतीय विश्वास के अनुसार वह स्त्री भाग्यवती मानी जाती है

113. मानस- 2/246

जब वह सुहागन रहते ही मरती है। अतः हमारी संस्कृति में विवाहित स्त्री केलिए यही आशीर्वाद दिया जाता है। इसका अनुवाद है-

"On you ever may good fortune rest."[114]

एक भिन्न संस्कृति से आनेवाले व्यक्ति केलिए यह बात नई होती है। पाश्चात्य देशों में जहाँ ऐसी प्रथा नहीं है, वहाँ के लोग इसे अभिव्यक्त करने में कठिनाई महसूस करेंगे। अनुवादक ने 'रहिअहु भरी-सोहाग' केलिए 'ever may good fortune rest' शब्दानुवाद दिया है। अनुवादक ने इस सांस्कृतिक तथ्य को समझे बिना, बिना कोई पाद-टिप्पणि दिए अनुवाद में इसे प्रस्तुत किया है। अंग्रेजी में उचित शब्द ना मिलने के कारण इस सांस्कृतिक संदर्भ को अनुवाद में वे प्रस्तुत नहीं कर पाये हैं।

पति के प्रति पत्नी का जो कर्त्तव्य है उसका भारतीय संस्कृति में बडा महत्त्व है। पति का पत्नी के प्रति और पत्नी का पति के प्रति कई कर्त्तव्य हैं जिनका पालन करना दोनों पति-पत्नी अपना धर्म मानते हैं। 'मानस' में इसके कई उदाहरण मिलते हैं। 'अरण्यकाण्ड' में अनसूया द्वारा उक्त वचन इसकेलिए उत्तम उदाहरण है जहाँ एक उत्तम पत्नी के सारे गुण कहे गए है-

'एकइ धर्म एक व्रत नेमा। कायँ बचन मन पति पद प्रेमा॥'[115]

अर्थात् शरीर मन और वचन से पति के चरणों में प्रेम करना ही स्त्री केलिए एकमात्र धर्म है, एकमात्र व्रत और नियम है। इसका अनुवाद है-

"For a wife thee is one duty, one law, one aim,

That her husband in all things her loyal love claim."[116]

'कायँ बचन मन पति पद प्रेमा' का 'That her husband in all things her loyal love cliam' पूर्ण अर्थ को वहन नहीं करता क्योंकि 'पति पद प्रेमा' को अनुवादक ने छोड़

---

114. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book II, Chaupai 247, Pg.454
115. मानस-3/4/5
116. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book III, Chaupai 6, Pg.516

दिया है। मूल को पढते समय जिन धर्मों का विवरण दिया है शरीर, मन और वचन उसका लक्ष्य भाषा में मात्र 'all things her loyal love claim' दिया है जो पूर्ण नहीं है। पाश्चात्य सभ्यता में इस प्रकार की प्रथा न होने के कारण लक्ष्य भाषा पाठक इसके भाव को स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाता और संस्कृति के तत्वों से भी परिचित नहीं होता।

शकुन-अपशकुन से संबन्धित शब्द और उनके अनुवाद की समस्याएँ

अन्धविश्वास, शकुन-अपशकुन, ज्योतिष के प्रति विश्वास भारतीय जनता में, भारतीय समाज और संस्कृति से सशक्त रूप में जुडे हुए हैं। विश्वमानचित्र में भारत इसकेलिए एक विशिष्ट स्थान रखता है। हर एक समाज से उसकी संस्कृति और विश्वास जुडे हुए हैं जो उस देश के साहित्य में एलकते हैं। दूसरे सांस्कृतिक परिवेश से आनेवालों केलिए यह सब नया होगा। ऐसे विश्वासों का अनुवाद करना बहुत कठिन है।

शकुन

विवाह के समय शकुन अपशकुन पर भारत में ज्यादा जोर दिया जाता है। राम विवाह के समय अवध से जब बारात निकलती है तो अच्छे शकुन ही दिखाई देते हैं। 'मानस' में इस संदर्भ का सुन्दर चित्रण हुआ है।

"चारा चाषु बाम दिसि लेई। मनहुँ सकल मंगल कहि देई॥

दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुल दरसु सब काहूँ पावा॥
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी। सघटसबाल आवबर नारी॥
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा। सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा॥
मृगमाला फिरि दाहिनि आई। मंगल गन जनु दीन्हि देखाई॥
छेमकरी कह छेम बिसेषी। स्यामा बाम सुतरु पर देखी॥
सनमुख आयउ दधि अरुमीना। कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना।" [117]

117. मानस- 1/302/1-4

भारत में शकुन और अपशकुन को बहुत महत्त्व दिया जाता है। शुभ कार्यों के संदर्भ में तो इस पर और अधिक ज़ोर दिया जाता है। पाश्चात्य साहित्य में तो इन बातों पर विश्वास नहीं किया जाता और इसी कारण से लक्ष्य भाषा पाठक इसे समझ नहीं सकते। इसका अनुवाद है-

"On the left hand a blue jay was picking up food,
As tho' he were saying 'Alls working for good;
In a beautiful field a black crow on the right
And a mongoose were seen, a most fortunate sight,
Fragrant Breezes were blowing refreshing and mild;
Bearing water there came a fair woman and child
Again and Again a young fox showed himself
And a cow just ahead was seen suckling her calf,
Then again on the right came a herd of fine deer,
Like a gath'ring of all that could offer good cheer
The sounds of good fortune on all hands were
On the left in a tree sat a singing black-bird;
Came a man bearing curds and fish, promise of feasts,
With their books in their hands went by two learned priests."[118]

यहाँ 'नकुल दरसु' का अर्थ नकुल दर्शन से है जो शुभ अवसर पर शुभ लक्षण माना जाता है। इसका 'And a mongoose were seen, a most fortunate sight' अनुवाद किया गया है जो मूल का शब्दानुवाद है। भारत में इसका क्या सांस्कृतिक महत्त्व है यह अंग्रेजी अनुवाद से पता नहीं चलता। 'सघट सबाल आव बर नारी' का अर्थ है सुहागिनी स्त्रियाँ भरे हुए घडे और गोद में बालक लिए आ रही हैं। इन तीनों को भारतीयों के अनुसार शुभ लक्षण माना जाता है। सुहागिनी स्त्री ऐश्वर्य और सौभाग्य की प्रतीक मानी जाती है और अगर उसके हाथ में बच्चा है तो वह अति उत्तम होता है।

118. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 307, Pg230

पानी से भरा घडा पूर्णता, उर्वरता का प्रतीक है अत: मांगलिक अवसरों पर इनका विशेष महत्त्व है। इसका अनुवाद है 'Bearing water there came a fair woman and child' जो मूल का अर्थ तो व्यक्त करता है परन्तु सांस्कृतिक विशेषता को अभिव्यक्त करने में असफल है। 'गाय को भारतीय समाज और संस्कृति में पूज्य माना जाता है। और इसे देखना शुभ लक्षण माना जाता है। और इसीकारण से इस पंक्ति का अनुवाद लक्ष्य भाषा पाठक पूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर सकता। मूल का शब्दानुवाद प्रस्तुत कर अनुवादक चुप हो गए हैं- 'And a cow just ahead was seen suckling her calf' "कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना' का अर्थ दो पारंगत ब्राह्मण हाथ में पुस्तक लिए हुए सामने आए जो ज्ञान और ऐश्वर्य के लक्षण माने जाते हैं। पश्चिम में ब्राह्मण जाति नहीं है और साथ ही ऐसे विश्वास भी नहीं है कि उन्हें देखना शुभ लक्षण है। इसका अनुवाद किया गया है- 'With their books in their hands went by two learned priests' यह मूल का शब्दानुवाद है लेकिन यह अनुवाद इस के पीछे के तथ्य को अभिव्यक्त करने में सफल नहीं होता। किसी भी संदर्भ में अनुवादक ने इनकेलिए पाद-टिप्पणि नहीं दी है।

अपशकुन

"प्रभु पयान जाना बैदेही। फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं॥

जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई। असगुन भयउ रावनहि सोई॥"[119]

जब श्रीराम युद्ध केलिए लंका की ओर प्रस्थान करते हैं उस समय सीता जी के बायें अंग फड्कने लगते हैं। भारत में ऐसा विश्वास है जब नारी के बायें अंग फडकें तो वह अच्छा शकुन है और पुरुष के बायें अंग फडकें तो वह अपशकुन है। इसका अनुवाद देखिए-

"Vaidehi knew Rama was leaving to save her;

A throb in her left side this happy news gave her,

119. मानस- 5/34/3

But ev'ry good sign Sita met with, that same

With an ill-omened meaning to king Ravana came."[120]

यद्यपि लक्ष्य भाषा में व्यक्त पंक्ति मूल अर्थ को अभिव्यक्त करती है तथापि शकुन और अपशकुन को न मानने वाले इस पर विश्वास नहीं कर सकते और न ही इसे ठीक तरह से समझ सकते हैं।

सामाजिक कलाओं से संबंधित शब्द और उनके अनुवाद की समस्याएँ

तुलसीदास सत्रहवीं शती के कवि थे। उनके समय में भारत में मुगलशासन चल रहा था और उस समय के समाज का पूरा वर्णन हम मानस में देख सकते हैं। किसी विशेष अवसर पर चौक पूरने की प्रथा हमारे समाज में विद्यमान है। यह भारतीय संस्कृति की अपनी विशिष्टता है जहाँ शादी, जन्मसंस्कार आदि शुभ अवसरों पर चौक पूरे जाते हैं तथा द्वारों को बन्दनवार, ध्वजाएँ तथा दीपमालिका से सजाया जाता है। यह सब भारत देश की संस्कृति की पहचान है। अनुवाद करते समय इसकेलिए उचित शब्दों का मिलना कठिन ही नहीं बल्कि लक्ष्य भाषा में इसे प्रस्तुत करना ही कठिन है खासकर किसी पाश्चात्य भाषा में। यहीं पर समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। कुछ उदाहरण देखिए-

"मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं।"[121]

मांगलिक अवसर पर सब कहीं ध्वज और तोरन लगाए जाते हैं जो पावनता और आस्था का प्रतीक है। इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Great arches, flags, streamers and banners."[122]

इधर अनुवादक ने मूल में प्रयुक्त शब्दों का अंग्रेजी प्रतिरूप रख दिया है। अगर इन शब्दों का विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट होगा कि भारतीय संस्कृति का परिचय जो मूल में

120. The Ramayana of Tulsidas, Vol. II, Book V, Chaupai 35, Pg.616
121. मानस- 1/93 (छ)
122. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chhand 8, Pg.78

है वह अनूदित पंक्तियों में प्राप्त नहीं है• और साथ ही भारतीय विश्वास जो मूल पंक्ति में मिलता है अनुवाद में अभिव्यक्त नहीं होता ।

"बीथीं सीची चतुरसम चौंके चारु पुराइ ।।" [123]

गलियों को चतुरसम से सींचा गया और द्वारों पर सुन्दर चौक पुराए । इधर चतुरसम गंध द्रव्य कस्तूरी, चन्दन, कुंकुम और कपूर हैं । घर के द्वारों पर मांगलिक कार्य के शुभारंभ में देवस्थापना करके सर्वांगीण कल्याण की कामना की जाती है । इसके साथ-साथ इसमें असीम आस्था एवं श्रद्धा की कामना भी समाई हुई है । इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Then skilful men watered the streets, and designs
Set in courtyards and all open spaces."[124]

इसमें 'चतुरसम' केलिए किसी भी शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है जो मूल अर्थ को व्यक्त करे । इसके अलावा 'चौंके चारु' केलिए 'designs set in courtyards' दिया गया है जो मूल अर्थ को व्यक्त तो करता है लेकिन इसके पीछे अंतर्निहित सांस्कृतिक तत्त्व को यह अभिव्यक्त नहीं करता । अनुवादक ने अनुवाद तो प्रस्तुत किया लेकिन यह अनुवाद मूल के भाव को पूर्ण रूप से उतार नहीं सका है ।

वाद्य उपकरण

भारत में जिन वाद्य उपकरणों का प्रयोग होता है उसको भी मानसकार ने मानस में प्रयुक्त किया है । जैसे-

"हरषहिं सुनि सुनि पनव निसाना ।"[125]

123. मानस- 1/296
124. The Ramayana of Tulsidas,Vol.I, Book I, Doha 289, Pg.226
125. मानस-1/298/1

इस उदाहरण में 'पनव और निसाना' वाद्य उपकरण है जो 'ढोल और नगाडे' केलिए प्रयुक्त हुए हैं। 'ढोल हाथ से बजाने का एक बाजा है जो दोनों ओर चमडे से मढा होता है। और 'नगाडा' डुगडुगी शक्ल का एक बहुत बडा और प्रसिद्ध बाजा है। यह भारत का विशेष वाद्य उपकरण है। इस पंक्ति का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Their horses all eager at hearing drum-calls."[126]

इधर अनुवादक 'पनव और निसाना' केलिए मात्र 'drum-calls' अनुवाद देकर चुप हो गए हैं। यह अनुवाद मूल अर्थ को उसकी पूर्णता में व्यक्त नहीं करता। मूल में दिए गए वाद्य उपकरण केलिए लक्ष्य भाषा में उचित शब्द मिलना कठिन है और इसी कारण इसका भावमात्र रखकर अनुवादक तृप्त हो गए हैं, जिससे अनूदित शब्द मूल की सहजता और प्रभाव खो बैठा है। एक और उदाहरण देखिए-

"हने निसान पनव बर बाजे। भेरि संख धुनि हय गय गाजे॥
झाझि बिरव ,डिंडिमी सुहाई। सरस राग बाजहिं सहनाई।"[127]

इसका अनुवाद देखिए-

"From all instruments then loudest music was played,
Tambonines , drums and cymbals were all gladly sounded,
The air with sweet clarion and pipe tones resounded" [128]

अनुवादक ने 'निसिन पनव बर बाजे' केलिए मात्र 'all instruments' दिया है जिससे मूल में व्यक्त अर्थ बिंब नष्ट हो गया है। मूल में अभिव्यक्त भाव भी इस अनूदित शब्द में नहीं मिलता। 'भेरिसंख धुनि' को अनुवाद में छोड दिया है। 'सहनाई' मुँह से फूंककर बजाया जानेवाला एक बाजा है जिस केलिए अनुवादक ने 'pipe' शब्द का प्रयोग किया है जो बिलकुल अलग उपकरण है।[129] ये वाद्य उपकरण पूर्ण रूप से भारत के हैं

126. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 303, Pg.227
127. मानस-1/343/1
128. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 348, Pg.268
129. Musical wind instruments (a single tube with holes stopped by the fingers)

जिनकेलिए लक्ष्य भाषा में उचित शब्द न मिलने के कारण अनुवादक ने लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का सहारा लिया है या मूल शब्द को छोड दिया है। लक्ष्य भाषा में उचित शब्द न मिलने के कारण इनका अनुवाद समस्या बन जाता है।

दार्शनिक तत्त्वों के अनुवाद की समस्याएँ

दर्शन की उत्पत्ति जीवन और उसकी आवश्यकताओं से हुई है। दर्शन एक ऐसा विषय है जिसमें विज्ञान की भौतिकता व स्थूलता और साहित्य की रागात्मकता व सूक्ष्मता आपस में धुलमिल जाती है। 'मानस' में मानसकार ने उस काला में प्रचलित अनेक संप्रदायों का जिक्र किया है। देखिए-

"सुमिरत प्रभुलीला सोइ पुलकित भएउ सरीर।"[130]

"There was one time when he his great powers displayed."[131]

यहाँ 'लीला' शब्द परमात्मा के खेल के रूप में रची सृष्टि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अनुवादक ने इसका 'great powers' अनुवाद दिया है। यदि अंग्रेजी अनुवाद का पुनः हिन्दी में अनुवाद किया जाए तो 'बहुत शक्ति / अधिकार' निकलेगा। भारतीय दर्शन में सृष्टिकर्ता द्वारा अवतार के रूप में की गई समस्त गतिविधियाँ उसकी लीलाएँ हैं। भगवान के लीलावतार की संकल्पना पाश्चात्य संस्कृति में नहीं है। प्रभाव की दृष्टि से यह अनुवाद हेय माना जाएगा। इस शब्द में जो दार्शनिक और सांस्कृतिक तत्त्व निहीत है किसी भी हालत में उसका मूल अर्थ नहीं दिया जा सकता।

"मायाबस परिछिन्न जड जीव कि ईस समान।"[132]

"How liked to God can the soul be that proves
So restricted, dull, delusion blinded."[133]

परमशिव की सृजन शक्ति तथा अपना आवरण डालकर जीवों को भ्रमित करने वाली शक्ति के अर्थ में 'माया' शब्द भारतीय दर्शन में प्रयुक्त होता है। अनुवाद में

130. मानस- 7/75 (ख)
131. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book VII, Doha 75, Pg.812
132. मानस- 7/111 (ख)
133. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book VII, Doha 108, Pg.845

इसकेलिए 'delusion' शब्द दिया गया है। 'डील्यूषन' का अर्थ मोह या भ्रम है। भारतीय दर्शन में 'माया' भौतिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर साधना के मार्ग में अवरोध मानी जाती है और इसके अंतर्गत मनुष्य के समस्त भाव समाहित किए जाते हैं। अत: यह 'delusion' शब्द मूल के पूर्ण भाव और अर्थ को किसी भी हालत में व्यक्त नहीं करता।

नवधा-भक्ति

तुलसी ने 'रामचरितमानस' में नवधा भक्ति को प्रमुख स्थान दिया है। नवधा भक्ति मानस के अरण्य काण्ड में मिलती है-

"प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥
गुरपद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुनगन करइ कपट तजि गान॥
मंत्र जाप मम दृढ बिस्वासा। पंचम भजनु सो बेद प्रकासा॥
छठ दम सील बिरति बहु कर्मा। निरत निरंतर सज्जन धर्मा॥
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मो तें संत अधिक करि लेखा॥
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहु नहि देखइ परदोषा॥
नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हिय हरष न दीना॥"[134]

भारतीय संस्कृति में 'नवधा भक्ति' का बड़ा ही महत्त्व है। श्रीमद्भागवत महापुराण के अनुसार कहा गया है -

"श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यात्मनिवेदनम्॥"[135]

134. मानस- 3/34/4 & 35/1-3
135. श्रीमद्भागवत महापुराण, 7/5/23

इससे स्पष्ट होता है कि विष्णु भगवान् की भक्ति के नौ भेद हैं- भगवान् के गुण लीला नाम आदि का श्रवण, उन्हीं का कीर्तन, उनके रूप -नाम आदि का स्मरण, उनके चरणों की सेवा, पूजा-अर्चा, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन । आज भी भारत में नवधा भक्ति का प्रचार है परन्तु पाश्चात्य सभ्यता में श्रवण, कीर्तन और स्मरण भक्ति का प्रचार है लेकिन अन्य प्रकारों का प्रचार नहीं है । अनुवाद देखिए-

"As faith's first step, men love with the saintly to meet;
As the second, my story they love and repeat;
Service giv'n at the lotus-like feet of a teacher,
With lowly pure mind, is the third;
And the fourth is to sing of my virtures and deeds,
True and guileless in thought and in word
Scriptures says, to repeat mystic spells and sing praise,
Putting firm faith in me, is the fifth of these ways
And the sixth-sense subdued, mind at peace, busy deeds
For self shunned, as all duties one faithfully heeds,
Seventh form is in all things to see me alone,
And yet more than me even the saintly to own;
The eighth-man is happy with what he possesses,
And no thought of other's fault's his mind obsesses;
To be without guile, frank with all, is the last,
And without joy or grief by my trust to hold fast."[136]

इधर 'भक्ति' शब्द केलिए 'faith' शब्द का अनुवाद रखा गया है । 'भक्ति' शब्द में जो श्रद्धा भावना विश्वास और ईश्वर के प्रति प्रेम जागृत होता है । 'faith' शब्द में वह भावना नहीं है । इन पंक्तियों में 'faith' शब्द का अर्थ विश्वासि है जो भक्ति अर्थ को उसकी पूर्णता में सूचित नहीं करता । बाकि पंक्तियों का शब्दानुवाद और भावानुवाद करके

136. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book III, Chaupai 37-38, Doha - 36 Pg.551

अनुवादक तृप्त हो गए हैं। भारतीय संस्कृति से जुडे पाठक जितनी गहनता से समझते हैं इसी तथ्य को पाश्चात्य पाठक किसी भी हालत में समझ नहीं सकता और न ही इसके अर्थ को।

इससे यह स्पष्ट होता है कि दर्शन-प्रधान पाठसामग्री का अनुवाद प्रत्येक अनुवादक केलिए एक चुनौती भरा काम हुआ करता है।

'मानस में चित्रित कुछ सांस्कृतिक शब्द एवं उनके अनुवाद की समस्याएँ

भारतीय संस्कृति में ऐसे कई शब्द हैं जिनका प्रयोग रूढ़ बन गया है। ये शब्द भारतीय धरोहर से जुड़े हैं और इनकेलिए दूसरी भाषा में उचित पर्याय मिलना कठिन है। ये शब्द प्राय: संस्कृत से लिए गए हैं और आज भी इनका प्रयोग उसी प्रकार होता है। किन्तु विदेशी भाषाओं में इनका पर्याय मिलना कठिन ही नहीं वरन् असंभव भी है। मानस में बहुत से ऐसे शब्द है जो भारतीय संस्कृति से जुडे हैं। इनके कुछ उदाहरण देखिए-

1. अग्नि

"भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें॥"[137]

हमारे सांस्कृतिक अनुष्ठानों में 'अग्नि' की उपासना होती है। 'अग्नि' के प्रति भारतीय जनता की असीम आस्था एवं श्रद्धा है। अग्निदेव आलोक के प्रदाता हैं, ऊर्जा के स्रोत हैं। मानवजीवन में अग्नि की अहर्निश उपयोगिता ही इसे देवत्व प्रदान करती है। ऋग्वेद में अग्नि को देवत्व प्रदान कर उनकी प्रार्थना की गई है।[138] सृष्टि के पालक पांच तत्वों में अग्नि का प्रमुख स्थान है। इसका अनुवाद है-

137. मानस- 1/188/3
138. अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। ऋग्वेद 1/1/1

"The saint the oblation devotedly offered;

The fire-god appeared and a portion he prooffered."[139]

यहाँ 'अग्नि' केलिए 'fire-god ' शब्द का प्रयोग किया गया है जो उपर्युक्त सांस्कृतिक तथ्यों को अभिव्यक्त करने में असफल होता है। इसी कारण एक पाश्चात्य पाठक इस शब्द से इसके सांस्कृतिक महत्त्व को समझ नहीं पाता।

2. अशोक

"सुनहि बिनय मम बिटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका॥"[140]

'अशोक' शोक-दुःख को दूर करने वाला। श्रद्धा, विश्वास, पवित्रता, शोक-निवारण आदि के परिप्रेक्ष्य में अशोक की उत्तमता का गुणगान प्राचीन साहित्य में किया गया है। इसका अनुवाद है-

"Hear my pleading, Asoka tree, made in my grief

Make your name come true, from sorrow give me relief."[141]

अशोक को लेकर भारतीयों का जो विश्वास है वह अंग्रेजी पाठकों केलिए नूतन है। अंग्रेजी भाषा में 'अशोक' शब्द को अभिव्यक्त करने वाला कोई शब्द नहीं है इसीकारण अनुवादक को मूल शब्द का लिप्यंतरण देना पडा। इसकेलिए अनुवादक ने पाद-टिप्पणि दी है।[142] जो 'अशोक' शब्द के अर्थ मात्रा को बताती है। इस शब्द में जो सांस्कृतिक घटक है वह इसमें अभिव्यक्त नहीं हुआ है।

139. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 195, Pg.149
140. मानस- 5/11/5
141. The Ramayana of Tulsidas, Vol.II, Book V, Chaupai 12, Pg.599
142. The word Asoka means 'without sorrow', T.R.T (Vol.II) BookV, Pg.599

3. कुश

"गहि गिरीस कुस कन्या पानी।"[143]

कुश को अत्यधिक पावन मानकर पूजा मं इसका प्रयोग किया जाता है। मांगलिक कोर्य एवंसुख समुद्धिकरी है क्योंकि इसका स्पर्श अमृत सेहुआ है। इसी विश्वास केकारण शुभ अवसरों पर इसका प्रयोग होता है। इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"The king took the bride's hand, took **sacred** grass too."[144]

'Sacred grass' क्या है इसे अनुवादक ने व्यक्त नहीं किया है और न ही यह शब्द 'कुश' अर्थ को अभिव्यक्त करता है। अत: यह शब्द न मूल अर्थ को व्यक्त करता है और न ही सांस्कृतिक तथ्य को प्रकट करता है।

4. तुलसी

"जो सुमिरत भयो माँग तें तुलसी तुलसीदासु॥"[145]

भारतीय संस्कृति में धार्मिक दृष्टिकोण से तुलसी का विशेष महत्त्व है। देवत्व के निवास का प्रतीक, मानकर इसे पूजा जाता है। इसी कारण से अत्यधिक श्रद्धा एवं भक्ति के साथ तुलसी की पूजा-अर्चना प्रतिदिन की जाती है। भारतीय संस्कृति और धार्मिक अनुष्ठानों सेपरिचित व्यक्ति ही इसे समझ सकता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है-

"Says Tulsi, tho' vile as the hemp, man is changed
To the sweetness of **tulsi** by this."[146]

143. मानस- 1/100/1
144. The Ramayana of Tulsidas, Vol.I, Book I, Chaupai 101, Pg.85
145. मानस- 1/26
146. The Ramayana of Tulsidas, Vol. I, Book I, Chaupai 25, Pg.25

अंग्रेजी में इसकेलिए 'Tulsi' शब्द का ही प्रयोग किया है और पाद-टिप्पणि में मात्र 'Basil' देकर अनुवादक शांत होगए हैं। अंग्रेजी अनुवाद में मूल का लिप्यंतरण और पाद-टिपणि में वैज्ञानिक शब्दावली ही प्रस्तुत की गई है जिससे अर्थ अभिव्यक्त हो जाता है लेकिन इसके सांस्कृतिक और धार्मिक अर्थ को किसी भी हालत में पाठक समझ नहीं पाता।

5. दान

"सर्बस दान दीन्ह सब काहू।"[147]

भारतीय संस्कृति में दान वह संबल है जो दान दाताओं कोमोक्ष मार्ग की ओर ले जाता है। तथा याचकों का पालन-पोषण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका आदा करता है। विशेष अवसरों पर चाहे वह धार्मिक सांस्कृतिक या पारंपरिक अनुष्ठान क्यों न हो दान देने में लोक प्रियताहै। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति में ऐसी प्रथा नहीं है जिसके कारण लक्ष्य भाषा में सही शब्द का मिलना कठिन है। मूल पंक्ति का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"With generous heart each one each gifts would heap."[148]

लक्ष्यभाषा में 'दान' केलिए 'gifts' शब्द का प्रयोग किया गयाहै। इसका अर्थ 'उपहार' या 'तोफा' है न कि 'दान' अर्थ। 'दान' शब्द में जो पवित्रता, श्रद्धा और सांस्कृतिक घटक है वह 'gifts' शब्द में पूर्ण रूप से नष्ट हो गया है।

6. तरपन

"तरपन होम करहिं बिधि नाना।" [149]

147. मानस- 1/ .93/4
148. The Ramayana of Tulsidas, Vol. I, Book I, Chaupai 199, Pg.153
149. मानस- 1/209/1

भारतीय विश्वास के अनुसार पूर्वजों एवं दिवंगत माता-पिता का स्मरण श्राद्धपक्ष में करकेउनकेप्रति असीम श्रद्धा के साथ तर्पण, पिंडदान यज्ञ तथा भोजन का विशेष महत्त्व है। अर्घ्य देकर तर्पण दिया जाता है जिससे आत्मा को मोक्ष प्राप्त हो। आत्मिक सूख-शांति के साथ-साथ पारिवारिक कल्याण भी इसमें अंतर्निहित है। पाश्चात्य संस्कृति में ऐसी प्रथा न होने के कारण लक्ष्य भाषा पाठक इसे किसी भी हालत में नहीं समझ सकते। अंग्रेजी अनुवाद में यह बात स्पष्टत: अभिव्यक्त होती है-

"Who to you sacrifices and off'rings uplift."[150]

यहाँ अनुवादक ने मूल पंक्ति का भावानुवाद मात्र प्रस्तुत किया है। इस अनुवाद से मूल पंक्ति की सहजता लक्ष्य भाषा में नष्ट हो गयी है।

7. यज्ञापवीत या जनेऊ

इसका शब्दिक अर्थ है 'यज्ञ के समय ऊपर से धारण किया हुआ या लपेटा हुआ वस्त्र। 'पवित्र सूत्र' का प्रतीक रूप है जनेऊ। इसे प्रथम बार उपनयन संस्कार के समय धारण किया जाता है। जनेऊ में तीन धागों की पावनता मानवीय गुणों के विकास से मानी गयी है। इसके एक-एक धागे में नौ धागों का समावेश करके नौ देवताओं, प्रजापति, ॐ कार अनंत, अग्नि, सूर्य, चंद्रमा, वायु, सर्प एवं पितृगणों का समावेश मानकर इसकी पावनता और महत्ता आँकी गई है।[151]

"दीन्ह जनेऊ गुर पितु माता।"[152]

शास्त्रों में उपनयन संस्कार हेतु उम्र, आठ वर्ष ब्राह्मण केलिए, ग्यारह वर्ष क्षत्रिय केलिए तथा बारह वर्ष वैश्य केलिए बताई गई है। गुरु और माता पिता द्वारा यह संस्कार किया जाता है। इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

150. The Ramayana of Tulsidas, Vol. I, Book II, Chaupai 129, Pg.372
151. भारतीय सांस्कृतिक प्रतीक कोश, पृ.277
152. मानस- 1/203/2

"By their parents and priest the 'twice borns' sacred thread."[153]

अनुवादक ने यहाँ 'जनेऊ' केलिए 'sacred thread' शब्द का प्रयोग किया है जो किसी भी प्रकार से मूल शब्द के अर्थ को और उसके सांस्कृतिक पक्ष को प्रकट नहीं करता । अनुवादक ने 'sacred thread' को समझाने केलिए कोई पाद-टिप्पणि भी नहीं दी है । इसी कारण भारतीय संस्कृति से अनभिज्ञ पाठक इस शब्द को किसी भी हालत में नहीं समझ सकता ।

8. पाणिग्रहण

पिता अपनी बेटी को लड़के के हाथों में जब सौंपता है तो उसे पाणिग्रहण कहा जाता है । अपनी बेटी का हाथ वर के हाथों में रखकर पिता उसके ऊपर पानी डालता है और साथ ही ;आदर दिखाने केलिए पान भी देता हैं । तभी विवाह की रस्म पूरी होती है । इसका बडा महत्त्व भी है । मानस में शिव पार्वती विवाह और राम-सीता विवाह के सन्दर्भों में इसका विवरण मिलता है-

"गहि गिरीस कुस कन्या पानी । भवहि समरपीं जानि भवानी ।
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा । हिय हरषे तब सकलसुरेसा ।"[154]

इसका अनुवाद देखिए-

"The king took the brides hand, took sacred grass too;
To siva gave her whom as goddess he knew
And when the god took her and thus his troth plighted."[155]

यहाँ 'पानिग्रहन' केलिए उचित शब्द न मिलने के कारण अनुवादक ने भावानुवाद के सहारे इस बात को व्यक्त किया है । अनुवाद की दृष्टि से वे असफल रहे हैं ।

153. The Ramayana of Tulsidas, Vol. I, Book I, Chaupai 209, Pg.160
154. मानस- 1/100/1-2
155. The Ramayana of Tulsidas, Vol. I, Book I, Chaupai 1o2, Pg.85

यहाँ 'पानिग्रहन' शब्द के अनुवादक ने छोड़ दिया है। जिससे अनूदित पंक्ति मूल की सहजता खो बैठी है।

भारतीय परंपरा और विश्वासों से जुडे सांस्कृतिक शब्द पूर्ण रूप से भारतीय ही है और इन शब्दों केलिए उचित पर्याय या प्रतिरूप लक्ष्य भाषा में मिलना कठिन है। अनुवादक को अक्सर इन शब्दों का लिप्यंतरण करना पडता है या फिर शब्दानुवाद या भावानुवाद के माध्यम से इन्हें प्रस्तुत करना पडता है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति अपनी विशेषताओं के कारण अपना अलग महत्त्व रखती है। भारतीय संस्कृति से जुडे ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनका अनुवाद लक्ष्य भाषा में करना कठिन ही नहीं, कहीं-कहीं असंभव भी है। इन अभिव्यक्तियों का अनुवाद करना टेढी खीर है। क्योंकि अन्य संस्कृतियों में पनपी भाषाओं में यह आवश्यक नहीं कि उसके लिए उचित अभिव्यक्ति मिले। अवतारवाद, आध्यात्मिकता, पुनर्जन्मवाद आदि विशेषताओं के कारण भारतीय संस्कृति अन्य संस्कृतियों से पृथक मानी जाती है। इन विशेषताओं से जुडे शब्दों की अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने में अनुवादक को कठिनाई हुई है। अनुवादक ने ऐसी अवस्था में या तो इन सांस्कृतिक शब्दों को त्याग दिया है या फिर भावानुवाद का सहारा लिया है। वर्णव्यवस्था, पुरुषार्थ आदि भारत की अपनी धरोहर हैं। इससे संबद्ध शब्दों केलिए पाश्चात्य संस्कृति में उपयुक्त शब्द मिलना कठिन है। लिप्यंतरण के सहारा कई शब्दों को लक्ष्य भाषा में रख दिया है। भारतीय संस्कार, विश्वास, धार्मिक अनुष्ठान, वेश-भूषा, सामाजिक कलाएँ आदि केलिए प्रयुक्त शब्द भारत के रीति-रिवाज और साहित्यिक पृष्ठभूमि से पनपे हैं जिनके लिए लक्ष्य भाषा में अनुवादक केलिए भावानुवाद और कहीं कहीं पर शब्दानुवाद का सहारा लेना पडा है। इससे हम स्थापित कर सकते हैं कि सांस्कृतिक शब्दावली से जुडे शब्द और अभिव्यक्तियों का अनुवाद करना अनुवादक केलिए बडी ही कठिनाई उत्पन्न करता है।

उपसंहार

मनुष्य सब एक है पर भौगोलिक, सामाजिक और भाषिक सीमाओं के कारण वे अलग बन जाते हैं। इनमें भाषा की सीमाएँ सब से प्रमुख हैं। मानव मन इन सीमाओं को लाँघकर विश्व-भर में व्यापने केलिए तडपता रहता है। भाषा की सीमाओं को लाँघने का सबसे बडा माध्यम अनुवाद है। अनुवाद ही वह माध्यम है जो अपने प्रयास से दो भिन्न एवं अपरिचित संस्कृतियों, परिवेशों एवं भाषाओं की सौंदर्य चेतना को परिचित बना देता हैं। आधुनिक युग में जीवन के अनेक क्षेत्रों के विकास के साथ-साथ, अनुवाद का क्षेत्र भी एक अहम भूमिका निभाता है। अनुवाद मानव सभ्यता के साथ ही विकसित एक ऐसी तकनीक है जिसका अविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडंबनाओं से बचने केलिए किया था। विश्व बंधुत्व की कल्पना को साकार करने केलिए विश्व साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। यह अनुवाद द्वारा ही संभव है। विश्व मैत्री एवं सहयोग के इस नए दौर में किसी भी प्रदेश की जनता को समझने केलिए उस प्रदेश के साहित्य को समझना अत्यंत अनिवार्य है। इस प्रकार अनुवाद की उपयोगिता विश्व के संपर्क का सूत्रधार बन गयी है। अनुवादक संस्कृति का वाहक है। विश्व के विभिन्न भागों में कला, साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में जो विकास हो रहा है, उसमें अनुवादक का महत्वपूर्ण योगदान है। भूमण्डलीकरण और बाजारीकरण के इस युग में अनुवाद ही सेतु का कार्य करता है जो किसी भी देश की उन्नति एवं विकास की सीढी बन रहा है।

रामायण हमारे देश का ऐसा महाकाव्य है जिसने समस्त भारत को एक सूत्र में बाँध दिया है। अपने विशाल परिसर के कारण रामायण का महत्त्व मात्र भारत तक ही सीमित नहीं, विश्व भर में भी व्याप्त हुआ है। इसमें चित्रित भारतीय संस्कृति और समाज का प्रतिफलन जिसप्रकार 'रामचरितमानस' में हुआ है शायद ही किसी और ग्रंथ में किया गया है। अवतारवाद, पुनर्जन्मवाद, सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा आदि विशेषताओं ने अन्य संस्कृतियों के लोगों को इस ओर खींचा है। मानस की रचना अवधी भाषा में हुई है। एक विदेशी पाठक इसे समझ नहीं सकता। भारतीय संस्कृति से आकर्षित होकर

'रामचरितमानस' का अनुवाद भारतीय भाषाओं एवं विदेशी भाषाओं में किया गया। महाभारत, रामायण आदि धार्मिक ग्रंथों के अनुवादों के जरिये आज भारत विश्वभर में एक अलग पहचान रखता है।

'रामचरितमानस' का अंग्रेजी में 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' शीर्षक से पद्यानुवाद किया गया हैं। काव्यानुवाद अनुवाद की एक जटिल प्रक्रिया है। फिर भी रामचरितमानस के इस अनुवाद में ऐसे कई स्थान हैं जहाँ अनुवादक शत-प्रतिशत सफल हुए हैं। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में शक्ति की सृष्टि होती है। अनुवाद में ऐसे कई स्थान हैं जहाँ अनुवादक इसको सफलता पूर्वक प्रस्तुत कर सके हैं। जैसे- 'बवा सो लुनिअ' केलिए 'we reap as we've sown', 'कहि न जाइ जस भयेउ विषाद्' में मूल से मिलते-जुलते मुहावरे का प्रयोग किया है- 'tis beyond pen and words;' 'जरे पर लोन लगावति' केलिए 'putting salt on a burn', 'सो फलु पाएउँ' का 'I have reaped my own fruit', 'तृन समान' का 'mere wisp of straw'। इन उदाहरणों में जो मुहावरे हैं उनकेलिए लक्ष्य भाषा में समान मुहावरे रखकर उसे सफलता पूर्वक अनुवादक प्रस्तुत कर सके हैं। जब अनुवाद में मूल बात कोउसके सही रूप मे प्रस्तुत किया जाता है तभी अनुवाद सफल कहा जाता है। यहाँ अनुवादक मूल का शत-प्रतिशत अनुवाद करने में सफल हुए हैं।

जब दो भाषाएँ एक ही परिवार की नहीं होती है तो अनुवाद करने में अनुवादक को कठिनाई होती है। अगर रामचरितमानस के इस पद्यानुवाद पर एक विहंगम दृष्टि डाले तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मानस के अनुवादक ने मूल के निहितार्थ को पकड पाने की पूरी चेष्टा की है। यह न केवल अर्थ में अपितु अभिव्यंजना में भी देख सकते हैं। इसका उदाहरण अनुवादक द्वारा लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त अन्त्यानुप्रास को मूल जैसे ही अनुवाद में सुरक्षित रखने के प्रयास में मिल जाता है। जैसे-

"बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहुँ लगन सुनाई आइ ।

समय बिलोकि बिवाह कर पठए देव बोलाइ ॥

"The sages then said that the moment had come,

That the bride and the groom be united.

The king once again for this glad ceremony

The gods to his palace invited."

एक और उदाहरण देखिए-

मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहिं ।

कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहिं ॥

"He whom seers and sages and saints in all ages

With pure, holy mind contemplate;

He whose highest praises all scripture upraises,

Tho' far beyond man to relate;"

इन दोनों उदाहरणों में अगर मूल और अनुवादों को देखें तो यह व्यकत होता है कि मूल में मानसकार ने अन्त्यानुप्रास का जो प्रयोग किया है उसे कुछ हद तक लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने में अनुवादक सफल रहा है । उसी प्रकार मूल कृति में प्रयुक्त किन्ही शब्दों केलिए उचित शब्दों का चयन कर मूल अर्थ को अभ्यिक्त करने में भी सफल हुए हैं ।

"काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कइ धारि ।"

"Anger lust, greed and pride, and such passions as these

Go to make up Illusion's swift torrent."

इस उदाहरण में उचित शब्दों का चयन करके अनुवादक अर्थाभिव्यक्ति में मूल के समान ही सफल हुए हैं ।

अलंकारों के प्रयोग से काव्य की शोभा बढती है। 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में कहीं कहीं मूल के समान अलंकारों का प्रयोग करने में अनुवादक सफल हुए हैं-

'सेवत सुलभ सकल सुखदायक।' इस पंक्ति में 'स' वर्णों की आवृत्ति से अनुप्रास की जो सृष्टि मानसकार ने की है उसे 'ला' वर्णों की आवृत्ति से उसी प्रकार प्रस्तुत करने में अनुवादक सफल हुए हैं-

The suppliant's aid; lord of lifeless and living .

'l' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास का यहाँ सुन्दर प्रयोग अनुवादक ने प्रस्तुत किया है। मात्र शब्दालंकारों के संदर्भ में नहीं वरन् अर्थालंकार के प्रयोग में भी इस सफलता को हम देख सकते हैं। जैसे- *'हृष्टपुष्ट तन भए सुहाए। मानहु अबहि भवन तें आए।'* इस पंक्ति में 'मानहु' शब्द उत्प्रेक्षा की पहचान कराती है। अनुवाद में भी 'as' शब्द का प्रयोग कर उत्प्रेक्षा का संकेत कराया है-

"Their bodies at once became youthful and vig'rous
As tho' they had just left their home for life rig'ours."

भाषाओं में भिन्नता होते हुए भी कई स्थान ऐसे हैं जहाँ समानता की सृष्टि की जा सकती है। इसका स्पष्टीकरण ऊपर के इन उदाहरणों में मिलता है।

अनुवादक जहाँ अनुवाद करते समय कुछ प्रसंगों में शत-प्रतिशत सफल हुए हैं वहीं और कुछ स्थानो पर शब्दानुवाद और भावनुवाद के सहारे ही मूल की बातों को अभिव्यक्त कर सके हैं। जैसे-

"प्रभु के बचन सीस धरि सीता। बोली मन क्रम बचन पुनीता ॥
लछिमन होहु धरम के नेगी। पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी ॥"

"Taking on herself with her lord thus had decreed,
Sita answered – her mind pure in thought, word and deed-

In th's sacred rite you as priest, Lakshman, I claim!
Prepare quickly and then lead me up to the flame!

सीता जी की अग्नि-परीक्षा के संदर्भ में उक्त पंक्तियों को रखा गया है । इस उदाहरण में पहली पंक्ति में शब्दानुवाद है जो मूल अर्थ को ठीक तरह से व्यक्त करता है और दूसरी पंक्ति में भावानुवाद है जो अर्थाभिव्यक्ति में सफल हुआ है । इस उदाहरण से यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है कि अनुवादक को कई स्थानों पर मूल को अभिव्यक्त करने में कठिनाई तो हुई है लेकिन कहीं कहीं पर मूल जैसे अर्थ को अभिव्यक्त करने में वे सफल भी हुए हैं । कहीं कहीं पर अनुवाद का स्तर कम हुआ दिखाई पडता है ।

जैसे एक सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार अनुवाद के भी दो पक्ष हैं । अनुवाद कभी-कभी सभी दृष्टियों से पूर्ण होता है तो कभी-कभी अपूर्ण भी । रामचरितमानस एक ऐसी रचना है जो किसी एक क्षेत्र का या लोगों की संस्कृति को अभिव्यक्त नहीं करती बल्कि संपूर्ण भारतीय मानसिकता को उनके आचार -विचार को चित्रित करती है । इस महाकाव्य के इन्हीं पक्षों को एक विजातीय भाषा में प्रस्तुत कर पाना दुष्कर ही नहीं कभी कभी असंभव भी हो जाता है । एटकिन्स के इस पद्यानुवाद में इसकी पूरी झलक हमें प्राप्त होती है ।

हिन्दी और अंग्रेजी की प्रकृति बिलकुल अलग होने से भाषा के रूप को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना कठिन होता है । एक भाषा में प्रयुक्त बहवुचन या एकचवन को उसके पूर्ण सौंदर्य के साथ उसी प्रकार प्रस्तुत कर पाना कठिन काम हैं । *'भईं सनेह सिथिल सब रानी'* में *'भईं'* शब्द में 'ईं' वर्ण संयुक्त स्वर है । यह शब्द बहुवचन की ओर संकेत करता है । लक्ष्य भाषा में ऐसा कोई वर्णन नहीं है जो संयुक्त स्वर के स्थान पर प्रयुक्त हो सकता है । अनुवादक ने इसे इसप्रकार प्रस्तुत किया है- 'The queens all enshrining in heart and in will' । अनुवादक को 'भईं' केलिए उचित शब्द न मिलने के कारण भावार्थ का सहारा लेना पडा है ।

हिन्दी भाषा की विशेषता यह है कि इसमें कुछ सर्वनामों का प्रयोग बहुवचन में न करके एकवचन में किया जाता है। कभी कभी आदरसूचक या अधिकार भाव को अभिव्यक्त करने में 'मानस' में ऐसे शब्दों का प्रयोग हमें मिलता है। लक्ष्य भाषा में ऐसा कोई शब्द नहीं है जिसका प्रयोग ऐसे संदर्भों में हो सकता है। जैसे-

"तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ। अनुज हमार भीरु अति सोऊ॥"

"you and Sugriv are trees doomed by enmity's flood
And my brother's a coward, altho' of my blood.

राजा रावण ने यहाँ अपने लिए 'हमार' शब्द का प्रयोग एकवचन में किया है। रावण के अधिकार भाव को अभिव्यक्त करता है यह शब्द। अंग्रेजी भाषा में 'मैं' के बदले 'हम' का उपयोग करना भूल समझा जाता है परंतु हिन्दी में बहुधा इसका प्रयोग होता है। 'My' शब्द का चयन मात्र 'मेरा' शब्द का अर्थ व्यक्त करता है। लक्ष्य भाषा की जो कमी है उसका यहाँ स्पष्ट रूप से पता चलता है।

हिन्दी भाषा की यह विशेषता है कि इस भाषा में आदरसूचक शब्दों का प्रयोग बहुलता से किया जाता है। ये शब्द प्राय: मध्यम पुरुष में प्रयुक्त होते हैं।

"मोहि लगि सबहिं सहेउ संतापू। बहुत भाँति दुखु पावा आपू।"

"For me you accepted this great self-denial,
For me you endure severe suff'ring and trial."

मानसकार ने यहाँ 'आप' शब्द आदरार्थ प्रयुक्त किया है। मूल में यह शब्द मध्यम पुरुष केलिए प्रयुक्त हुआ है और लक्ष्य भाषा में भी इसी संदर्भ में प्रयुक्त किए जाने पर भी अनुवादक यहाँ मूल के संदर्भ को अभिव्यक्त नहीं कर पाया हैं क्योंकि लक्ष्य भाषा में आदर को अभिव्यक्त करनेवाला कोई शब्द नहीं है। अत: अनुवादक के समक्ष मात्र इसका समानार्थ शब्द ही रखना पडा है।

इन उदाहरणों में अनुवाद की सीमाओं का पता चलता है। इन्हीं सीमाओं के कारण अनुवादक मूल बात को उसकी पूर्णता में लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत नहीं कर पाता।

अनुवाद वह प्रक्रिया है जहाँ अनुवादक को मूल से हटकर अपनी तरफ से कुछ जोडना पडता है और कभी-कभी मूल की कुछ बातों को छोडना पडता है। इस प्रक्रिया में अनुवाद का सौंदर्य और सहजता नष्ट हो जाता है। मानस के अंग्रेजी अनुवाद में ऐसे बहुत से संदर्भ हैं जहाँ अनुवादक ने मूल में व्यक्त पंक्तियों में अपने ओर से बातों को जोडा है और कहीं-कहीं पर मूल के बातों को छोड दिया है। 'अयोध्याकाण्ड' में भरत-विलाप के संदर्भ जो मूल में नहीं है उसे अनुवादक ने अपने अनुवाद में जोड दिया हैं। साथ ही पाद-टिप्पणि में यह बात भी जोड दी है कि ये पंक्तियाँ उन्होंने ग्राउज के अनुवाद से ली हैं। इससे मूल कथा में जो प्रवाह है वह अनुवाद में नष्ट हो गया है। उसी प्रकार 'अरण्यकाण्ड' में 'वनवास' के समय जब राम-लक्ष्मण और सीता चित्रकूट से पंचवटी जाते हैं तब राह में अत्रि और अनसूया से इनका मिलन होता है। सीता अनसूया मिलन प्रसंग का अनुवाद करते समय अनुवादक ने अपनी ओर से कई पंक्तियाँ अनुवाद में जोड दी हैं जिससे लक्ष्यभाषा की सहजता नष्ट हो गई है। अनुवादक ने विस्तार से बातों को प्रस्तुत किया है।[1] मूल में जहाँ आभूषण और दिव्य वस्त्र सीता को देते हुए अनसूया का चित्रण किया गया है वहीं लक्ष्य भाषा में आभूषणों से सुसज्जित सीता के सौंदर्य का आनंद उठाते हुए अनसूया को चित्रित करते हुए विस्तार प्रदान किया गया है। इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि अनुवादक ने 'मानस' का अंचल छोड्कर अन्य किसी ग्रंथ का आश्रय भी लिया है।

प्रसंगों को जोडने के अलावा वाक्यों में भी अनुवादक ने अपनी और से बातों को जोडा है-

'जनकसुता कें आगें ठाढ भएउ करजोरि।

1. The Ramayana of Tulsidas (Vol.II) Book III : Doha 3, Chaupai 5, Pg.515-516

"Then to Sita he came with hands humbly clasp

Stood before his dear mistress once more' ."

इस दोह में हनुमान का लंका दहन के बाद सीता जी से मिलने का संदर्भ है। मूल में जिस सहजता से तुलसी ने बात को अभिव्यक्त किया है वही अनुवादक ने 'Then to Sita he came' और 'dear mistress once more' में बातें को जोडा है।

मूल मे जहाँ बहुत कम शब्दों के माध्यम से एक बात को अभिव्यक्त किया जाता है वहीं लक्ष्य भाषा की प्रकृति के कारण अनुवादक को अर्थ को बनाए रखने केलिए ऐसा करना पडता है।

अनुवाद में कभी कभी ऐसा भी करना पडता है कि स्रोत सामग्री के वाक्य को लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित करते समय एक या अधिक शब्दों का परित्याग करना पडता है। इसका मुख्य कारण स्रोत तथा लक्ष्य भाषा में प्रयोगों का अन्तर है। एटकिन्स के पद्यानुवाद में भी यह देखा जा सकता है जहाँ मूल के कई शब्दों को अनुवाद में छोड दिया गया है। जैसे-

"गगनपंथ देखी मैं जाता। परबस परी बहुत बिलपाता।"

"I saw her then borne on the path of the skies

By another, and raising loud lamenting cries."

इस उदाहरण में सीता की व्यथा, उनकी निस्सहाय अवस्था को अभिव्यंजित किया गया है। 'परबस' शब्द इसी संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है जिसे अनुवादक ने छोड दिया है जिससे लक्ष्य भाषा में सीता की विवशता को उसकी पूर्णत में अनुवादक चित्रित नहीं कर पाए है।

'मानस' में तुलसी के भाषा-प्रयोग के साथ साथ उनकी शब्द-संरचना का भी पूरा परिचय मिलता है। पुनरुक्ति भाषा की खास विशेषता है जो पंक्तियों में सौंदर्य के साथ संगीतात्मकता की सृष्टि भी करती है। मानस की इसी विशेषता उसे लोक मानस केलिए

प्रिय बनाती है। 'धर्म-वर्म', 'गर्जहिं-तर्जहिं', 'नर-नारि', 'पुनि-पुनि', 'फल-फूल' 'खाग-मृग' आदि शब्दों का प्रयोग पंक्तियों में सौन्दर्य के साथ-साथ ध्वन्यात्मकता की भी सृष्टि करता है। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा में जान आती है। लक्ष्य भाषा में ऐसा करने में अनुवादक असमर्थ रहे हैं क्योंकि लक्ष्य भाषा में ऐसे शब्दों का मिलना कठिन है और अगर प्राप्त भी हों तो वह सौन्दर्य की उद्भावना नहीं होगी जो मूल में है। ऐसे स्थानों पर अनुवादक ने भावार्थ मात्र को प्रस्तुत किया है।

'मारु मारु धरु धरु धरु मारु' में युद्ध की तीव्रता और जोश का जो वर्णन मिलता है वह लक्ष्य भाषा में प्रस्तत कर पाना कठिन है। 'Let's kill them Let's kill them ! Let's get a hold on them ! में वह ध्वन्यात्मकता चित्रित नहीं है। 'रामचरितमानस' में रसाभिव्यक्ति और भावावेग को प्रस्तुत करने केलिए मानसकार ने जिन ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया उन्हें लक्ष्य भाषा में वाणी देने में अनुवादक असमर्थ रहे। यह अनुवाद की सीमाओं की ओर ही संकेत करता है।

'रामचरितमानस' और एटकिन्स के 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में अनुवाद की सीमाएँ स्पष्ट रूप में आंकी जा सकती हैं। इसके काव्य के भावपक्ष एवं कलापक्ष से संबंधित अनुवाद की सीमाएँ कहीं कहीं गंभीर समस्याओं का रूप भी लेती हैं। भाषा की विशेष क्षमता एवं दक्षता का भी इसमें भूमिका रही है। विशेष कर तुलसीदास की भाषा अपने ढंग की अलग है। उसकी सुन्दरता अर्थगांभीर्य अर्थद्यातेन की विशेष शक्ति पूर्ण रूप से अनुवाद में उतारी नहीं जा सकती। एटकिन्स के अनुवाद में भी यह स्पष्ट देखा जाता है।

इस प्रकार रामचरितमानस का अनुवाद 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में एटकिन्स ने रामचरितमानस को उतनी ही पूर्णता के साथ अंग्रेजी में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जितनी अनुवाद की सीमाएँ सहायक रहीं है। भारतीय धरोहर और उसका पूरा ब्योरा जो मानस में मिलता है वह अनुवाद में पूर्ण रहने पर भी भारतीयों और विदेशीयों को प्रभावित

करता रहा है। तुलसी कि भाषा एवं शैली का भी अनुवादक ने यथा संभव अनुवाद करने का प्रयास किया है। यह अंग्रेजी का रामचरितमानस के पहला पद्यानुवाद है। इसी कारण भी इसकी महत्ता है। काव्यानुवाद में काव्य सौंदर्य दो भिन्न भाषाओं में भिन्न ही रहता है लेकिन इसे जहाँ तक हो सके विशिष्ट बनाने का कार्य अनुवादक ने किया हैं। काव्यानुवाद का चुनौती पूर्ण युक्त काम एटकिन्स ने जो किया है वह अत्यधिक सराहनीय है। भारत के बाहर के पाउकों को समझाने में यह अनुवाद बडा ही सहायक सिद्ध हुआ है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के निष्कर्ष इसप्रकार दिए जा सकते हैं।

➢ अनुवाद वह सेतु है जो दो भाषाओं और उनके संस्कृतियों को जोडता है। इसका स्पष्ट उदाहरण रामचरितमानस का ए.जी. एटकिन्स द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में मिलता है। पाश्चात्य देशों में मानस का परिचय कराने में यह अनूदित कृति सफल सिद्ध हुई है।

➢ मानस में प्रयुक्त कुछ शब्द, मुहावरें, कहावतें और शीर्षकों का अनुवाद सफलता पूर्वक अनुवाद में उतार पाए हैं।

➢ अनूदित पाठ में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ मूल अर्थ का गलत प्रयोग हुआ है और अर्थ का अनर्थ हो गया है।

➢ भारतीय संस्कृति की अपनी खास विशेषता है जिसमें कई शब्द वेद, पुराण और महाकाव्यों से लिए गए हैं। यह सांस्कृतिक शब्दावली विजातीय भाषा के अनुवाद में समस्याएँ उत्पन्न करती हैं।

➢ अपने विस्तृत ज्ञानभण्डार का परिचय देते हुए तुलसीदास ने रामचरितमानस में विचारों, भावों और अनुभूति के जिन जिन प्रतिबिंबों को प्रस्तुत किया है अनुवादक उन्हें प्रस्तुत नहीं कर पाए हैं।

➢ मानस की काव्य कला के अन्तर्गत प्रकृति के विभिन्न रंगों को चित्रित किया गया है। · उसे अंग्रेजी अनुवाद में लाने में अनुवादक असफल हुए है।

➢ हर एक रचनाकार की अपनी शैली होती है। इस शैली को अनुवाद में लाना कठिन है। इसकी स्पष्ट झलक 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में मिलती है।

➢ मानस में कई स्थानों पर मानसकार ने कई बिंबों का प्रयोग किया है जिनका अनुवाद काफी नीरस लगाता है।

➢ तुलसीदास की भाषा अपनी विशेष क्षमता और अभिव्यक्ति के कारण साहित्य जगत में विशेष स्थान रखता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण सही मानों में इनकी अभिव्यंजना अनुवादक नहीं कर पाया है।

➢ कई संदर्भों में एटकिन्स महात्मा तुलसीदास के भावों को पकड नहीं पाए हैं जिसके परिणाम स्वरूप अनुवाद फीका पड गया है।

➢ कई कमियों के बावजूद भी, 'दि रामायण ऑफ तुलसीदास' में कई स्थानों पर अनुवादक सफल अनुवाद प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं और कहीं अनुवाद का स्तर कम भी होता दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

मूल ग्रंथ

1	गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस	सं.आर.सी. प्रसाद मोतीलाल बनारसीदास प्रा.लि.दिल्ली,प्र.1999
2.	रामचरितमानस	गीता प्रस, गोरखपुर,सं.2000
3.	The Ramayana of Tulsidas (Vol.I & II)	Re. A.G. Atkins Hindustan Times Press, Delhi, 1954
	संस्कृत	
4.	अष्टाध्यायी	पाणिनी
5.	नाट्यशास्त्र	भरतमुनि
6.	श्रीमद्भगवद्गीता	वीरेश्वरानन्दा श्रीरामकृष्णमठ्, मद्रास
7	श्रीमद्भगवत् महापुराण	गीता प्रेस. गोरखपुर
	हिन्दी	
8.	अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान	सं.डॉ.श्रीवास्तव, तिवारी, गोस्वामी आलेख प्रकाशन. दिल्ली, सं.1980
9.	अनुवाद : भाषाएँ-समस्याएँ	विश्वनाथ अय्यर ज्ञानगंगा प्रकाशन, दिल्ली, सं.1992
10.	अनुवाद : समस्याएँ एवं समाधान	डॉ.अर्जुन चव्हाण अमन प्रकाशन, कानपुर, सं.1999
11.	अनुवाद कला	विश्वनाथ अय्यर प्रभात प्रकाशन,दिल्ली, 1990
12.	अनुवाद कला और समस्याएँ	अज्ञेय, 1961
13.	अनुवाद कला : कुछ विचार	आनन्द प्रकाश खेमणि,वेदप्रकाश एस.चन्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली, सं.1964
14.	अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग	कैलाशचन्द्र भाटिया तक्षशिला प्रकाशन, 1994
15.	अनुवाद मूल्यांकन	नीता गुप्ता भारतीय अनुवाद परिषद्, दिल्ली, 2002
16.	अनुवाद विज्ञान	डॉ.भोलानाथ तिवारी शब्दकार, दिल्ली, 1994

17. अनुवाद विज्ञान सिद्धांत और अनुप्रयोग — सं. डॉ. नगेन्द्र
हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, 1993

18. अनुवाद विज्ञान:सिद्धांत और प्रयोगिक संदर्भ — डॉ.राजमणि शर्मा
संजय बुक सेंटर, वारणासी, 1994

19. अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण — डॉ. हरिमोहन
तक्षशिला प्रकाशन, 1994

20. अनुवाद विज्ञान स्वरूप और समस्याएँ — डॉ रामगोपाल सिंह
पार्श्व पब्लिकेशन, 1999

21. अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग — डॉ.गोपीनाथन
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1985

22. अनुवाद सिद्धांत एवं स्वरूप — डॉ.मनोहर सराफ, शिवकांत गोस्वामी
विद्या प्रकाशन, कानपुर, 1989

23. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा — डॉ. सुरेश कुमार,
वाणी प्रकाशन, दिल्ली 1986

24. अनुवाद सैद्धान्तिकी — प्रदीप सक्सेना
आधार प्रकाशन, पंचकूला. 2000

25. अशोक के फूल — हजारी प्रसाद द्विवेदी
लोकभारती प्रकाशन, इलहाबाद, बीसवाँ सं.1995

26. आधुनिक साहित्य — नन्ददुलारे वाजपेयी

27. आधुनिक कवितामें शिला — कैलाश वाजपेयी
आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6, 1963.

28. आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक विधान — डॉ. नित्यानन्द शर्मा
साहित्य सदन, देहरादून, सं.2023

29. आस्था के चरण (नगेन्द्र ग्रंथावली) — नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1997

30. कम्बरामायण और रामचरितमानस — डॉ. रामेशावर दयाल
कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, 1973

31. कामायनी का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन — डॉ.सुरेश दुबे
शब्द और शब्द, दिल्ली, आगरा, 1981

32. काव्यानुवाद कीसमस्याएँ — भोलानाथ तिवारी, महेन्द्र चतुर्वेदी
शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, 1993.

33.	काव्य के तत्व	आ.देवेन्द्रनाथ शर्मा लोकभारती प्रकाशन, इलहाबाद, सं.1990
34.	काव्य केरूप	गुलाबराय आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6,1995
35.	काव्य परिचय	राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव साहित्य रत्नालय, कानपुर.
36.	काव्य प्रकाशन	गुलाबराय आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1995
37.	काव्य प्रदीप	पणिडत रामबहोदरी शुक्ल हिन्दी भवन, इलहाबाद-2, सं.1992
38.	काव्य बिंब	डॉ. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1967
39.	काव्य बिंब और छायावाद	सुरेन्द्र माथुर ज्ञानभारती प्रकाशन, दिल्ली, 1969
40.	काव्यशास्त्र की रूपरेखा	डा.रामदत्त भारद्वाज सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, 1967
41.	कुमाऊं का लोक साहित्य	डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय आलोक बुक डिपो, अलमोडा, 1962
42.	तुलसीकाव्य की लोकतांत्रिक विवेचन	गयासिंह
43.	चिन्तामणि	आ.रामचन्द्र शुक्ल इंडियन प्रेस पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 1997
44.	जयशंकर प्रसाद के काव्य मेंबिंब-विधान	डायसरोज अग्रवाल ऋषभचरण जैन एवं सन्तति, नई दिल्ली,
45.	तुलसी काव्य में प्रकृति भूगोल तथा खगोल	डॉ. जनक खन्ना सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली, 1998
46.	तुलसी ग्रंथावली, मूल्यांकन (तृतीय खंड)	मूल सं.रामचंद्र शुक्ल, ब्रजरत्नदास, भगवानदीन नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणासी
47.	तुलसी दर्शन सीमांसा	डॉ.उदयभानु सिंह लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, सं.2015
48.	तुलसीदास की भाषा	डॉ.देवकीनन्दन श्रीवास्तव, लखनऊ विश्वविद्यालाय, 1973

49. तुलसी मानस संदर्भ — डॉ.रामस्वरूप आर्य व डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल
मानस चतुरशतीआयोजन समिति,(उ.प्र.)

50. तुलसी संदर्भ और दृष्टि — डॉ.केशवप्रसाद सिंह व डॉ. वसुदेव सिंह
हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, सं.1974

51. तुलसीसाहित्य की भूमिका — डॉ.रामरतन भटनागर
रामनारायणलाल, प्रयाग, सं.1958

52. तुलसी साहित्य में बिंब योजना — डॉ.सुशीला शर्मा
कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली, 1972

53. दूसरे शब्दों में — निर्मल वर्मा
भारातीयज्ञानपीठ प्रकाशन, 1997

54. धर्म औरसमाज — डॉ. राधाकृष्णन (अनु विराज)
राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।

55. ध्वनि सिद्धांत — शेरसिंह बिष्ट
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1992

56. ध्वनि सिद्धांत औरहिन्दी के प्रमुख आचार्य) — डॉ.त्रिभुवन राय
अरविन्द प्रकाशन, मुंबई-12, 1983

57. पूर्व और पश्चिम : कुछ विचार — डॉ.राधाकृष्णन (अनु. रमेश वर्मा)
राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।

58. प्रयोजनमूलक हिन्दी — डॉ. विनोद गोदरे
वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली, 2001

59. प्रयोजनमूलक हिन्दी, प्रासंगिकता एवंपरिदृश्य-डॉ.सु.नागलक्ष्मी
जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2003

60. प्रसाद ग्रंथावली — भारतीयग्रंथ निकेतन,
दरियागंज, दिल्ली, 1988

61. प्राचीन भारतीय संस्कृति — डॉ.वीरेन्द्र कुमर सिंह
अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1977

62. प्रारंभिक अनुाद विज्ञान सिद्धांत और प्रयोग — अवधेश मोहन गुप्त
सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1990

63. भक्ति काव्य का समाज दर्शन — प्रेमशंकर
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2, 2002

64. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथाहिन्दी आलोचना - डॉ.बालमुकुन्द पाठक
विद्यार्थी प्रस्तक भण्डार, गोरखपुर, 1990

65. भारतीय काव्यशास्त्र — डॉ.रामचन्द्र वर्मा
अनीता प्रकाशन, दिल्ली-6, 1974

66. भारतीय काव्यशास्त्र — डॉ.अशोक व के शाह प्रतीक,
जवाहर पुस्तकालय, 1999

67. भारतीय जीवन मूल्य — कामिनी कामायनी
ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2001

68. भारतीयदर्शन परंपरा और आदिग्रंथ — डॉ. हरवंश लाल शर्मा
नेशनल पब्लिशिंग हउस, दिल्ली, 1972

69. भारतीय धर्म और संस्कृति — डॉ.रामजी उपाध्याय
लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1995

70. भारतीय संस्कृति — नरेन्द्र मोहन
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1999

71. भारतीय संस्कृति — शिवदत्त ज्ञानी
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.1998

72. भारतीय संस्कृति — गपनारायण त्रिपाठी, रामदेव शाहू
श्याम प्रकाशन, जयपुर-3, सं. 2001

73. भारतीय संस्कृति: महाकाव्यों के आलोक में — डॉ.देवराज
हिन्दी समिति, लखनऊ, सं.1966

74. भारतीय संस्कृति कीमहिमा विविध आयाम — डॉ. कृष्ण भावुक
प्रेम प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली-6 1992

75. भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व — सोती वीरेन्द्र चन्द्र
राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1998

76. भारतीय सांस्कृतिक आधार — अनु. जगन्नाथ वेदालंकार व चन्द्रदीप त्रिपाठी
श्री.अरविंद सोसायटी, पोडिचेरी-2, 1968

77. भाषाविज्ञान — भोलानाथ तिवारी
किताब महल, इलहाबाद।

78. महाभारत भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्य — डॉ. जगतनारायण दुबे
संजय प्रकाशन, दिल्ली, 1999

79. मानस पीयूष — श्रीअंजनीनन्दन शरण
गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत् 2017

80. मानस में रीति तत्व — श्री.वैद्यनाथ सिंह
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

81. मुगलकालीन सगुण भक्ति काव्यका सांस्कृतिक विश्लेषण - डॉ.रत्नचंद शर्मा
•
डॉ.रत्नचंद शर्मा
जयपुर पुस्तक सदन, जयपुर,1979

82. यामा. — महादेवी वर्मा
भारती भंडार, इलाहाबादसं.2019

83. रस सिद्धांत का पुनर्विवेचन — डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1971

84. रसज्ञ रंजन — महावीर प्रसाद द्विवेदी

85. राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन — कन्हैयालाल सहल
भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली, 1958

86. रामकथा (उत्पत्ति और विकास) — रेवरंड फादर कामिल बुल्के
हिन्दी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग,सं.1962

87. रामचरितमानस दुलनात्मक अध्ययन — सं.डॉ. नगेन्द्र
राधाकृण प्रकाशन, दिल्ली, 1974.

88. रामचरितमानस : साहित्यिक मूल्यांकन — सं.सुधाकरपाण्डेय
राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

89. रामचरितमानस का अनुवाद — सं.गर्गी गुप्त, डॉ.रामनाथ त्रिपाठी

90. रामचरितमानस का काव्य शास्त्रीय अनुशीलन — डॉ.रामकुमार पाण्डेय
अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, 1963

91. रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन — डॉ.शिवकुमार शुक्ल
युगवाणी प्रकाशन, कानपुर, 1964

92. रामचरितमानस कीकाव्यभाषा — डॉ.रामदेव प्रसाद,
वि.भू. प्रकाशन, साहिबाबाद, 1978

93. रामचरितमानस की सांस्कृतिक मीमांसा — डॉ.सोमनाथ शक्ल
मानस परिषद् प्रकाशन, कानपुर, 2001

94. रामचरितमानस की सूक्तियों का विवेचनात्मक अध्ययन राजस्थान प्रकाशन, जयपुर,सं.1975

95. रामचरितमानस में अलंकार योजना — डॉ.वचनदेवकुमार
हिन्दी साहित्य संसार, पटना-4, 1971

96 विदेशी भाषाओंसे अनुवाद की समस्याएँ — डॉ.भोलानाथ तिवारी, नरेश कुमार
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1987

97. शैली — करुणपति त्रिपाठी
साहित्य ग्रंथ कार्यालय, बनारस, 1941

98. शैली और कौशल — सीताराम चतुर्वेदी
हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, सं.2013
99. शैली और शैली विश्लेषण — डॉ.पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
100. शैली विज्ञान और आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भाषा — डॉ.कृष्णकुमार गोस्वामी
अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली, 1996
101. साहित्यालोचन — श्यामसुंदर दास
इंडियन प्रेस लि. प्रयोग, 1965
102. सिद्धांत और अध्ययन — गुलाब राय
आत्मराम एण्ड संस, दिल्ली, 1965
103. सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद स्वरूप समस्याएँ — डॉ.सुरेश सिंहल
सार्थक प्रकाशन, दिल्ली, 1998
104. सूर एवं तुलसी का बाल चित्रण — डॉ. अलंतिका कुलकर्णी
साहित्यागार, जयपुर, 1990
105. सूर की भाषा — डॉ.प्रेमनारायण टंडन
हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ,1957
106. सूर सागर में प्रतीक योजना — डॉ.वी. लक्ष्मम्मा शेड्डी
रिसर्च पब्लिकेशन, दिल्ली,
107. हिन्दी तथा आंगल-भाषा के अलंकारों का तुलनात्मक अध्ययन - डॉ.जगदीशदत्त शर्मा
सुधाकमल ग्रंथालय, दिल्ली, 1975
108. हिन्दी में अंग्रेजों के आगत शब्दों का भाषा तात्विक अध्ययन - डॉ.कैलेशचन्द्र भाटिया
हिन्दुस्थानी एकेडमी,इलहाबाद, 1967
109. हिन्दी काव्य में प्रतीक विधान — डॉ.देवेन्द्र आर्य
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1971
110. हिन्दी साहित्य में विविध वाद — डॉ.प्रेमनारायण शुक्ल
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1970

111. A Linguistic Theory of Translation — J C Catford, Oxford University Press; London 1965

112.An Introduction to the study of Literature — W H Hudson, George. G. Herp and Co. Ltd.2nd edt.1940

113.Asian Variations in Ramayana — Ed. K R Srinivasa Iyengar, Sahitya Akademi, N.D 1983.

114.Considering Poetry (An approach to Criticism) — Ed B A Phythian, The English Universities Press Ltd; London .1970

115.Cultural Heritage of India Vol. I — Dr. S Radhakrishnan, The Ramakrishna Mission Institute Of culture, Calcutta 1970.

116.Cultural Heritage of India Vol. II — Dr. S Radhakrishnan, The Ramakrishna Mission Institute Of culture, Calcutta 1969

117.Culture and society — Raymond Willams, Chatto and Windus Ltd, London 1960

118.Eastern Religion and Western Thoughts — Dr. S Radhakrishnan, Oxford Press 1988

119.Eastern Religions and Western Thoughts • Dr. S Radhakrishnan
Oxford University Press
2nd Edition 1940

120.Heroic Poetry C M Bowra
Macmillan & Co.Ltd;
London 1964

121.Hindu Manners, customs and ceremonies Abbe J A Dubois
Rupa Co. N.D 2,
3rd Edition 2002

123.Hindu Samsakaras-Socio-Religious Study of the Hindu Sacraments Rajbali Pandey
Motilal Banrasidass
2nd revised Edition 1969

124.Imagery in Tulasidasa's Ramacaharitmanas Nandlal Tulsiram
Reliance Publishing House,
New Delhi 1997

125.Indian Philosophy (Vol. 1) Dr. S Radhakrishnan
Blackie and Son Publishers Pvt
Ltd, Bombay 1983

126. Literary theory: An anthology Ed. Julie Rivkin and Michael Ryan
Balckwell Publishers Inc.
Massachusetts, USA1998

127.Meter, Rhyme and free verse G S Fraser
Metheum and Co. Ltd; London
1970

128.Outline of the Religious literature of India Farquhar
Oxford University Press, London
1920

129.Philosophy of Sri Madhavacharya — B N K Sharma, Bharathiya Vidyabhavan 1962

130.Poetic & Non-Poetic Discourse — R.S.Pathak, Bahri Publications New Delhi 1988

131.Poetic Rhythm: An Introduction — Derek Attridge, Cambridge University Press 1996

132.Poetry, Creativity and Aesthetic Experience — Natvarlal Joshi, Eastern Book Linkers, Jawahar Nagar, Delhi – 7 1994

133.Poets on Poetry — Ed. Charles Norman, The Fress Press, New York 1962

134.Principles of Literary Criticism — I A Richards, Universal Book Stall N.D 1996

135.Problems of translation (A study of literary and technical texts) — H Lakshmi, Booklinks Corpn, Hyderabad 1993

136.Rasa in Aesthetics — Priyadarshi Patnaik, D K Printworld (P) Ltd, New Delhi 1997

137.Sabda (A study of Bhartrhari's) — Dr. (Mrs) Tandra Patnaik, D K Printworld (P) Ltd, New Delhi 1994

138.Sixteen Samskaras and some Other rituals — Dr.Jayanth Balaji Athavale & Dr.Kunda Jayanth Athavale, Sanatan Sanstha,Goa 2000

139.Some concepts of the Alamkara Sastra — V Raghavan, The Adyar Library, Adyar 1942

140.Structural Depths of Indian Thought — P T Raju
South Asian Publishers, New Delhi
1985

141.Style — F S Lucas
Cassell and co. Ltd 1964

142.Stylistics and text analysis — Ed. Suresh Kumar
Bahri Publications, N. D 1991

143.The Compass of Irony — D C Muecke
Metheum and Co. Ltd; London
1969

144.The Heritage of Symbolism — C M Bowra
Macmillan; London 1967

145.The Hindu mind — Bansi Pandit
New Age Books, N. D 2001

146.The Journalist's Handbook — M.V. Kamath
Vikas Publishing House
Pvt.Ltd.New Delhi 1996

147.The linguistic sciences And language teaching — M.A.K.Halliday,Angus
Mc.Intosh & Peter Stevens
Longman group Ltd
London 1975

148.The Meters of English Poetry — Enid Hamer
Metheum and Co. Ltd; London
1966

149.The origin and development of bengali language — Dr. S.K.Chatterji, George Allen and Unwin Ltd. London 1970

150.The Poetic Image — C Dey Lewis, Jonathan Cape, London 1964

151.The problems of style — J M Murray, Oxford University Press; London 1922

152.The Problems of Translation — Ed. G Gopinathan and S Kandaswamy, Lokbharti Prakashan, Allahabad 1. 1993

153.The Ramayana tradition of Asia — Ed. V Raghavan, Sahitya Akademi, N.D. 1999

154.The structure of Verse (Modern Essays on Prosody) — Harvey Gross, Fawcett World Library, New York.1966

155.The Theory and Practice of Translation — Eugene A Nida and Charles R Taber, 1974

156.The writers creative indivduality and the development of literature — M Khrapchenko, Progress Publishers 1977

157.Translation studies — P K Kalyani, Creative Books, N. D 2001

158.Translation: application and research — Ed.Richard W Bristen, Gardner Press Inc; New York 1976

कोश

1. अंग्रेजी-हिन्दी कोश — रेवरेंट कामिल बुल्के, एस.चन्द एण्ड कम्पनी लि. सं.2004
2. तुलसीशब्द कोश — आचार्य बच्चुलाल अवस्थी, बुक्त एन बुक्स, दिल्ली, सं.1991
3 बृहत् हिन्दीकोश
4.. भारतीय संस्कृति कोश — लीलधर शर्मा, पर्वतीय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1996
5. भाषाविज्ञान कोश — डॉ.भोलानाथ तिवारी, वाराणसी ज्ञान मण्डल, लिमि. सं.2020
6. शब्दार्थ चिंतामणि कोश
7. संक्षिप्त हिन्दीशब्द सागर — रामचन्द्र वर्मा, नागरीप्रचारिणी सभा, 1933
8. सांस्कृतिक प्रतीक कोश — शोभानाथ पाठक, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं.1999
9. हिन्दी साहित्यकोश — वाराणसी ज्ञान मण्डल लिमि:

10. Chamber's 20th Century .Dictionary — Edt. William Geddie
11. Dictionary of World Literary Germs — Joseph, T.Shipley, George Allen University,London, 1970
12. Encyclopaedia of Religion and Ethics (Vol.12) — T & T Clark, Edt. James Hastings Edinburgh
13. Glossary of Hinduism — T. Rengarajan, Oxford & IBH Publishing Cov.Pvt.Ltd., N.D, Calcutta, 1999
14. Merrian Webster's Encyclopedia of literature — 1995
15. Oxford Advanced learner's Dictionary in Current English – 3rd Edition
16. The Practical Sanskrit E glishDictionary — V.S. Apte
17. The World book of Encyclopaedia Vol.xiv — Field Enterprises Educational Corporation, Chicago, 1961
18. Webster's Encyclopedic unabridge Dictionary of theEnglish Language — Gramery Books, New york, 1989
19. Webster's International Dictionary — G & C. Marsiam Com. Sec. Edt.1934

पत्र-पत्रिकाएँ

1.	अनुवाद	जून 1988
2.	अनुवाद	दिसंबर 1988 अंक 4
3.	अनुवाद भारती	जुलाई-सितंबर 1996 अंक 3
4.	अनुवाद	वहीं 2000 अंक 22-23
5.	अनुवाद	मार्च-अप्रैल 1992
	ENGLISH	
6.	**InternationalJournal of Translation (Vol.14)**	**Jan.-June 2002** **Bahri Publications**